प्रकाशक
आगम अनुयोग प्रकाशन
बखतावरपुरा सांडेराव
जिला-पाली (राजस्थान)

प्रेरक—पं रत्न मुनि श्री मिश्रीमलजी म० "मुमुक्षु"
सेवाभावी श्री चांदमलजी म०

मूल्य १०) रुपये

प्रकाशन वर्ष
वीर संवत् २५०३

मुद्रक :
नई दुनिया प्रेस
केशर बाग रोड
इंदौर (म प्र)

समर्पण

स्वाध्याय संघ

के

प्रथम संस्थापक

श्रमण संघ

के

प्रशस्त प्रवर्तक

स्वर्गीय

परम प्रतापी श्री पन्नालालजी म. सा

को

पावन स्मृति में समर्पित

—विनय मुनि "वागीश"

प्रकाशकीय

अनुयोग प्रवर्त्तक मनि श्री कन्हैयालालजी म० "कमल" रोशनमुनिजी "शास्त्री" विनय मुनिजी "वागीश" का वीर सवत् २५०१ का चातुर्मास स्वाध्याय सघ के सस्थापक प्रवर्त्तक पन्नालालजी म० की निर्वाण भूमि विजयनगर मे सम्पन्न हुआ। उस ममय वहाँ दर्शनार्थ जाने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ।

स्वाध्याय सघ के अनेक सदस्य सम्पर्क मे आये प्राय सबकी भावना एक सी रही कि स्वाध्याय एव प्रवचन के उपयोगी आगम एव स्तोत्रो का एक लघु सस्करण का होना आवश्यक है। प्रस्तुत 'स्वाध्याय सुधा' का यह सस्करण उनकी भावना के अनुरूप ही है।

आशा है प्रत्येक स्वाध्यायशील महानुभाव इसे आध्यात्मिक जीवन का साथी मानकर आवश्यक धर्मोपकरण समझे और 'जयणा पूर्वक' वाचन एव चितन मनन करे।

श्री विजयनगर सघ के हार्दिक एव आर्थिक सहयोग से प्रस्तुत 'स्वाध्याय सुधा' का प्रकाशन आगम अनुयोग प्रकाशन द्वारा प्रकाशित करने का सुअवमर भी हमे प्राप्त हुवा है। इसके लिये भी हम विजयनगर सघ के नवयुवक कार्यकर्ताओ के विशेष आभारी हैं।

नई दुनिया प्रेस के व्यवस्थापक महोदय, कम्पोजमेन व प्रूफ रीडर भी धन्यवाद के पात्र है जिन्होने शुद्ध सुन्दर मुद्रण किया है। शीघ्र ही अनुयोग प्रकाशन की ओर से कथानुयोग एव कप्प सुत्त प्रकाशित हो रहे हैं।

मत्री

आगम अनुयोग प्रकाशन

अर्हम्

पृष्ठिका

साधक सागार हो या अणगार—साधना काल मे दोनो के लिए आगम-साहित्य का स्वाध्याय अत्यावश्यक कर्तव्य माना गया है।

"सज्झाय जोगे पयतो भवेज्जा" साधक को स्वाध्याययोग मे सदा प्रयत्नशील होना चाहिए। यदि हम शिवपुर के पथिक है तो सर्वज्ञ भगवान् का यह प्रेरक सन्देश हमारे लिए एक प्रवल आत्मवल-वर्धक पवित्र पाथेय है।

स्वाध्याय आभ्यन्तर तप है। यह ज्ञानावरण कर्म का समूलोन्मूलन कारक एक अमोघ अस्त्र है।

स्वाध्याय का एक अग 'परियट्टणा" "परिवर्तना" भी है। अर्थात् आगमो के पुनरावर्तन से ज्ञान की वृद्धि और पदानुसारिणी लब्धि प्राप्त होती है। यह आगमोक्त फल-श्रुति है।

यदि कोई साधक स्वाध्याय-काल मे ज्ञानातिचारो का परिहार करता हुआ प्रसन्न मन से सतत स्वाध्याय करता रहे तो तीर्थंकर नाम कर्मोपार्जन भी कर सकता है। 'णायाधम्मकहा का यह अमर सन्देश सभी मुमुक्षु आत्माओ के लिए परमादरणीय है।

अवसर्पिणी काल से प्रभावित धारणा-शक्ति को लक्ष्य मे रखकर जब आगम लिपिबद्ध किये गये तो पुस्तक-लिखना और रखना

सुवेदनं विना। १४ सुपुप्तावस्थायाम्। १५ दुग्ध। १६ दुःखाभावे सुखशब्दो न पारमार्थिकसुखस्य वाचक' इति टेनो:। १७ सुखमदनस्वापनिलसिन्धाकये। १८ आंतरन्तरिकः। १९ दु खस्य। २० दुःखलक्षणाद्भावादपर सुखलक्षण समा-न्तरम्। २१ स्वापावस्थायां दानसद्भावसाधनविस्तरेण।

अपवाद मार्ग मे स्वीकृत किया गया था, साथ ही प्रायश्चित्त विधान भी किया गया था, पर वर्तमान मे पुस्तक रखना अपवाद जैसा प्रतीत नही हो रहा है । क्योकि अपवाद का सतत उपयोग नही किया जाता है।

वर्तमान मे प्रत्येक साधक का एक मात्र कर्त्तव्य यह है कि स्वाध्याय काल मे स्वाध्याय करे और स्वाध्याय काल मे स्वाध्याय न करने पर जो प्रायश्चित्त आता है उसका पात्र न बने ।

स्वाध्यायान्माप्रमद

स्वाध्याय-प्रवचनाभ्या न प्रमदितव्यम् । तैत्ति०

ये उपनिषद् वाक्य भी उसी अमर-घोष की प्रेरणाप्रद अनुश्रुति है।

आगमो के स्वाध्यायोपयोगी सस्करण कई स्थानो से प्रकाशित होते रहते है, किन्तु इस सस्करण मे मूलपाठ का स्वाध्याय करते हुए स्वाध्याय-शील साधक को सामान्य अर्थावबोध भी प्रतिदिन होता रहे—इसके लिए उचित वाक्य-विन्यास आदि विशेषताओ का जो आयोजन किया गया है उनका अनुभव स्वाध्यायी को स्वतः हो जायेगा ।

सुज्ञेषु किमधिकम्
मुनि "कमल"

अनुक्रमणिका

वीरत्थुई

पुच्छिसु ण समणा माहणा य, अगारिणो य परितित्थिआ य।
से केइ णेगंतहियं धम्ममाहु, अणेलिस साहुसमिक्खयाए ॥१॥

कहं च णाण कहं दंसण से, सील कहं नायसुयस्स आसि ?।
जाणासि णं भिक्खु जहातहेणं, अहासुयं बूहि जहा णिसंत ॥२॥

खेयन्नए से कुसले-महेसी, अणंतनाणी य अणंतदंसी।
जसंसिणो चक्खुपहे ठियस्स, जाणाहि धम्मं च धिइं च पेहि ॥३॥

उड्ढं अहे य तिरियं दिसासु, तसा य जे थावरा जे य पाणा।
से णिच्चणिच्चेहि समिक्ख पन्ने, दीवे व धम्मं समियं उदाहु ॥४॥

से सव्वदंसी अभिभूयनाणी, णिरामगंधे धिइमं ठियप्पा।
अणुत्तरे सव्वजगंसि विज्जं, गंथा अईए अभए अणाऊ ॥५॥

से भूइपण्णे अणिए अचारी, ओहंतरे धीरे अणंतचक्खू।
अणुत्तरं तप्पइ सूरिए वा, वइरोयणिन्दे व तमं पगासे ॥६॥

अणुत्तरं धम्ममिणं जिणाणं, णेया मुणी कासव आसुपन्ने।
इंदेव देवाण महाणुभावे, सहस्सणेया दिवि णं विसिट्ठे ॥७॥

से पन्नया अक्खयसागरे वा, महोदही वावि अणंतपारे।
अणाइले वा अकसाइ मुक्के(भिक्खु),सक्के व देवाहिवई जुइमं ॥८॥

से वीरिएणं पडिपुन्नवीरिए, सुदंसणे वा णगसव्वसेट्ठे।
सुरालए वा सि मुदागरे से, विरायए णेगगुणोववेए ॥९॥

सय सहस्साण उ जोयणाणं, तिकंडगे पंडगवेजयंते ।
से जोयणे णवणवइसहस्से, उद्धुस्सितो हेट्ठ सहस्समेग ॥१०॥

पुट्ठे णभे चिट्ठइ भूमिवट्ठिए, जं सूरिया अणुपरिवट्टयंति ।
से हेमवन्ने बहुनंदणे य, जंसी रतिं वेदयंति महिंदा ॥११॥

से पव्वए सद्दमहप्पगासे, विरायइ कंचणमट्ठवन्ने ।
अणुत्तरे गिरिसु य पव्वदुग्गे, गिरीवरे से जलिए व भोमे ॥१२॥

महीए मज्झम्मि ठिए णगिंदे, पन्नायते सूरिए सुद्धलेसे ।
एवं सिरीए उ स भूरिवन्ने, मणोरमे जोयइ अच्चिमाली ॥१३॥

सुदंसणस्सेव जसो गिरिस्स, पवुच्चइ महतो पव्वयस्स ।
एतोवमे समणे नायपुत्ते, जाइजसोदंसणनाणसीले ॥१४॥

गिरीवरे वा निसहाऽऽययाणं, रुयए व सेट्ठे वलयायताणं ।
तओवमे से जगभूइपन्ने, मुणीण मज्झे तमुदाहु पन्ने ॥१५॥

अणुत्तरं धम्ममुईरइत्ता, अणुत्तरं झाणवरं झियाइं ।
सुसुक्कसुक्कं अपगंडसुक्कं, संखिंदुएगंतवदातसुक्कं ॥१६॥

अणुत्तरग्गं परमं महेसी, असेसकम्मं स विसोहइत्ता ।
सिद्धिं गए साइमणंतपत्ते, नाणेण सीलेण य दंसणेण ॥१७॥

रुक्खेसु णाए जह सामली वा, जंसि रइं वेदयंती सुवन्ना ।
वणेसु वा णंदणमाहु सेट्ठं, नाणेण सीलेण य भूइपन्ने ॥१८॥

थणियं व सद्दाण अणुत्तरे उ, चंदो व ताराण महाणुभावे ।
गंधेसु वा चंदणमाहु सेट्ठं, एवं मुणीण अपडिन्नमाहु ॥१९॥

[illegible]वेदने विना । १४ [illegible]वाम् । १५ [illegible] । १६ दुः[illegible]
न पारमार्थिक[illegible] बाधक' इति हेतोः । १७ [illegible] ।
१८ [illegible] । १९ दुः[illegible] । २० दु[illegible]पादपरं [illegible] भाव-
नारम् । २१ [illegible]विस्तरेण ।

जहा सयभू उदहीण सेट्ठे, नागेसु वा धरणिंदमाहु सेट्ठे ।
खोओदए वा रस वेजयंते, तवोवहाणे मुणिवेजयंते, ॥२०॥
हत्थीसु एरावणमाहु णाए, सीहो मियाण सलिलाण गंगा ।
पक्खीसु वा गरुले वेणुदेवे, निव्वाणवादीणिह नायपुत्ते ॥२१॥
जोहेसु नाए जह वीससेणे, पुप्फेसु वा जह अरविंदमाहु ।
खत्तीण सेट्ठे जह दंतवक्के इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे ॥२२॥
दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं, सच्चेसु वा अणवज्जं वयंति ।
तवेसु वा उत्तम बंभचेरं, लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते ॥२३॥
ठिईण सेट्ठा लवसत्तमा वा, सभा सुहम्मा व सभाण सेट्ठा ।
निव्वाणसेट्ठा जह सव्वधम्मा, न नायपुत्ता परमत्थि नाणी ॥२४॥
पुढोवमे धुणइ विगयगेहि, न सण्णिहिं कुव्वइ आसुपन्ने ।
तरित्तु समुद्दं च महाभवोघं, अभयंकरे वीर अणंतचक्खू ॥२५॥
कोहं च माणं च तहेव मायं, लोभं चउत्थं अज्झत्थदोसा ।
एयाणि वंता अरहा महेसी, ण कुव्वई पाव ण कारवेइ ॥२६॥
किरियाकिरियं वेणईयाणुवायं, अण्णाणियाण पडियच्च ठाणं ।
से सव्ववायं इइ वेयइत्ता, उवट्ठिए संजमदीहराय ॥२७॥
से वारिया इत्थी सराइभत्तं, उवहाणवं दुक्खखयट्ठयाए ।
लोगं विदित्ता आरं पारं च, सव्वं पभू वारिय सव्ववारं ॥२८॥
सोच्चा य धम्मं अरिहंतभासियं, समाहियं अट्ठपओवसुद्धं ।
तं सद्दहाणा य जणा अणाऊ, इंदे व देवाहि व आगमिस्संति ॥२९॥

॥ मूल सुत्ताणि ॥

(१)

दसवेआलियसुत्तं

(उक्कालियं)

नामकरणं–

मणगं पडुच्च सेज्जंभवेण, निज्जूहिया दसज्झयणा ।
वेयालियाइ ठविया, तम्हा दसकालियं नाम ॥

उद्धरणं–

आयप्पवायपुव्वा, निज्जूढा होइ धम्म-पन्नत्ती ।
कम्मप्पवायपुव्वा, पिंडस्स उ एसणा तिविहा ॥
सच्चप्पवायपुव्वा, निज्जूढा होइ वक्कसुद्धीउ ।
अवसेसा निज्जूढा, नवमस्स उ तइयवत्थूओ ॥
बीओऽवि अ आएसो, गणिपिडगाओ दुवालसंगाओ ।
एयं किर निज्जूढं, मणगस्स अणुग्गहट्ठाए ॥

विसयनिद्देसो–

पढमे धम्म-पसंसा, सो य इहेव जिणसासणम्मित्ति ।
बिइए धिइए सक्का, काउ जे एस धम्मोत्ति ॥
तइए आयार-कहाउ, खुड्डिया आयसंजमोवाओ ।
तह जीव-संजमोऽवि य, होइ चउत्थम्मि अज्झयणे ॥
भिक्ख-विसोही तव, संजमस्स गुणकारियाउ पंचमए ।
छट्ठे आयार-कहा, महई जोग्गा महयणस्स ॥
वयण-विभत्ती पुण, सत्तमम्मि पणिहाण-मट्ठमे भणियं ।
नवमे विणओ दसमे, समाणियं एस भिक्खुत्ति ॥
दो अज्झयणा चूलिय, विसीययंते थिरीकरणमेगं ।
बिइय विवित्त चरिया, असीयणगुणाइरेग फला ॥

—भद्रबाहु निर्युक्ति गाथा १५, १६, १७, १८, २०, २१, २२, २३, २४

विषय-संबंध-निर्देशः

प्रथमाध्ययने धर्म प्रशंसा–

सचात्रैव–जिनशासने धर्मो, नान्यत्र इहैव निर्वद्यवृत्तिसद्भावात् ।
धर्माभ्युपगमे च सत्यपि माभृदभिनवप्रव्रजितस्याधृतेः सम्मोह–
इत्यत स्तन्निरा करणार्थाधिकारवदेव द्वितीयाध्ययनम् ।
सा पुनर्धृतिराचारे कार्या न त्वनाचारे–इत्यतस्तदर्थाधिकारवदेव–

तृतीयाध्ययनम् ।

स च आचार. षड्जीवनिकायगोचर. प्राय-इत्यत श्चतुर्थमध्ययनम् ।
स च देहे स्वस्थे सति सम्यक् पाल्यते, स चाहारमन्तरेण प्राय. स्वस्थो न
भवति, स च सावद्येतरभेद-इत्यनवद्यो ग्राह्य-इत्यतस्तदर्थाधिकारवदेव
पञ्चममध्ययनम् ।

गोचरप्रविष्टेन च सता स्वाचार पृष्टेन तद्विदापि न महाजनसमक्ष तत्रैव-
विस्तरत' कथयितव्य अपि तु आलये-गुरवो वा कथयन्तीति वक्तव्यम्
इत्यतस्तदर्थाधिकारवदेव षष्ठमध्ययनम् ।

आलयगतेनाऽपि तेन, गुरुणा वा वचनदोषगुणाभिज्ञेन निरवद्यवचसा
कथयितव्य इत्यतस्तदर्थाधिकारवदेव सप्तममध्ययनम् ।

तच्च निरवद्यं वच. आचारे प्रणिहितस्य भवति इत्यतस्तदर्थाधिकारव-
देवाष्टममध्ययनम् ।

आचारप्रणिहितश्च यथोचितविनयसपन्न एव भवतीत्यतस्तदर्था
धिकारवदेव नवममध्ययनम् ।

एतेषु एव नवस्वध्ययनार्थेषु यो व्यवस्थितः स सम्यग् भिक्षुरित्यनेन–
सम्बन्धेन दसम सभिक्ष्वध्ययनम् ।

स एवं गुणयुक्तोऽपि भिक्षुः कदाचित् कर्मपरतन्त्रत्वात्कर्मणश्च
बलवत्त्वात्सीदेत् ततस्तस्य स्थिरीकरणं कर्त्तव्यमतस्तदर्थाधिकारव-
देव चूडाद्वयम् । –श्री हरिभद्रसूरिः

❖ णमोऽत्थु णं तस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स ❖

दसवेआलियसुत्तं

अह दुमपुप्फिया नामं पढममज्झयणं

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो ।
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो ॥ १ ॥

जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियइ रसं ।
न य पुप्फं किलामेइ, सो य पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥

एमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो ।
विहंगमा व पुप्फेसु, दाणभत्तेसणे रया ॥ ३ ॥

वयं च वित्तिं लब्भामो, न य कोइ उवहम्मइ ।
अहागडेसु रीयंते, पुप्फेसु भमरा जहा ॥ ४ ॥

महुगारसमा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया ।
नाणापिंडरया दंता, तेण वुच्चंति साहुणो ॥ ५ ॥ त्ति बेमि ।

अह सामण्णपुव्वयं नामं दुइअमज्झयणं

कहं नु कुज्जा सामण्णं, जो कामे न निवारए ।
पए पए विसीयंतो, संकप्पस्स वसं गओ ॥ १ ॥

वत्थगंधमलंकारं, इत्थीओ सयणाणि य ।
अच्छंदा जे न भुंजंति, न से 'चाइ' त्ति वुच्चइ ॥ २ ॥

जे य कंते पिए भोए, लद्धे विपिट्ठि कुव्वई ।
साहीणे चयइ भोए, से हु 'चाइ' त्ति वुच्चई ॥ ३ ॥

समाए पेहाए परिव्वयंतो,
सिया मणो निस्सरई बहिद्धा ।
'न सा महं नोवि अहंपि तीसे'
इच्चेव ताओ विणएज्ज रागं ॥ ४ ॥

आयावयाही चय सोउमल्लं,
कामे कमाही कमियं खु दुक्खं ।
छिंदाहि दोसं विणएज्ज रागं,
एवं सुही होहिसि संपराए ॥ ५ ॥

पक्खंदे जलियं जोइं, धूमकेउं दुरासयं ।
नेच्छंति वंतयं भोत्तुं, कुले जाया अगंधणे ॥ ६ ॥

धिरत्थु तेऽजसोकामी, जो तं जीवियकारणा ।
वंतं इच्छसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे ॥ ७ ॥

अहं च भोगरायस्स, तंचऽसि अंधगवण्हिणो ।
मा कुले गंधणा होमो, संजमं निहुओ चर ॥ ८ ॥

जइ तं काहिसि भावं, जा जा दिच्छसि नारिओ ।
वायाविद्धो व्व हडो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥ ९ ॥

तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाए सुभासियं ।
अंकुसेण जहा नागो, धम्मे संपडिवाइओ ॥ १० ॥

एवं करेंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा ।
विणियट्टंति भोगेसु, जहा से पुरिसुत्तमो ॥ ११ ॥ त्ति बेमि ॥

अह खुड्डियायारकहा नामं तइयमज्झयणं

संजमे सुट्ठिअप्पाणं, विप्पमुक्काण ताइणं ।
तेसिमेयमणाइण्णं, निग्गंथाणं महेसिणं ॥ १ ॥
उद्देसियं[1] कीयगडं[2], नियागं[3] अभिहडाणि[4] य ।

राइ-भत्ते[5] सिणाणे[6] य, गंध[7] मल्ले[8] य वीयणे[9] ॥ २ ॥
सन्निही[10] गिहि-मत्ते[11] य, रायपिंडे[12] किमिच्छए[13] ।

संवाहणा[14] दंतपहोयणा[15] य,
संपुच्छणा[16] देह-पलोयणा[17] य ॥ ३ ॥

अट्ठावए[18] य नालीय[19], छत्तस्स[20] य धारणट्ठाए ।
तेगिच्छं[21] पाहणा[22] पाए, समारंभं च जोइणो[23] ॥ ४ ॥

सेज्जायर-पिण्डं[24] च, आसंदीपलियंकए[25] ।
गिहंतर निसज्जा[26] य, गायस्सुव्वट्टणाणि[27] य ॥ ५ ॥

गिहिणोवेआवडियं[28], जा य आजीववत्तिया[29] ।
तत्तानिवुडभोइत्तं[30], आउरस्सरणाणि[31] य ॥ ६ ॥
मूलए[32] सिगबेरे[33] य, उच्छुखंडे[34] अनिव्वुडे ।
कंदे[35] मूले[36] य सच्चित्ते, फले[37] बीए[38] य आमए ॥ ७॥
सोवच्चले[39] सिंधवे[40] लोणे, रोमा-लोणे[41] य आमए ।
सामुद्दे[42] पंसुखारे[43] य, काला-लोणे[44] य आमए ॥ ८ ॥
धूवणेत्ति[45] वमणे[46] य, वत्थीकम्म[47] विरेयणे[48] ।
अंजणे[49] दंतवणे[50] य, गायब्भंग[51] विभूसणे[52] ॥ ९ ॥
सव्वमेयमणाइण्णं, निग्गंथाण महेसिणं ।
संजमम्मि अ जुत्ताणं, लहुभूयविहारिणं ॥ १० ॥
पंचासवपरिण्णाया, तिगुत्ता छसु संजया ।
पंचनिग्गहणा धीरा, निग्गंथा उज्जुदंसिणो ॥ ११ ॥
आयावयंति गिम्हेसु, हेमंतेसु अवाउडा ।
वासासु पडिसंलीणा, संजया सुसमाहिया ॥ १२ ॥
परिसह-रिऊ-दंता, धूअमोहा जिइंदिया ।
सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा, पक्कमंति महेसिणो ॥ १३ ॥
दुक्कराइं करित्ताणं, दुस्सहाइं सहित्तु य ।
केइऽत्थ देवलोएसु, केइ सिज्झंति नीरया ॥ १४ ॥
खवित्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य ।
सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता, ताइणो परिणिव्वुडा ॥ त्ति बेमि ॥१५ ॥

अह छज्जीवणिया नामं चउत्थमज्झयणं

सुयं मे आउसं !

तेणं भगवया एवमक्खायं–

इह खलु छज्जीवणिया नामज्झयणं–

समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया–

सुअक्खाया सुपण्णत्ता ।

सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपण्णत्ती ।

कयरा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयणं–

समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया–

सुअक्खाया सुपण्णत्ता

सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती ।

इमा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयणं–

समणेणं भगवया महावीरेण कासवेणं पवेइया–

सुअक्खाया सुपन्नत्ता

सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयण धम्मपन्नत्ती ।

तं जहा–

पुढवि–काइया १, आउ–काइया २, तेउ–काइया ३, वाउ–काइया ४, वणस्सइ–काइया ५, तस–काइया ६ ।

१ पुढवी चित्तमंतमक्खाया अणेग–जीवा पुढो–सत्ता अन्नत्थ सत्थ–परिणएणं ।

२ आऊ चित्तमंतमक्खाया अणेग–जीवा पुढो–सत्ता अन्नत्थ सत्थ–परिणएणं ।

३ तेऊ चित्तमंतमक्खाया अणेग–जीवा पुढो–सत्ता अन्नत्थ सत्थ–परिणएणं ।

४ वाऊ चित्तमंतमक्खाया अणेग–जीवा पुढो–सत्ता अन्नत्थ सत्थ–परिणएणं ।

५ वणस्सई चित्तमंतमक्खाया अणेग–जीवा पुढो –सत्ता अन्नत्थ सत्थ-परिणएणं ।

तं जहा–
अग्गबीया मूलबीया पोरबीया खंधबीया बीयरुहा–
सम्मुच्छिमा तणलया–
वणस्सइकाइया सबीया चित्तमंतमक्खाया अणेग–जीवा पुढो–सत्ता अन्नत्थ सत्थ-परिणएणं ।

६ से जे पुण इमे अणेगे बहवे तसा पाणा–
तं जहा–
अंडया पोयया जराउया रसया–
संसेइमा संमुच्छिमा उब्भिया उववाइया।
जेसिं केसिं च पाणाणं–
अभिक्कंतं पडिक्कंतं संकुचियं पसारियं–
रुयं भंतं तसियं पलाइयं–
आगइ–गइ–विन्नाया, जे य कीडपयंगा–

जा य कुंथुपिवीलिया–
सव्वे बेइंदिया सव्वे तेइंदिया–
सव्वे चउरिंदिया सव्वे पंचिंदिया–
सव्वे तिरिक्ख–जोणिया सव्वे नेरइया–
सव्वे मणुआ सव्वे देवा–
सव्वे पाणा परमाहम्मिया ।
एसो खलु छट्ठो जीवनिकाओ 'तसकाउ त्ति' पवुच्चइ ।

इच्चेसिं छण्हं जीवनिकायाणं–
नेव सयं दंडं समारंभिज्जा–
नेवन्नेहिं दंडं समारंभाविज्जा–
दंडं समारंभते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा
जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं–
मणेणं वायाए काएणं–
न करेमि, न कारवेमि–
करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि–
तस्स भंते !
पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि–
अप्पाणं वोसिरामि ।

पढमे भंते ! महव्वए पाणाइवायाओ वेरमणं ।
सव्वं भंते ! पाणाइवायं पच्चक्खामि–
से सुहुमं वा, बायरं वा

तसं वा थावरं वा
नेव सयं पाणे अइवाइज्जा–
नेवऽन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा–
पाणे अइवायंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा
जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं–
मणेणं वायाए काएणं–
न करेमि न कारवेमि–
करंतं–पि अन्नं न समणुजाणामि–
तस्स भंते !
पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि–
अप्पाणं वोसिरामि ।
पढमे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि
सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं ॥१॥

अहावरे दोच्चे भंते ! महव्वए मुसावायाओ वेरमणं
सव्वं भंते ! मुसावायं पच्चक्खामि
से कोहा वा लोहा वा
भया वा हासा वा
नेव सयं मुसं वएज्जा
नेवऽन्नेहिं मुसं वायावेज्जा
मुसं वयंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा
जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं–

मणेण वायाए काएणं–
न करेमि न कारवेमि–
करतंपि अन्न न समणुजाणामि–
तस्स भंते !
पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि
अप्पाणं वोसिरामि ।
दोच्चे भंते महव्वए उवट्ठिओमि ।
सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं ॥ २ ॥

अहावरे तच्चे भंते ! महव्वए अदिन्नादाणाओ वेरमणं
सव्वं भंते ! अदिन्नादाणं पच्चक्खामि
से गामे वा नगरे वा रण्णे वा–
अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा–
चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा–
नेव सयं अदिन्नं गिण्हेज्जा–
नेवऽन्नेहिं अदिन्नं गिण्हावेज्जा–
अदिन्नं गिण्हंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा
जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं–
मणेण वायाए काएणं–
न करेमि न कारवेमि
करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि–

तस्स भंते !
पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि–
अप्पाणं वोसिरामि ।
तच्चे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि
सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं ॥ ३ ॥

अहावरे चउत्थे भंते ! महव्वए मेहुणाओ वेरमणं–
सव्वं भंते ! मेहुणं पच्चक्खामि
से दिव्वं वा माणुसं वा तिरिक्ख–जोणियं वा
नेव सयं मेहुणं सेवेज्जा–
नेवन्नेहिं मेहुणं सेवावेज्जा–
मेहुणं सेवंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा
जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं–
मणेणं वायाए काएणं
न करेमि न कारवेमि
करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि–
तस्स भंते !
पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि–
अप्पाणं वोसिरामि ।
चउत्थे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि–
सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ।

अहावरे पंचमे भंते ! महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं–

सव्वं भंते ! परिग्गहं पच्चक्खामि—
से अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा
चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा
नेव सयं परिग्गहं परिगिण्हेज्जा—
नेवन्नेहिं परिग्गहं परिगिण्हावेज्जा—
परिग्गहं परिगिण्हंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा
जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं
मणेणं वायाए काएणं—
न करेमि न कारवेमि—
करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि
तस्स भंते !
पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि—
अप्पाणं वोसिरामि ।
पंचमे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि—
सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥ ५ ॥

अहावरे छट्ठे भंते ! वए राइ—भोयणाओ वेरमणं
सव्वं भंते ! राइ—भोयणं पच्चक्खामि ।
से असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा—
नेव सयं राइं भुंजेज्जा
नेवन्नेहिं राइं भुंजावेज्जा
राइं भुंजंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा

जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं–
मणेणं वायाए काएणं–
न करेमि न कारवेमि
करंतं-पि अन्नं न समणुजाणामि ।
तस्स भंते !
पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि
अप्पाणं वोसिरामि ।
छट्ठे भंते ! वए उवट्ठिओमि
सव्वाओ राइ-भोयणाओ वेरमणं ।
इच्चेयाइं पंच महव्वयाइं राइ-भोयण वेरमण-छट्ठाइं
अत्त–हियट्ठयाए उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ॥ ६ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा–
संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे
दिआ वा राओ वा
एगओ वा परिसागओ वा
सुत्ते वा जागरमाणे वा
से पुढविं वा भित्तिं वा सिलं वा लेलुं वा–
स–सरक्खं वा कायं, स-सरक्खं वा वत्थं–
हत्थेण वा पाएण वा कट्ठेण वा किलिंचेण वा–
अंगुलियाए वा सलागाए वा सलाग हत्थेण वा–
न आलिहेज्जा न विलिहेज्जा–

न घट्टेज्जा न भिंदेज्जा–
अन्नं न आलिहावेज्जा न विलिहावेज्जा
न घट्टावेज्जा न भिंदावेज्जा
अन्नं आलिहंतं वा विलिहंतं वा
घट्टंतं वा भिंदंतं वा न समणुजाणेज्जा
जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं
मणेणं वायाए काएणं–
न करेमि न कारवेमि–
करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि–
तस्स भंते !
पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि
अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा–
संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे–
दिआ वा राओ वा–
एगओ वा परिसा-गओ वा–
सुत्ते वा जागरमाणे वा–
से उदगं वा ओसं वा हिमं वा महियं वा–
करगं वा हरितणुगं वा सुद्धोदगं वा–
उदउल्लं वा कायं उदउल्लं वा वत्थं–
ससिणिद्धं वा कायं ससिणिद्धं वा वत्थं–

न आमुसेज्जा न संफुसेज्जा–
न आवीलेज्जा न पवीलेज्जा–
न अक्खोडेज्जा न पक्खोडेज्जा–
न आयावेज्जा न पयावेज्जा ।

अन्नं न आमुसावेज्जा न संफुसावेज्जा–
न आवीलावेज्जा न पवीलावेज्जा–
न अक्खोडावेज्जा न पक्खोडावेज्जा–
न आयावेज्जा न पयावेज्जा–

अन्न आमुसत वा संफुसत वा
आवीलंत वा पवीलंतं वा
अक्खोडंत वा पक्खोडंतं वा
आयावंतं वा पयावंतं वा न समणुजाणेज्जा

जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण
मणेणं वायाए काएण
न करेमि न कारवेमि
करतं-पि अन्नं न समणुजाणामि
तस्स भंते !
पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि–
अप्पाण वोसिरामि ॥२॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा–
सजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे

दिआ वा राओ वा
एगओ वा परिसा-गओ वा
सुत्ते वा जागरमाणे वा
से अगणिं वा इगालं वा मुम्मुरं वा अच्चिं वा—
जालं वा अलायं वा सुद्धागणिं वा उक्कं वा—
न उंजेज्जा न घट्टेजा न भिंदेज्जा—
न उज्जालेज्जा न पज्जालेज्जा न निव्वावेज्जा—
अन्नं न उंजावेज्जा न घट्टावेज्जा न भिंदावेज्जा
न उज्जालावेज्जा न पज्जालावेज्जा न निव्वावेज्जा
अन्नं उंजंतं वा घट्टंतं वा भिंदंतं वा—
उज्जालंतं वा पज्जालंतं वा निव्वावंतं वा न समणुजाणेज्जा
जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं
मणेणं वायाए काएणं—
न करेमि न कारवेमि
करंतं-पि अन्नं न समणुजाणामि
तस्स भंते !
पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि
अप्पाणं वोसिरामि ॥३॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा
संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे—
दिआ वा राओ वा—

एगओ वा परिसा-गओ वा—
सुत्ते वा जागरमाणे वा—
से सिएण वा विहुणेण वा तालियटेण वा—
पत्तेण वा पत्तभगेण वा—
साहाए वा साहा-भगेण वा—
पिहुणेण वा पिहुण-हत्थेण वा—
चेलेण वा चेल-कण्णेण वा—
हत्थेण वा मुहेण वा—
अप्पणो वा कायं बाहिर वा वि पोग्गलं

न फूमेज्जा न वीएज्जा—
अन्नं न फूमावेजा न वीआवेज्जा—
अन्नं फूमंतं वा वीयंत वा न समणुजाणेज्जा—
जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं
मणेणं वायाए काएणं
न करेमि न कारवेमि
करंतं-पि अन्नं न समणुजाणामि।
तस्स भंते!
पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि—
अप्पाणं वोसिरामि ॥४॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा
संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय पावकम्मे—

दिआ वा राओ वा
एगओ वा परिसा-गओ वा
सुत्ते वा जागरमाणे वा

से बीएसु वा बीय-पइट्ठेसु वा–
रूढेसु वा रूढ-पइट्ठेसु वा–
जाएसु वा जाय-पइट्ठेसु वा–
हरिएसु वा हरिय-पइट्ठेसु वा–
छिन्नेसु वा छिन्न-पइट्ठेसु वा–

सचित्तेसु वा सचित्त-कोल-पडि-निस्सिएसु वा
न गच्छेज्जा न चिट्ठेज्जा न निसीएज्जा न तुयट्टेज्जा–
अन्नं न गच्छावेज्जा न चिट्ठावेज्जा–
न निसीयावेज्जा न तुयट्टावेज्जा–
अन्नं गच्छंतं वा चिट्ठंतं वा–
निसीयंतं वा तुयट्टंतं वा न समणुजाणेज्जा
जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं–
मणेणं वायाए काएणं–
न करेमि न कारवेमि–
करंतं-पि अन्नं न समणुजाणामि–
तस्स भंते !
पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि–
अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा–
संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे–
दिआ वा राओ वा–
एगओ वा परिसा-गओ वा–
सुत्ते वा जागर माणे वा–
से कीड़ वा पयगं वा कुंथु वा पिवीलियं वा–
हत्थंसि वा पायंसि वा बाहुंसि वा–
उरुंसि वा उदरंसि वा सोसंसि वा–
वत्थंसि वा पड़िग्गहंसि वा कंबलगंसि वा
पाय-पुच्छणंसि वा रय-हरणंसि वा गुच्छगंसि वा
उडुगंसि वा दंडगंसि वा पीढगंसि वा
फलगंसि वा सेज्जंसि वा संथारगंसि वा
अन्नयरंसि वा तहप्पगारे उवगरणजाए–
तओ संजयामेव–
पड़िलेहिय पड़िलेहिय पमज्जिय पमज्जिय–
एगंतमवणेज्जा–
नो ण संघायमावजेज्जा ॥६॥

अजयं चरमाणो उ, पाण-भूयाइं हिंसई।
बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ १ ॥
अजयं चिट्ठमाणो उ, पाण-भूयाइं हिंसई।
बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ २ ॥

अजयं आसमाणो उ, पाण-भूयाइं हिंसई।
बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ ३ ॥

अजयं सयमाणो उ, पाण-भूयाइं हिंसई।
बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ ४ ॥

अजयं भुंजमाणो उ, पाण-भूयाइं हिंसई।
बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ ५ ॥

अजयं भासमाणो उ, पाण-भूयाइं हिंसई।
बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ ६ ॥

कहं चरे? कहं चिट्ठे?, कहमासे? कहं सए?
कहं भुंजंतो भासंतो, पाव-कम्मं न बंधइ?॥७॥

जयं चरे, जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सए।
जयं भुंजंतो भासंतो, पाव-कम्मं न बंधइ ॥ ८ ॥

सव्वभूयप्पभूयस्स, सम्मं भूयाइं पासओ।
पिहियासवस्स दंतस्स, पाव-कम्मं न बंधइ ॥ ९ ॥

पढमं नाणं तओ दया, एवं चिट्ठइ सव्वसंजए।
अन्नाणी किं काही, किं वा नाहिइ सेय-पावगं ॥१०॥

सोच्चा जाणइ कल्लाणं, सोच्चा जाणइ पावगं।
उभयं पि जाणइ सोच्चा, जं सेयं तं समायरे ॥११॥

जो जीवे वि न याणइ, अजीवे वि न याणइ।
जीवाजीवे अयाणंतो, कहं सो नाहीइ संजमं ॥१२॥

जो जीवे वि वियाणइ, अजीवे वि वियाणइ।
जीवाजीवे वियाणंतो, सो हु नाहीइ संजमं ॥१३॥

जया जीवमजीवे य, दो वि एए वियाणइ।
तया गइं बहुविहं, सव्वजीवाण जाणइ ॥१४॥

जया गइं बहुविहं, सव्वजीवाण जाणइ।
तया पुण्णं च पावं च, बंधं मोक्खं च जाणइ ॥१५॥

जया पुण्णं च पावं च, बंधं मोक्खं च जाणइ।
तया निव्विंदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे ॥१६॥

जया निव्विंदए भोए, जो दिव्वे जे य माणुसे।
तया चयइ संजोगं, सब्भिंतर-बाहिरं ॥१७॥

तया चयइ संजोगं, सब्भिंतर-बाहिरं।
तया मुंडे भवित्ताणं, पव्वइए अणगारियं ॥१८॥

जया मुंडे भवित्ताणं, पव्वइए अणगारियं।
तया संवरमुक्किट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं ॥१९॥

जया संवरमुक्किट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं।
तया धुणइ कम्मरयं, अबोहिकलुसं कडं ॥२०॥

जया धुणइ कम्मरयं, अबोहिकलुसं कडं।
तया सव्वत्तगं नाणं, दंसणं चाभिगच्छइ ॥२१॥

जया सव्वत्तगं नाणं, दंसणं चाभिगच्छइ।
तया लोगमलोगं च, जिणो जाणइ केवली ॥२२॥

जया लोगमलोगं च, जिणो जाणइ केवली।
तया जोगे निरुंभित्ता, सेलेसिं पडिवज्जइ ॥२३॥

जया जोगे निरुंभित्ता, सेलेसिं पडिवज्जइ।
तया कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं गच्छइ नीरओ ॥२४॥

जया कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं गच्छइ नीरओ।
तया लोगमत्थयत्थो, सिद्धो हवइ सासओ ॥२५॥

सुहसायगस्स समणस्स, सायाउलगस्स निगामसाइस्स।
उच्छोलणापहोअस्स, 'दुलहा सुगई' तारिसगस्स ॥२६॥

तवोगुण-पहाणस्स, उज्जुमइ-खंति-संजमरयस्स।
परीसहे जिणंतस्स, 'सुलहा सुगइ' तारिसगस्स ॥२७॥

पच्छा वि ते पयाया, खिप्पं गच्छंति अमर-भवणाइं।
जेसिं पिओ तवो संजमो य, खंति य बंभचेरं च ॥२८॥

इच्चेयं छज्जीवणियं, सम्मद्दिट्ठी सया जए।
दुल्लहं लहित्तु सामण्णं, कम्मुणा न विराहिज्जासि ॥२९॥

॥त्ति बेमि॥

अह पिंडेसणा नामं पंचममज्झयणं

पढमो उद्देसो

संपत्ते भिक्खकालम्मि, असंभंतो अमुच्छिओ।
इमेण कमजोगेण, भत्तपाणं गवेसए॥ १॥

से गामे वा नयरे वा, गोयरग्गगओ मुणी।
चरे मंदमणुव्विग्गो, अव्वक्खित्तेण चेयसा॥ २॥

पुरओ जुगमायाए, पेहमाणो महिं चरे।
वज्जंतो बीय-हरियाइं, पाणे य दगमट्टियं॥ ३॥

ओवायं विसमं खाणुं, विज्जलं परिवज्जए।
संकमेण न गच्छेज्जा, विज्जमाणे परक्कमे॥ ४॥

पवडंते व से तत्थ, पक्खलंते व संजए।
हिंसेज्ज पाण-भूयाइं, तसे अदुव थावरे॥ ५॥

तम्हा तेण न गच्छेज्जा, संजए सुसमाहिए।
सइ अन्नेण मग्गेण, जयमेव परक्कमे॥ ६॥

इंगालं छारियं रासिं, तुसरासिं च गोमयं।
ससरक्खेहिं पाएहिं, संजओ तं नइक्कमे॥ ७॥

न चरेज्ज वासे वासंते, महियाए व पडंतिए।
महावाए व वायंते, तिरिच्छ-संपाइमेसु वा॥ ८॥

न चरेज्ज वेस-सामंते, बंभचेरवसाणुए।
बंभयारिस्स दंतस्स, होज्जा तत्थ विसोत्तिया ॥ ९ ॥

अणायणे चरंतस्स, संसग्गीए अभिक्खणं।
होज्ज वयाणं पीला, सामण्णम्मि य संसओ ॥१०॥

तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं।
वज्जए वेस-सामंतं, मुणी एगंतमस्सिए ॥११॥

साणं सूइयं गाविं, दित्तं गोणं हयं गयं।
संडिब्भं कलहं जुद्धं, दूरओ परिवज्जए ॥१२॥

अणुन्नए नावणए, अप्पहिट्ठे अणाउले।
इंदियाइं जहाभागं, दमइत्ता मुणी चरे ॥१३॥

दवदवस्स न गच्छेज्जा, भासमाणो य गोयरे।
हसंतो नाभिगच्छेज्जा, कुलं उच्चावयं सया ॥१४॥

आलोयं थिग्गलं दारं, संधिं दगभवणाणि य।
चरंतो न विनिज्झाए, संकट्ठाणं विवज्जए ॥१५॥

रन्नो गिहवईणं च, रहस्सारक्खियाण य।
संकिलेसकरं ठाणं, दूरओ परिवज्जए ॥१६॥

पडिकुट्ठ-कुलं न पविसे, मामगं परिवज्जए।
अचियत्त-कुलं न पविसे, चियत्तं पविसे कुलं ॥१७॥

साणीपावारपिहियं, अप्पणा नावपंगुरे।
कवाडं नो पणोल्लेज्जा, ओग्गहंसि अजाइया ॥१८॥

गोयरग्गपविट्ठो उ, वच्च-मुत्त न धारए।
ओगासं फासुयं नच्चा, अणुन्नविय वोसिरे ॥१९॥

नीयं दुवारं तमसं, कोट्ठगं परिवज्जए।
अचक्खुविसओ जत्थ, पाणा दुप्पडिलेहगा ॥२०॥

जत्थ पुप्फाइ बीयाइ, विप्पइण्णाइं कोट्ठए।
अहुणोवलित्तं उल्लं, दट्ठूण परिवज्जए ॥२१॥

एलगं दारगं साणं, वच्छगं वावि कोट्ठए।
उल्लंघिया न पविसे, विऊहित्ताण व संजए ॥२२॥

असंसत्तं पलोएज्जा, नाइदूरावलोयए।
उप्फुल्लं न विनिज्झाए, नियट्टिज्ज अयंपिरो ॥२३॥

अइभूमिं न गच्छेज्जा, गोयरग्गगओ मुणी।
कुलस्स भूमिं जाणित्ता, मियं-भूमिं परक्कमे ॥२४॥

तत्थेव पडिलेहिज्जा, भूमिभागं वियक्खणो।
सिणाणस्स य वच्चस्स, संलोगं परिवज्जए ॥२५॥

दगमट्टियआयाणं, बीयाणि हरियाणि य।
परिवज्जंतो चिट्ठेज्जा, सव्विदियसमाहिए ॥२६॥

तत्थ से चिट्ठमाणस्स, आहरे पाणभोयणं।
अकप्पियं न गेण्हिज्जा, पडिगाहेज्ज कप्पियं ॥२७॥

आहरंती सिया तत्थ, परिसाडेज्ज भोयणं।
दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥२८॥

समद्दमाणी पाणाणि, बीयाणि हरियाणि य।
असंजमकरिं नच्चा, तारिसं परिवज्जए ॥२९॥

साहट्टु निक्खिवित्ताणं, सचित्तं घट्टियाणि य।
तहेव समणट्ठाए, उदगं संपणोल्लिया ॥३०॥

ओगाहइत्ता चलइत्ता, आहरे पाणभोयणं।
दितिय पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥३१॥

पुरेकम्मेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥३२॥

एव उदउल्ले ससिणिद्धे, ससरक्खे मट्टियाऊसे।
हरियाले हिंगुलए, मणोसिला अंजणे लोणे ॥३३॥

गेरुय-वण्णिय-सेढिय, सोरट्ठिय-पिट्ठ-कुक्कुस-कए य।
उक्किट्ठमससट्ठे, ससट्ठे चेव बोद्धव्वे ॥३४॥

असंसट्ठेण हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
दिज्जमाणं न इच्छिज्जा, पच्छा-कम्मं जहिं भवे ॥३५॥

संसट्ठेण य हत्थेण, दव्वीए भायणेण वा।
दिज्जमाणं पडिच्छिज्जा, जं तत्थेसणियं भवे ॥३६॥

दोण्ह तु भुंजमाणाणं, एगो तत्थ निमंतए।
दिज्जमाणं न इच्छेज्जा, छंदं से पडिलेहए ॥३७॥

दोण्हं तु भुंजमाणाणं, दो वि तत्थ निमंतए।
दिज्जमाणं पडिच्छेज्जा, जं तत्थेसणियं भवे ॥३८॥

गुव्विणीए उवन्नत्थं, विविह पाणभोयणं।
भुंजमाणं विवज्जेज्जा, भुत्तसेसं पडिच्छए॥३९॥

सिया य समणट्ठाए, गुव्विणी कालमासिणी।
उट्ठिया वा निसीएज्जा, निसन्ना वा पुणुट्ठए॥४०॥

तं भवे भत्तपाण तु, संजयाण अकप्पियं।
दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं॥४१॥

थणग पिज्जमाणी, दारगं वा कुमारियं।
तं निक्खविअ रोअंतं, आहरे पाणभोयणं॥४२॥

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं॥४३॥

जं भवे भत्तपाण तु, कप्पाकप्पम्मि संकियं।
दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं॥४४॥

दगवारएण पिहियं, नीसाए पीढएण वा।
लोढेण वा वि लेवेण, सिलेसेण व केणइ॥४५॥

तं च उब्भिदिआ दिज्जा, समणट्ठाए व दावए।
दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं॥४६॥

असण पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा, दाणट्ठा पगडं इमं॥४७॥

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं॥४८॥

असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा, पुण्णट्ठा पगडं इमं ॥४९॥

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
दिंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥५०॥

असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा, वणिमट्ठा पगडं इमं ॥५१॥

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
दिंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥५२॥

असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा, समणट्ठा पगडं इमं ॥५३॥

तं भवे भत्तपाणं, तु संजयाण अकप्पियं।
दिंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥५४॥

उद्देसियं कीयगडं, पूईकम्मं च आहडं।
अज्झोयर पामिच्चं, मीसजायं च वज्जए ॥५५॥

उग्गमं से अ पुच्छेज्जा, कस्सट्ठा केण वा कडं।
सोच्चा निस्संकियं सुद्धं, पडिगाहेज्ज संजए ॥५६॥

असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
पुप्फेसु होज्ज उम्मीसं, बीएसु हरिएसु वा ॥५७॥

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
दिंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥५८॥

असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
उदगंमि होज्ज निक्खित्तं उत्तिंग-पणगेसु वा ॥५९॥

त भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥६०॥

असणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
तेउम्मि होज्ज निक्खित्तं, तं च संघट्टिया दए ॥६१॥

तं भवे भत्तपाणं तु, सजयाण अकप्पियं।
दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥६२॥

एवं उस्सक्किया ओसक्किया,उज्जालिया पज्जालिया निव्वाविया।
उस्सिंचिया निस्सिंचिया, ओवत्तिया ओयारिया दए ॥६३॥

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥६४॥

होज्ज कट्ठं सिलं वा वि, इट्टालं वा वि एगया।
ठवियं संकमट्ठाए, तं च होज्ज चलाचलं ॥६५॥

न तेण भिक्खू गच्छेज्जा, दिट्ठो तत्थ असजमो।
गंभीरं झुसिरं चेव, सव्विंदिय समाहिए ॥६६॥

निस्सेणिं फलगं पीढं, उस्सवित्ताणमारुहे।
मंचं कीलं च पासायं, समणट्ठाए व दावए ॥६७॥

दुरूहमाणी पवडेज्जा, हत्थ पायं व लूसए।
पुढविजीवे वि हिंसेज्जा, जे य त निस्सिया जगा ॥६८॥

एयारिसे महादोसे, जाणिऊण महेसिणो।
तम्हा मालोहडं भिक्खं, न पडिगिण्हंति संजया ॥६९॥

कंद मूल पलंब वा, आमं छिन्नं च सन्निरं।
तुंबाग सिंगबेरं च, आमगं परिवज्जए ॥७०॥

तहेव सत्तु-चुण्णाइ, कोल-चुण्णाइ आवणे।
सक्कुलिं फाणियं पूय, अन्नं वा वि तहाविहं ॥७१॥

विक्कायमाणं पसढं, रएण परिफासियं।
दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥७२॥

बहुअट्ठियं पुग्गलं, अणिमिसं वा बहुकंटयं।
अत्थियं तिंदुयं बिल्लं, उच्छुखंडं च सिंबलिं ॥७३॥

अप्पे सिया भोयणजाए, बहुउज्झियधम्मिए।
दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥७४॥

तहेवुच्चावयं पाणं, अदुवा वारधोअणं।
संसेइमं चाउलोदगं, अहुणाधोयं विवज्जए ॥७५॥

जं जाणेज्ज चिराधोयं, मईए दंसणेण वा।
पडिपुच्छिऊण सोच्चा वा, जं च निस्संकियं भवे ॥७६॥

अजीवं परिणयं नच्चा, पडिगाहेज्ज संजए।
अह संकियं भवेज्जा, आसाइत्ताण रोयए ॥७७॥

थोवमासायणट्ठाए, हत्थगम्मि दलाहि मे।
मा मे अच्चंबिलं पूइं, नालं तण्हं विणित्तए ॥७८॥

त च अच्चबिल पूइ, नाल तण्ह विणित्तए।
दितिय पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥७९॥

त च होज्ज अकामेण, विमणेण पडिच्छिय।
त अप्पणा न पिवे, नो वि अन्नस्स दावए ॥८०॥

एगतमवक्कमित्ता, अचित्त पडिलेहिया।
जय परिट्ठवेज्जा, परिट्ठप्प पडिक्कमे ॥८१॥

सिया य गोयरग्गगओ, इच्छेज्जा परिभोत्तुअ।
कोट्ठग भित्तिमूल वा, पडिलेहित्ताण फासुय ॥८२॥

अणुन्नवित्तु मेहावी, पडिच्छन्नम्मि सवुडे।
हत्थग सपमज्जित्ता, तत्थ भुजेज्ज सजए ॥८३॥

तत्थ से भुजमाणस्स, अट्ठिय कंटओ सिया।
तण-कट्ठ-सक्कर वा वि, अन्न वा वि तहाविह ॥८४॥

त उक्खिवित्तु न निक्खिवे, आसएण न छड्डुए।
हत्थेण त गहेऊण, एगतमवक्कमे ॥८५॥

एगतमवक्कमित्ता, अचित्त पडिलेहिया।
जय परिट्ठवेज्जा, परिट्ठप्प पडिक्कमे ॥८६॥

सिया य भिक्खू इच्छेज्जा, सेज्जमागम्म भोत्तुअ।
सपिडपायमागम्म, उडुअ पडिलेहिया ॥८७॥

विणएण पविसित्ता, सगासे गुरुणो मुणी।
इरियावहियमायाय, आगओ य पडिक्कमे ॥८८॥

आमोएत्ताण नीसेस, अइयारं जहक्कम।
गमणागमणे चेव, भत्तपाणे य सजए ॥८९॥

उज्जुप्पन्नो अणुव्विग्गो, अव्वक्खित्तेण चेयसा।
आलोए गुरुसगासे, ज जहा गहियं भवे ॥९०॥

न सम्ममालोइय होज्जा, पुव्वि पच्छा व ज कडं।
पुणो पडिक्कमे तस्स, वोसिट्ठो चिंतए इमं ॥९१॥

अहो जिणेहिअसावज्जा, वित्ती साहूण देसिया।
मोक्खसाहणहेउस्स, साहुदेहस्स धारणा ॥९२॥

नमोक्कारेण पारेत्ता, करेत्ता जिणसंथवं।
सज्झायं पट्ठवित्ताण, वीसमेज्ज खण मुणी ॥९३॥

वीसमंतो इम चिंते, हियमट्ठं लाभमट्ठिओ।
जइ मे अणुग्गहं कुज्जा, साहू होज्जामि तारिओ ॥९४॥

साहवो तो चियत्तेणं, निमतेज्ज जहक्कमं।
जइ तत्थ केइ इच्छेज्जा, तेहिं सद्धिं तु भुजए ॥९५॥

अह कोइ न इच्छेज्जा, तओ भुजेज्ज एक्कओ।
आलोए भायणे साहू, जय अपरिसाडिय ॥९६॥

तित्तगं व कडुयं व कसाय, अबिल व महुर लवण वा।
एयलद्धमन्नट्ठपउत्त, महु-घय व भुजेज्ज सजए ॥९७॥

अरस विरस वा वि, सूइय वा असूइय।
उल्लं वा जइ वा सुक्क, मंथुकुम्मासभोयणं ॥९८॥

उप्पन्नं नाइहीलेज्जा, अप्पं पि बहु फासुयं।
मुहालद्धं मुहाजीवी, भुंजिज्जा दोसवज्जियं ॥९९॥

दुल्लहा उ मुहादाई, मुहाजीवी वि दुल्लहा।
मुहादाई मुहाजीवी, दो वि गच्छंति सुग्गइं ॥१००॥

॥त्ति बेमि ॥

पंचममज्झयणे--बीओ उद्देसो

पडिग्गहं संलिहित्ताणं, लेवमायाए संजए।
दुगंधं वा सुगंधं वा, सव्वं भुंजे न छड्डए ॥ १ ॥

सेज्जा निसीहियाए, समावन्नो य गोयरे।
अयावयट्ठा भोच्चाणं, जइ तेण न संथरे ॥ २ ॥

तओ कारणमुप्पन्ने, भत्तपाणं गवेसए।
विहिणा पुव्वउत्तेण, इमेणं उत्तरेण य ॥ ३ ॥

कालेण निक्खमे भिक्खू, कालेण य पडिक्कमे।
अकालं च विवज्जित्ता, काले कालं समायरे ॥ ४ ॥

अकाले चरसि भिक्खू, कालं न पडिलेहसि।
अप्पाणं च किलामेसि, सन्निवेसं च गरिहसि ॥ ५ ॥

सइ काले चरे भिक्खू, कुज्जा पुरिसकारियं।
अलाभो त्ति न सोएज्जा, तवो त्ति अहियासए॥ ६॥

तहेवुच्चावया पाणा, भत्तट्ठाए समागया।
तं उज्जुयं न गच्छेज्जा, जयमेव परक्कमे॥ ७॥

गोयरग्गपविट्ठो उ, न निसीयज्ज कत्थइ।
कहं च न पबंधेज्जा, चिट्ठित्ताण व संजए॥ ८॥

अग्गलं फलिहं दारं, कवाडं वा वि संजए।
अवलंबिया न चिट्ठेज्जा, गोयरग्गगओ मुणी॥ ९॥

समणं माहणं वा वि, किविणं वा वणीमगं।
उवसंकमंतं भत्तट्ठा, पाणट्ठाए व संजए॥१०॥

तं अइक्कमित्तु न पविसे, न चिट्ठे चक्खुगोयरे।
एगंतमवक्कमित्ता, तत्थ चिट्ठेज्ज संजए॥११॥

वणीमगस्स वा तस्स, दायगस्सुभयस्स वा।
अप्पत्तियं सिया होज्जा, लहुत्तं पवयणस्स वा॥१२॥

पडिसेहिए व दिन्ने वा, तओ तम्मि नियत्तिए।
उवसंकमेज्ज भत्तट्ठा, पाणट्ठाए व संजए॥१३॥

उप्पलं पउमं वा वि, कुमुयं वा मगदंतियं।
अन्नं वा पुप्फसच्चित्तं, तं च संलुंचिया दए॥१४॥

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं॥१५॥

उप्पलं पउमं वा वि, कुमुयं वा मगदंतियं।
अन्नं वा पुप्फसचित्तं, तं च संमद्दिया दए ॥१६॥

तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं।
दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥१७॥

सालुयं वा विरालियं, कुमुय उप्पलनालियं।
मुणालियं सासवनालियं, उच्छुखंडं अनिव्वुडं ॥१८॥

तरुणगं वा पवालं, रुक्खस्स तणगस्स वा।
अन्नस्स वा वि हरियस्स, आमगं परिवज्जए ॥१९॥

तरुणियं वा छिवाडिं, आमियं भज्जियं सइं।
दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥२०॥

तहा कोलमणुस्सिन्नं, वेलुयं कासवनालियं।
तिलपप्पडगं नीमं, आमगं परिवज्जए ॥२१॥

तहेव चाउलं पिट्ठं, वियडं वा तत्तनिव्वुडं।
तिलपिट्ठ-पूइपिण्णागं, आमगं परिवज्जए ॥२२॥

कविट्ठं माउलिंगं च, मूलगं मूलगत्तियं।
आमं असत्थपरिणयं, मणसा वि न पत्थए ॥२३॥

तहेव फलमंथूणि, बीयमंथूणि जाणिया।
बिहेलगं पियालं च, आमगं परिवज्जए ॥२४॥

समुयाणं चरे भिक्खू, कुलं उच्चावयं सया।
नीयं कुलमइक्कम्म, ऊसढं नाभिधारए ॥२५॥

अदीणो वित्तिमेसेज्जा, न विसीएज्ज पंडिए।
अमुच्छिओ भोयणम्मि, मायन्ने एसणारए ॥२६॥

बहुं परघरे अत्थि, विविहं खाइमसाइमं।
न तत्थ पंडिओ कुप्पे, इच्छा देज्ज परो न वा ॥२७॥

सयणासणवत्थं वा, भत्त-पाणं व संजए।
अदितस्स न कुप्पेज्जा, पच्चक्खे वि य दीसओ ॥२८॥

इत्थियं पुरिसं वा वि, डहरं वा महल्लगं।
वंदमाणो न जाएज्जा, नो य णं फरुसं वए ॥२९॥

जे न वंदे न से कुप्पे, वंदिओ न समुक्कसे।
एवमन्नेसमाणस्स, सामण्णमणुचिट्ठइ ॥३०॥

सिया एगइओ लद्धुं, लोभेण विणिगूहइ।
मा मेयं दाइयं संतं, दट्ठूणं सयमायए ॥३१॥

अत्तट्ठ गुरुओ लुद्धो, बहुं पावं पकुव्वइ।
दुत्तोसओ य से होइ, निव्वाणं च न गच्छइ ॥३२॥
सिया एगइओ लद्धुं, विविहं पाणभोयणं।
भद्दगं भद्दगं भोच्चा, विवण्णं विरसमाहरे ॥३३॥
जाणंतु ता इमे समणा, आययट्ठी अयं मुणी।
संतुट्ठो सेवए पंतं, लूहवित्ती सुतोसओ ॥३४॥
पूयणट्ठी जसोकामी, माण-संमाणकामए।
बहुं पसवइ पावं, मायासल्लं च कुव्वइ ॥३५॥

सुरं वा मेरगं वा वि, अन्नं वा मज्जगं रसं।
ससक्खं न पिबे भिक्खू, जसं सारक्खमप्पणो ॥३६॥

पियइ एगओ तेणो, न मे कोई वियाणइ।
तस्स पस्सह दोसाइं, नियडिं च सुणेह मे ॥३७॥

वड्ढइ सोंडिया तस्स, मायामोसं च भिक्खुणो।
अयसो य अनिव्वाणं, सययं च असाहुया ॥३८॥

निच्चुव्विग्गो जहा तेणो, अत्तकम्मेहिं दुम्मई।
तारिसो मरणंते वि, नाराहेइ संवरं ॥३९॥

आयरिए नाराहेइ, समणे यावि तारिसे।
गिहत्था वि णं गरिहंति, जेण जाणंति तारिसं ॥४०॥

एवं तु अगुणप्पेही, गुणाणं च विवज्जओ।
तारिसो मरणंते वि, नाराहेइ संवरं ॥४१॥

तवं कुव्वइ मेहावी, पणीयं वज्जए रसं।
मज्ज-प्पमायविरओ, तवस्सी अइउक्कसो ॥४२॥

तस्स पस्सह कल्लाणं, अणेगसाहुपूइयं।
विउलं अत्थसंजुत्तं, कित्तइस्सं सुणेह मे ॥४३॥

एवं तु गुणप्पेही, अगुणाणं च विवज्जओ।
तारिसो मरणंते वि, आराहेइ संवरं ॥४४॥

आयरिए आराहेइ, समणे यावि तारिसे।
गिहत्था वि णं पूयंति, जेण जाणंति तारिसं ॥४५॥

तवतेणे वयतेणे, रूवतेणे य जे नरे।
आयारभावतेणे य, कुव्वइ देवकिब्बिसं ॥४६॥

लद्धूण वि देवत्तं, उववन्नो देवकिब्बिसे।
तत्था वि से न याणाइ, किं मे किच्चा इमं फलं ॥४७॥

तत्तो वि से चइत्ताणं, लब्भिही एलमूययं।
नरयं तिरिक्खजोणिं वा, बोही जत्थ सुदुल्लहा ॥४८॥

एयं च दोसं दट्ठूणं, नायपुत्तेण भासियं।
अणुमायं पि मेहावी, मायामोसं विवज्जए ॥४९॥

सिक्खिऊण भिक्खेसणसोहिं,
संजयाण बुद्धाण सगासे।
तत्थ भिक्खु सुप्पणिहिइंदिए,
तिव्वलज्जगुणवं-विहरेज्जासि ॥५०॥ त्ति बेमि ॥

अह महायार कहा नामं छट्ठमज्झयणं

(धम्मत्थकाम)

नाण-दसण-संपन्नं संजमे य तवे रयं।
गणिमागमसंपन्नं, उज्जाणम्मि समोसढं ॥ १ ॥

रायाणो रायमच्चा य, माहणा अदुव खत्तिया।
पुच्छंति निहुयप्पाणो, कहं मे आयारगोयरो ॥ २ ॥

तेसिं सो निहुओ दंतो, सव्वभूयसुहावहो।
सिक्खाए सुसमाउत्तो, आइक्खइ वियक्खणो ॥ ३ ॥

हंदि धम्मत्थकामाणं, निग्गंथाणं सुणेह मे।
आयारगोयरं भीमं, सयलं दुरहिट्ठियं ॥ ४ ॥

नन्नत्थ एरिसं वुत्तं, जं लोए परमदुच्चरं।
विउलट्ठाणभाइस्स, न भूयं न भविस्सइ ॥ ५ ॥

सखुड्डगवियत्ताणं वाहियाणं च जे गुणा।
अखंडफुडिया कायव्वा तं सुणेह जहा तहा ॥ ६ ॥

दस अट्ठ य ठाणाइं, जाइं बालोऽवरज्झइ।
तत्थ अण्णयरे ठाणे, निग्गंथत्ताओ भस्सइ ॥ ७ ॥

वयछक्कं,[6] कायछक्कं,[12] अकप्पो[13] गिहिभायणं[14]।
पलियंक[15] निसेज्जा[16] य, सिणाणं[17] सोहवज्जणं[18] ॥ ८ ॥

(१) तत्थिमं पढमं ठाणं, महावीरेण देसियं।
अहिंसा निउणं दिट्ठा, सव्वभूएसु संजमो ॥ ९ ॥

जावंति लोए पाणा, तसा अदुव थावरा।
ते जाणमजाणं वा, न हणे नो वि घायए ॥१०॥

सव्वे जीवा वि इच्छंति, जीविउं न मरिज्जिउं।
तम्हा पाणवहं घोरं, निग्गंथा वज्जयंति णं ॥११॥

(२) अप्पणट्ठा परट्ठा वा, कोहा वा जइ वा भया।
हिंसगं न मुसं बूया, नो वि अन्नं वयावए ॥१२॥

मुसावाओ य लोगम्मि, सव्वसाहूहिं गरहिओ।
अविस्सासो य भूयाणं, तम्हा मोसं विवज्जए ॥१३॥

(३) चित्तमंतमचित्तं वा, अप्पं वा जइ वा बहुं।
दंतसोहणमेत्तं पि, ओग्गहंसि अजाइया ॥१४॥

तं अप्पणा न गेण्हंति, नो वि गिण्हावए परं।
अन्नं वा गिण्हमाणं पि, नाणुजाणंति संजया ॥१५॥

(४) अबंभचरियं घोरं, पमायं दुरहिट्ठियं।
नायरंति मुणी लोए, भेयाययणवज्जिणो ॥१६॥

मूलमेयमहम्मस्स, महादोससमुस्सयं।
तम्हा मेहुणसंसग्गं, निग्गंथा वज्जयंति णं ॥१७॥

(५) विडमुब्भेइमं लोणं, तेल्लं सप्पिं च फाणियं।
न ते सन्निहिमिच्छंति, नायपुत्त-वओरया ॥१८॥

लोहस्सेस अणुप्फासो, मन्ने अन्नयरामवि।
जे सिया सन्निहीकामे, गिही पव्वइए न से ॥१९॥

जं पि वत्थं व पायं वा, कंबलं पायपुंछणं।
तं पि संजमलज्जट्ठा, धारंति परिहरंति य ॥२०॥

न सो परिग्गहो वुत्तो, नायपुत्तेण ताइणा।
मुच्छा परिग्गहो वुत्तो, इइ वुत्तं महेसिणा ॥२१॥

सव्वत्थुवहिणा बुद्धा, संरक्खणपरिग्गहे।
अवि अप्पणो वि देहंमि, नायरंति ममाइयं ॥२२॥

(६) अहो निच्चं तवोकम्मं, सव्वबुद्धेहिं वण्णियं।
जा य लज्जासमा वित्ती, एगभत्तं च भोयणं ॥२३॥

संतिमे सुहुमा पाणा, तसा अदुव थावरा।
जाइं राओ अपासंतो, कहमेसणियं चरे ॥२४॥

उदउल्ल बीयसंसत्तं, पाणा निव्वडिया महिं।
दिआ ताइं विवज्जेज्जा, राओ तत्थ कहं चरे ॥२५॥

एयं च दोसं दट्ठूणं, नायपुत्तेण भासियं।
सव्वाहारं न भुंजंति; निग्गंथा राइभोयणं ॥२६॥

(१) पुढविकायं न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा।
तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिया ॥२७॥

पुढविकायं विहिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे ॥२८॥

तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं।
पुढविकायसमारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥२९॥

(२) आउकायं न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा।
तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिया ॥३०॥

आउकाय विहिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे ॥३१॥

तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं।
आउकायसमारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥३२॥

(३) जायतेयं न इच्छंति, पावगं जलइत्तए।
तिक्खमन्नयरं सत्थ, सव्वओ वि दुरासयं ॥३३॥

पाईणं पडिणं वा वि, उड्ढं अणुदिसामवि।
अहे दाहिणओ वा वि, दहे उत्तरओ वि य ॥३४॥

भूयाणमेसमाघाओ, हव्ववाहो न संसओ।
तं पईवपयावट्ठा, संजया किंचि नारभे ॥३५॥

तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं।
तेउकायसमारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥३६॥

अनिलस्स समारंभं, बुद्धा मन्नंति तारिसं।
सावज्जबहुल चेयं, नेयं ताईहिं सेवियं ॥३७॥

(४) तालियंटेण पत्तेण साहाविहुयणेण वा।
न ते वीइउमिच्छंति वीयावेऊण वा परं ॥३८॥

जं पि वत्थ व पायं वा कंबलं पायपुंछणं।
न ते वायमुईरंति, जयं परिहरंति य ॥३९॥

तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं।
वाउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥४०॥

(५) वणस्सइं न हिंसंति, मणसा वयस कायसा।
तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिया ॥४१॥

वणस्सइं विहिंसंतो हिंसइ उ तयस्सिए।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे ॥४२॥

तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
वणस्सइ-समारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥४३॥

(६-१२) तसकाय न हिंसंति, मणसा वयस कायसा ।
तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिया ॥४४॥

तसकायं विहिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए ।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे ॥४५॥

तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
तसकायसमारंभं, जावज्जीवाए वज्जए ॥४६॥

(१३) जाइं चत्तारिऽभोज्जाइं,इसिणाहारमाइणि ।
ताइं तु विवज्जंतो, संजमं अणुपालए ॥४७॥

पिंडं[1] सेज्जं[2] च वत्थं[3] च, चउत्थं पायमेव[4] य ।
अकप्पियं न इच्छेज्जा, पडिगाहेज्ज कप्पियं ॥४८॥

जे नियागं ममायंति, कीयमुद्देसियाहडं ।
वहं ते समणुजाणंति, इइ वुत्तं महेसिणा ॥४९॥

तम्हा असणपाणाइं, कीयमुद्देसियाहडं ।
वज्जयंति ठियप्पाणो, निग्गंथा धम्मजीविणो ॥५०॥

(१४) कंसेसु कंसपाएसु, कुंडमोएसु वा पुणो ।
भुंजंतो असणपाणाइं आयारा परिभस्सइ ॥५१॥

सीओदगसमारंभे, मत्तधोयणछड्डणे ।
जाइं छंणंति भूयाइं, दिट्ठो तत्थ असंजमो ॥५२॥

पच्छाकम्मं पुरेकम्मं, सिया तत्थ न कप्पइ ।
एयमट्ठं न भुंजंति, निग्गंथा गिहिभायणे ॥५३॥

(१५) आसंदीपलियंकेसु, मंचमासालएसु वा ।
अणायरियमज्जाणं, आसइत्तु सइत्तु वा ॥५४॥

नासंदीपलियंकेसु, न निसेज्जा न पीढए ।
निग्गंथाऽपडिलेहाए, बुद्धवुत्तमहिट्ठगा ॥५५॥

गंभीरविजया एए, पाणा दुप्पडिलेहगा ।
आसंदीपलियंको य, एयमट्ठं विवज्जिया ॥५६॥

(१६) गोयरग्गपविट्ठस्स, निसेज्जा जस्स कप्पइ ।
इमेरिसमणायारं, आवज्जइ अबोहियं ॥५७॥

विवत्ती बंभचेरस्स, पाणाणं च वहे वहो ।
वणीमगपडिग्घाओ, पडिकोहो अगारिणं ॥५८॥

अगुत्ती बंभचेरस्स, इत्थीओ वावि संकणं ।
कुसीलवड्ढणं ठाणं, दूरओ परिवज्जए ॥५९॥

तिण्हमन्नयरागस्स, निसेज्जा जस्स कप्पइ ।
जराए अभिभूयस्स[1] वाहियस्स[2] तवस्सिणो[3] ॥६०॥

(१७) वाहिओ वा अरोगी वा, सिणाणं जो उ पत्थए ।
वुक्कंतो होइ आयारो, जढो हवइ संजमो ॥६१॥

संतिमे सुहुमा पाणा, घसासु भिलगासु य ।
जे उ भिक्खू सिणायंतो, वीयडेण उप्पिलावए ॥६२॥

तम्हा ते न सिणायंति, सीएण उसिणेण वा।
जावज्जीवं वयं घोरं, असिणाणमहिट्ठगा ॥६३॥

सिणाण अदुवा कक्कं, लोद्धं पउमगाणि य।
गायस्सुवट्टणट्ठाए, नायरंति कयाइ वि ॥६४॥

(१८) नगिणस्स वा वि मुंडस्स, दीहरोमनहंसिणो।
मेहुणा उवसंतस्स, किं विभूसाए कारियं ॥६५॥

विभूसावत्तियं भिक्खू कम्मं बंधइ चिक्कणं।
संसारसायरे घोरे, जेणं पडइ दुरुत्तरे ॥६६॥

विभूसावत्तियं चेयं, बुद्धा मन्नंति तारिसं।
सावज्जं-बहुलं चेयं, नेयं ताईहिं सेवियं ॥६७॥

खवेंति अप्पाणममोहदंसिणो,
तवे रया संजमअज्जवे गुणे।
धुणंति पावाइं पुरेकडाइं,
नवाइ पावाइं न ते करेंति ॥६८॥

सओवसंता अममा अकिंचणा,
सविज्जविज्जाणुगया जसंसिणो।
उउप्पसन्ने विमले व चंदिमा,
सिद्धिं विमाणाइं उवेंति ताइणो ॥६९॥

॥ त्ति बेमि ॥

अह वक्कसुद्धी नामं सत्तममज्झयणं

चउण्हं खलु भासाणं, परिसंखाय पण्णवं।
दोण्हं तु विणयं सिक्खे, दो न भासेज्ज सव्वसो ॥ १ ॥

जा य सच्चा अवत्तव्वा, सच्चामोसा य जा मुसा।
जा य बुद्धेहिऽणाइण्णा, न तं भासेज्ज पन्नवं ॥ २ ॥

असच्चमोसं सच्चं च, अणवज्जमकक्कसं।
समुप्पेहमसंदिद्धं, गिरं भासेज्ज पन्नवं ॥ ३ ॥

एयं च अट्ठमन्नं वा, जं तु नामेइ सासयं।
स भासं सच्चमोसं पि, तं पि धीरो विवज्जए ॥ ४ ॥

वितहं पि तहामुत्तिं, जं गिरं भासए नरो।
तम्हा सो पुट्ठो पावेणं, किं पुण जो मुसं वए ॥ ५ ॥

तम्हा गच्छामो वक्खामो, अमुगं वा णे भविस्सइ।
अहं वा णं करिस्सामि, एसो वा णं करिस्सइ ॥ ६ ॥

एवमाइ उ जा भासा, एसकालम्मि संकिया।
संपयाईयमट्ठे वा, तं पि धीरो विवज्जए ॥ ७ ॥

अईयम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पन्नमणागए।
जमट्ठं तु न जाणेज्जा, एवमेयं ति नो वए ॥ ८ ॥

अईयम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पन्नमणागए।
जत्थ संका भवे जं तु, एवमेयं ति नो वए ॥ ९ ॥

अईयम्मि व कालम्मि, पच्चुप्पन्नमणागए।
निस्संकियं भवे जं तु, एवमेयं ति निद्दिसे ॥१०॥

तहेव फरुसा भासा, गुरुभूओवघाइणी।
सच्चा वि सा न वत्तव्वा, जओ पावस्स आगमो ॥११॥

तहेव काणं काणे त्ति, पंडगं पंडगे त्ति वा।
वाहियं वा वि रोगि त्ति, तेणं चोरे त्ति नो वए ॥१२॥

एएणन्नेण अट्ठेण, परो जेणुवहम्मइ।
आयारभावदोसन्नू, न तं भासेज्ज पन्नवं ॥१३॥

तहेव होले गोले त्ति, साणे वा वसुले त्ति य।
दमए दूहए वा वि, न तं भासेज्ज पन्नवं ॥१४॥

अज्जिए पज्जिए वा वि, अम्मो माउसिए त्ति य।
पिउसिए भाइणेज्ज त्ति, धुए नत्तुणिए त्ति य ॥१५॥

हले हले त्ति अन्ने त्ति, भट्टे सामिणि गोमिणि।
होले गोले वसुले त्ति, इत्थियं नेवमालवे ॥१६॥

नामधेज्जेण णं बूया, इत्थीगोत्तेण वा पुणो।
जहारिहमभिगिज्झ, आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥१७॥

अज्जए पज्जए वा वि, बप्पो चुल्लपिउ त्ति य।
माउलो भाइणेज्ज त्ति, पुत्ते नत्तुणिय त्ति य ॥१८॥

हे हो हले त्ति अन्ने त्ति, भट्टे सामिय गोमिय।
होले गोले वसुले त्ति, पुरिसं नेवमालवे ॥१९॥

नामधेज्जेण णं बूया, पुरिसगोत्तेण वा पुणो।
जहारिहमभिगिज्झ, आलवेज्ज लवेज्ज वा॥२०॥

पंचिंदियाणं पाणाणं, एस इत्थी अयं पुमं।
जाव णं न विजाणेज्जा, ताव जाइ त्ति आलवे॥२१॥

तहेव माणुसं पसुं, पक्खि वा वि सरीसवं।
थूले पमेइले वज्झे, पायमित्ति व नो वए॥२२॥

परिवूढत्ति ण बूया, बूया उवचिए त्ति य।
संजाए पीणिए वा वि, महाकाए त्ति आलवे॥२३॥

तहेव गाओ दोज्झाओ, दम्मा गोरहग त्ति य।
वाहिमा रहजोग्गत्ति, नेवं भासेज्ज पन्नवं॥२४॥

जुवं गवे त्ति णं बूया, धेणुं रसदय त्ति य।
रहस्से महल्लए वा वि, वए संवहणे त्ति य॥२५॥

तहेव गंतुमुज्जाणं, पव्वयाणि वणाणि य।
रुक्खा महल्ल पेहाए, नेवं भासेज्ज पन्नवं॥२६॥
अलं पासायखंभाणं, तोरणाण गिहाण य।
फलिहग्गलनावाणं, अलं उदगदोणिणं॥२७॥
पीढए चंगबेरे य, नंगले मइयं सिया।
जंतलट्ठी व नाभी वा, गंडिया व अलं सिया॥२८॥
आसणं सयणं जाणं, होज्जा वा किंचुवस्सए।
भूओवघाइणिं भासं, नेव भासेज्ज पन्नव॥२९॥

तहेव गंतुमुज्जाणं, पव्वयाणि वणाणि य।
रुक्खा महल्ल पेहाए, एवं भासेज्ज पन्नवं ॥३०॥

जाइमंता इमे रुक्खा, दीहवट्टा महालया।
पयायसाला विडिमा, वए दरिसणित्ति य ॥३१॥

तहा फलाइं पक्काइं, पायखज्जाइं नो वए।
वेलोइयाइं टालाइं, वेहिमाइं त्ति नो वए ॥३२॥

असंथडा इमे अंबा, बहुनिव्वडिमा फला।
वएज्ज बहुसंभूया, भूयरूवत्ति वा पुणो ॥३३॥

तहेवोसहीओ पक्काओ, नीलियाओ छवी इय।
लाइमा भज्जिमाओ त्ति, पिहुखज्जत्ति नो वए ॥३४॥

रूढा बहुसंभूया, थिरा ऊसढा वि य।
गब्भियाओ पसूयाओ, ससाराओ त्ति आलवे ॥३५॥

तहेव सखडिं नच्चा, किच्चं कज्ज त्ति नो वए।
तेणगं वा वि वज्झे त्ति, सुतित्थे त्ति य आवगा ॥३६॥

संखडिं संखडिं बूया, पणियट्ठत्ति तेणगं।
बहुसमाणि तित्थाणि आवगाणं वियागरे ॥३७॥

तहा नईओ पुण्णाओ, कायतिज्जत्ति नो वए।
नावाहिं तारिमाओ त्ति, पाणिपेज्जत्ति नो वए ॥३८॥

बहुवाहडा अगाहा, बहुसलिलुप्पिलोदगा।
बहुवित्थडोदगा यावि, एवं भासेज्ज पन्नवं ॥३९॥

तहेव सावज्जं जोग, परस्सट्ठाए निट्ठिय।
कीरमाणं ति वा नच्चा, सावज्जं नालवे मणी ॥४०॥

सुकडे त्ति सुपक्के त्ति, सुच्छिन्ने सुहडे मडे।
सुनिट्ठिए सुलट्ठे त्ति, मावज्ज वज्जए मुणी ॥४१॥

पयत्तपक्कत्ति व पक्कमालवे,
पयत्तछिन्नत्ति व छिन्नमालवे।

पयत्तलट्ठित्ति व कम्महेउयं,
पहारगाढत्ति व गाढमालवे ॥४२॥

सव्वुक्कसं परग्घं वा, अउल नत्थि एरिसं।
अविक्कियमवत्तव्वं, अवियत्तं चेव नो वए ॥४३॥

सव्वमेयं वइस्सामि, सव्वमेयं ति नो वए।
अणुवीइ सव्वं सव्वत्थ, एव भासेज्ज पन्नव ॥४४॥

सुक्कीयं वा सुविक्कीय, अकिज्ज किज्जमेव वा।
इमं गेण्ह इमं मुंच, पणियं नो वियागरे ॥४५॥

अप्पग्घे वा महग्घे वा, कए वा विक्कए वि वा।
पणियट्ठे समुप्पन्ने, अणवज्जं वियागरे ॥४६॥

तहेवासंजय धीरो, आस एहि करेहि वा।
सयं, चिट्ठ, वयाहि त्ति, नेव भासेज्ज पन्नव ॥४७॥

बहवे इमे असाहू, लोए वुच्चंति साहुणो।
न लवे असाहुं साहु त्ति, साहुं साहुत्ति आलवे ॥४८॥

नाण-दंसण-संपन्नं, संजमे य तवे रयं।
एवं गुणसमाउत्तं, संजयं साहुमालवे ॥४९॥

देवाण मणुयाण च तिरियाणं च वुग्गहे।
अमुयाणं जओ होउ, मा वा होउ त्ति नो वए ॥५०॥

वाओ वुट्ठं व सीउण्हं, खेमं धायं सिवं ति वा।
कया णु होज्जा एयाणि, मा वा होउ त्ति नो वए ॥५१॥

तहेव मेहं व नहं व माणवं,
न देव देव त्ति गिरं वएज्जा।
संमुच्छिए उन्नए वा पओए,
वएज्ज वा वुट्ठ बलाहय त्ति ॥५२॥

अंतलिक्ख त्ति णं बूया, गुज्झाणुचरिय त्ति य।
रिद्धिमंतं नरं दिस्स, रिद्धिमंत त्ति आलवे ॥५३॥

तहेव सावज्जणुमोयणी गिरा,
ओहारिणी जा य परोवघाइणी।
से कोह-लोह-भय-हास-माणओ,
न हासमाणो वि गिरं वएज्जा ॥५४॥

सुवक्कसुद्धिं समुपेहिया मुणी,
गिरं च दुट्ठं परिवज्जए सया।
मियं अदुट्ठं अणुवीए भासए,
सयाण मज्झे लहइ पसंसणं ॥५५॥

भासाए दोसे य गुणे य जाणिया,
तीसे य दुट्ठे परिवज्जए सया।
छसु संजए सामणिए सया जए,
वएज्ज बुद्धे हियमाणुलोमियं ॥५६॥
परिक्खभासी सुसमाहिइंदिए,
चउक्कसायावगए अणिस्सिए।
स निद्धुणे धुन्नमलं पुरेकड,
आराहए लोगमिणं तहा परं ॥५७॥ त्ति बेमि ॥

अह आयारपणिहि नामं अट्ठममज्झयण

आयारपणिहिं लद्धु, जहा कायव्व भिक्खुणा।
तं भे उदाहरिस्सामि, आणुपुव्वि सुणेह मे ॥ १ ॥
पुढवि-दग-अगणि-मारुअ, तणरुक्ख-सबीयगा।
तसा य पाणा जीव त्ति, इइ वुत्त महेसिणा ॥ २ ॥
तेसिं अच्छणजोएण, निच्चं होयव्वय सिया।
मणसा काय-वक्केण, एव भवइ संजए ॥ ३ ॥
पुढविं भित्तिं सिलं लेलुं, नेव भिंदे न संलिहे।
तिविहेण करणजोएण, संजए सुसमाहिए ॥ ४ ॥
सुद्धपुढवीए न निसीए, ससरक्खम्मि य आसणे।
पमज्जित्तु निसीएज्जा, जाइत्ता जस्स उग्गहं ॥ ५ ॥

सीओदग न सेवेज्जा सिलावुट्ठं हिमाणि य।
उसिणोदगं तत्तफासुयं, पडिगाहेज्ज संजए ॥ ६ ॥

उदउल्लं अप्पणो काय नेव पुछे न सलिहे।
सम्मुप्पेह तहाभूय, नो ण सघट्टए मुणी ॥ ७ ॥

इंगालं अगणिं अच्चि, अलाय वा सजोइयं।
न उजेज्जा न घट्टेज्जा,, नो ण निव्वावए मुणी ॥ ८ ॥

तालियंटेण पत्तेण, साहाए विहुणेण वा।
न वीएज्ज अप्पणो कायं, बाहिरं वा वि पोग्गल ॥ ९ ॥

तणरुक्खं न छिंदेज्जा, फल मूलं व कस्सइ।
आमगं विविहं बीयं, मणसा वि न पत्थए ॥१०॥

गणहेसु न चिट्ठेज्जा, बीएसु हरिएसु वा।
उदगंमि तहा निच्च उत्तिग-पणगेसु वा ॥११॥

तसे पाणे न हिंसेज्जा, वाया अदुव कम्मुणा।
उवरओ सव्वभूएसु, पासेज्ज विविह जगं ॥१२॥

अट्ठ सुहुमाइं पेहाए, जाइं जाणित्तु संजए।
दयाहिगारी भूएसु, आस चिट्ठ सएहि वा ॥१३॥

कयराइं अट्ठ सुहुमाइ ?, जाइ पुच्छेज्ज सजए।
इमाइं ताइं मेहावी, आइक्खेज्ज वियक्खणे ॥१४॥

सिणेहं[1] पुप्फसुहुमं[2] च, पाणु[3] त्तिगं[4] तहेव य।
पणगं[5] बीय[6] हरिय[7] च, अडसुहुम-च[8] अट्ठमं ॥१५॥

एवमेयाणि जाणित्ता, सव्वभावेण संजए।
अपमत्ते जए निच्चं, सव्विंदियसमाहिए ॥१६॥

धुवं च पडिलेहेज्जा, जोगसा पायकंबलं।
सेज्जमुच्चारभूमिं च, संथारं अदुवासणं ॥१७॥

उच्चारं पासवणं, खेलं सिंघाणजल्लियं।
फासुयं पडिलेहित्ता, परिट्ठावेज्ज संजए ॥१८॥

पविसित्तु परागारं, पाणट्ठा भोयणस्स वा।
जयं चिट्ठे मियं भासे, न य रूवेसु मणं करे ॥१९॥

बहुं सुणेइ कण्णेहिं, बहुं अच्छीहिं पेच्छइ।
न य दिट्ठं सुयं सव्वं, भिक्खू अक्खाउमरिहइ ॥२०॥

सुयं वा जइ वा दिट्ठं, न लविज्जोवघाइयं।
न य केण उवाएणं, गिहिजोगं समायरे ॥२१॥

निट्ठाणं रसनिज्जूढं, भद्दगं पावगं ति वा।
पुट्ठो वा वि अपुट्ठो वा, लाभालाभं न निद्दिसे ॥२२॥

न य भोयणम्मि गिद्धो, चरे उंछं अयंपिरो।
अफासुयं न भुंजेज्जा, कीयमुद्देसियाहडं ॥२३॥

सन्निहिं च न कुव्वेज्जा, अणुमायं पि संजए।
मुहाजीवी असंबद्धे, हवेज्ज जगनिस्सिए ॥२४॥

लूहवित्ती सुसंतुट्ठे, अप्पिच्छे सुहरे सिया।
आसुरत्तं न गच्छेज्जा, सोच्चा णं जिणसासणं ॥२५॥

कण्णसोक्खेहिं सद्देहिं, पेमं नाभिनिवेसए।
दारुणं कक्कसं फासं, काएण अहियासए ॥२६॥

खुहं पिवासं दुस्सेज्जं, सीउण्हं अरइं भयं।
अहियासे अव्वहिओ, देह-दुक्खं महाफलं ॥२७॥

अत्थंगयंमि आइच्चे, पुरत्था य अणुग्गए।
आहारमाइयं सव्वं, मणसा वि न पत्थए ॥२८॥

अतितिणे अचवले, अप्पभासी मियासणे।
हवेज्ज उयरे दंते, थोवं लद्धुं, न खिंसए ॥२९॥

न बाहिरं परिभवे, अत्ताणं न समुक्कसे।
सुयलाभे न मज्जेज्जा, जच्चा तवस्सिबुद्धिए ॥३०॥

से जाणमजाणं वा, कट्टु आहम्मियं पयं।
संवरे खिप्पमप्पाणं, बीयं तं न समायरे ॥३१॥

अणायारं परक्कम्म, नेव गूहे न निण्हवे।
सुई सया वियडभावे, असंसत्ते जिइंदिए ॥३२॥

अमोहं वयणं कुज्जा, आयरियस्स महप्पणो।
तं परिगिज्झ वायाए, कम्मुणा उववायए ॥३३॥

अधुवं जीवियं नच्चा, सिद्धिमग्गं वियाणिया।
विणियट्टेज्ज भोगेसु, आउं परिमियमप्पणो ॥३४॥

बलं थामं च पेहाए, सद्धामारोग्गमप्पणो।
खेत्तं कालं च विन्नाय, तहप्पाणं न जुंजए ॥३५॥

जरा जाव न पीलेइ, वाही जाव न वड्ढइ।
जाविंदिया न हायंति, ताव धम्मं समायरे ॥३६॥

कोहं माणं च मायं च, लोभं च पाववड्ढणं।
वमे चत्तारि दोसे उ, इच्छंतो हियमप्पणो ॥३७॥

कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ, लोहो सव्वविणासणो ॥३८॥

उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दवया जिणे।
मायं च उज्जुभावेण, लोभं संतोसओ जिणे ॥३९॥

कोहो य माणो य अणिग्गहीया,
माया य लोभो य पवड्ढमाणा।
चत्तारि एए कसिणा कसाया,
सिंचंति मूलाइं पुणब्भवस्स ॥४०॥

राइणिएसु विणयं पउंजे,
धुवसीलं सययं न हावइज्जा।
'कुम्मोव्व' अल्लीणपलीणगुत्तो,
परक्कमेज्जा तवसंजमम्मि ॥४१॥

निद्दं च न बहु मन्नेजा, सप्पहासं विवज्जए।
मिहो कहाहिं न रमे, सज्झायम्मि रओ सया ॥४२॥

जोगं च समणधम्मम्मि, जुंजे अणलसो धुवं।
जुत्तो य समणधम्मम्मि, अट्ठं लहइ अणुत्तरं ॥४३॥

इहलोग-पारत्त-हियं, जेण गच्छइ सोग्गइं।
बहुस्सुयं पज्जुवासेज्जा, पुच्छेज्जत्थविणिच्छयं ॥४४॥

हत्थं पायं च कायं च, पणिहाय जिइंदिए।
अल्लीणगुत्तो निसिए, सगासे गुरुणो मुणी ॥४५॥

न पक्खओ न पुरओ, नेव किच्चाण पिट्ठओ।
न य ऊरुं समासेज्जा, चिट्ठेज्जा गुरुणंतिए ॥४६॥

अपुच्छिओ न भासेज्जा, भासमाणस्स अंतरा।
पिट्ठिमंसं न खाएज्जा मायामोसं विवज्जए ॥४७॥

अप्पत्तियं जेण सिया, आसु कुप्पेज्ज वा परो।
सव्वसो तं न भासेज्ज, भासं अहियगामिणिं ॥४८॥

दिट्ठं मियं असंदिद्धं, पडिपुण्णं वियं जियं।
अयंपिरमणुव्विग्गं, भासं निसिर अत्तवं ॥४९॥

आयार-पन्नत्तिधरं, दिट्ठिवायमहिज्जगं।
वायविक्खलियं नच्चा, न तं उवहसे मुणी ॥५०॥

नक्खत्तं सुमिणं जोगं, निमित्तं मंतभेसजं।
गिहिणो तं न आइक्खे, भूयाहिगरणं पयं ॥५१॥

अन्नट्ठं पगडं लयणं, भएज्जा सयणासणं।
उच्चार-भूमिसंपन्नं, इत्थी-पसुविवज्जियं ॥५२॥

विवित्ता य भवे सेज्जा, नारिणं न लवे कहं।
गिहि-संथवं न कुज्जा, कुज्जा साहूहिं संथवं ॥५३॥

जहा कुक्कुड-पोयस्स, निच्चं कुललओ भयं।
एवं खु बंभयारिस्स, इत्थी-विग्गहओ भयं ॥५४॥

चित्तभित्तिं न निज्झाए, नारिं वा सुअलंकियं।
भक्खरं पिव दट्ठूणं, दिट्ठिं पडिसमाहरे ॥५५॥

हत्थ-पाय-पडिच्छिन्नं, कण्ण-नास-विकप्पियं।
अवि वाससइं नारिं, बंभयारी विवज्जए ॥५६॥

विभूसा इत्थिसंसग्गो, पणीय-रस-भोयणं।
नरस्स-त्तगवेसिस्स, 'विसं तालउडं जहा' ॥५७॥

अंग-पच्चंग-संठाणं, चारुल्लवियपेहियं।
इत्थीणं तं न निज्झाए, कामरागविवड्ढणं ॥५८॥

विसएसु मणुन्नेसु, पेमं नाभिनिवेसए।
अणिच्चं तेसिं विन्नाय, परिणामं पोग्गलाण य ॥५९॥

पोग्गलाण परिणामं, तेसिं नच्चा जहा तहा।
विणीय-तण्हो विहरे, सीईभूएण अप्पणा ॥६०॥

जाए सद्धाए निक्खंतो, परियायट्ठाणमुत्तमं।
तमेव अणुपालेज्जा, गुणे आयरियसम्मए ॥६१॥

तवं चिमं संजमजोगयं च,
सज्झायजोगं च सया अहिट्ठए।
'सूरे व सेणाए' समत्तमाउहे
अलमप्पणो होइ अलं परेसिं ॥६२॥

सज्झाय-सज्झाणरयस्स ताइणो,
अपावभावस्स तवे रयस्स।
विसुज्झई जंसि मलं पुरेकडं,
'समीरियं रुप्पमलं व जोइणा' ॥६३॥

से तारिसे दुक्खसहे जिइंदिए,
सुएण जुत्ते अममे अकिंचणे।
विरायई कम्मघणम्मि व अवगए,
कसिणब्भ-पुडावगमेव चंदिमे ॥६४॥

॥त्ति बेमि॥

अह विणयसमाही नामं णवममज्झयणं

(पढमो उद्देसो)

थंभा व कोहा व मयप्पमाया,
गुरुस्सगासे विणयं न सिक्खे।
सो चेव उ तस्स अभूइभावो,
'फलं व कीयस्स वहाय होइ' ॥ १ ॥

जे यावि मंदित्ति गुरुं विइत्ता,
डहरे इमे अप्पसुए त्ति नच्चा।

हीलंति मिच्छं पडिवज्जमाणा,
करंति आसायण ते गुरूणं ॥ २ ॥

पगईए मंदा वि भवंति एगे,
डहरा वि य जे सुयवुद्धोववेया।
आयारमंता गुणसुट्ठियप्पा,
जे हीलिया 'सिहिरिव भास कुज्जा' ॥ ३ ॥

जे यावि 'नाग डहरं ति' नच्चा,
आसायए से अहियाय होइ।
एवायरियं पि हु हिलयंतो,
नियच्छइ जाइपहं खु मंदे ॥ ४ ॥

'आसिविसो वा वि परं सुरुट्ठो,'
किं जीवनासाउ परं नु कुज्जा।
आयरियपाया पुण अप्पसन्ना,
अबोहि-आसायण नत्थि मोक्खो ॥ ५ ॥

जो पावगं जलियमवक्कमेज्जा,
असीविसं वा वि हु कोवएज्जा।
जो वा विसं खायइ जीवियट्ठी,
एसोवमाऽऽसायणया गुरूणं ॥ ६ ॥

सिया हु से पावय नो डहेज्जा,
आसिविसो वा कुविओ न भक्खे।

सिया विसं हालहलं न मारे,
न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए ॥ ७ ॥

जो पव्वयं सिरसा भेत्तुमिच्छे,
सुत्तं व सीहं पडिबोहएज्जा ।

जो वा दए सत्तिअग्गे पहारं,
एसोवमाऽऽसायणया गुरूणं ॥ ८ ॥

सिया हु सीसेण गिरिं पि भिंदे,
सिया हु सीहो कुविओ न भक्खे ।

सिया न भिंदेज्ज व सत्तिअग्गं,
न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए ॥ ९ ॥

आयरियपाया पुण अप्पसन्ना,
अबोहि-आसायण नत्थि मोक्खो ।

तम्हा अणाबाह-सुहाभिकंखी,
गुरुप्पसायाभिमुहो रमेज्जा ॥१०॥

जहाहियग्गी जलणं नमंसे,
नाणा-हुई-मंत-पयाभिसित्तं ।

एवायरियं उवचिट्ठएज्जा,
अणंत-नाणोवगओवि संतो ॥११॥

जस्संतिए धम्मपयाइं सिक्खे,
तस्संतिए वेणइयं पउंजे ।

सक्कारए सिरसा पंजलीओ,
कायग्गिरा भो मणसा य निच्चं ॥१२॥

लज्जा—दया—संजम—बंभचेरं,
कल्लाणभागिस्स विसोहिठाणं ।
जे मे गुरू सययमणुसासयंति,
ते हं गुरु सययं पूययामि ॥१३॥

'जहा निसंते तवणच्चिमाली',
पभासइ केवल-भारहं तु ।
एवायरिओ सुय-सील-बुद्धिए,
विरायई 'सुर-मज्झे व इंदो' ॥१४॥

जहा ससी कोमुइजोगजुत्तो,
नक्खत्त-तारागण-परिवुडप्पा ।
खे सोहइ विमले अब्भमुक्के,
एवं गणी सोहइ भिक्खुमज्झे ॥१५॥

महागरा आयरिया महेसी,
समाहिजोगे सुय-सील-बुद्धिए ।
संपाविउकामे अणुत्तराइं,
आराहए तोसए धम्मकामी ॥१६॥

सोच्चाण मेहावि सुभासियाइं,
सुस्सूसए आयरियऽप्पमत्तो ।
आराहइत्ताण गुणे अणेगे,
सो पावई सिद्धिमणुत्तरं ॥१७॥

॥त्ति बेमि॥

—

णवममज्झयणे

(बीओ उद्देसो)

'मूलाओ खधप्पभवो दुमस्स,
खधाउ पच्छा समुवेति साहा।
साहप्पसाहा विरुहंति पत्ता,
तओ से पुप्फ च फल रसो य' ॥ १ ॥

एव धम्मस्स विणओ, मूल परमो से मोक्खो।
जेण कित्ति सुय सिग्घ, निस्सेसं चाभिगच्छइ ॥ २ ॥

जे य चडे मिए थद्धे, दुव्वाई नियडी सढे।
वुज्झइ से अविणीयप्पा, 'कट्ठ सोयगय जहा' ॥ ३ ॥

विणय पि जो उवाएण, चोइओ कुप्पइ नरो।
दिव्व सो सिरिमेज्जंति, दडेण पडिसेहए ॥ ४ ॥

तहेव अविणीयप्पा, उववज्झा हया गया।
दीसंति दुहमेहंता, आभिओगमुवट्ठिया ॥ ५ ॥

तहेव सुविणीयप्पा, उववज्झा हया गया।
दीसंति सुहमेहंता, इड्ढि पत्ता महायसा ॥ ६ ॥

तहेव अविणीयप्पा, लोगसि नरनारिओ।
दीसंति दुहमेहता, छाया ते विगलिंदिया ॥ ७ ॥

दंड-सत्थ-परिजुण्णा, असब्भ-वयणेहि य।
कलुणा विवन्नच्छंदा, खुप्पिवासाइपरिगया ॥ ८ ॥

तहेव सुविणीयप्पा, लोगंमि नरनारिओ।
दीसंति सुहमेहंता, इड्ढि पत्ता महायसा ॥ ९ ॥

तहेव अविणीयप्पा, देवा जक्खा य गुज्झगा।
दीसंति दुहमेहंता, आभियोगमुवट्ठिया ॥१०॥

तहेव सुविणीयप्पा, देवा जक्खा य गुज्झगा।
दीसंति सुहमेहंता, इड्ढिं पत्ता महायसा ॥११॥

जे आयरिय-उवज्झायाणं, सुस्सूसा वयणंकरा।
तेसिं सिक्खा पवड्ढंति, 'जलसित्ता इव पायवा' ॥१२॥

अप्पणट्ठा परट्ठा वा सिप्पा नेउणियाणि य।
गिहिणो उवभोगट्ठा, इहलोगस्स कारणा ॥१३॥

जेण बंधं वहं घोरं, परियावं च दारुणं।
सिक्खमाणा नियच्छंति, जुत्ता ते ललिइंदिया ॥१४॥

ते वि तं गुरु पूयंति, तस्स सिप्पस्स कारणा।
सक्कारंति णमंसंति, तुट्ठा निद्देस-वत्तिणो ॥१५॥

किं पुण जे सुयग्गाही, अणंतहियकामए।
आयरिया जं वए भिक्खू, तम्हा तं नाइवत्तए ॥१६॥

नीयं सेज्जं गइं ठाणं, नीयं च आसणाणि य।
नीयं च पाए वंदेज्जा, नीयं कुज्जा य अंजलिं ॥१७॥

संघट्टइत्ता काएणं, तहा उवहिणामवि।
खमेह अवराहं मे, वएज्ज न पुणो त्ति य ॥१८॥

'दुग्गओ वा पओएणं, चोइओ वहइ रहं।'
एवं दुबुद्धि किच्चाणं, वुत्तो वुत्तो पकुव्वइ ॥१९॥

आलवंते लवते वा, न निसेज्जाए पडिस्सुणे।
मोत्तूण आसणं धीरो, सुस्सूसाए पडिस्सुणे ॥२०॥

कालं छंदोवयारं च, पडिलेहित्ताण हेउहिं।
तेहिं तेहिं उवाएहिं, तं तं संपडिवायए ॥२१॥

विवत्ती अविणीयस्स, संपत्ती विणीयस्स य।
जस्सेयं दुहओ नायं, सिक्खं से अभिगच्छइ ॥२२॥

जे यावि चंडे मइ-इड्ढि-गारवे,
पिसुणे नरे साहसहीण-पेसणे।
अदिट्ठधम्मे विणए अकोविए,
असंविभागी न हु तस्स मोक्खो ॥२३॥

णिद्देसवत्ती पुण जे गुरूणं,
सुयत्थधम्मा विणयंमि कोविया।
तरित्तु ते ओहमिणं दुरुत्तरं,
खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गया ॥२४॥

॥त्ति बेमि॥

णवममज्झयणे

(तइओ उद्देसो)

आयरियग्गिमिवाहियग्गी,
सुस्सूसमाणो पडिजागरिज्जा।
आलोइय इंगियमेव नच्चा,
जो छंदमाराहयई स पुज्जो॥ १॥

आयारमट्ठा विणयं पउंजे,
सुस्सूसमाणो परिगिज्झ वक्कं।
जहोवइट्ठं अभिकंखमाणो,
गुरुं तु नासाययई स पुज्जो॥ २॥

राइणिएसु विणयं पउंजे,
डहरा वि य जे परियाय जिट्ठा।
नीयत्तणे वट्टइ सच्चवाई,
ओवायवं वक्ककरे स पुज्जो॥ ३॥

अन्नायउंछं चरई विसुद्धं,
जवणट्ठया समुयाणं च निच्चं।
अलद्धुयं नो परिदेवएज्जा,
लद्धुं न विकत्थई स पुज्जो॥ ४॥

संथार-सेज्जाऽऽसण-भत्त-पाणे,
अप्पिच्छया अइलाभे वि संते।

जो एवमप्पाणभित्तोसएज्जा,
सतोस—पाहन्न-रए स पुज्जो ॥ ५ ॥

सक्का सहेउ आसाइ कंटया,
अओमया उच्छहया नरेणं।
अणासए जो उ सहेज्ज कंटए,
वईमए कण्णसरे स पुज्जो ॥ ६ ॥

मुहुत्तदुक्खा उ हवंति कंटया,
अओमया ते वि तओ सुउद्धरा।
वायादुरुत्ताणि दुरुद्धराणि,
वेराणुबंधीणि महब्भया ण ॥ ७ ॥

समावयंता वयणाभिघाया,
कण्णं गया दुम्मणियं जणंति।
धम्मो त्ति किच्चा परमग्गसूरे,
जिइंदिए जो सहई स पुज्जो ॥ ८ ॥

अवण्णवायं च परंमुहस्स,
पच्चक्खओ पडिणीयं च भासं।
ओहारिणिं अप्पियकारिणिं च,
भासं न भासेज्ज सया स पुज्जो ॥ ९ ॥

अलोलुए अक्कुहए अमाई
अपिसुणे यावि अदीणवित्ती।

नो भावए नो वि य भावियप्पा,
अकोउहल्ले य सया स पुज्जो ॥१०॥

गुणेहि साहू, अगुणेहिऽसाहू,
गिण्हाहि साहू गुण मुंच साहू।
वियाणिया अप्पगमप्पएणं,
जो राग-दोसेहिं समो स पुज्जो ॥११॥

तहेव डहरं व महल्लगं वा,
इत्थी पुमं पव्वइयं गिहिं वा।
नो हीलए नो वि य खिंसएज्जा,
थंभं च कोहं च चए स पुज्जो ॥१२॥

जे माणिया सययं माणयंति,
'जत्तेण कन्नं व निवेसयंति'।
ते माणए माणरिहे तवस्सी,
जिइंदिए सच्चरए स पुज्जो ॥१३॥

तेसिं गुरूणं गुणसागराणं,
सोच्चाण मेहावि सुभासियाइं।
चरे मुणी पंच-रए तिगुत्तो,
चउक्कसायावगए स पुज्जो ॥१४॥

गुरुमिह सययं पडियरिय मुणी,
जिणवयनिउणे अभिगम-कुसले।
धुणिय रय-मलं पुरेकडं,
भासुरमउलं गइं गए ॥१५॥

॥त्ति बेमि॥

णवममज्झयणे

(चउत्थो उद्देसो)

सुयं मे आउसं !

तेणं भगवया एवमक्खाय–

इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता-
कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता?
इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता–
तंजहा–

१ विणयसमाही २ सुयसमाही ३ तवसमाही ४ आयारसमाही

विणए सुए तवे य, आयारे निच्च पंडिया ।
अभिरामयंति अप्पाणं, जे भवंति जिइंदिया ॥ १ ॥

चउव्विहा खलु विणयसमाही भवइ–

तं जहा–

१ अणुसासिज्जंतो सुस्सूसइ, २ सम्मं संपडिवज्जइ,
३ वेयमाराहयइ, ४ न य भवइ अत्तसंपग्गहिए ।

चउत्थं पयं भवइ–भवइ य एत्थ सिलोगो–

पेहेइ हियाणुसासणं, सुस्सूसइ तं च पुणो अहिट्ठए ।
न य माणमएण मज्जइ, विणयसमाही आययट्ठिए ॥ २ ॥

चउव्विहा खलु सुयसमाही भवइ–

तंजहा—

१ सुयं मे भविस्सइ त्ति अज्झाइयव्वं भवइ।

२ एगग्गचित्तो भविस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ।

३ अप्पाणं ठावइस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ।

४ ठिओ परं ठावइस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ।

चउत्थं पयं भवइ। भवइ य एत्थ सिलोगो—

नाणमेगग्गचित्तो य, ठिओ य ठावइ परं।
सुयाणि य अहिज्जित्ता, रओ सुयसमाहिए ॥ ३ ॥

चउव्विहा खलु तवसमाही भवइ।

तं जहा—

१ नो इहलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा।

२ नो परलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा।

३ नो कित्ति-वन्न-सद्द-सिलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा।

४ नन्नत्थ निज्जरट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा।

चउत्थं पयं भवइ—भवइ य एत्थ सिलोगो।

विविहगुणतवोरए य निच्चं, भवइ निरासए निज्जरट्ठिए।
तवसा धुणइ पुराणपावगं, जुत्तो सया तवसमाहिए ॥४॥

चउव्विहा खलु आयारसमाही भवइ।

तंजहा—

१ नो इहलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा।

२ नो परलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा ।

३ नो कित्ति-वण्ण-सद्द-सिलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा ।'

४ नन्नत्थ आरहंतेहिं हेउहिं आयारमहिट्ठेज्जा ।

चउत्थं पयं भवइ—भवइ य एत्थ सिलोगो—

जिणवयण-रए अंतितणे,
पडिपुण्णाययमाययट्ठिए ।
आयार—समाहि—संवुडे,
भवइ य दंते भावसंधए ॥ ५ ॥

अभिगम चउरो समाहिओ,
सुविसुद्धो सुसमाहियप्पओ ।
विउल-हियं सुहावहं पुणो,
कुव्वइ सो पयखेममप्पणो ॥ ६ ॥

जाइ-मरणाउ मुच्चइ,
इत्थत्थं च चएइ सव्वसो ।
सिद्धे वा भवइ सासए,
देवो वा अप्परए महिड्ढिए ॥ ७ ॥

॥त्ति बेमि ॥

अह सभिक्खू नामं दसममज्झयणं

निक्खम्ममाणाइ अ बुद्धवयणे,
णिच्चं चित्तसमाहिओ हवेज्जा।
इत्थीण वसं न यावि गच्छे,
वंतं नो पडियायइ, जे स भिक्खू ॥ १ ॥

पुढवि न खणे न खणावए,
सीओदगं न पिए न पियावए।
अगणिसत्थं जहा सुनिसियं,
त न जले न जलावए जे स भिक्खू ॥ २ ॥

अनिलेण न वीए न वीयावए,
हरियाणि न छिंदे न छिंदावए।
बीयाणि सया विवज्जयंतो,
सच्चित्तं नाहारए जे स भिक्खू ॥ ३ ॥

वहणं तस-थावराण होइ,
पुढवी-तण-कट्ठ-निस्सियाण ।
तम्हा उद्देसियं न भुंजे,
नो वि पए न पयावए जे स भिक्खू ॥ ४ ॥

रोइय- नायपुत्त-वयणे,
अप्पसमे मन्नेज्ज छप्पि काए।

पंच य फासे महव्वयाइं,
पंचासव-संवरए जे स भिक्खू ॥ ५ ॥

चत्तारि वमे सया कसाए,
धुवजोगी य हवेज्ज बुद्धवयणे।
अहणे निज्जायरूवरयए,
गिहिजोगं परिवज्जए जे स भिक्खू ॥ ६ ॥

सम्मद्दिट्ठी सया अमूढे,
अत्थि हु नाणे तव-संजमे य।
तवसा धुणइ पुराणपावगं,
मण-वय-कायसुसंवुडे जे स भिक्खू ॥ ७ ॥

तहेव असणं पाणगं वा,
विविहं खाइम-साइमं लभित्ता।
होही अट्ठो सुए परे वा,
तं न निहे न निहावए जे स भिक्खू ॥ ८ ॥

तहेव असणं पाणगं वा,
विविहं-खाइम-साइमं लभित्ता।
छंदिय साहम्मियाण भुंजे,
भोच्चा सज्झायरए य जे स भिक्खू ॥ ९ ॥

न य वुग्गहियं कहं कहिज्जा,
न य कुप्पे निहुइंदिए पसंते।

संजम-धुव-जोग-जुत्ते,
उवसते अविहेडए जे स भिक्खू ॥१०॥

जो सहइ हु गामकंटए,
अक्कोस-पहार-तज्जणाओ य।
भय-भेरव-सद्द-सप्पहासे,
समसुहदुक्खसहे य जे स भिक्खू ॥११॥

पडिमं पडिवज्जिया मसाणे,
नो भीयए भय-भेरवाइं दिस्स।
विविहगुण-तवोरए य निच्चं,
न सरीरं चाभिकंखए जे स भिक्खू ॥१२॥

असइं वोसट्ठ-चत्त-देहे,
अक्कुट्ठे व हए लूसिए वा।
पुढविसमे मुणी हवेज्जा,
अनियाणे अकोउहल्ले य जे स भिक्खू ॥१३॥

अभिभूय काएण परीसहाइं,
समुद्धरे जाइ-पहाउ अप्पयं।
विइत्तु जाई-मरणं महब्भयं,
तवे रए सामणिए जे स भिक्खू ॥१४॥

हत्थसंजए पायसंजए,
वायसंजए संजइंदिए।

अज्झप्परए सुसमाहियप्पा,
सुत्तत्थं च वियाणइ जे स भिक्खू ॥१५॥

उवहिम्मि अमुच्छिए अगिद्धे,
अन्नायउञ्छं पुलनिप्पुलाए।
कय-विक्कयसन्निहिओ विरए,
सव्वसंगावगए य जे स भिक्खू ॥१६॥

अलोल-भिक्खू न रसेसु गिद्धे,
उंछं चरे जीविय नाभिकंखे।
इड्ढिं च सक्कारण-पूयणं च,
चयइ ठियप्पा अणिहे जे स भिक्खू ॥१७॥

न परं वएज्जासि अयं कुसीले,
जेणऽन्नो कुप्पेज्ज न तं वएज्जा।
जाणिय पत्तेयं पुण्ण-पावं,
अत्ताणं न समुक्कसे जे स भिक्खू ॥१८॥

न जाइमत्ते न य रूवमत्ते,
न लाभमत्ते न सुएण मत्ते।
मयाणि सव्वाणि विवज्जयंतो,
धम्मज्झाणरए य जे स भिक्खू ॥१९॥

पवेयए अज्ज-पयं महामुणी,
धम्मे ठिओ ठावयइ परं पि।

निक्खम्म वज्जेज्ज कुसीललिंगं,
न यावि हास कुहए जे स भिक्खू ॥२०॥
त देहवास असुइ असासय,
सया चए निच्चहिय-ट्ठियप्पा ।
छिंदित्तु जाइ-मरणस्स बधण,
उवेइ भिक्खू अपुणागम गइ ॥२१॥
॥त्ति बेमि ॥

रइवक्का णामा पढमा चूलिया

इह खलु भो !

पव्वइएणं उप्पन्नदुक्खेण सजमे अरइसमावन्नचित्तेणं
ओहाणुप्पेहिणा अणोहाइएण चेव—
हयरस्सि-गयकुसपोयपडागा-भूमाइ—
इमाइ अट्ठारस ठाणाइ सम्मं सपडिलेहियव्वाइ भवति ।
त जहा—

ह भो ! दुस्समाए दुप्पजीवी ॥ १ ॥

लहुस्सगा इत्तरिया गिहीण कामभोगा ॥ २ ॥

भुज्जो असाय-बहुला मणुस्सा ॥ ३ ॥

इम च मे दुक्खं न चिरकालोवट्ठाइ भविस्सइ ॥ ४ ॥

ओमजणपुरक्कारे ॥ ५ ॥

वंतस्स य पडिआयणं ॥ ६ ॥

अहरगइ-वासोवसंपया ॥ ७ ॥

दुल्लहे खलु भो ! गिहीणं धम्मे गिहिवासमज्झे वसंताणं ॥ ८ ॥

आयंके से वहाय होइ ॥ ९ ॥

संकप्पे से वहाय होइ ॥१०॥

सोवक्केसे गिहिवासे निरुवक्केसे परियाए ॥११॥

बंधे गिहिवासे मोक्खे परियाए ॥१२॥

सावज्जे गिहिवासे अणवज्जे परियाए ॥१३॥

बहुसाहारण गिहीण कामभोगा ॥१४॥

पत्तेयं पुण्णपाव ॥१५॥

अणिच्चे खलु भो !

मणुयाण जीविए कुसग्गजलबिंदुचचले ॥१६॥

बहुं च खलु भो ! पाव कम्मं पगड ॥१७॥

पावाण च खलु भो !

कडाणं कम्माण पुव्वि दुच्चिण्णाण दुप्पडिक्कंताणं-
वेयइत्ता मोक्खो, नत्थि अवेइयत्ता, तवसा वा झोसइत्ता ।
अठारसम पयं भवइ ॥१८॥ भवइ य एत्थ सिलोगो-

जया य चयइ धम्मं, अणज्जो भोगकारणा ।
से तत्थ मुच्छिए बाले, आयइं नावबुज्झइ ॥ १ ॥

जया ओहाविओ होइ, इंदो वा पडिओ छमं।
सव्व-धम्म-परिब्भट्ठो, स पच्छा परितप्पइ॥ २॥

जया य वंदिमो होइ, पच्छा होइ अवंदिमो।
देवया व चुआ ठाणा, स पच्छा परितप्पइ॥ ३॥

जया य पूइमो होइ, पच्छा होइ अपूइमो।
राया व रज्जपब्भट्ठो, स पच्छा परितप्पइ॥ ४॥

जया य माणिमो होइ, पच्छा होइ अमाणिमो।
सेट्ठिव्व कब्बडे छूढो, स पच्छा परितप्पइ॥ ५॥

जया य थेरओ होइ, समइक्कंत-जोव्वणो।
मच्छोव्व गलं गिलित्ता, स पच्छा परितप्पइ॥ ६॥

जया य कुकुडंबस्स, कुतत्तीहिं विहम्मइ।
हत्थी व बंधणे बद्धो, स पच्छा परितप्पइ॥ ७॥

पुत्त-दार-परिकिण्णो, मोहसंताण-संतओ।
पंकोसन्नो जहा नागो, स पच्छा परितप्पइ॥ ८॥

अज्ज याहं गणी होंतो, भावियप्पा बहुस्सुओ।
जइऽहं रमंतो परियाए, सामण्णे जिणदेसिए॥ ९॥

देवलोगसमाणो उ, परियाओ महेसिणं।
रयाणं अरयाणं च, महानरय-सारिसो॥१०॥

अमरोवमं जाणिय सोक्खमुत्तमं,
रयाण परियाए तहाऽरयाणं।

निरयोवमं जाणिय दुक्खमुत्तमं,
रमेज्ज तम्हा परियाए पंडिए ॥११॥

धम्माउ भट्ठं सिरिओववेयं,
जन्नग्गि विज्झायमिवप्पतेयं।
हीलंति णं दुव्विहियं कुसीला,
दाढुड्ढियं घोरविसं व नागं ॥१२॥

इहेवऽधम्मो अयसो अकित्ती,
दुन्नामधेज्जं च पिहुज्जणम्मि।
चुयस्स धम्माओ अहम्मसेविणो,
संभिन्न-वित्तस्स य हेट्ठओ गई ॥१३॥

भुंजित्तु भोगाइं पसज्झ चेयसा,
तहाविहं कट्टु असंजमं बहुं।
गइं च गच्छे अणहिज्झियं दुहं,
बोही य से नो सुलभा पुणो पुणो ॥१४॥

इमस्स ता नेरइयस्स जंतुणो,
दुहोवणीयस्स किलेसवत्तिणो।
पलिओवमं झिज्झइ सागरोवमं,
किमंग पुण मज्झ इमं मणोदुहं ? ॥१५॥

न मे चिरं दुक्खमिणं भविस्सइ,
असासया भोगपिवास जंतुणो।

न चे सरीरेण इमेणऽवस्सइ,
अवस्सइ जीविय-पज्जवेण मे ॥१६॥

जस्सेवमप्पा उ हवेज्ज निच्छिओ,
चएज्ज देहं न उ धम्मसासणं।
तं तारिसं नो पयलेंति इंदिया,
उवेंतवाया व सुदंसणं गिरिं ॥१७॥

इच्चेव संपस्सिय बुद्धिमं नरो,
आयं उवायं विविहं वियाणिया।
काएण वाया अदु माणसेणं,
तिगुत्तिगुत्तो जिणवयणमहिट्ठिज्जासि ॥१८॥

॥ त्ति बेमि ॥

विवित्त-चरिआ णामा बीया चूलिया

चूलियं तु पवक्खामि, सुयं केवलिभासियं।
जं सुणित्तु सपुण्णाणं, धम्मे उप्पज्जए मई ॥ १ ॥

अणुसोयपट्ठिए बहुजणम्मि, पडिसोय-लद्धलक्खेणं।
पडिसोयमेव अप्पा, दायव्वो होउ कामेणं ॥ २ ॥

अणुसोयसुहो लोगो, पडिसोओ आसवो सुविहियाणं।
अणुसोओ संसारो, पडिसोओ तस्स उत्तारो ॥ ३ ॥

तम्हा आयारपरक्कमेण, संवरसमाहि-बहुलेणं।
चरिया गुणा य नियमा य, होंति साहूण दट्ठव्वा ।। ४ ।।

अणियए-वासो समुयाणचरिया,
अन्नायउंछ पइरिक्कया य।
अप्पोवही कलहविवज्जणा य,
विहारचरिया इसिण पसत्था ।। ५ ।।

आइण्ण-ओमाणविवज्जणा य,
ओसन्न–दिट्ठाहड–भत्तपाणे ।
संसट्ठकप्पेण चरेज्ज भिक्खू,
तज्जायसंसट्ठ जई जएज्जा ।। ६ ।।

अमज्जमंसासि अमच्छरीया,
अभिक्खणं निव्विगइं गया य।
अभिक्खण काउस्सग्गकारी,
सज्झायजोगे पयओ हवेज्जा ।। ७ ।।

न पडिन्नवेज्जा सयणासणाइं,
सेज्जं निसेज्जं तह भत्तपाणं।
गामे कुले वा नगरे व देसे,
ममत्तभावं न कहिंचि कुज्जा ।। ८ ।।

गिहिणो वेयावडियं न कुज्जा,
अभिवायणं वंदण-पूयणं वा।

असंकिलिट्ठेहि सम वसेज्जा,
मुणी चरित्तस्स जओ न हाणी ॥ ९ ॥

न वा लभेज्जा निउण सहायं,
गुणाहियं वा गुणओ समं वा।
एक्को वि पावाइं विवज्जयंतो,
विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥१०॥

सवच्छर वावि पर पमाणं,
बीयं च वासं न तहिं वसेज्जा।
सुत्तस्स मग्गेण चरेज्ज भिक्खू,
सुत्तस्स अत्थो जह आणवेइ ॥११॥

जो पुव्वरत्तावरत्तकाले,
सपेहइ अप्पगमप्पएणं।
किं मे कडं किं च मे किच्चसेसं,
किं सक्कणिज्जं न समायरामि ॥१२॥

किं मे परो पासइ किं च अप्पा,
किं वाहं खलियं न विवज्जयामि।
इच्चेव सम्मं अणुपासमाणो,
अणागयं नो पडिबंध कुज्जा ॥१३॥

जत्थेव पासे कइ दुप्पउत्तं,
काएण वाया अदु माणसेणं।

तत्थेव धीरो पडिसाहरेज्जा,
आजण्णओ खिप्पमिव क्खलीणं ॥१४॥

जस्सेरिसा जोग जिइंदियस्स
धिइमओ सप्पुरिसस्स निच्चं।
तमाहु लोए पडिबुद्धजीवी,
सो जीवइ संजमजीविएण ॥१५॥

अप्पा खलु सययं रक्खियव्वो,
सव्विंदिएहिं सुसमाहिएहिं।
अरक्खिओ जाइपहं उवेइ,
सुरक्खिओ सव्वदुहाण मुच्चइ ॥१६॥

॥ त्ति बेमि ॥

॥ मूल सुत्ताणि ॥

(२)

उत्तरज्झयणसुत्तं

(कालियं)

उत्तरज्झयरा-महत्तं

जे किर भव-सिद्धीया, परित्त-ससारिआय भविआय ।
ते किर पढंति धीरा, छत्तीस उत्तरज्झयणे ।।

जे हुंति अभव-सिद्धीया, गंथिअ-सत्ता अणत-ससारा ।
ते संकिलिट्ठ-कम्मा, अभविय उत्तरज्झाए ।।

—'जोग-विहीए वहिया, एए जो लहइ सुत्तमत्थं वा ।
भासेइ भविय-जणो, सो पावेइ निज्जरा बहुआ ।।

जस्सारद्धा एए, कहवि समत्तंति विग्घरहियस्स ।
सो लक्खिज्जइ भव्वो, पुव्वरिसी एव भासंति ।।

तम्हा जिण-पण्णत्ते, अणंत-गम-पज्जवेहि संजुत्ते ।
अज्झाए जहाजोगं, गुरुपसाया अहिज्झिया ।।

श्री भद्रबाहु निर्युक्ति—५५७, ५५८, (दीपिका १-२) ५५९ ।

नामकरणं–

कमउत्तरेण पगयं, आयारस्सेव उवरिमाइ तु।
तम्हा उ उत्तरा खलु, अज्झयणा हुंति णायव्वा॥

उद्धरणं–

अंगप्पभवा जिण,–भासिया य पत्तेयबुद्धसंवाया।
बंधे मुक्खे य कया, छत्तीस उत्तरज्झयणा॥

विसयनिद्देसो–

पढमे विणओ बीए, परीसहा दुल्लहंगया तइए।
अहिगारो य चउत्थे, होइ पमायप्पमाएत्ति॥
मरणविभत्ती पुण पचमम्मि, विज्जाचरणं च छट्ठ अज्झयणे।
रसगेही-परिच्चाओ, सत्तमे अट्ठम्मि अलाभे॥
निक्कंपया य नवमे, दसमे अणुसासणोवमा भणिया।
इक्कारसमे पूया, तवरिद्धी चेव बारसमे॥
तेरसमे य नियाण, अनियाणं चेव होइ चउदसमे।
भिक्खुगुणा पन्नरसे, सोलसमे बंभगुत्तीओ॥
पावाण-वज्जणा खलु, सत्तरसे भोगिड्ढिविजहणऽट्ठारे।
एगुणि अप्परिकम्मे, अणाहया चेव वीसइमे॥
चरिया य विचित्ता इक्कवीसि, बावीसिमे थिरं चरणं।
तेवीसइमे धम्मो, चउवीसइमे य समिइओ॥
बंभगुण पन्नवीसे, सामायारी य होइ छव्वीसे।
सत्तावीसे असढया, अट्ठावीसे य मुक्खगई॥
एगुणतीसे आवस्सगप्पमाओ, तवो अ होइ तीसइमे।
चरणं च इक्कतीसे, बत्तीसि पमायठाणाई॥
तेत्तीसइमे कम्मं, चउतीसइमे य हुंति लेसाओ।
भिक्खुगुणा पणतीसे, जीवाजीवा य छत्तीसे॥

श्री भद्रबाहु निर्युक्ति—३, ४, १८, १९, २०, २१, २२
२३, २४, २५, २६ ।

विषय-संबंध-निर्देशः—

प्रथमेऽध्ययने विनयस्य वर्णनम्। 'विनयो हि परीषह-महासैन्य-समर-समा-कुलितमनोभिरपि कदाऽपि नोल्लङ्घनीयः' इत्यनेन सम्बन्धेनायातं— द्वितीयं परीषहाध्ययनम्।

द्वितीयेऽध्ययने परीषह-सहन-वर्णनम्। परीषह-सहनं च मानुषत्वादि-चतुरंग-दुर्लभत्वं विज्ञायैव भवतीति सम्बन्धेनाऽऽयातं तृतीयं चतु-रंगीयमध्ययनम्।

तृतीयेऽध्ययने मानुषत्वादि चतुरंगदुर्लभत्वस्य वर्णनम्। 'दुर्लभानि मानुषत्वादि चतुरंगानि प्राप्य धीधनैःप्रमादो हेयोऽप्रमादश्चोपादेयः' इत्यनेन सम्बन्धेनायातं— चतुर्थं प्रमादाप्रमादनामकमध्ययनम्।

चतुर्थेऽध्ययने प्रमादाप्रमादहेयोपादेयवर्णनम्। प्रमादःसर्वदा सर्वथा हेयः, अप्रमादश्च मरणकालेऽपि विधेयः स च मरणविभागपरिज्ञानत एव भवति, ततो हि बालमरणादि हेयं हीयते पंडितमरणादि चोपादेय-मुपादीयते, तथा च तत्त्वतोऽप्रमत्तता जायते इत्यनेन सम्बन्धेनायातं—पंचममकाममरणीयमध्ययनम्।

पंचमेऽध्ययने बालमरणपरित्यागस्य पंडितमरणस्वीकृतेश्च वर्णनम्। पंडितमरण च विरतानामेव। न चैते विद्याचरणविकला इति तत् स्वरूपमनेनोच्यते—इत्यनेन सम्बन्धेनायातं—षष्ठं क्षुल्लकनिर्ग्रन्थी-यमध्ययनम्।

षष्ठेऽध्ययने निर्ग्रन्थत्वस्य वर्णनम्।

निर्ग्रन्थत्वं च रसगृद्धिपरिहारादेव जायते—स च विपक्षेऽपायदर्शनात् तच्च दृष्टान्तोपन्यासद्वारेणैव परिस्फुटं भवतीति रसगृद्धिदोषदर्शको-रभ्रादिदृष्टान्तप्रतिपादकं सप्तममुरभ्रीयमध्ययनम्।

सप्तमेऽध्ययने रसगृद्धेरपायबहुलत्वमभिधाय तत्त्यागस्य वर्णनम्। स च निर्लोभस्यैव भवतीति इह निर्लोभत्वमुच्यते, इत्यनेन सम्बन्धेनायातमष्टमं कापिलीयमध्ययनम्।

अष्टमेऽध्ययने निर्लोभत्वस्य वर्णनम्। निर्लोभिनश्च, इहैव देवेन्द्रादिपूजोपजायत इत्यनेन सम्बन्धेनायातं—नमिप्रव्रज्येति नवममध्ययनम्।

नवमेऽध्ययने धर्मचरणं प्रति निष्कम्पत्वस्य वर्णनम्। तच्चानुशासनादेव प्रायो भवति, न च तदुपमा विना स्पष्टमिति प्रथमतः उपमाद्वारेणानुशासनाभिधायकं—द्रुमपत्रकाभिधानं दशममध्ययनम्।

दशमेऽध्ययने, अप्रमादार्थमनुशासनस्य वर्णनम्, तच्च विवेकिनैव भावयितुं शक्यं विवेकश्च बहुश्रुत-पूजात उपजायत इति बहुश्रुत-पूजोच्यते—इत्यनेन सम्बन्धेनायातमेकादशमध्ययनम्।

एकादशेऽध्ययने बहुश्रुत-पूजाया वर्णनम्। बहुश्रुतेनापि तपसि यत्नो विधेय इति ख्यापनार्थं तपःसमृद्धिरुपवर्ण्यत इत्यनेन सम्बन्धेनायातं—हरिकेशीय द्वादशमध्ययनम्।

द्वादशेऽध्ययने तपसः समृद्धेर्वर्णनम्।

तपःसमृद्धि प्राप्तावपि निदानं परिहर्तव्यमिति दर्शयितु यथा तन्महापायहेतुस्तथा चित्तसभूतोदाहरणेन निदर्श्यत इत्यनेन सम्बन्धेनायात चित्तसंभूतीयं त्रयोदशमध्ययनम्।

त्रयोदशेऽध्ययने निदानदोषस्य वर्णनम्। प्रसङ्गतो निर्निदानतागुणस्यापि, अत्र तु मुख्यतः व एवोच्यते इत्यनेन सम्बन्धेनायातं चतुर्दशमिषुकारीयमध्ययनम्।

चतुर्दशेऽध्ययने निर्निदानतागुणवर्णना, सा च मुख्यतो भिक्षोरेव,

भिक्षुश्च गुणत इति तद्गुणा अनेनोच्यन्ते—इत्यनेन सम्बन्धेनायातं पंचदशं सभिक्षुकमध्ययनम् ।

पंचदशेऽध्ययने भिक्षुगुणानां वर्णनम् ।

भिक्षुगुणाश्च तत्त्वतो ब्रह्मचर्यव्यवस्थितस्यैव भवंति ब्रह्मचर्यं च ब्रह्मगुप्तिपरिज्ञानत् इति ब्रह्मचर्यसमाधय इहाभिधीयन्ते इत्यनेन सम्बन्धेनायातं षोडश ब्रह्मचर्यसमाधिनामकमध्ययनम् ।

षोडशेऽध्ययने ब्रह्मचर्यगुप्तीनां वर्णनम् ।

ब्रह्मचर्यगुप्तयश्च पापस्थानवर्जनादेवासेवितुं शक्यन्ते इति पापश्रमण-स्वरूपाभिधानतस्तदेवात्र काक्कोच्यत इत्यनेन सम्बन्धेनायातं सप्तदशं पापश्रमणीयमध्ययनम् ।

सप्तदशेऽध्ययने पापवर्जनस्य वर्णनम् ।

तच्च संयतस्यैव, स च भोगर्द्धित्यागत एवेति स एव संयतेरुदाहरणत इहोच्यत इत्यनेन सम्बन्धेनायातमष्टादशं संयतीयाख्यमध्ययनम् ।

अष्टादशेऽध्ययने भोगर्द्धित्यागवर्णनम् ।

भोगर्ध्दित्यागाच्च श्रामण्यमुपजायते तच्चाप्रतिकर्मतया प्रशस्यतरं भवतीत्यप्रतिकर्मतोच्यते—इत्यनेन सम्बन्धेनायातमेकोनविंशं मृगा-पुत्रीयमध्ययनम् ।

एकोनविंशेऽध्ययने निष्प्रतिकर्मताया वर्णनम् ।

निष्प्रतिकर्मता च अनाथत्वपरिभावनेनैव पालयितु शक्येति महा-निर्ग्रन्थहितमभिधातुमनाथत्वानेकधाऽनेनोच्यत इत्यनेन सम्बधेनायातं विंशतितमं-महानिर्ग्रन्थीयमध्ययनम् ।

विंशतितमेऽध्ययनेऽनाथत्व-वर्णनम् ।

अनाथत्वं च-आलोचनाद्विविक्तचर्यैव चरितव्यमित्यभिप्रायेण सैवोच्यत इत्यनेनाभिसम्बन्धेनायातमेकविंश समुद्रपालीयमध्ययनम् ।
एकविंशेऽध्ययने विविक्तचर्यावर्णनम् ।
विविक्तचर्या च चरणसहितेन धृतिमता चरण एव शक्यते कर्तुमतो रथनेमिवच्चरण तत्र च कथंचिदुत्पन्नविश्रोतसिकेनापि धृतिश्चाधेया इत्यनेन सम्बन्धेनायात द्वाविंश रथनेमीयमध्ययनम् ।
द्वाविंशेऽध्ययने कथंचिदुत्पन्नविश्रोतसिकेनापि रथनेमिविद् धृतिश्चरणे विधेयेतिवर्णनम् इह तु परेषामपि चित्तविप्लुतिमुपलभ्य केशिगौतमवत्तदपनयनाय यतितव्यमित्यभिप्रायेण यथा शिष्यसंशयोत्पत्तौ केशिपृष्टेन गौतमेन धर्मस्तदुपयोगि च लिंगादि वर्णितं तथा अनेनाभिधीयत इत्यमुना सम्बन्धेनायातं–
त्रयोविंशं केशिगौतमीयमध्ययनम् ।
त्रयोविंशेऽध्ययने परेषामपि चित्तविप्लुतिमुपलभ्य तदपनयनाय केशिगौतमवद्यतितव्यमितिवर्णनम् । इह तु तदपनयनं सम्यग्वाग्योगत एव, स च प्रवचन-मातृस्वरूपपरिज्ञानत इति तत्स्वरूपमुच्यत इत्यनेन सम्बन्धेनायातं–
चतुर्विंशतितमध्यनम् ।
चतुर्विंशेऽध्ययने प्रवचनमातृणा वर्णनम् । प्रवचनमातरश्च ब्रह्मगुणस्थितस्यैव तत्त्वतो भवन्तीति जयघोषचरितवर्णनाद्धारेण ब्रह्मगुणा उच्यन्त इत्यनेनाभिसम्बन्धेनायातं पञ्चविंशतितमं यज्ञीयाख्यमध्ययनम् ।
पंचविंशतितमेऽध्ययने ब्रह्मगुणानां वर्णनम् । ब्रह्मगुणवांश्च यतिरेव

तेन चावश्य समाचारी विधेयेति, साऽस्मिन्नभिधीयते—इत्यनेन सम्बन्धेनायातं—

षड्विंशतितम समाचारीतिनामकमध्ययनम् ।

षड्विंशतितमेऽध्ययने समाचारीवर्णनम् ।

समाचारी च अशठतयैव पालयितुं शक्या, तद्विपक्षभूतशठता-अज्ञान एव च तद्विवेकेनासौ ज्ञायत इत्याशयेन दृष्टान्ततः शठतास्वरूपनिरूपणद्वारेणाशठतंवानेनाभिधीयत इत्यनेन सम्बन्धेनायातं सप्तविंश खलुङ्कीयमध्ययनम् ।

सप्तविंशेऽध्ययने अशठतयैव समाचारी परिपालयितुं शक्यत—इति वर्णनम् । समाचारी व्यवस्थितस्य न्यायप्राप्तैव मोक्षमार्गगतिप्राप्तिरिति तदभिधायक—

मष्टाविंशतितम् मोक्षमार्गगत्याख्यमध्ययनम् ।

अष्टाविंशतितमेऽध्ययने ज्ञानादीनां मुक्तिमार्गत्वेन वर्णनम् ।

ज्ञानादीनि च संवेगादिमूलान्यकर्मताऽवसानानि च तथा भवन्तीति तानीहोच्यते यद्वा मोक्षमार्गगतेर्वर्णनम् ।

इस पुनरप्रमाद एव तत् प्रधानोपायो ज्ञानादीनामपि तत् पूर्वकत्वादिति, स एव वर्ण्यते ।

अथवा मुक्तिमार्गगतेर्वर्णनम् ।

सा च वीतरागपूर्विकेति यथा तद् भवति तथाऽनेनाभिधीयत इत्यनेन सम्बन्धेनायातमेकोनविंशं सम्यक्त्व पराक्रमसध्ययनम् ।

एकोनत्रिंशेऽध्ययने—अप्रमादवर्णनम् ।

अप्रमादवता तपोविधेयमिति तत्स्वरूपमुच्यते इत्यनेन सम्बन्धेनायात

त्रिंशं तपोमार्गगत्यध्ययनम् ।
त्रिंशेऽध्ययने तपसो वर्णनम् ।
तच्चरणवत एव सम्यग् भवतीति चरणमुच्यत इत्यनेन सम्बन्धेनायात-मेकत्रिंशत्तमंचरणाख्यमध्ययनम् ।
एकत्रिंशत्तमेऽध्ययने चरणस्य वर्णनम् ।
चरणं च प्रमादस्थानपरिहारत एवासेवितु शक्यं, तत्-परिहारश्च-तत्परिज्ञानपूर्वकमित्यनेन सम्बन्धेनायातं द्वात्रिंशं प्रमादस्थाननाम-कमध्ययनम् ।
द्वात्रिंशेऽध्ययने प्रमादस्थानानां वर्णनम् ।
प्रमादस्थानश्च मिथ्यात्वाविरतिप्रमादकषाययोगाबंधहेतवः' (तत्त्वा० अ० ८-सू० १) इति वचनात् कर्म वध्यते, तस्य च का प्रकृतयः, कियती वा स्थितिः ? इत्यादि सन्देहापनोदाय त्रयस्त्रिंशत्तमं कर्म-प्रकृतिरित्यध्ययनम् ।
त्रयस्त्रिंशत्तमेऽध्ययने कर्मप्रकृतीना वर्णनम् ।
कर्मस्थितिश्च लेश्यावशत इत्यतस्तदभिधानार्थं चतुस्त्रिंशं लेश्या-ख्यमध्ययनम् ।
चतुस्त्रिंशत्तमेऽध्ययने लेश्यावर्णनम् ।
लेश्याभिधानेचायमाशयः—अशुभानुभावलेश्या.परित्यज्यः शुभानु-भावा एव लेश्या अधिष्ठातव्या । एतच्च भिक्षुगुणव्यवस्थितेन स्थानुविधातुं शक्यं , तद् व्यवस्थान च तत् परिज्ञानत इति तदर्थ-मिदमारभ्यते, एतत्सम्बन्धागतं—
पञ्चत्रिंशत्तममनगारमार्गगतिरित्यध्ययनम् ।
पंचत्रिंशत्तमेऽध्ययने हिंसापरिवर्जनादिभिक्षुगुणानां वर्णनम् ।
भिक्षुगुणाश्च जीवाजीवस्वरूपपरिज्ञानत एवासेवितुं शक्यन्त इति तज्ज्ञापनार्थं षट्त्रिंशत्तमं जीवाजीवविभक्तिरित्यध्ययनम् ।
—श्री शान्तिसूरिकृतटीकाया आधारेण—सम्पादकः

॥ णमोऽत्थुणं तस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स ॥

उत्तरज्झयण-सुत्तं

अह विणयसुय नामं पढममज्झयणं

संजोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो।
विणयं पाउकरिस्सामि, आणुपुव्वि सुणेह मे॥ १॥

आणानिद्देसकरे, गुरूणमुववायकारए।
इंगियागारसंपन्ने, से 'विणीए' त्ति वुच्चइ॥ २॥

आणाऽनिद्देसकरे, गुरूणमणुववायकारए।
पडिणीए असंबुद्धे 'अवीणीए' त्ति वुच्चइ॥ ३॥

जहा सुणी[1] पूइकण्णी, निक्कसिज्जइ सव्वसो।
एवं दुस्सीलपडिणीए, मुहरी निक्कसिज्जइ॥ ४॥

कणकुण्डग चइत्ताण, विट्ठं भुंजइ सूयरे[2]।
एवं सील चइत्ताणं, दुस्सीले[3] रमइ मिए॥ ५॥

सुणिया भाव साणस्स,[1] सूयरस्स[2] नरस्स[3] य।
विणए ठवेज्ज अप्पाणं, इच्छतो हियमप्पणो॥ ६॥

तम्हा विणयमेसिज्जा, सील पडिलभे जओ।
बुद्धपुत्ते नियागट्ठी, न निक्कसिज्जइ कण्हुई॥ ७॥

निस्सते सियाऽमुहरी, बुद्धाण अंतिए सया।
अट्ठजुत्ताणि सिक्खिज्जा, निरट्ठाणि उ वज्जए ॥ ८ ॥

अणुसासिओ न कुप्पिज्जा, खंति सेविज्ज पंडिए।
खुड्डेहिं सह संसग्गिं, हासं कीड्डं च वज्जए ॥ ९ ॥

मा य चंडालियं कासी, बहुयं मा य आलवे।
कालेण य अहिज्जित्ता, तओ झाइज्ज एगगो ॥१०॥

आहच्च चंडालियं कट्टु, न निण्हविज्ज कयाइ वि।
कडं कडे त्ति भासेज्जा, अकडं नो कडे त्ति य ॥११॥

मा 'गलियस्सेव कसं', वयणमिच्छे पुणो पुणो।
'कसं व दट्ठुमाइण्णे' पावगं परिवज्जए ॥१२॥

अणासवा थूलवया कुसीला,
मिउंपि चंडं पकरंति सीसा।
चित्ताणुया लहु दक्खोववेया,
पसायए ते हु दुरासयंपि ॥१३॥

नापुट्ठो वागरे किंचि, पुट्ठो वा नालियं वए।
कोहं असच्चं कुव्वेज्जा, धारेज्जा पियमप्पियं ॥१४॥

अप्पा चेव दमेयव्वो, अप्पा हु खलु दुद्दमो।
अप्पा दंतो सुही होइ, अस्सिं लोए परत्थ य ॥१५॥
वरं मे अप्पा दंतो, संजमेण तवेण य।
माहं परेहिं दम्मंतो, बंधणेहिं-वहेहि य ॥१६॥

पडिणीयं च वुद्धाणं, वाया अदुव कम्मुणा।
आविवा जइ वा रहस्से, नेव कुज्जा कयाइ वि ॥१७॥

न पक्खओ न पुरओ, नेव किच्चाण पिट्ठओ।
न जुंजे ऊरुणा ऊरुं, सयणे नो पडिस्सुणे ॥१८॥

नेव पल्हत्थियं कुज्जा, पक्खपिड च संजए।
पाए पसारिए वावि, न चिट्ठे गुरुणंतिए ॥१९॥

आयरिएहिं वाहित्तो, तुसिणीओ न कयाइवि।
पसायपेही नियागट्ठी, उवचिट्ठे गुरुं सया ॥२०॥

आलवंते लवते वा, न निसीएज्ज कयाइ वि।
चइऊणमासणं धीरो, जओ जत्तं पडिस्सुणे ॥२१॥

आसणगओ न पुच्छेज्जा, नेव सेज्जागओ कयाइवि।
आगम्मुक्कडुओ संतो, पुच्छेज्जा पंजलीउडो ॥२२॥

एवं विणयजुत्तस्स, सुत्त अत्थं च तदुभय।
पुच्छमाणस्स सीसस्स, वागरिज्ज जहासुय ॥२३॥
मुसं परिहरे भिक्खू, न य ओहारिणिं वए।
भासादोसं परिहरे, मायं च वज्जए सया ॥२४॥

न लवेज्ज पुट्ठो सावज्जं, न निरट्ठं न मम्मयं।
अप्पणट्ठा परट्ठा वा, उभयस्सतरेण वा ॥२५॥
समरेसु अगारेसु, संधीसु य महापहे।
एगो एगित्थीए सद्धि, नेव चिट्ठे न संलवे ॥२६॥

जं मे बुद्धाऽणुसासंति, सीएण फरुसेण वा।
मम लाहो त्ति पेहाए, पयओ त पडिस्सुणे ।।२७।।

अणुसासणमोवाय, दुक्कडस्स य चोयणं।
हियं तं मण्णइ पण्णो, वेसं होइ असाहुणो ।।२८।।

हियं विगयभया बुद्धा, फरुसंपि अणुसासणं।
वेसं तं होइ मूढाण, खंतिसोहिकरं पयं ।।२९।।

आसणे उवचिट्ठेज्जा, अणुच्चेऽकुक्कुए थिरे।
अप्पुठ्ठाई निरुट्ठाई, निसीएज्जप्पकुक्कुए ।।३०।।

कालेण निक्खमे भिक्खू, कालेण य पडिक्कमे।
अकालं च विवज्जित्ता, काले कालं समायरे ।।३१।।

परिवाडीए नचिट्ठेज्जा, भिक्खू दत्तेसणं चरे।
पडिरूवेण एसित्ता, मियं कालेण भक्खए ।।३२।।

नाइदूरमणासन्ने, नऽन्नेसिं चक्खुफासओ।
एगो चिट्ठेज्ज भत्तट्ठा, लंघित्ता तं नऽइक्कमे ।।३३।।

नाइउच्चेव नीए वा, नासन्ने नाइदूरओ।
फासुयं परकडं पिंडं, पडिगाहेज्ज संजए ।।३४।।

अप्पपाणेऽप्पबीयम्मि, पडिच्छन्नम्मि संवुडे।
समयं संजए भुंजे, जयं अपरिसाडियं ।।३५।।

सुकडित्ति सुपक्कित्ति, सुच्छिन्ने सुहडे मडे।
सुणिट्ठिए सुलट्ठित्ति, सावज्जं वज्जए मुणी ।।३६।।

रमए पण्डिए सासं, 'हयं भद्दं व वाहए'।
बालं सम्मइ सासंतो, 'गलियस्सं व वाहए' ॥३७॥

खड्डुया मे चवेडा मे, अक्कोसा य वहा य मे।
कल्लाणमणुसासंतो, पावदिट्ठित्ति मन्नई ॥३८॥

पुत्तो मे भाय नाइ त्ति, साहू कल्लाण मन्नई।
पावदिट्ठि उ अप्पाणं, सासं दासि त्ति मन्नई ॥३९॥

न कोवए आयरियं, अप्पाणंपि न कोवए।
बुद्धोवघाई न सिया, न सिया तोत्त-गवेसए ॥४०॥

7363

आयरिय कुवियं नच्चा, पत्तिएण पसायए।
विज्झवेज्ज पंजलीउडो, वएज्ज न पुणो त्ति य ॥४१॥

धम्मज्जियं च ववहारं, बुद्धेहायरियं सया।
तमायरंतो ववहारं, गरहं नाभिगच्छइ ॥४२॥

मणोगयं वक्कगयं, जाणित्तायरियस्स उ।
तं परिगिज्झ वायाए, कम्मुणा उववायए ॥४३॥

वित्ते अचोइए निच्चं, खिप्पं हवइ सुचोइए।
जहोवइट्ठं सुकयं, किच्चाइं कुव्वई सया ॥४४॥

नच्चा नमइ मेहावी, लोए कित्ती से जाइए।
हवई किच्चाणं सरणं 'भूयाणं जगई जहा' ॥४५॥

पुज्जा जस्स पसीयंति, संबुद्धा पुव्वसंथुआ।
पसन्ना लाभइस्संति, विउलं अट्ठियं सुयं ॥४६॥

स पुज्जसत्थे सु' विणीयसंसए
मणोरुई चिट्ठई कम्मसंपया ।
तवो-समायारि-समाहिसंवुडे,
महज्जुई पंच वयाइं पालिया ॥४७॥

स देव-गंधव्व-मणुस्सपूइए, ।
चइत्तु देह मलपंकपुव्वयं ।
सिद्धे वा हवइ सासए,
देवे वा अप्परए महिड्ढीए ॥४८॥
॥ त्ति बेमि ॥

अह परिसह नामं दुइअमज्झयणं

सुयं मे आउसं !
तेणं भगवया एवमक्खायं–
इह खलु बावीसं परिसहा–
समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया ।
जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय–
भिक्खायरियाए परिव्वयंतो पुट्ठो नो विनिहणेज्जा ।
कयरे खलु ते बावीसं परीसहा–
समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया–

जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय--
भिक्खायरियाए परिव्वयंतो पुट्ठो नो विनिहन्नेज्जा ?
इमे खलु ते बावीस परीसहा--
समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेण पवेइया--
जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय--
भिक्खायरियाए परिव्वयतो पुट्ठो नो विनिहन्नेज्जा

त जहा—

दिगिंछापरीसहे १ पिवासापरीसहे २ सीयपरीसहे ३
उसिणपरीसहे ४ दसमसयपरीसहे ५ अचेलपरीसहे ६
अरइपरीसहे ७ इत्थीपरीसहे ८ चरियापरीसहे ९
निसीहिया परीसहे१० सेज्जापरीसहे११अक्कोसपरिसहे१२
वहपरीसहे १३ जायणापरीसहे १४ अलाभपरीसहे १५
रोगपरीसहे १६ तणफासपरीसहे १७ जल्लपरीसहे १८
सक्कारपुरक्कारपरीसहे १९ पन्नापरीसहे २०
अन्नाणपरीसहे २१ दंसणपरीसहे २२।

परीसहाणं पविभत्ती, कासवेण पवेइया।
तं भे उदाहरिस्सामि, आणुपुव्वि सुणेह मे॥ १॥

(१) दिगिंछापरिगए देहे, तवस्सी भिक्खू थामवं।
न छिंदे न छिंदावए, न पए न पयावए॥ २॥

कालीपव्वंग—संकासे, किसे धमणिसंतए ।
मायन्ने असण–पाणस्स, अदीण–मणसो चरे ॥ ३ ॥

(२) तओ पुट्ठो पिवासाए, दोगुच्छी लज्जसजए ।
सीओदग न सेविज्जा, वियडस्सेसणं चरे ॥ ४ ॥

छिन्नावाएसु पंथेसु, आउरे सुपिवासिए ।
परिसुक्कमुहाऽदीणे, त तितिक्खे परिसहं ॥ ५ ॥

(३) चरंतं विरय लूह, सीय फुसइ एगया ।
नाइवेलं मुणी गच्छे, सोच्चाण जिणसासणं ॥ ६ ॥

न मे निवारणं अत्थि, छवित्ताण न विज्जइ ।
अहं तु अग्गि सेवामि, इइ भिक्खू न चिंतए ॥ ७ ॥

(४) उसिणं परियावेण, परिदाहेण तज्जिए ।
घिसु वा परियावेण, साय नो परिदेवए ॥ ८ ॥

उण्हाहितत्तो मेहावी, सिणाण नो वि पत्थए ।
गाय नो परिसिंचेज्जा, न वीएज्जा य अप्पयं ॥ ९ ॥

(५) पुट्ठो य दसमसएहिं, समरे व महामुणी ।
नागो संगामसीसे वा, सूरो अभिहणे पर ॥१०॥

न संतसे न वारेज्जा, मणं पि न पओसए ।
उवेहे न हणे पाणे, भुजते मंससोणिय ॥११॥

(६) परिजुण्णेहि वत्थेहिं, होक्खामि त्ति अचेलए ।
अदुवा सचेले होक्खामि, इइ भिक्खू न चिंतए ॥१२॥

एगयाऽचेलए होइ, सचेले आवि एगया।
एयं धम्मं हियं नच्चा, नाणी नो परिदेवए ॥१३॥

(७) गामाणुगामं रीयंतं, अणगारं अकिंचणं।
अरई अणुप्पवेसेज्जा, तं तितिक्खे परीसहं ॥१४॥

अरइं पिट्ठओ किच्चा, विरए आयरक्खिए।
धम्मारामे निरारम्भे, उवसंते मुणी चरे ॥१५॥

(८) संगो एस मणूसाणं, जाओ लोगम्मि इत्थिओ।
जस्स एया परिन्नाया, सुकडं तस्स सामण्णं ॥१६॥

एवमादाय मेहावी, पंकभूया उ इत्थिओ।
नो ताहिं विणिहन्नेज्जा, चरेज्जत्तगवेसए ॥१७॥

(९) एग एव चरे लाढे, अभिभूय परीसहे।
गामे वा नगरे वावि, निगमे वा रायहाणिए ॥१८॥

असमाणे चरे भिक्खू, नेव कुज्जा परिग्गहं।
असंसत्तो गिहत्थेहिं, अणिएओ परिव्वए ॥१९॥

(१०) सुसाणे सुन्नगारे वा, रुक्खमूले व एगओ।
अकुक्कुओ निसीएज्जा, न य वित्तासए परं ॥२०॥

तत्थ से चिट्ठमाणस्स, उवसग्गाभिधारए।
संकाभीओ न गच्छेज्जा, उट्ठित्ता अन्नमासणं ॥२१॥

(११) उच्चावयाहिं सेज्जाहिं, तवस्सी भिक्खू थामवं।
नाइवेलं विहन्निज्जा, पावदिट्ठी विहन्नई ॥२२॥

पइरिक्कुवस्सयं लद्धुं, कल्लाणमदुवा पावयं।
किमेगराइं करिस्सइ, एवं तत्थऽहियासए ॥२३॥

(१२) अक्कोसेज्जा परे भिक्खु, न तेसिं पडिसंजले।
सरिसो होइ बालाणं, तम्हा भिक्खू न संजले ॥२४॥

सोच्चाणं फरुसा भासा, दारुणा गामकंटगा।
तुसिणीओ उवेहिज्जा, न ताओ मणसीकरे ॥२५॥

(१३) हओ न संजले भिक्खू मणंपि न पओसए।
तितिक्खं परमं नच्चा, भिक्खू धम्मं विचिंतए ॥२६॥

समणं संजयं दंतं,- हणिज्जा कोइ कत्थई।
नत्थि जीवस्स नासुत्ति, एवं पेहेज्ज, संजए ॥२७॥

(१४) दुक्करं खलु भो निच्चं, अणगारस्स भिक्खुणो।
सव्वं से जाइयं होइ, नत्थि किंचि अजाइयं ॥२८॥

गोयरग्गपविट्ठस्स पाणी नो सुप्पसारए।
सेओ अगारवासुत्ति, इइ भिक्खू न चिंतए ॥२९॥

(१५) परेसु घासमेसेज्जा, भोयणे परिणिट्ठिए।
लद्धे पिंडे अलद्धे वा, नाणुतप्पेज्ज पंडिए ॥३०॥

अज्जेवाहं न लब्भामि, अवि लाभो सुए सिया।
जो एवं पडिसचिक्खे, अलाभो तं न तज्जए ॥३१॥

(१६) नच्चा उप्पइय दुक्खं, वेयणाए दुहट्टिए।
अदीणो थावए पन्नं, पुट्ठो तत्थऽहियासए ॥३२॥

तेइच्छं नाभिनंदेज्जा, संचिक्खत्तगवेसए ।
एवं खु तस्स सामण्णं, जं न कुज्जा न कारवे ॥३३॥

(१७) अचेलगस्स लूहस्स, सजयस्स तवस्सिणो ।
तणेसु सयमाणस्स, हुज्जा गायविराहणा ॥३४॥

आयवस्स निवाएण, अउला हवइ वेयणा ।
एव नच्चा न सेसंति, तंतुजं तणतज्जिया ॥३५॥

(१८) किलिन्नगाए मेहावी, पंकेण व रएण वा ।
घिंसु वा परियावेण, सायं नो परिदेवए ॥३६॥

वेएज्ज निज्जरापेही, आरिय धम्मणुत्तर ।
जाव सरीरभेउत्ति, जल्ल काएण धारए ॥३७॥

(१९) अभिवायणमब्भुट्ठाणं, सामी कुज्जा निमंतणं ।
जे ताइं पडिसेवंति, न तेसिं पीहए मुणी ॥३८॥

अणुक्कसाई अप्पिच्छे अन्नाएसी अलोलुए ।
रसेसु नाणुगिज्झेज्जा, नाणुतप्पेज्ज पन्नव ॥३९॥

(२०) से नूणं मए पुव्वं, कम्माऽणाणफला कडा ।
जेणाहं नाभिजाणामि, पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥४०॥

अह पच्छा उइज्जंति, कम्माण्णाणफला कडा ।
एवमस्सासि अप्पाणं, नच्चा कम्मविवागयं ॥४१॥

(२१) निरट्ठगम्मि विरओ, मेहुणाओ सुसंवुडो ।
जो सक्खं नाभिजाणामि, धम्मं कल्लाणपावगं ॥४२॥

तवोवहाणमादाय, पडिमं पडिवज्जओ।
एवं पि विहरओ मे, छउमं न नियट्टइ ॥४३॥

(२२) नत्थि नूणं परे लोए, इड्ढी वा वि तवस्सिणो।
अदुवा वंचिओमित्ति, इइ भिक्खू न चिंतए ॥४४॥

अभू जिणा अत्थि जिणा, अदुवा वि भविस्सइ।
मुसं ते एवमाहंसु, इइ भिक्खू न चिंतए ॥४५॥

एए परीसहा सव्वे, कासवेण पवेइया।
जे भिक्खू न विहन्नेज्जा, पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥४६॥

॥ त्ति बेमि ॥

अह चाउरंगिज्जं नामं तइयमज्झयणं

चत्तारि परमंगाणि दुल्लहाणीह जंतुणो।
माणुसत्तं[1] सुई[2] सद्धा,[3] संजमम्मि य वीरियं[4] ॥ १ ॥

समावन्नाण संसारे, नाणागोत्तासु जाइसु।
कम्मा नाणाविहा कट्टु, पुढो विस्संभिया पया ॥ २ ॥

एगया देवलोएसु, नरएसु वि एगया।
एगया आसुरं कायं, अहाकम्मेहिं गच्छइ ॥ ३ ॥

एगया खत्तिओ होइ, तओ चंडाल-बुक्कसो।
तओ कीड-पयंगो य, तओ कुंथु-पिवीलिया ॥ ४ ॥

एवमावट्टजोणीसु, पाणिणो कम्मकिब्बिसा।
न निव्विज्जंति संसारे, सव्वट्ठेसु व खत्तिया।। ५ ।।

कम्मसंगेहिं सम्मूढा, दुक्खिया बहुवेयणा।
अमाणुसासु जोणीसु, विणिहम्मंति पाणिणो।। ६ ।।

कम्माण तु पहाणाए, आणुपुव्वी कयाइ उ।
जीवा सोहिमणुप्पत्ता, आययंति मणुस्सयं।। ७ ।।

माणुस्सं विग्गहं लद्धु, सुई धम्मस्स दुल्लहा।
जं सोच्चा पडिवज्जंति, तवं खंतिमहिंसयं।। ८ ।।

आहच्च सवणं लद्धुं, सद्धा परमदुल्लहा।
सोच्चा नेआउयं मग्गं, बहवे परिभस्सइ।। ९ ।।

सुइं च लद्धुं सद्धं च, वीरियं पुण दुल्लहं।
बहवे रोयमाणावि, नो य णं पडिवज्जए।।१०।।

माणुसत्तंमि आयाओ, जो धम्मं सोच्चा सद्दहे।
तवस्सी वीरियं लद्धुं, संवुडे निद्धुणे रयं।।११।।

सोही उज्जुयभूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई।
निव्वाणं परमं जाइ, 'घयसित्तिव्व पावए'।।१२।।

विगिंच कम्मुणो हेउं, जसं संचिणु खंतिए।
सरीरं पाढवं हिच्चा, उड्ढं पक्कमए दिसं।।१३।।

विसालसेहिं सीलेहिं, जक्खा उत्तरउत्तरा।
'महासुक्का व दिप्पंता', मन्नंता अपुणच्चयं।।१४।।

अप्पिया देवकामाण, कामरूवविउव्विणो ।
उड्ढ कप्पेसु चिट्ठ ति, पुव्वावाससया बहु ॥१५॥

तत्थ ठिच्चा जहाठाण, जक्खा आउक्खये चुया ।
उवेंति माणुस जोणि, से दसगेऽभिजायए ॥१६॥

(१) खेत्त-वत्थु[1] हिरण्ण[2] च, पसवो,[3] दास-पोरुस[4] ।
'चत्तारि कामखधाणि' तत्थ से उववज्जइ ॥१७॥

मित्तव[5] नाइव[3] होइ, उच्चागोए[1] य वण्णव[5] ।
अप्पायके[6] महापन्ने,[7] अभिजाए[8] जसो[9] बले[10] ॥१८॥

भुच्चा माणुस्सए भोए, अप्पडिरूवे अहाउय ।
पुव्व विसुद्धसद्धम्मे, केवल बोहि बुज्झिया ॥१९॥

चउरग दुल्लह नच्चा, सजम पडिवज्जिया ।
तवसा धुयकम्मसे, सिद्धे हवइ सासए ॥२०॥ त्ति बेमि ॥

अह असंखयं नामं चउत्थमज्झयणं

असखय जीविय मा पमायए,
जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं ।
एव वियाणाहि जणे पमत्ते,
किं नु विहिंसा अजया गहिंति ॥ १ ॥

जे पावकम्मेहिं धणं मणूसा,
समाययंती अमइं गहाय।
पहाय ते पासपयट्टिए नरे,
वेराणुबद्धा नरयं उवेंति ॥ २ ॥

'तेणे जहा' संधिमुहे गहीए,
सकम्मुणा किच्चइ पावकारी।
एवं पया पेच्च इहं च लोए,
कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि ॥ ३ ॥

संसारमावन्न परस्स अट्ठा,
साहारणं जं च करेइ कम्मं।
कम्मस्स ते तस्स उ वेयकाले,
न बंधवा बंधवयं उवेंति ॥ ४ ॥

वित्तेण ताणं न लभे पमत्ते,
इमम्मि लोए अदुवा परत्था।
'दीवप्पणट्ठे' व, अणंतमोहे,
नेयाउयं दट्ठुमदट्ठुमेव ॥ ५ ॥

सुत्तेसु यावि पडिबुद्धजीवी,
न वीससे पंडिय आसुपण्णे।
घोरा मुहुत्ता अबलं सरीरं,
'भारंडपक्खीव' चरेऽपमत्ते ॥ ६ ॥

चरे पयाइं परिसंकमाणो,
जं किंचि पासं इह मन्नमाणो।
लाभंतरे जीविय वूहइत्ता,
पच्छा परिन्नाय मलावधंसी॥ ७॥

छंदंनिरोहेण उवेइ मोक्खं,
'आसे जहा सिक्खिय-वम्मधारी।'
पुव्वाइं वासाइं चरेऽप्पमत्तो,
तम्हा मुणी खिप्पं मुवेई मुक्खं॥ ८॥

स पुव्वमेवं न लभेज्ज पच्छा,
एसोवमा सासयवाइयाणं।
विसीयई सिढिले आउयम्मि,
कालोवणीए सरीरस्स भेए॥ ९॥

खिप्पं न सक्केइ विवेगमेउं,
तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे।
समिच्च लोयं समया महेसी,
अप्पाणरक्खी चरमप्पमत्तो॥१०॥

मुहुं मुहुं मोहगुणे जयंतं,
अणेगरूवा समणं चरंतं।
फासा फुसंति असमंजसं च,
न तेसिं भिक्खू मणसा पउस्से॥११॥

मदा य फासा बहुलोहणिज्जा,
तहप्पगारेसु मणं न कुज्जा।
रक्खिज्ज कोहं विणएज्ज माणं,
मायं न सेवेज्ज पहेज्ज लोहं ॥१२॥

जे ऽसंखया तुच्छपरप्पवाई,
ते पिज्जदोसाणुगया परज्झा।
एए अहम्मे त्ति दुगुंछमाणो,
कखे गुणे जाव सरीर भेउ ॥१३॥

॥त्ति बेमि॥

अह अकाममरणिज्जं नामं पंचममज्झयणं

अण्णवंसि महोहंसि, एगे तिण्णे दुरुत्तरे।
तत्थ एगे महापन्ने, इमं पण्हमुदाहरे ॥ १ ॥

सतिमे य दुवे ठाणा, अक्खाया मरणंतिया।
अकाममरण[1] चेव, सकाममरण[2] तहा ॥ २ ॥

बालाणं अकाम तु, मरणं असइं भवे।
पंडियाणं सकामं तु, उक्कोसेण सइं भवे ॥ ३ ॥

तत्थिमं पढमं ठाणं, महावीरेण देसियं।
कामगिद्धे जहा बाले, भिसं कूराइं कुव्वई ॥ ४ ॥

जे गिद्धे कामभोगेसु, एगे कूडाय गच्छई।
न मे दिट्ठे परे लोए, चक्खुदिट्ठा इमा रई ॥ ५ ॥

हत्थागया इमे कामा, कालिया जे अणागया।
को जाणइ परे लोए, अत्थि वा नत्थि वा पुणो ॥ ६ ॥

जणेण सद्धिं होक्खामि, इइ बाले पगब्भई।
कामभोगाणुराएणं, केसं संपडिवज्जई ॥ ७ ॥

तओ से दंडं समारभई, तसेसु थावरेसु य।
अट्ठाए य अणट्ठाए, भूयगामं विहिंसई ॥ ८ ॥

हिंसे बाले मुसावाई माइल्ले पिसुणे सढे।
भुंजमाणे सुरं मंसं, सेयमेयं ति मन्नई ॥ ९ ॥

कायसा वयसा मत्ते, वित्ते गिद्धे य इत्थिसु।
दुहओ मलं संचिणइ, 'सिसुणागुव्व' मट्टियं ॥१०॥

तओ पुट्ठो आयंकेणं, गिलाणो परितप्पई।
पभीओ परलोगस्स, कम्माणुप्पेहि अप्पणो ॥११॥
सुया मे नरए ठाणा, असीलाणं च जा गई।
बालाणं कूरकम्माणं, पगाढा जत्थ वेयणा ॥१२॥
तत्थोववाइयं ठाणं, जहा मेयमणुस्सुयं।
अहा कम्मेहिं गच्छंतो, सो पच्छा परितप्पइ ॥१३॥
'जहासागडिओ' जाणं, समं हिच्चा महापहं।
विसमं मग्गमोइण्णो, अक्खे भग्गम्मि सोयई ॥१४॥

एवं धम्मं विउक्कम्मं, अहम्मं पडिवज्जिया।
बाले मच्चुमुहं पत्ते, अक्खे भग्गे व सोयई॥१५॥

तओ से मरणतम्मि, बाले सतसई भया।
अकाममरणं मरइ, धुत्ते व कलिणा जिए॥१६॥

एयं अकाममरणं, बालाण तु पवेइय।
इत्तो सकाममरण, पडियाणं सुणेह मे॥१७॥

मरण पि सपुण्णाण, जहा मेयमणुस्सुयं।
विप्पसण्णमणाघायं, सजयाण वुसीमओ॥१८॥

न इम सव्वेसु भिक्खूसु, न इम सव्वेसुऽगारिसु।
नाणासीला अगारत्था, विसमसीला य भिक्खुणो॥१९॥

सति एगेहिं भिक्खूहिं, गारत्था सजमुत्तरा।
गारत्थेहि य सव्वेहिं, साहवो संजमुत्तरा॥२०॥

चीराजिण नगिणिणं, जडी सघाडि मुंडिणं।
एयाणि वि न तायंति, दुस्सीलं परियागय॥२१॥

पिंडोलएव्व दुस्सीले, नरगाओ न मुच्चइ।
भिक्खाए वा गिहत्थे वा, सुव्वए कम्मइ दिवं॥२२॥

अगारिसामाइयंगाणि, सड्ढी काएण फासए।
पोसहं दुहओ पक्खं, एगरायं न हावए॥२३॥

एवं सिक्खासमावन्ने, गिहीवासे वि सुव्वए।
मुच्चइ छविपव्वाओ, गच्छे जक्खसलोगयं॥२४॥

अह जे संवुडे भिक्खू, दोण्हं अन्नयरे सिया।
सव्वदुक्खपहीणे वा, देवे वावि महिड्ढीए ॥२५॥

उत्तराइ विमोहाइं जुईमताणुपुव्वसो।
समाइण्णाइं जक्खेहिं, आवासाइ जसंसिणो ॥२६॥

दीहाउया इड्ढिमंता, समिद्धा कामरूविणो।
अहुणोववन्नसंकासा, भुज्जो अच्चिमालिप्पभा ॥२७॥

ताणि ठाणाणि गच्छंति, सिक्खित्ता संजमं तवं।
भिक्खाए वा गिहत्थे वा, जे संति परिनिव्वुडा ॥२८॥

तेसिं सोच्चा सपुज्जाणं, संजयाण वुसीमओ।
न संतसंति मरणंते, सीलवंता बहुस्सुया ॥२९॥

तुलिया विसेसमादाय, दयाधम्मस्स खंतिए।
विप्पसीएज्ज मेहावी, तहाभूएण अप्पणा ॥३०॥

तओ काले अभिप्पेए, सड्ढी तालिसमंतिए।
विणएज्ज लोमहरिसं, भेयं देहस्स कंखए ॥३१॥

अह कालम्मि संपत्ते, आघायाय समुस्सयं।
सकाममरणं मरइ, तिण्हमन्नयरं मुणी ॥३२॥

॥त्ति बेमि॥

अह खुड्डागनियंठिज्जं नामं छट्ठमज्झयणं

जावंतऽविज्जापुरिसा, सव्वे ते दुक्खसंभवा।
लुप्पंति बहुसो मूढा, संसारंमि अणंतए ॥ १ ॥

समिक्ख पंडिए तम्हा, पास -जाइ-पहे बहू।
अप्पणा सच्चमेसेज्जा, मित्तिं भूएसु कप्पए ॥ २ ॥

माया पिया ण्हूसा भाया, भज्जा पुत्ता य ओरसा।
नालं ते मम ताणाए, लुप्पंतस्स सकम्मुणा ॥ ३ ॥

एयमट्ठं सपेहाए, पासे समियदंसणे।
छिंद गिद्धिं सिणेहं च, न कंखे पुव्वसंथवं ॥ ४ ॥

गवासं मणि-कुंडलं, पसवो दास-पोरुसं।
सव्वमेयं चइत्ताणं, कामरूवी भविस्ससि ॥ ५ ॥

(थावरं जंगमं चेव, धणं धन्नं उवक्खरं।
पच्चमाणस्स कम्मेहिं, नालं दुक्खाउ मोयणे ॥)

अज्झत्थं सव्वओ सव्वं, दिस्स पाणे पियायए।
न हणे पाणिणो पाणे, भयवेराओ उवरए ॥ ६ ॥

आयाणं नरयं दिस्स, नायएज्ज तणामवि।
दोगुंछी अप्पणो पाए, दिन्नं भुंजेज्ज भोयणं ॥ ७ ॥

इहमेगे उ मन्नंति, अपच्चक्खाय पावगं।
आयरियं विदित्ता णं, सव्वदुक्खा विमुच्चए ॥ ८ ॥

भणता अकरेता य, बंध-मोक्खपइण्णिणो।
वायावीरियमेत्तेण, समासासेंति अप्पयं ॥ ९ ॥

न चित्ता तायए भासा, कुओ विज्जाणुसासणं।
विसन्ना पावकम्मेहिं, बाला पंडियमाणिणो ॥१०॥

जे केइ सरीरे सत्ता, वण्णे रूवे य सव्वसो।
मणसा काय-वक्केण, सव्वे ते दुक्खसंभवा ॥११॥

आवन्ना दीहमद्धाणं, संसारंमि अणंतए।
तम्हा सव्वदिसं पस्स, अप्पमत्तो परिव्वए ॥१२॥

बहिया उड्ढमादाय, नावकंखे कयाइ वि।
पुव्व-कम्म-क्खयट्ठाए, इमं देहं समुद्धरे ॥१३॥

विगिंच कम्मुणो हेउं, कालकंखी परिव्वए।
मायं पिंडस्स पाणस्स, कडं लद्धूण भक्खए ॥१४॥

सन्निहिं च न कुव्वेज्जा, लेवमायाए संजए।
'पक्खी-पत्तं समादाय' निरवेक्खो परिव्वए ॥१५॥

एसणासमिओ लज्जू, गामे अणियओ चरे।
अप्पमत्तो पमत्तेहिं, पिंडवायं गवेसए ॥१६॥

एवं से उदाहु अणुत्तरनाणी,
अणुत्तरदंसी अणुत्तरनाणदंसणधरे-
अरहा नायपुत्ते भगवं,
वेसालिए वियाहिए ॥१७॥

॥ त्ति बेमि ॥

अह एलइज्ज नामं सत्तममज्झयणं

*(१) जहाएस समुद्दिस, कोइ पोसेज्ज एलयं।
ओयण जवस देज्जा, पोसेज्जावि सयंगणे॥ १॥

तओ से पुट्ठे परिवूढे, जायमेए महोदरे।
पीणिए विउले देहे, आएस परिकखए॥ २॥

जाव न एइ आएसे, ताव जीवइ से ऽदुही।
अह पत्तम्मि आएसे, सीसं छेत्तूण भुज्जई॥ ३॥

जहा से खलु उरब्भे, आएसाए समीहिए।
एव बाले अहम्मिट्ठे, ईहई नरयाउय॥ ४॥

हिंसे बाले मुसावाई, अद्धाणमि विलोवए।
अन्नदत्तहरे तेणे, माई कं नु हरे सढे॥ ५॥

इत्थी–विसयगिद्धे य, महारंभपरिग्गहे।
भुजमाणे सुर मस, परिवूढे परदमे॥ ६॥

अयकक्करभोई य, तुंदिल्ले चियलोहिए।
आउय नरए कखे, 'जहाएसं व एलए'॥ ७॥

आसणं सयण जाण, वित्त कामे य भुंजिया।
दुस्साहडं धणं हिच्चा, बहु संचिणिया रय॥ ८॥

---

*ओरब्भे अ कागिणी, अवए अ ववहारे मागरे चेव।
पचेए दिट्ठुता, उरब्भिज्जमि अज्झयणे॥

तओ कम्मगुरू जंतू, पच्चुप्पन्नपरायणे।
'अएव्व' आगयाएसे, मरणंतम्मि सोयइ ॥ ९ ॥

तओ आउपरिक्खीणे, चुयदेहा विहिंसगा।
आसुरियं दिसं बाला, गच्छंति अवसा तमं ॥१०॥

(२) जहा कागिणिए हेउं, सहस्सं हारए नरो।
(३) अपत्थं अबगं भोच्चा, राया रज्जं तु हारए ॥११॥

एवं माणुस्सगा कामा, देवकामाण अंतिए।
सहस्सगुणिया भुज्जो, आउं कामा य दिव्विया ॥१२॥

अणेगवासानउया, जा सा पन्नवओ ठिई।
जाणि जीयंति दुम्मेहा, ऊणे वाससयाउए ॥१३॥

(४) जहा य तिन्नि वाणिया, मूलं घेत्तूण निग्गया।
एगोऽत्थ लहए लाभं, एगो मूलेण आगओ ॥१४॥
एगो मूलं पि हारित्ता, आगओ तत्थ वाणिओ।
ववहारे उवमा एसा, एवं धम्मे वियाणह ॥१५॥
माणुसत्तं भवे मूलं, लाभो देवगई भवे।
मूलच्छेएण जीवाणं नरग-तिरिक्खत्तणं धुवं ॥१६॥
दुहओ गई बालस्स, आवईवहमूलिया।
देवत्तं माणुसत्तं च, जं जिए लोलयासढे ॥१७॥
तओ जिए सइं होइ, दुविहं दुग्गइं गए।
दुल्लहा तस्स उम्मग्गा, अद्धाए सुचिरादवि ॥१८॥

एव जिय सपेहाए, तुलिया बाल च पडियं।
मूलिय ते पवेसंति, माणुस जोणिमेंति जे ॥१९॥

वेमायाहि सिक्खाहिं, जे नरा गिहिसुव्वया।
उवेंति माणुस जोणि, कम्मसच्चा हु पाणिणो ॥२०॥

जे सि तु विउला सिक्खा, मूलियं ते अइच्छिया।
सीलवता सविसेसा, अदीणा जति देवयं ॥२१॥

एवमदीणव भिक्खू, अगारिं च वियाणिया।
कहण्णु जिच्चमेलिक्ख, जिच्चमाणे न सविदे ॥२२॥

(५) जहा कुसग्गे उदगं, समुद्देण सम मिणे।
एव माणुस्सगा कामा, देवकामाण अंतिए ॥२३॥

कुसग्गमेत्ता इमे कामा, सन्निरुद्धम्मि आउए।
कस्स हेउ पुराकाउ, जोगक्खेम न सविदे ॥२४॥

इह कामाणियट्टस्स, अत्तट्ठे अवरज्झइ।
सोच्चा नेयाउय मग्ग, ज भुज्जो परिभस्सइ ॥२५॥

इह कामणियट्टस्स, अत्तट्ठे नावरज्झई।
पूईदेहनिरोहण, भवे देवित्ति मे सुय ॥२६॥

इड्ढी जुई जसो वण्णो, आउ सुहमणुत्तर।
भुज्जो जत्थ मणुस्सेसु, तत्थ से उववज्जइ ॥२७॥

वालस्स पस्स वालत्तं, अहम्म पडिवज्जिया।
चिच्चा धम्मं अहम्मिट्ठे, नरएसूववज्जइ ॥२८॥

धीरस्स पस्स धीरत्तं, सव्वधम्माणुवत्तिणो।
चिच्चा अधम्मं धम्मिट्ठे, देवेसु उववज्जइ ॥२९॥

तुलियाण बालभावं, अबालं चेव पण्डिए।
चइऊण बालभावं, अबालं सेवए मुणी ॥३०॥
॥ त्ति बेमि ॥

अह काविलियं नामं अट्ठममज्झयणं

अधुवे असासयम्मि, संसारम्मि दुक्खपउराए।
किं नाम होज्ज तं कम्मयं ? जेणाहं दुग्गइं न गच्छेज्जा ॥ १ ॥

विजहित्तु पुव्वसंजोयं, न सिणेहं कहिंचि कुव्वेज्जा।
असिणेह-सिणेहकरेहिं, दोस-पओसेहि मुच्चए भिक्खू ॥ २ ॥

तो नाण-दंसण-समग्गो, हियनिस्सेसाए सव्वजीवाणं।
तेसिं विमोक्खणट्ठाए, भासइ मुणिवरो विगयमोहो ॥ ३ ॥

सव्वं गंथं कलहं च, विप्पजहे तहाविहं भिक्खू।
सव्वेसु कामजाएसु, पासमाणो न लिप्पई ताई ॥ ४ ॥

भोगामिस-दोस-विसन्ने, हिय-निस्सेयस-बुद्धि-वोच्चत्थे।
बाले य मन्दिए मूढे, बज्झइ 'मच्छिया व खेलम्मि' ॥ ५ ॥

दुप्परिच्चया इमे कामा, नो सुजहा अधीरपुरिसेहिं।
अह सन्ति सुव्वया साहू, जे तरन्ति अतरं 'वणिया वा' ॥ ६ ॥

समणा मु एगे वयमाणा, पाणवहं मिया अयाणंता।
मंदा निरयं गच्छंति, बाला पावियाहिं दिट्ठीहिं ॥ ७ ॥

न हु पाणवहं अणुजाणे, मुच्चेज्ज कयाइ सव्वदुक्खाणं।
एवमायरिएहिं अक्खायं, जेहिं इमो साहुधम्मो पन्नत्तो ॥ ८ ॥

पाणे य नाइवाएज्जा, से समीइ त्ति वुच्चइ ताई।
तओ से पावयं कम्मं, निज्जाइ 'उदगं व थलाओ' ॥ ९ ॥

जगनिस्सिएहिं भूएहिं, तसनामेहिं थावरेहिं च।
नो तेसिमारभे दंडं, मणसा वयसा कायसा चेव ॥१०॥

सुद्धेसणाओ नच्चाणं, तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं।
जायाए घासमेसेज्जा, रसगिद्धे न सिया भिक्खाए ॥११॥

पंताणि चेव सेवेज्जा, सीय पिंड पुराण-कुम्मासं।
अदु वुक्कसं पुलागं वा, जवणट्ठाए न सेवए मंथुं ॥१२॥

जे लक्खणं च सुविणं च, अंगविज्जं च जे पउंजंति।
न हु ते समणा वुच्चंति, एवं आयरिएहिं अक्खायं ॥१३॥

इह जीविय अणियमेत्ता, पब्भट्ठा समाहिजोएहिं।
ते काम-भोग-रस-गिद्धा, उववज्जंति आसुरे काए ॥१४॥

तत्तो वि य उव्वट्टित्ता, संसारं बहु अणुपरियडंति।
बहु-कम्म-लेव-लित्ताणं, बोही होइ सुदुल्लहा तेसिं ॥१५॥

कसिणंपि जो इमं लोयं, पडिपुण्णं दलेज्ज एगस्स।
तेणावि से न संतुस्से, इइ दुप्पूरए इमे आया ॥१६॥

जहा लाहो तहा लोहो, लाहा लोहो पवड्ढइ।
दोमासकयं कज्जं, कोडीए वि न निट्ठियं॥१७॥

नो रक्खसीसु गिज्झेज्जा, गंडवच्छासुऽणेगचित्तासु।
जाओ पुरिसं पलोभित्ता, खेल्लंति जहा व दासेहिं॥१८॥

नारीसु नो पगिज्झेज्जा, इत्थी विप्पजहे अणगारे।
धम्मं च पेसलं नच्चा, तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं॥१९॥

इअ एस धम्मे अक्खाए, कविलेण च विसुद्धपन्नेण।
तरिहिंति जे उ काहिंति, तेहिं आराहिया दुवे लोगा॥२०॥

॥ त्ति बेमि ॥

अह नमि-पव्वज्जा नामं नवममज्झयणं

चइऊण देवलोगाओ, उववन्नो माणुसंमि लोगंमि।
उवसंत-मोहणिज्जो, सरइ पोराणियं जाइं॥ १ ॥

जाइं सरित्तु भयवं, सय-संबुद्धो अणुत्तरे धम्मे।
पुत्तं ठवित्तु रज्जे, अभिणिक्खमइ नमी राया॥ २ ॥

सो देवलोगसरिसे अंतेउर-वरगओ वरे भोए।
भुंजित्तु नमी राया, बुद्धो भोगे परिच्चयइ॥ ३ ॥

मिहिलं सपुर-जणवयं, बलमोरोहं च परियणं सव्वं।
चिच्चा अभिनिक्खंतो, एगंतमहिट्ठिओ भयवं॥ ४ ॥

कोलाहलग-भूयं, आसी मिहिलाए पव्वयंतमि।
तइया रायरिसिंमि, नमिंमि अभिणिक्खमंतंमि ॥ ५ ॥

अब्भुट्ठियं रायरिसिं, पवज्जाट्ठाणमुत्तमं।
सक्को माहणरूवेण, इमं वयणमब्बवी ॥ ६ ॥

(१) किंतु भो अज्ज मिहिलाए, कोलाहलगसंकुला।
सुव्वंति दारुणा सद्दा, पासाएसु गिहेसु य ॥ ७ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ॥ ८ ॥

मिहिलाए चेइए वच्छे, सीयच्छाए मणोरमे।
पत्त-पुप्फ-फलोवेए, बहूणं बहुगुणे सया ॥ ९ ॥

वाएण हीरमाणम्मि, चेइयम्मि मणोरमे।
दुहिया असरणा अत्ता, एए कंदंति भो! खगा ॥१०॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ॥११॥

(२) एस अग्गीय वाऊ य, एयं डज्झइ मंदिरं।
भयवं अंतेउरं तेणं, कीस णं नावपेक्खह ॥१२॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ॥१३॥

सुहं वसामो जीवामो, जेसिं मो नत्थि किंचण।
मिहिलाए डज्झमाणीए, न मे डज्झइ किंचण ॥१४॥

चत्त पुत्त-कलत्तस्स, निव्वावारस्स भिक्खुणो।
पियं न विज्जइ किंचि, अप्पियं पि न विज्जइ ॥१५॥

बहुं खु मुणिणो भद्दं, अणगारस्स भिक्खुणो।
सव्वओ विप्पमुक्कस्स, एगंतमणुपस्सओ ॥१६॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमी रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ॥१७॥

(३) पागारं कारइत्ताणं, गोपुरट्टालगाणि य।
उस्सूलग-सयग्घीओ, तओ गच्छसि खत्तिया! ॥१८॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमी रायरिसी, देविंद इणमब्बवी ॥१९॥

सद्धं नगरं किच्चा, तव-संवरमग्गलं।
खंतिं निउणपागारं, तिगुत्तं दुप्पघंसयं ॥२०॥

धणुं परक्कमं किच्चा, जीवं च ईरियं सया।
धिइं च केयणं किच्चा, सच्चेणं पलिमंथए ॥२१॥

तव-नाराय-जुत्तेणं, भित्तूण कम्म-कंचुयं।
मुणी विगय-संगामो, भवाओ परिमुच्चई ॥२२॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ॥२३॥

(४) पासाए कारइत्ताणं, वड्ढमाणगिहाणि य।
बालग्गपोइयाओ य, तओ गच्छसि खत्तिया! ॥२४॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमी रायरिसी, देविंद इणमब्बवी॥२५॥

संसयं खलु सो कुणइ, जो मग्गे कुणइ घरं।
जत्थेव गंतुमिच्छेज्जा, तत्थ कुव्विज्ज सासयं॥२६॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमी रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी॥२७॥

(५) आमोसे लोमहारे य, गंठिभेए य तक्करे।
नगरस्स खेमं काऊणं, तओ गच्छसि खत्तिया!॥२८॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी॥२९॥

असइं तु मणुस्सेहिं, मिच्छा दंडो पउंजए।
अकारिणोऽत्थ बज्झंति, मुच्चए कारओ जणो॥३०॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी॥३१॥

(६) जे केइ पत्थिवा तुब्भं, नानमंति नराहिवा!
वसे ते ठावइत्ताणं, तओ गच्छसि खत्तिया!॥३२॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी॥३३॥

जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे दुज्जए जिणे।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जओ॥३४॥

अप्पाणमेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण बज्झओ।
अप्पणा चेव अप्पाणं, जइत्ता सुहमेहए ॥३५॥

पंचिंदियाणि कोहं, माणं मायं तहेव लोहं च।
दुज्जयं चेव अप्पाणं, सव्वमप्पे जिए जियं ॥३६॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ॥३७॥

(७) जइत्ता विउले जन्ने, भोइत्ता समण-माहणे।
दच्चा भोच्चा य जिट्ठा य, तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥३८॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमी रायरिसी, देविंद इणमब्बवी ॥३९॥

जो सहस्सं सहस्साणं, मासे मासे गवं दए।
तस्स वि संजमो सेओ, अदिंतस्स वि किंचण ॥४०॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ॥४१॥

(८) घोरासमं चइत्ताणं, अन्नं पत्थेसि आसमं।
इहेव पोसह-रओ, भवाहि मणुयाहिवा ! ॥४२॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमी रायरिसी, देविंद इणमब्बवी ॥४३॥

मासे मासे तु जो बालो, कुसग्गेणं तु भुंजए।
न सो सुअक्खाय-धम्मस्स, कलं अग्घइ सोलसिं ॥४४॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ॥४५॥

(९) हिरण्णं सुवण्णं मणि-मुत्तं, कंसं दूसं च वाहणं।
कोसं वड्ढावइत्ताणं, तओ गच्छसि खत्तिया! ॥४६॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ॥४७॥

सुवण्ण-रुप्पस्स उ पव्वया भवे,
सिया हु केलास-समा असंखया।
नरस्स लुद्धस्स न तेहिं किंचि,
इच्छा हु आगास-समा अणंतिया ॥४८॥

पुढवी साली जवा चेव, हिरण्णं पसुभिस्सह।
पडिपुण्णं नालमेगस्स, इइ विज्जा तवं चरे ॥४९॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमिं रायरिसिं, देविंदो इणमब्बवी ॥५०॥

(१०) अच्छेरयमब्भुदए, भोए चयसि पत्थिवा।
असंते कामे पत्थेसि, संकप्पेण विहम्मसि ॥५१॥

एयमट्ठं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइओ।
तओ नमी रायरिसी, देविंदं इणमब्बवी ॥५२॥

सल्लं कामा विसं कामा, कामा आसी-विसोवमा।
कामे पत्थेमाणा, अकामा जंति दुग्गइं ॥५३॥

अहे वयइ कोहेण, माणेण अहमा गई।
माया गइ पडिग्घाओ, लोहाओ दुहओ भयं ॥५४॥

अवउज्झिऊण माहणरूवं, विउव्विऊण इंदत्तं।
वंदइ अभित्थुणतो, इमाहि महुराहि वग्गूहि ॥५५॥

अहो ते निज्जिओ कोहो, अहो माणो पराजिओ।
अहो ते निरक्किया माया, अहो लोहो वसीकओ ॥५६॥

अहो ते अज्जव साहु ! अहो ते साहु ! मद्दवं।
अहो ते उत्तमा खती, अहो ते मुत्ति उत्तमा ॥५७॥

इह सि उत्तमो भंते, पेच्चा होहिसि उत्तमो।
लोगुत्तमुत्तमं ठाण, सिद्धिं गच्छसि नीरओ ॥५८॥

एवं अभित्थुणतो, रायरिसिं उत्तमाए सद्धाए।
पयाहिणं करेंतो, पुणो पुणो वदए सक्को ॥५९॥

तो वंदिऊण पाए, चक्क-कुस-लक्खणे मुणिवरस्स।
आगासेणुप्पइओ, ललिय-चवल-कुंडल-तिरीडी ॥६०॥

नमी नमेइ अप्पाण, सक्ख सक्केण चोइओ।
चइऊण गेह वइदेही, सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥६१॥

एवं करेंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा।
विणियट्टंति भोगेसु, जहा से नमी रायरिसि ॥६२॥

॥ त्ति बेमि ॥

अह दुमपत्तय नामं दसममज्झयणं

'दुमपत्तए पंडुरए जहा,'
निवडइ राइगणाण अच्चए।
एव मणुयाण जीवियं,
समयं गोयम! मा पमायए॥ १॥

कुस्सग्गे जह ओसबिंदुए'
'थोवं चिट्ठइ लंबमाणए।
एव मणुयाण जीविय,
समयं गोयम! मा पमायए॥ २॥

इइ इत्तरियम्मि आउए,
जीवियए बहुपच्चवायए।
विहुणाहि रयं पुरे कड,
समयं गोयम! मा पमायए॥ ३॥

दुल्लहे खलु माणुसे भवे,
चिरकालेण वि सव्वपाणिणं।
गाढा य विवाग कम्मुणो,
समय गोयम! मा पमायए॥ ४॥

पुढविक्कायमइगओ, उक्कोस जीवो उ सवसे।
काल सखाईयं, समयं गोयम! मा पमायए॥ ५॥

आउक्कायमइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे।
कालं संखाईयं, समयं गोयम! मा पमायए॥ ६॥

तेउकायमइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखाईयं, समयं गोयम! मा पगायए॥ ७॥

वाउक्कायमइगओ, उक्कोसं जीवो उ सवसे।
कालं सखाईयं, समय गोयम! मा पमायए॥ ८॥

वणस्सइकायमइगओ, उक्कोस जीवो उ सवसे।
कालमणतदुरतय, समय गोयम! मा पमायए॥ ९॥

बेइंदियकायमइगओ, उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखिज्जसन्नियं, समय गोयम! मा पमायए॥१०॥

तेइंदियकायमइगओ, उक्कोस जीवो उ सवसे।
कालं संखिज्जसन्नियं, समय गोयम! मा पमायए॥११॥

चउरिंदियकायमइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे।
कालं संखिज्जसन्नियं, समयं गोयम! मा पमायए॥१२॥

पंचिंदियकायमइगओ, उक्कोस जीवो उ सवसे।
सत्त-ट्ठ-भव-गहणे, समय गोयम! मा पमायए॥१३॥

देवे नेरइए य अइगओ, उक्कोस जीवो उ संवसे।
इक्के-क्क-भवग्गहणे, समयं गोयम! मा पमायए॥१४॥

एवं भवसंसारे, संसरई सुहासुहेहि कम्मेहिं।
जीवो पमायबहुलो, समय गोयम! मा पमायए॥१५॥

लद्धूण वि माणुसत्तणं,
आरिअत्त पुणरवि दुल्लहं।
वहवे दसुया मिलक्खुया,
समयं गोयम! मा पमायए ॥१६॥

लद्धूण वि आरियत्तणं,
अहीण-पंचेंदियया हु दुल्लहा।
विगलिंदियया हु दीसई,
समय गोयम! मा पमायए ॥१७॥

अहीण-पंचेंदियत्तं पि से लहे,
उत्तम-धम्म-सुई हु दुल्लहा।
कुतित्थि-निसेवए जणे,
समयं गोयम! मा पमायए ॥१८॥

लद्धूण वि उत्तमं सुइं,
सद्दहणा पुणरावि दुल्लहा।
मिच्छत्त-निसेवए जणे,
समयं गोयम! मा पमायए ॥१९॥

धम्मं पि हु सद्दहतया,
दुल्लहया काएण फासया।
इह-काम-गुणेहि मुच्छिया,
समयं गोयम! मा पमायए ॥२०॥

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते।
से सोयबले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२१॥

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते।
से चक्खुबले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२२॥

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते
से घाणबले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२३॥

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते।
से जिब्भबले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२४॥

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते।
से फासबले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२५॥

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते।
से सव्वबले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ॥२६॥

अरई गंड विसूइया,
आयंका विविहा फुसंति ते।
विहडइ विद्धसइ ते सरीरयं,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥२७॥

वोच्छिंद सिणेहमप्पणो,
'कुमुयं सारइयं व पाणियं।'
से सव्वसिणेहवज्जिए,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥२८॥

चिच्चाण धणं च भारियं,
पव्वइओ हिसि अणगारियं।
मा वंतं पुणो वि आविए,
समयं गोयम! मा पमायए ॥२९॥

अवउज्झिय मित्त-बंधवं,
विउलं चेव धणोहसंचयं।
मा तं बिइयं गवेसए,
समयं गोयम! मा पमायए ॥३०॥

न हु जिणे अज्ज दिस्सई,
बहुमए दिस्सइ मग्ग-देसिए।
संपइ नेयाउए पहे,
समयं गोयम! मा पमायए ॥३१॥

'अवसोहिय कंटगापहं',
ओइण्णो सि पहं महालयं।
गच्छसि मग्गं विसोहिया,
समयं गोयम! मा पमायए ॥३२॥

'अबले जह भार-वाहए,'
मा मग्गे विसमेऽवगाहिया।
पच्छा पच्छाणुतावए,
समयं गोयम! मा पमायए ॥३३॥

'तिण्णो हु सि अण्णवं महं',
किं पुण चिट्ठसि तीरमागओ।
अभितुर पारं गमित्तए,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥३४॥

अकलेवरसेणिं उस्सिया,
सिद्धिं गोयम ! लोयं गच्छसि।
खेमं च सिवं अणुत्तरं,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥३५॥

बुद्धे परिनिव्वुडे चरे,
गामगए नगरे व संजए।
संतिमग्गं च वूहए,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥३६॥

बुद्धस्स निसम्म भासियं,
सुकहियं मट्ठपओवसोहियं।
रागं दोसं च छिंदिया,
सिद्धिगइं गए गोयमे ॥३७॥

॥ त्ति बेमि ॥

अह बहुस्सुयपुज्जा-णामं एगारसमज्झयणं

संजोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो।
आयारं पाउकरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे॥ १॥

जे यावि होइ निव्विज्जे, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे।
अभिक्खणं उल्लवइ 'अविणीय' अबहुस्सुए॥ २॥

अह पंचहिं ठाणेहिं, जेहिं सिक्खा न लब्भइ।
थम्भा[1] कोहा[2] पमाएणं,[3] रोगेणा[4] लस्सएण[5] य॥ ३॥

अह अट्ठहिं ठाणेहिं, 'सिक्खासीलि' त्ति वुच्चइ।
अहस्सिरे[1] सया दंते,[2] न य मम्ममुदाहरे[3]॥ ४॥

नासीले[4] न विसीले,[5] न सिया अइलोलुए[6]।
अकोहणे[7] सच्चरए,[8] 'सिक्खासीलि[9]' त्ति वुच्चइ॥ ५॥

अह चोद्दसहिं ठाणेहिं, वट्टमाणे उ संजए।
अविणीए वुच्चई सो उ, निव्वाणं च न गच्छई॥ ६॥

अभिक्खणं कोही हवइ,[1] पबंधं च पकुव्वई[2]।
मेत्तिज्जमाणो वमई,[3] सुयं लद्धूण मज्जई[4]॥ ७॥

अवि पावपरिक्खेवी,[5] अवि मित्तेसु कुप्पइ[6]।
सुप्पियस्सावि मित्तस्स, रहे भासइ पावयं[7]॥ ८॥

पइण्णवाई[8] दुहिले,[9] थद्धे,[10] लुद्धे[11] अणिग्गहे[12] ।
असंविभागी[13] अवियत्ते,[14] 'अविणीए' त्ति वुच्चई ॥ ९ ॥

अह पन्नरसहिं ठाणेहिं 'सुविणीए' त्ति वुच्चई ।
नीयावित्ती[1] अचवले,[2] अमाई[3] अकुऊहले[4] ॥१०॥

अप्पं च अहिक्खिवई,[5] पबंधं च न कुव्वई[6] ।
मेत्तिज्जमाणे भयइ,[7] सुयं लद्धं न मज्जई[8] ॥११॥

न य पावपरिक्खेवी,[9] न य मित्तेसु कुप्पई[10] ।
अप्पियस्सा वि मित्तस्स, रहे कल्लाण भासई[11] ॥१२॥

कलह–डमरवज्जिए,[12] बुद्धे अभिजाइए[13] ।
हिरिमं पडिसंलीणे,[15] 'सुविणीए' त्ति, वुच्चई ॥१३॥

वसे गुरुकुले निच्चं, जोगवं उवहाणवं ।
पियंकरे पियंवाई, से सिक्खं लद्धुमरिहई ॥१४॥

(१) जहा संखंमि पयं, निहियं दुहओ वि विरायई ।
एवं बहुस्सुए भिक्खू, धम्मो कित्ती तहा सुयं ॥१५॥
(२) जहा से कंबोयाणं, आइण्णे कंथए सिया ।
आसे जवेण पवरे, एवं हवई बहुस्सुए ॥१६॥
(३) जहाइण्णसमारूढे, सूरे दढपरक्कमे ।
उभओ नंदिघोसेणं, एवं हवई बहुस्सुए ॥१७॥
(४) जहा करेणुपरिकिण्णे, कुंजरे सट्ठिहायणे ।
बलवंते अप्पडिहए, एवं हवई बहुस्सुए ॥१८॥

(५) जहा से तिक्खसिंगे, जायखंधे विरायई।
वसहे जूहाहिवई, एव हवइ बहुस्सुए॥१९॥
(६) जहा से तिक्खदाढे, उदग्गे दुप्पहंसए।
सीहे मियाण पवरे, एवं हवइ बहुस्सुए॥२०॥
(७) जहा से वासुदेवे, संख-चक्क-गयाधरे।
अप्पडिहय-बले जोहे, एवं हवइ बहुस्सुए॥२१॥
(८) जहा से चाउरंते, ,चक्कवट्टी-महिड्ढिए।
चोद्दस-रयणाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए॥२२॥
(९) जहा से सहस्सक्खे, वज्जपाणी पुरंदरे।
सक्के देवाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए॥२३॥
(१०) जहा से तिमिरविद्धंसे, उच्चिट्ठंते दिवायरे।
जलंते इव तेएण एवं हवइ बहुस्सुए॥२४॥
(११) जहा से उडुवई चंदे, नक्खत्त-परिवारिए।
पडिपुण्णे पुण्णमासिए, एव हवइ बहुस्सुए॥२५॥
(१२) जहा से सामाइयाण, कोट्ठागारे सुरक्खिए।
नाणा-धन्न-पडिपुण्णे, एवं हवइ बहुस्सुए॥२६॥
(१३) जहा सा दुमाण पवरा, जंबू नाम सुदंसणा।
अणाढियस्स देवस्स, एवं हवइ बहुस्सुए॥२७॥
(१४) जहा सा नईण पवरा, सलिला सागरंगमा।
सीया नीलवंतपवहा, एवं हवइ बहुस्सुए॥२८॥

(१५) जहा से नगाण पवरे, सुमहं मंदरे गिरी।
नाणोसहि-पज्जलिए, एव हवइ बहुस्सुए ॥२९॥

(१६) जहा से सयंभुरमणे, उदही अक्खओदए।
नाणा-रयण-पडिपुण्णे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥३०॥

समुद्द-गंभीरसमा दुरासया,
अचक्किया केणइ दुप्पहंसया।
सुयस्स पुण्णा विउलस्स ताइणो,
खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गया ॥३१॥

तम्हा सुयमहिट्ठिज्जा, उत्तमट्ठगवेसए।
जेणप्पाण परं चेव, सिद्धिं संपाउणेज्जासि ॥३२॥

॥ त्ति बेमि ॥

अह हरिएसिज्जं नामं दुवालसममज्झयणं

सोवागकुलसंभूओ, गुणुत्तरधरो मुणी।
"हरिएसबलो" नाम, आसी भिक्खू जिइंदिओ ॥ १ ॥

इरि-एसण-भासाए, उच्चारसमिईसु य।
जओ आयाण-निक्खेवे, संजओ सु-समाहिओ ॥ २ ॥

मणगुत्तो-वयगुत्तो, कायगुत्तो जिइंदिओ।
भिक्खट्ठा बंभइज्जम्मि, जन्नवाडमुवट्ठिओ ॥ ३ ॥

त पासिऊणमेज्जंतं, तवेण परिसोसियं।
पंतोवहि-उवगरणं, उवहसंति अणारिया ॥ ४ ॥

जाइमय-पडियद्धा, हिंसगा अजिइंदिया।
अबंभचारिणो वाला, इमं वयणमब्बवी ॥ ५ ॥

ब्राह्मणा :—

कयरे आगच्छइ दित्तरूवे?
काले विकराले फोक्कनासे।
ओमचेलए पंसुपिसायभूए,
संकरदूसं परिहरिय कंठे ॥ ६ ॥

कयरे तुमं इय अदंसणिज्जे?
काए व आसा इहमागओसि?
ओम-चेलया पंसु-पीसायभूया,
गच्छ क्खलाहि किमिहं ठिओ सि ॥ ७ ॥

जक्खे तहिं तिंदुय रुक्खवासी,
अणुकंपओ तस्स महामुणिस्स।
पच्छायइत्ता नियगं सरीरं,
इमाइ वयणाइमुदाहरित्था ॥ ८ ॥

यक्ष :—

समणो अहं संजओ बंभयारी,
विरओ धण-पयण-परिग्गहाओ।

परप्पवित्तस्स उ भिक्खकाले,
अन्नस्स अट्ठा इहमागओमि ॥ ९ ॥

वियरिज्जइ खज्जइ भुज्जइ य,
अन्न पभूय भवयाणमेयं।
जाणाहि मे जायण-जीविणु त्ति,
सेसावसेसं लहउ तवस्सी ॥१०॥

ब्राह्मणा :–

उवक्खडं भोयण माहणाण,
अत्तट्ठियं सिद्धमिहेगपक्खं।
न उ वयं एरिसमन्नपाणं,
दाहामु तुज्झं किमिहं ठिओ सि ? ॥११॥

यक्ष :–

"थलेसु बीयाइ ववंति कासगा,"
तहेव निन्नेसु य आससाए।
एयाए सद्धाए दलाह मज्झ,
आराहए पुण्णमिणं खु खित्तं ॥१२॥

ब्राह्मणा –

खेत्ताणि अम्हं विइयाणि लोए,
जहिं पकिण्णा विरुहंति पुण्णा।

जे माहणा जाइ-विज्जोववेया,
ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइ ॥१३॥

यक्ष :–

कोहो य माणो य वहो य जेसिं,
मोसं अदत्तं च परिग्गहं च।
ते माहणा जाइ-विज्जा-विहूणा,
ताइं तु खेत्ताइं सुपावयाइं ॥१४॥

तुब्भेत्थ भो भारधरा गिराणं,
अट्ठं न जाणाह अहिज्ज वेए।
उच्चावयाइं मुणिणो चरंति,
ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ॥१५॥

ब्राह्मण :–

अज्झावयाणं पडिकूलभासी,
पभाससे किं नु सगासि अम्हं ?
अवि एयं विणस्सउ अन्नपाणं,
न य णं दाहामु तुमं नियंठा ॥१६॥

यक्ष :–

समिईहि मज्झं सुसमाहियस्स,
गुत्तीहि गुत्तस्स जिइंदियस्स।
जइ मे न दाहित्थ अहेसणिज्जं,
किमज्ज जन्नाण लहित्थ लाहं ॥१७॥

सोमदेव :--

के इत्थ खत्ता उवजोइया वा,
अज्झावया वा सह खंडिएहिं।
एयं खु दंडेण फलएण हंता,
कंठंमि घेत्तूण खलेज्ज जो णं ॥१८॥

अज्झावयाण वयणं सुणेत्ता,
उद्धाइया तत्थ बहू कुमारा।
दंडेहि वित्तेहि कसेहि चेव,
समागया तं इसि तालयंति ॥१९॥

भद्दा :--

रन्नो तहिं 'कोसलियस्स' धूया,
'भद्दत्ति' नामेण अणिंदियंगी।
तं पासिया संजय-हम्ममाणं,
कुद्धे कुमारे परिनिव्ववेइ ॥२०॥

देवाभिओगेण निओइएणं,
दिन्नामु रन्ना मणसा न झाया।
नरिंद-देविंद-भिवंदिएणं,
जेणम्हि वंता इसिणा स एसो ॥२१॥

एसो हु सो उग्गतवो महप्पा,
जिइंदिओ संजओ बंभयारी।

जो मे तया नेच्छइ दिज्जमाणिं,
पिउणा सयं कोसलिएण रन्ना ॥२२॥

महाजसो एस महाणुभागो,
घोरव्वओ घोरपरक्कमो य।
मा एयं हीलेह अहीलणिज्जं,
मा सव्वे तेएण भे निद्दहेज्जा ॥२३॥

एयाइं तीसे वयणाइं सोच्चा,
पत्तीइ भद्दाइ सुभासियाइं।
इसिस्स वेयावडियट्ठयाए,
जक्खा कुमारे विणिवारयंति ॥२४॥

ते घोररूवा ठिय अंतलिक्खे,
असुरा तहिं तं जणं तालयंति।
ते भिन्नदेहे रुहिरं वमंते,
पासित्तु भद्दा इणमाहु भुज्जो ॥२५॥

गिरिं नहेहिं खणह, अयं दंतेहिं खायह।
जायतेयं पाएहि हणह, जे भिक्खु अवमन्नह ॥२६॥

आसीविसो उग्गतवो महेसी,
घोरव्वओ घोरपरक्कमो य।
'अगणिं व पक्खंद पयंगसेणा,'
जे भिक्खुयं भत्तकाले वहेह ॥२७॥

सीसेण एयं सरणं उवेह,
समागया सव्वजणेण तुब्भे।
जइ इच्छह जीवियं वा धणं वा,
लोगंपि एसो कुविओ डहेज्जा ॥२८॥

अवहेडिय-पिट्ठि-सउत्तमंगे,
पसारिया बाहु अकम्मचेट्ठे।
निब्भेरियच्छे रुहिरं वमंते,
उड्ढंमुहे निग्गय-जीह-नेत्ते ॥२९॥

ते पासिया खंडियकट्ठभूए,
विमणो विसण्णो अह माहणो सो।
इसिं पसाएइ सभारियाओ,
हीलं च निंदं च खमाह भंते! ॥३०॥

सोमदेव :—

बालेहिं मूढेहिं अयाणएहिं,
जं हीलिया तस्स खमाह भंते!
महप्पसाया इसिणो हवंति,
न हु मुणी कोवपरा हवंति ॥३१॥

मुनि :—

पुव्विं च इण्हिं च अणागयं च,
मणप्पओसो न मे अत्थि कोइ।

जक्खा हु वेयावडियं करेंति,
तम्हा हु एए निहया कुमारा ॥३२॥

सोमदेव :–

अत्थं च धम्मं च वियाणमाणा,
तुब्भे न वि कुप्पह भूइपन्ना।
तुब्भं तु पाए सरणं उवेमो,
समागया सव्वजणेण अम्हे ॥३३॥

अच्चेमु ते महाभाग !, न ते किंचन अच्चिमो।
भुंजाहि सालिमं कूर, नाणा–वंजण–संजुयं ॥३४॥

इमं च मे अत्थि पभूयमन्नं,
तं भुंजसु अम्ह अणुग्गहट्ठा।
बाढं-ति-पडिच्छइ भत्तपाणं,
मासस्स ऊ पारणए महप्पा ॥३५॥

तहियं गंधोदय-पुप्फवासं,
दिव्वा तहिं वसुहारा य वुट्ठा।
पहयाओ दुंदुहीओ सुरेहिं,
आगासे अहो दाणं च घुट्ठं ॥३६॥

ब्राह्मणा :–

सक्खं खु दीसइ तवोविसेसो,
न दीसइ जाइविसेस कोई।

सोवागपुत्तं हरिएस साहुं,
जस्सेरिस्सा इड्ढि महाणुभागा ॥३७॥

मुनि :–

कि माहणा ! जोइसमारभंता,
उदएण सोहिं बहिया विमग्गहा ?
जं मग्गहा बाहिरियं विसोहिं,
न तं सुदिट्ठं कुसला वयंति ॥३८॥
कुसं च जूवं तणकट्ठमग्गिं,
सायं च पायं उदगं फुसंता।
पाणाइ भूयाइ विहेडयंता,
भुज्जो वि मंदा ! पगरेह पावं ॥३९॥

सोमदेवादय :–

कहं चरे भिक्खू ? वयं जयामो,
पावाइ कम्माइ पणुल्लयामो।
अक्खाहि णे संजय ! जक्खपूइया,
कहं सुजट्ठं कुसला वयंति ? ॥४०॥

मुनि :–

छज्जीवकाए असमारभंता,
मोसं अदत्तं च असेवमाणा।
परिग्गहं इत्थिओ माणमायं,
एवं परिन्नाय चरंति दंता ॥४१॥

सुसंवुडा पचहि सवरेहि,
इह जीवियं अणवकंखमाणा।
वोसट्ठकाया? सुइचत्तदेहा,
महाजयं जयइ जन्नसिट्ठं ॥४२॥

सोमदेवादय.—

के ते जोई? के व ते जोइठाणो?
का ते सुया? किं व ते कारिसंग?
एहा य ते कयरा सति भिक्खु?
कयरेण होमेण हुणासि जोइ? ॥४३॥

मुनि .—

तवो जोई जीवो जोइठाण,
जोगा सुया सरीरं कारिसंगं।
कम्मेहा संजमजोग सती,
होमं हुणामि इसिण पसत्थ ॥४४॥

सोमदेवादय :—

के ते हरए के य ते संतितित्थे?
कहिं सिणाओ व रयं जहासि?
आइक्ख णे संजय! जक्खपूइया,
इच्छामो नाउं भवओ सगासे ॥४५॥

मुनि :–

धम्मे हरए बंभे संतितित्थे,
अणाविले अत्तपसन्नलेसे।
जहिंसि ण्हाओ विमलो विसुद्धो,
सुसीइभूओ पजहामि दोसं ॥४६॥

एयं सिणाणं कुसलेहि दिट्ठं,
महासिणाणं इसिणं पसत्थं।
जहिंसि ण्हाया विमला विसुद्धा,
महारिसी उत्तमं ठाणं पत्ता ॥४७॥

॥ त्ति बेमि ॥

अह चित्तसंभूइज्जं नाम तेरसममज्झयणं

जाईपराजिओ खलु, कासि नियाणं तु 'हत्थिणपुरम्मि'।
'चुलणीए बंभदत्तो' उववन्नो 'पउमगुम्माओ' ॥१॥

'कंपिल्ले' संभूओ, 'चित्तो' पुण जाओ 'पुरिमतालम्मि'।
सेट्ठिकुलम्मि विसाले, धम्मं सोऊण पव्वइओ ॥२॥

कंपिल्लम्मि य नयरे, समागया दो वि चित्तसंभूया।
सुह-दुक्ख-फलविवागं, कहेंति ते एक्कमेक्कस्स ॥३॥

चक्कवट्टी महिड्ढीओ, बंभदत्तो महायसो ।
भायरं बहुमाणेणं, इमं वयणमब्बवी ॥ ४ ॥

आसीमु भायरा दोवि, अन्नमन्नवसाणुगा ।
अन्नमन्नमणुरत्ता, अन्नमन्न-हिएसिणो ॥ ५ ॥

दासा "दसण्णे" आसी, मिया "कालिंजरे नगे" ।
हंसा 'मयगतीराए', सोवागा 'कासिभूमिए' ॥ ६ ॥

देवा य देवलोगम्मि, आसि अम्हे महिड्ढिया ।
इमा णो छट्ठिया जाई, अन्नमन्नेण जा विणा ॥ ७ ॥

चित्तमुनि :-

कम्मा नियाणपयडा, तुमे राय ! विचिंतिया ।
तेसिं फलविवागेण, विप्पओगमुवागया ॥ ८ ॥

ब्रह्मदत्त .-

सच्च-सोय-प्पगडा, कम्मा मए पुरा कडा ।
ते अज्ज परिभुंजामो, किं नु चित्तेवि से तहा ? ॥ ९ ॥

चित्तमुनि -

सव्वं सुचिण्णं सफलं नराणं,
कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि ।
अत्थेहि कामेहि य उत्तमेहि,
आया 'मम' पुण्णफलोववेए ॥१०॥

जाणाहि संभूय ! महाणुभागं,
महिड्ढियं पुण्णफलोववेयं ।
चित्तं पि जाणाहि तहेव राय !
इड्ढी जुई तस्स वि य प्पभूया ॥११॥

महत्थरूवा वयणऽप्पभूया,
गाहाणुगीया नरसंघमज्झे ।
जं भिक्खुणो सीलगुणोववेया,
इहऽज्जयंते समणो म्हि जाओ ॥१२॥

ब्रह्मदत्त :-

उच्चोयए महु कक्के य बम्भे,
पवेइया आवसहा य रम्मा ।
इमं गिहं चित्तधणप्पभूयं,
पसाहि पंचालगुणोववेयं ॥१३॥

नट्टेहि गीएहि य वाइएहिं,
नारीजणाहिं परिवारयंतो ।
भुंजाहि भोगाइ इमाइ भिक्खू !
मम रोयई पव्वज्जा हु दुक्खं ॥१४॥

चित्तमुनि :-

तं पुव्वनेहेण कयाणुरागं,
नराहिवं कामगुणेसु गिद्धं ।

धम्मस्सिओ तस्स हियाणुपेही,
चित्तो इमं वयणमुदाहरित्था ॥१५॥

सव्वं विलवियं गीयं, सव्वं नट्टं विडंबियं ।
सव्वे आभरणा भारा, सव्वे कामा दुहावहा ॥१६॥

बालाभिरामेसु दुहावहेसु,
न तं सुहं कामगुणेसु रायं !
विरत्तकामाण तवोधणाणं,
जं भिक्खुणं सीलगुणे रयाणं ॥१७॥

नरिंद ! जाई अहमा नराणं,
सोवागजाई दुहओ गयाणं ।
जहिं वयं सव्वजणस्स वेसा,
वसीय सोवागनिवेसणेसु ॥१८॥

तीसे अ जाईइ उ पावियाए,
वुच्छामु सोवागनिवेसणेसु ।
सव्वस्स लोगस्स दुगंछणिज्जा,
इहं तु कम्माइं पुरे कडाइं ॥१९॥

सो दाणिसिं राय ! महाणुभागो,
महिड्ढिओ पुण्णफलोववेओ ।
चइत्तु भोगाइं असासयाइं,
आदाणहेउं अभिणिक्खमाहि ॥२०॥

इह जीविए राय ! असासयम्मि,
धणियं तु पुण्णाइ अकुव्वमाणो ।
से सोयइ मच्चुमुहोवणीए,
धम्मं अकाऊण परंसि लोए ॥२१॥

'जहेह सीहो व मियं गहाय',
मच्चू नरं नेइ हु अंतकाले ।
न तस्स माया व पिया व भाया,
कालम्मि तम्मंसहरा भवंति ॥२२॥

न तस्स दुक्खं विभयंति नाइओ,
न मित्तवग्गा न सुया न बंधवा ।
एक्को सयं पच्चणुहोइ दुक्खं,
कत्तारमेवं अणुजाइ कम्मं ॥२३॥

चिच्चा दुप्पयं च चउप्पयं च,
खेत्तं गिहं धणधन्नं च सव्वं ।
सकम्मबीओ अवसो पयाइ,
परं भवं सुंदरपावगं वा ॥२४॥

तं एक्कगं तुच्छसरीरगं से,
चिईगयं दहिय उ पावगेणं ।
भज्जा य पुत्ता वि य नायओ य,
दायारमन्नं अणुसंकमंति ॥२५॥

उवणिज्जई जीवियमप्पमायं,
वण्णं जरा हरइ नरस्स रायं!
पंचालराया ! वयणं सुणाहि,
मा कासि कम्माइ महालयाइं ॥२६॥

ब्रह्मदत्त :—

अहं पि जाणामि जहेह साहू,
ज मे तुम साहसि वक्कमेयं।
भोगा इमे संगकरा हवंति,
जे दुज्जया अज्ज? अम्हारिसेहिं ॥२७॥

हत्थिणपुरम्मि चित्ता ! दट्ठूणं नरवइं महिड्ढियं।
कामभोगेसु गिद्धेणं, नियाणमसुहं कडं ॥२८॥

तस्स मे अप्पडिकतस्स, इमं एयारिसं फलं।
जाणमाणो वि जं धम्मं, कामभोगेसु मुच्छिओ ॥२९॥

"नागो जहा" पंकजलावसन्नो,
दट्ठु थलं नाभिसमेइ तीरं।
एवं वयं कामगुणेसु गिद्धा,
न भिक्खुणो मग्गमणुव्वयामो ॥३०॥

चित्तमुनि :—

अच्चेइ कालो तूरंति राइओ,
न यावि भोगा पुरिसाण निच्चा।

उविच्च भोगा पुरिसं जयंति,
दुमं जहा खीणफलं व पक्खी ॥३१॥

जई सि भोगे चइउं असत्तो,
अज्जाइ कम्माइ करेहि राय!
धम्मे ठिओ सव्व-पयाणुकंपी,
तो होहिसि देवो इओ विउव्वी ॥३२॥

न तुज्झ भोगे चइऊण बुद्धी,
गिद्धोसि आरंभ-परिग्गहेसु।
मोहं कओ एत्तिउ विप्पलावो,
गच्छामि राय! आमंतिओसि ॥३३॥

पंचालराया वि य बंभदत्तो,
साहुस्स तस्स वयणं अकाउं।
अणुत्तरे भुंजिय कामभोगे,
अणुत्तरे सो नरए पविट्ठो ॥३४॥

चित्तो वि कामेहि विरत्तकामो,
उदग्गचरित्ततवो महेसी।
अणुत्तरं संजमं पालइत्ता,
अणुत्तरं सिद्धिगइं गओ ॥३५॥

॥ त्ति बेमि ॥

अह उसुयारिज्ज नामं चउदसममज्झयणं

देवा भवित्ताण पुरे भवम्मि,
केइ चुया एगविमाणवासी।
पुरे पुराणे 'उसुयारनामे',
खाए समिद्धे सुरलोगरम्मे॥ १ ॥

सकम्मसेसेण पुराकएणं,
कुलेसुदग्गेसु य ते पसूया।
निव्विण्ण-संसारभया जहाय,
जिणिंदमग्गं सरणं पवन्ना॥ २ ॥

पुमत्तमागम्म कुमार दो वि,
पुरोहिओ तस्स जसा य पत्ती।
विसालकित्ती य तहे "सुयारो",
रायत्थ देवी "कमलावाई" य॥ ३ ॥

जाई-जरा-मच्चु-भयाभिभूया,
बहिं विहाराभिनिविट्ठ-चित्ता।
संसार-चक्कस्स विमोक्खणट्ठा,
दट्ठूण ते कामगुणे विरत्ता॥ ४ ॥

पियपुत्तगा दुन्नि वि माहणस्स,
सकम्मसीलस्स पुरोहियस्स।

सरित्तु पोराणिय तत्थ जाइं,
तहा सुचिण्णं तवसंजमं च ॥ ५ ॥

कुमारो :—

ते कामभोगेसु असज्जमाणा,
माणुस्सएसु जे यावि दिव्वा।
मोक्खाभिकंखी अभिजायसड्ढा,
ताय उवागम्म इमं उदाहु ॥ ६ ॥

असासयं दट्ठु इमं विहारं,
बहुअंतरायं न य दीहमाउं।
तम्हा गिहंसि न रइं लहामो,
आमंतयामो चरिस्सामु मोणं ॥ ७ ॥

भृगु :—

अह तायगो तत्थ मुणीण तेसिं,
तवस्स वाघायकरं वयासी।
इमं वयं वेयविओ वयंति,
जहा न होई असुयाण लोगो ॥ ८ ॥

अहिज्ज वेए परिविस्स विप्पे,
पुत्ते परिट्ठप्प गिहंसि जाया! ।
भोच्चा ण भोए सह इत्थियाहिं,
आरण्णगा होइ मुणी पसत्था ॥ ९ ॥

कुमारो :–

मोहाणिला आयगुणिधणेण,
मोहाणिला पज्जलणाहिएणं ।
लालप्पमाण परितप्पमाणं,
लालप्पमाण बहुहा बहुं च ॥१०॥

पुरोहियं तं कमसोऽणुणंतं,
निमंतयंतं च सुए धणेण ।
जहक्कमं कामगुणेहि चेव,
कुमारगा ते पसमिक्ख वक्कं ॥११॥

वेया अहिया न भवंति ताण,
भुत्ता दिया निंति तम तमेण ।
जाया य पुत्ता न हवंति ताणं,
को णाम ते अणुमन्नेज्ज एयं ॥१२॥

खणमित्तसुक्खा बहुकालदुक्खा,
पगामदुक्खा अणिगामसुक्खा ।
संसार-मोक्खस्स विपक्खभूया,
खाणी अणत्थाण उ कामभोगा ॥१३॥

परिव्वयंते अणियत्तकामे,
अहो य राओ परितप्पमाणे ।
अन्नप्पमत्ते धणमेसमाणे,
पप्पोति मच्चु पुरिसे जरं च ॥१४॥

इमं च मे अत्थि इम च नत्थि,
इमं च मे किच्च इमं अकिच्चं।
त एवमेवं लालप्पमाण,
हरा हरति त्ति कह पमाओ ॥१५॥

भृगु :-

धण पभूय सह इत्थियाहि,
सयणा तहा कामगुणा पगामा।
तव कए तप्पइ जस्स लोगो,
तं सव्वसाहीणमिहेव तुब्भं ॥१६॥

कुमारौ :-

धणेण कि धम्मधुराहिगारे,
सयणेण वा कामगुणेहि चेव।
समणा भविस्सामु गुणोहधारी,
बहि विहारा अभिगम्म भिक्ख ॥१७॥

भृगु :-

'जहा य अग्गी अरणी असंतो',
'खीरे घयं तेल्लमहातिलेसु।'
एमेव जाया सरीरंसि सत्ता,
संमुच्छइ नासइ नावचिट्ठे ॥१८॥

कुमारो –

न इंदियग्गेज्झ अमुत्तभावा,
अमुत्तभावा वि य होइ निच्चो।
अज्झत्थहेउं निययस्स बंधो,
संसारहेउं च वयंति बंधं ॥१९॥

जहा वयं धम्ममजाणमाणा,
पावं पुरा कम्ममकासि मोहा।
ओरुज्झमाणा परिरक्खियंता,
तं नेव भुज्जो वि समायरामो ॥२०॥

अब्भाहयम्मि लोगम्मि, सव्वओ परिवारिए।
अमोहाहिं पडंतीहिं, गिहंसि न रइं लभे ॥२१॥

भृगुः–

केण अब्भाहओ लोगो ? केण वा परिवारिओ ?
का वा अमोहा वुत्ता ? जाया चिंतावरो हुमि ॥२२॥

कुमारो –

मच्चुणाऽब्भाहओ लोगो, जराए परिवारिओ।
अमोहा रयणी वुत्ता, एवं ताय वियाणह ॥२३॥

जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनियत्तइ।
अहम्मं कुणमाणस्स, अफला जंति राइओ ॥२४॥

जा जा वच्चइ रयणी, ना सा पडिनियत्तइ।
धम्मं च कुणमाणस्स, सफला जंति राइओ ॥२५॥

भृगुः—

एगओ सवसित्ताण, दुहओ सम्मत्तसंजुया।
पच्छा जाय ! गमिस्सामो, भिक्खमाणा कुले कुले ॥२६॥

कुमारौः—

जस्सत्थि मच्चुणा सक्खं, जस्स वऽत्थि पलायणं।
जो जाणे न मरिस्सामि, सो हु कंखे सुए सिया ॥२७॥

अज्जेव धम्मं पडिवज्जयामो,
जहिं पवन्ना न पुणब्भवामो।
अणागयं नेव य अत्थि किंची,
सद्धाखमं णे विणइत्तु रागं ॥२८॥

भार्यां प्रति भृगुः—

पहीणपुत्तस्स हु नत्थि वासो,
वासिट्ठि ! भिक्खायरियाइ कालो।
"साहाहि रुक्खो लहए समाहिं,
छिन्नाहि साहाहि तमेव खाणुं" ॥२९॥

"पंखाविहूणो व्व जहेव पक्खी",
"भिच्चविव्हूणो व्व रणे नरिंदो।"
"विवन्नसारो वणिओ व्व पोए,"
पहीणपुत्तो मि तहा अहंपि ॥३०॥

भृगुं प्रति जसा:–

सुसंभिया कामगुणे इमे ते,
संपिण्डिया अग्गरसप्पभूया ।
भुंजामु ता कामगुणे पगामं,
पच्छा गमिस्सामु पहाणमग्गं ॥३१॥

भार्यां प्रति भृगुः–

भुत्ता रसा भोइ ! जहाइ णे वओ,
न जीवियट्ठा पजहामि भोए ।
लाभं अलाभं च सुहं च दुक्खं,
संचिक्खमाणो चरिस्सामि मोणं ॥३२॥

भृगुं प्रति जसा:–

मा हू तुमं सोयरियाण संभरे,
"जुण्णो व हंसो पडिसोत्तगामी ।"
भुंजाहि भोगाहि मए समाणं,
दुक्खं खु भिक्खायरियाविहारो ॥३३॥

भार्यां प्रतिभृगुः–

'जहा य भोई तणुयं भुयंगो,
निम्मोयणिं हिच्च पलेइ मुत्तो ।'
एमेए जाया पयहंति भोए,
ते हं कहं नाणुगमिस्समेक्को ? ॥३४॥

'छिंदित्तु जालं अबलं व रोहिया,
मच्छा जहा कामगुणे पहाए ।'
धोरे य सीला तवसा उदारा,
धीरा हु भिक्खायरियं चरंति ॥३५॥

जसाया स्वगतम्:—

'नहेव कुंचा समइक्कामंता,
तयाणि जालाणि दलित्तु हंसा ।'
पलिंति पुत्ता य पई य मज्झं,
ते हं कहं नाणुगमिस्समेक्का ? ॥३६॥

कमलावती:—

पुरोहियं तं ससुयं सदारं,
सोच्चाऽभिनिक्खम्म पहाय भोए ।
कुडुंब सारं विउलुत्तमं च,
रायं अभिक्खं समुवाय देवी ॥३७॥

वंतासी पुरिसो रायं ! न सो होई पसंसिओ ।
माहणेण परिच्चत्तं, धण आयाउमिच्छसि ॥३८॥
सव्व जग जइ तुहं, सव्वं वावि धणं भवे ।
सव्व पि ते अपज्जत्तं, नेव ताणाय तं तव ॥३९॥

मरिहिसि रायं ! जया तया वा,
मणोरमे कामगुणे पहाय ।

एक्को हु धम्मो नरदेव ! ताणं,
न विज्जई अन्नमिहेह किंचि ॥४०॥
"नाहं रमे पक्खिणि पंजरे वा,"
संताणछिन्ना चरिस्सामि मोणं ।
अकिंचणा उज्जुकडा निरामिसा,
परिग्गहारंभनियत्तदोसा ॥४१॥

दवग्गिणा जहा रण्णे, डज्झमाणेसु जंतुसु ।
अन्ने सत्ता पमोयंति, रागद्दोसवसं गया" ॥४२॥
एवमेव वयं मूढा, काम—भोगेसु मुच्छिया ।
डज्झमाणं न बुज्झामो, रागद्दोसग्गिणा जगं ॥४३॥
भोगे भोच्चा वमित्ता य, लहुभूयविहारिणो ।
आमोयमाणा गच्छंति, 'दिया कामकमा इव' ॥४४॥
इमे य बद्धा फंदंति, मम हत्थऽज्जमागया ।
वयं च सत्ता कामेसु, भविस्सामो जहा इमे ॥४५॥
'सामिसं कुललं दिस्स, बज्झमाणं निरामिसं ।'
आमिसं सव्वमुज्झित्ता, विहरिस्सामि निरामिसा ॥४६॥
'गिद्धोवमा' उ नच्चाणं, कामे संसारवड्ढणे ।
'उरगो सुवण्णपासेव्व,' संकमाणो तणुं चरे ॥४७॥
'नागोव्व' बंधणं छित्ता, अप्पणो वसहिं वए ।
एयं पत्थं महारायं, उसुयारि त्ति मे सुयं ॥४८॥

चइत्ता विउलं रज्जं, कामभोगे य दुच्चए ।
निव्विसया निरामिसा, निन्नेहा निप्परिग्गहा ॥४९॥

सम्मं धम्मं वियाणित्ता, चिच्चा कामगुणे वरे ।
तवं पगिज्झहक्खायं, घोरं घोरपरक्कमा ॥५०॥

एवं ते कमसो बुद्धा, सव्वे धम्मपरायणा ।
जम्म-मच्चु-भउव्विग्गा, दुक्खस्संतगवेसिणो ॥५१॥

सासणे विगयमोहाणं, पुव्विं भावणभाविया ।
अचिरेणेव कालेणं, दुक्खसंतमुवागया ॥५२॥

राया सह देवीए, माहणो य पुरोहिओ ।
माहणी दारगा चेव, सव्वे ते परिनिव्वुडा ॥५३॥

॥ त्ति बेमि ॥

अह सभिक्खू नामं पंचदसममज्झयणं

मोणं चरिस्सामि समिच्च धम्मं,
सहिए उज्जुकडे नियाणछिन्ने ।
संथवं जहिज्ज अकामकामे,
अन्नायएसी परिव्वए स भिक्खू ॥१॥

राओ वरयं चरेज्ज लाढे,
विरए वेयवियाऽऽयरक्खिए ।
पन्नं अभिभूय सव्वदंसी,
जे कम्हि-वि न मुच्छिए स भिक्खू ॥२॥

अक्कोस-वहं विइत्तु धीरे,
मुणी चरे लाढे निच्चमायगुत्ते ।
अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे,
जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥३॥

पंतं सयणासणं भइत्ता,
सीउण्हं विविहं च दंस-मसगं ।
अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे,
जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥४॥

नो सक्कियमिच्छई न पूयं,
नो वि य वंदणगं कुओ पसंसं ?
से संजए सुव्वए तवस्सी,
सहिए आयगवेसए स भिक्खू ॥५॥

जेण पुण जहाइ जीवियं,
मोहं वा कसिणं नियच्छइ ।
नरनारिं पजहे सया तवस्सी,
न य कोऊहलं उवेइ स भिक्खू ॥६॥

छिन्नं सरं भोमं अंतलिक्खं,
सुमिणं लक्खण-दंड-वत्थुविज्जं ।
अंगवियारं सरस्स विजयं,
जे विज्जाहिं न जीवइ स भिक्खू ॥७॥

मंतं मूल विविहं वेज्जचितं,
वमणविरेयण-धूम-णेत्त-सिणाणं ।
आउरे सरणं तिगिच्छियं च,
तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥८॥

खत्तियगण—उग्ग—रायपुत्ता,
माहण-भोई य विविहा य सिप्पिणो ।
नो तेसिं वयइ सिलोगपूयं,
तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥९॥

गिहिणो जे पव्वइएण दिट्ठा,
अप्पव्वइएण व संथुया हविज्जा ।
तेसिं इहलोइय-फलट्ठा,
जो संथवं न करेइ स भिक्खू ॥१०॥

सयणासण पाण-भोयणं,
विविहं खाइम साइमं परेसिं
अदए पडिसेहिए नियंठे,
जे तत्थ न पउस्सइ स भिक्खू ॥११॥

जं किंचि आहार-पाणगं,
विविहं खाइम-साइमं परेसिं लद्धुं ।

जो तं तिविहेण नाणुकंपे,
मण-वय-काय-सुसंवुडे स भिक्खू ॥१२॥

आयामगं चेव जवोदणं च,
सीयं सोवीर-जवोदगं च ।
नो हीलए पिंडं नीरसं तु,
पंतकुलाइं परिव्वए स भिक्खू ॥१३॥

सद्दा विविहा भवंति लोए,
दिव्वा माणुस्सगा तहा तिरिच्छा,
भीमा भयभेरवा उराला,
जो सोच्चा न विहिज्जइ स भिक्खू ॥१४॥

वादं विविहं समिच्च लोए,
सहिए खेयाणुगए य कोवियप्पा ।
पन्ने अभिभूय सव्वदंसी,
उवसंते अविहेडए स भिक्खू ॥१५॥

असिप्पजीवी अगिहे अमित्ते,
जिइंदिए सव्वओ विप्पमुक्के ।
अणुक्कसाई लहु-अप्प-भक्खी,
चिच्चा गिहं एगचरे स भिक्खू ॥१६॥

॥ त्ति बेमि ॥

अह बंभचेरसमाहिठाणा णामं सोलसममज्झयणं

सुयं मे आउसं !

तेणं भगवया एवमक्खायं—

इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं दस बंभचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता ।

जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले, संवरबहुले, समाहिबहुले, गुत्ते गुत्तिदिए गुत्त-बंभयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ।

कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं दस बंभचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता ?

जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले, संवरबहुले, समाहिबहुले, गुत्ते गुत्तिदिए गुत्त बंभयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ?

इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं दस बंभचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता ?

जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले, संवरबहुले, समाहिबहुले, गुत्ते गुत्तिदिए गुत्त बंभयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ।

तं जहा—

विवित्ताइं सयणासणाइं सेविज्जा से निग्गंथे ।

नो इत्थी-पसु-पंडग-संसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ से निग्गंथे ।

तं कहमिति चे—

आयरियाह—

निग्गंथस्स खलु इत्थि-पसु-पंडग-संसत्ताइं सयणासणाइं—

सेवमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे—

संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिजज्जा—

भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा,
दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा,
केवलिपन्नताओ वा धम्माओ भंसेज्जा ।
तम्हा नो इत्थि-पसु-पंडग-संसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ से निग्गंथे ॥१॥

नो इत्थीणं कहं कहित्ता हवइ से निग्गंथे ।
तं कहमिति चे ?
आयरियाह–
निग्गंथस्स खलु इत्थीणं कहं कहेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे–
संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा–
भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा–
दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा–
केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा–
तम्हा खलु नो इत्थीणं कहं कहेज्जा ॥२॥

नो इत्थीणं सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरित्ता हवइ से निग्गंथे ।
तं कहमिति चे ?
आयरियाह–
निग्गंथस्स खलु इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागयस्स बंभयारिस्स बंभचेरे–
संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा–
भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा–
दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा–

केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा—
तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागए
विहरेज्जा ॥३॥
नो इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं, मणोरमाइं,
आलोइत्ता निज्झाइत्ता हवइ से निग्गंथे।
तं कहमिति चे ?
आयरियाह—
निग्गंथस्स खलु इत्थीणं इंदियाई मणोहराइं, मणोरमाइं
आलोएमाणस्स निज्झायमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे—
संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा—
भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा,
दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा,
केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा,
तम्हा खलु निग्गंथे नो इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं, मणोरमाइं,
आलोएज्जा निज्झाएज्जा ॥४॥

नो इत्थीणं कुड्डंतरंसि वा, दूसंतरंसि वा, भित्तंतरंसि वा,
कूइयसद्दं वा, रुइयसद्दं, वा, गीयसद्दं वा, हसियसद्दं वा,
थणियसद्दं वा, कंदियसद्दं वा विलवियसद्दं वा—
सुणित्ता हवइ से निग्गंथे।
तं कहमिति चे ?
आयरियाह—

निग्गंथस्स खलु इत्थीण–
कुड्डंतरंसि वा, दूसंतरंसि वा, भित्तंतरंसि वा,
कूइयसद्दं वा, रुइयसद्दं वा, गीयसद्दं वा, हसियसद्दं वा,
थणियसद्दं वा, कंदियसद्दं वा, विलवियसद्दं वा,
सुणेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे–
संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा
भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा,
दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा,
केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा
तम्हा खलु निग्गंथे नो इत्थीणं–
कुड्डंतरंसि वा, दूसंतरंसि वा, भित्तंतरंसि वा,
कूइयसद्दं वा, रुइयसद्दं वा, गीयसद्दं वा, हसियसद्दं वा,
थणियसद्दं वा,, कंदियसद्दं वा, विलवियसद्दं वा,
सुणेमाणे विहरेज्जा ॥५॥
नो इत्थीणं पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरित्ता हवइ से निग्गथे।
तं कहमिति चे ?
आयरियाह–
निग्गंथस्स खलु पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरमाणस्स
बंभयारिस्स बंभचेरे–
संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा–
भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा–

दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा–
केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा–
तम्हा खलु नो निग्गंथे पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरेज्जा ॥६॥

नो पणीयं आहारं आहारित्ता हवइ से निग्गंथे ।
तं कहमिति चे ?
आयरियाह–
निग्गंथस्स खलु पणीयं आहारं आहारेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे–
संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा–
भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा–
दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा,
केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा
तम्हा खलु नो निग्गंथे पणीयं आहारं आहरेज्जा ॥७॥

नो अइमायाए पाणभोयणं आहारेत्ता हवइ से निग्गंथे ।
तं कहमिति चे ?
आयरियाह–
निग्गंथस्स खलु अइमायाए पाणभोयणं–
आहारेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे–
संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा–
भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा–
दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा,
केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा
तम्हा खलु नो निग्गंथे अइमायाए पाणभोयणं आहारेज्जा ॥८॥

नो विभूसाणुवाई हवइ से निग्गंथे ।
तं कहमिति चे ?
आयरियाह–
निग्गंथस्स खलु विभूसावत्तिए विभूसियसरीरे–
इत्थिजणस्स अभिलसणिज्जे हवइ–
तओ णं इत्थिजणेणं अभिलसिज्जमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे–
संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा–
भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा–
दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा,
केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा
तम्हा खलु नो निग्गंथे विभूसाणुवाई हवेज्जा ॥९॥

नो सद्द-रूव-रस-गंध-फासाणुवाई हवई से निग्गंथे ।
तं कहमिति चे ?
आयरियाह–
निग्गंथस्स खलु सद्द-रस-रूव-गंध-फासाणुवाईस्स
बंभयारिस्स बंभचेरे–
संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा–
भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा–
दीहकालिय वा रोगायंकं हवेज्जा,
केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा
तम्हा खलु नो निग्गंथे सद्द-रूव-रस-गंध-फासाणुवाई हवेज्जा ।

दसमे बंभचेरसमाहिठाणे हवइ ॥१०॥

भवंति इत्थ सिलोगा ।

तं जहा—

जं विवित्तमणाइण्णं, रहियं इत्थिजणेण य ।
बंभचेरस्स रक्खट्ठा, आलयं तु निसेवए ॥ १ ॥

मणपल्हायजणणिं, कामरागविवड्ढणिं ।
बंभचेररओ भिक्खू, थीकहं तु विवज्जए ॥ २ ॥

समं च संथवं थीहिं, संकहं च अभिक्खणं ।
बंभचेररओ भिक्खू, निच्चसो परिवज्जए ॥ ३ ॥

अंगपच्चंगसंठाणं, चारुल्लवियपेहियं ।
बंभचेररओ थीणं, चक्खुगिज्झं विवज्जए ॥ ४ ॥

कूइयं रुइयं गीयं, हसियं थणिय-कंदियं ।
बंभचेररओ थीणं, सोयगिज्झं विवज्जए ॥ ५ ॥

हासं किड्डुं रइं दप्पं, सहसावित्तासियाणि य ।
बंभचेररओ थीणं, नाणुचिंते कयाइ वि ॥ ६ ॥

पणीयं भत्तपाणं तु, खिप्पं मयविवड्ढणं ।
बंभचेररओ भिक्खू, निच्चसो परिवज्जए ॥ ७ ॥

धम्मलद्धं मियं काले, जत्तत्थं पणिहाणवं ।
नाइमत्तं तु भुंजेज्जा, बंभचेररओ सया ॥ ८ ॥

विभूसं परिवज्जेज्जा, सरीर-परिमंडणं ।
बंभचेररओ भिक्खू, सिंगारत्थं न धारए ॥ ९ ॥

सद्दे रूवे य गंधे य, रसे फासे तहेव य।
पंचविहे कामगुणे, निच्चसो परिवज्जए ॥१०॥

आलओ[1] थीजणाइण्णो,[2] थीकहा य मणोरमा[3]।
संथवो चेव नारीणं,[4] तासिं इंदियदरिसणं[5] ॥११॥

कूइयं रुइयं गीयं, हसियं भुत्ताऽऽसियाणि[6] य।
पणीयं भत्तपाणं च, अइमायं पाणभोयणं[8] ॥१२॥

गत्तभूसणमिट्ठं[9] च, कामभोगा य दुज्जया[10]।
नरस्सऽत्तगवेसिस्स, "विसं तालउडं जहा" ॥१३॥

दुज्जए कामभोगे य, निच्चसो परिवज्जए।
संकट्ठाणाणि सव्वाणि, वज्जेज्जा पणिहाणवं ॥१४॥

धम्मारामे चरे भिक्खू, धिइमं धम्मसारही।
धम्मारामरए दंते, बंभचेर-समाहिए ॥१५॥

देव-दाणव-गंधव्वा, जक्ख-रक्खस-किन्नरा।
बंभयारिं नमंसंति, दुक्करं जे करंति तं ॥१६॥

एस धम्मे धुवे निच्चे, सासए जिणदेसिए।
सिद्धा सिज्झंति चाणेण, सिज्झिस्संति तहावरे ॥१७॥

॥ त्ति बेमि ॥

अह पावसमणिज्जं नाम सत्तदसममज्झयणं

जे केइ उ पव्वइए नियंठे,
धम्मं सुणित्ता विणओववन्ने।
सुदुल्लहं लहिउं बोहिलाभं,
विहरेज्ज पच्छा य जहासुहं तु ॥ १ ॥

सेज्जा दढा पाउरणं मि अत्थि,
उप्पज्जई भोत्तुं तहेव पाउं।
जाणामि जं वट्टइ आउसु त्ति,
किं नाम काहामि सुएण भंते! ॥ २ ॥

जे केई उ पव्वइए, निद्दासीले पगामसो।
भोच्चा पिच्चा सुहं सुवइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ ३ ॥

आयरिय-उवज्झाएहिं, सुयं विणयं च गाहिए।
ते चेव खिसई बाले, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ ४ ॥

आयरिय-उवज्झायाणं, सम्मं न पडितप्पइ।
अप्पडिपूयए थद्धे, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ ५ ॥

सम्मद्दमाणे पाणाणि, बीयाणि हरियाणि य।
असंजए संजयमन्नमाणे, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ ६ ॥

संथारं फलगं पीढं, निसेज्जं पायकंबलं।
अपमज्जियमारुहइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ ७ ॥

दव-द्दवस्स चरई, पमत्ते य अभिक्खणं।
उल्लंघणे य चंडे य, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ ८ ॥

पडिलेहेइ पमत्ते, अव उज्झइ पायकंबलं।
पडिलेहा-अणाउत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥ ९ ॥

पडिलेहेइ पमत्ते, से किंचि हु निसामिया।
गुरुं परिभावए निच्चं, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१०॥

बहुमाई पमुहरी, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे।
असंविभागी अचियत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥११॥

विवादं च उदीरेइ, अहम्मे अत्तपन्नहा।
वुग्गहे कलहे रत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१२॥

अथिरासणे कुक्कुइए, जत्थ तत्थ निसीयइ।
आसणम्मि अणाउत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१३॥

ससरक्खपाए सुवइ, सेज्जं न पडिलेहइ।
संथारए अणाउत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१४॥

दुद्धदही-विगईओ, आहारेइ अभिक्खणं।
अरए य तवोकम्मे, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१५॥

अत्थंतम्मि य सूरम्मि, आहारेइ अभिक्खणं।
चोइओ पडिचोएइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१६॥

आयरियपरिच्चाई, परपासंडसेवए।
गाणंगणिए दुब्भूए पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१७॥

सयं गेहं परिच्चज्ज, परगेहंसि वावरे।
निमित्तेण य ववहरइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१८॥

सन्नाइपिंडं जेमेइ, नेच्छई सामुदाणियं।
गिहिनिसेज्जं च वाहेइ, पावसमणि त्ति वुच्चइ ॥१९॥

एयारिसे पंचकुसीलसंवुडे,
रूवंधरे मुणिपवराण हेट्ठिमे।
अयंसि लोए विसमेवगरहिए,
न से इहं नेव परत्थ लोए ॥२०॥

जे वज्जए एए सया उ दोसे,
से सुव्वए होइ मुणीण मज्झे।
अयंसि लोए 'अमयं व पूइए'
आराहए लोगमिणं तहा परं ॥२१॥

॥ त्ति बेमि ॥

अह संजइज्जं नामं अठारसममज्झयणं

'कंपिल्ले नयरे' राया, उदिण्णबलवाहणे।
नामेण 'संजए' नाम, मिगव्वं उवणिग्गए ॥१॥

हयाणीए[1] गयाणीए[2], रहाणीए[3] तहेव य।
पायत्ताणीए[4] महया, सव्वओ परिवारिए ॥२॥

मिए छुहित्ता हयगओ कंपिल्लुज्जाणकेसरे ।
भीए संते मिए तत्थ, वहेइ रसमुच्छिए ॥३॥

अह 'केसरम्मि' उज्जाणे, अणगारे तवोधणे ।
सज्झायज्झाणसंजुत्ते, धम्मज्झाणं झियायइ ॥ ४ ॥

अप्फोवमंडवम्मि, झायइ खवियासवे ।
तस्सागए मिए पासं, वहेई से नराहिवे ॥ ५ ॥

अह आसगओ राया, खिप्पमागम्म सो तहिं ।
हए मिए उ पासित्ता, अणगारं तत्थ पासई ॥ ६ ॥

अह राया तत्थ संभंतो, अणगारो मणाहओ ।
मए उ मंदपुण्णेणं, रसगिद्धेण घंतुणा ॥ ७॥

आसं विसज्जइत्ताणं, अणगारस्स सो निवो ।
विणएण वंदए पाए, भगवं ! एत्थ मे खमे ॥ ८ ॥

अह मोणेण सो भगवं, अणगारे झाणमस्सिए ।
रायाणं न पडिमंतेइ, तओ राया भयद्दुओ ॥ ९ ॥

संजयः–

संजओ अहमम्मीति, भगवं ! वाहराहि मे ।
कुद्धे तेएण अणगारे, डहेज्ज नरकोडिओ ॥१०॥

गर्दभालिमुनिः–

अभओ पत्थिवा ! तुब्भं, अभयदाया भवाहि य ।
अणिच्चे जीवलोगंमि, किं हिंसाए पसज्जसि ? ॥११॥

जया रज्जं परिच्चज्ज, गंतव्वमवसस्स ते।
अणिच्चे जीवलोगंमि, किं रज्जंमि पसज्जसि? ॥१२॥
जीवियं चेव रूवं च, विज्जुसंपायचंचलं।
जत्थ तं मुज्झसि रायं! पेच्चत्थं नावबुज्झसे ॥१३॥
दाराणि य सुया चेव, मित्ता य तह बंधवा।
जी वं त म णु जी वं ति, मयं नाणुवयंति य ॥१४॥
नीहरंति मयं पुत्ता, पियरं परमदुक्खिया।
पियरो वि तहा पुत्ते, बंधू रायं! तवं चरे ॥१५॥
तओ तेणऽज्जिए दव्वे, दारे य परिरक्खिए।
कीलंतिऽन्ने नरा रायं! हट्ठतुट्ठमलंकिया ॥१६॥
तेणावि जं कयं कम्मं, सुहं वा जइ वा दुहं।
कम्मुणा तेण संजुत्तो, गच्छई उ परं भवं ॥१७॥

संजयः—

सोऊण तस्स सो धम्मं, अणगारस्स अंतिए।
महया संवेगनिव्वेयं, समावन्नो नराहिवो ॥१८॥
संजओ चइउं रज्जं, निक्खंतो जिणसासणे।
गद्दभालिस्स भगवओ, अणगारस्स अंतिए ॥१९॥
चिच्चा रट्ठं पव्वइए,

क्षत्रियमुनिः—

खत्तिए परिभासइ।
जहा ते दीसई रूवं, पसन्नं ते तहा मणो ॥२०॥

किं नामे किं गोत्ते कस्सट्ठाए व माहणे।
कहं पडियरसि बुद्धे, कहं विणीए त्ति वुच्चसि? ॥२१॥

संजयमुनिः—

संजओ नाम नामेणं, तहा गोत्तेण गोयमो?
गद्दभाली ममायरिया, विज्जाचरणपारगा ॥२२॥

क्षत्रियमुनिः क्रियावादादि मिथ्याभिमतानामनात्मनीनतां प्रदर्शयति

किरियं[1] अकिरियं[2] विणयं,[3] अन्नाणं[4] च महामुणी।
एएहिं चउहिं ठाणेहिं, मेयन्ने किं पभासइ ॥२३॥

इइ पाउकरे बुद्धे, नायए परिणिव्वुए।
विज्जा-चरण-संपन्ने, सच्चे सच्चपरक्कमे ॥२४॥

पडंति नरए घोरे, जे नरा पावकारिणो।
दिव्वं च गइं गच्छंति, चरित्ता धम्ममारियं ॥२५॥

मायावुइयमेयं तु, मुसा भासा निरत्थिया।
संजममाणो वि अहं, वसामि इरियामि य ॥२६॥

सव्वे ते विइया मज्झं, मिच्छादिट्ठी अणारिया।
विज्जमाणे परे लोए, सम्मं जाणामि अप्पयं ॥२७॥

क्षत्रियमुनिः स्वपूर्वभव वर्णयति

अहमासि महापाणे, जुइमं वरिससओवमे।
जा सा पालि-महापाली, दिव्वा वरिससओवमा ॥२८॥

से चुए, 'बंभलोगाओ', माणुस्सं भवमागए।
अप्पणो य परेसिं च, आउं जाणे जहा तहा ॥२९॥

नाणारुइं च छंद च, परिवज्जेज्ज संजए।
अणट्ठा जे य सव्वत्था, इइ विज्जामणुसंचरे ॥३०॥

पडिक्कमामि पसिणाणं, परमंतेहिं वा पुणो।
अहो उट्ठिए अहोरायं, इइ विज्जा तवं चरे ॥३१॥

जं च मे पुच्छसी काले, सम्मं सुद्धेण चेयसा।
ताइं पाउकरे बुद्धे, तं नाणं जिणसासणे ॥३२॥

किरियं च रोयइ धीरे, अकिरियं परिवज्जए।
दिट्ठीए दिट्ठिसंपन्ने, धम्मं चरसु दुच्चरं ॥३३॥

क्षत्रियमुनिः प्रव्रजितान् चक्रवर्त्यादीन् वर्णयति

एयं पुण्णपयं सोच्चा, अत्थ-धम्मोवसोहियं।
"भरहो" वि भारहं वासं, चिच्चा कामाइं पव्वए ॥३४॥

"सगरो" वि सागरंतं, भरहवासं नराहिवो।
इस्सरियं केवलं हिच्चा, दयाए परिनिव्वुडे ॥३५॥

चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महिड्ढिओ।
पव्वज्जमब्भुवगओ, "मघवं" नाम महाजसो ॥३६॥

"सणंकुमारो" मणुस्सिंदो, चक्कवट्टी महिड्ढिओ।
पुत्तं रज्जे ठवेऊणं, सो वि राया तवं चरे ॥३७॥

चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्टी महिड्ढिओ।
"संति" संतिकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं ॥३८॥

इक्खागरायवसभो, 'कुंथू' नाम नरीसरो।
विक्खायकित्ती भगवं, पत्तो गइमणुत्तरं ॥३९॥

सागरंतं चइत्ताणं, भरहवासं नरीसरो।
'अरो' य अरयं पत्तो, पत्तो गइमणुत्तरं ॥४०॥

चइत्ता भारहं वासं, चइत्ता बलवाहणं।
चइत्ता उत्तमे भोए, 'महापउमे' तवं चरे ॥४१॥

एगच्छत्तं पसाहित्ता, महिं माण-निसूरणो।
'हरिसेणो' मणुस्सिदो, पत्तो गइमणुत्तरं ॥४२॥

अन्निओ रायसहस्सेहिं, सुपरिच्चाई दमं चरे।
'जयनामो' जिणक्खायं, पत्तो गइमणुत्तरं ॥४३॥

'दसण्णरज्जं' मुदियं चइत्ताणं मुणी चरे।
'दसण्णभद्दो' निक्खंतो, सक्खं सक्केण चोइओ ॥४४॥

'नमी' नमेइ अप्पाणं, सक्खं सक्केण चोइओ।
चइऊण गेहं 'वइदेही', सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥४५॥

'करकंडू' कलिंगेसु, पंचालेसु य 'दुम्मुहो'।
नमी राया विदेहेसु गंधारेसु य 'नग्गई' ॥४६॥

एए नरिंदवसभा, निक्खंता जिणसासणे।
पुत्ते रज्जे ठवेऊण, सामण्णे पज्जुवट्ठिया ॥४७॥

'सोवीररायवसभो', चइत्ताण मुणी चरे।
'उदायणो' पव्वइओ, पत्तो गइमणुत्तरं ॥४८॥

तहेव 'कासिराया' वि, सेओ सच्चपरक्कमे।
कामभोगे परिच्चज्ज, पहणे कम्ममहावणं ॥४९॥

तहेव 'विजओ राया', अणट्ठाकित्ति पव्वए।
रज्जं तु गुणसमिद्धं, पयहित्तु महाजसो ॥५०॥

तहेवुग्गं तवं किच्चा, अव्वक्खित्तेण चेयसा।
'महब्बलो' रायरिसी, आदाय सिरसा सिरिं॥५१॥

कहं धीरो अहेऊहिं, उम्मत्तो व महिं चरे?
एए विसेसमादाय, सूरा दढपरक्कमा ॥५२॥

अच्चंतनियाणखमा, सच्चा मे भासिया वई।
अतरिंसु तरंतेगे, तरिस्संति अणागया ॥५३॥

कहिं धीरे अहेऊहिं, अत्ताणं परियावसे।
सव्वसंग-विनिमुक्के, सिद्धे भवइ नीरए ॥५४॥

॥ त्ति बेमि ॥

अह मियापुत्तीयं नामं एगूणवीसइमं अज्झयणं

'सुग्गीवे' नयरे रंमे, काणणुज्जाणसोहिए।
राया 'बलभद्दित्ति', 'मिया' तस्सग्गमहिसी ॥ १ ॥

तेसिं पुत्ते 'बलसिरी', 'मियापुत्ते' त्ति विस्सुए।
अम्मापिऊण दइए, जुवराया दमीसरे ॥ २ ॥

नंदणे सो उ पासाए, कीलए सह इत्थिहिं।
देवो दोगुंदगो चेव, निच्चं मुइय-माणसो ॥ ३ ॥
मणि-रयण-कोट्टिमतले, पासायालोयणट्ठिओ।
आलोएइ नगरस्स, चउक्क-तिय-चच्चरे ॥ ४ ॥
अह तत्थ अइच्छंतं, पासई समण-संजयं।
तव-नियम-संजमधरं, सीलड्ढं गुणआगरं ॥ ५ ॥
तं पेहई मियापुत्ते, दिट्ठीए अणिमिसाए उ।
कहिं मन्नेरिसं रूवं, दिट्ठपुव्वं मए पुरा ॥ ६ ॥
साहुस्स दरिसणे तस्स, अज्झवसाणम्मि सोहणे।
मोहं गयस्स संतस्स, जाईसरणं समुप्पन्नं ॥ ७ ॥
देवलोगचुओ संतो, माणुसं भवमागओ।
सन्नि-नाण-समुप्पन्ने, जाइं सरइ पुराणियं ॥
जाईसरणे समुप्पन्ने, मियापुत्ते महिड्ढिए।
सरई पोराणियं जाइं, सामण्णं च पुरा कयं ॥ ८ ॥

मृगापुत्रः–

विसएहि अरज्जंतो, रज्जंतो संजमंमि य।
अम्मा-पियरमुवागम्म, इमं वयणमब्बवी ॥ ९ ॥

सुयाणि मे पंच महव्वयाणि,
नरएसु दुक्खं च तिरिक्ख-जोणिसु।
निव्विण्णकामो मि महण्णवाओ,
अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो ! ॥१०॥

अम्मताय ! मए भोगा, भुत्ता विसफलोवमा ।
पच्छा कडुयविवागा, अणुबंध दुहावहा ॥११॥
इमं सरीरं अणिच्चं, असुइं असुइसंभवं ।
असासयावासमिणं, दुक्खकेसाण भायणं ॥१२॥
असासए सरीरंमि, रइं नोवलभामहं ।
पच्छा पुरा व चइयव्वे, "फेणबुब्बुयसन्निभे" ॥१३॥
माणुसत्ते असारंमि, वाहीरोगाण आलए ।
जरा-मरणघत्थंमि, खणं पि न रमामहं ॥१४॥

दुःखवर्णनम् –

जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं, रोगा य मरणाणि य ।
अहो दुक्खो हु संसारो, जत्थ कीसंति जंतुणो ॥१५॥
खेत्तं वत्थुं हिरण्णं च, पुत्तदारं च बंधवा ।
चइत्ताणं इमं देहं, गंतव्वमवसस्स मे ॥१६॥
"जहा किंपागफलाणं", परिणामो न सुंदरो ।
एवं भुत्ताण भोगाणं, परिणामो न सुंदरो ॥१७॥

धर्मवर्णनम् –

"अद्धाणं जो महंतं तु, अप्पाहेओ पवज्जइ ।
गच्छंतो सो 'दुही होइ,' 'छुहा-तण्हाए पीड़िओ ॥१८॥
एवं धम्मं अकाऊणं, जो गच्छइ परं भवं ।
गच्छंतो सो 'दुही होई' वाहीरोगेहिं पीड़िओ ॥१९॥

"अद्धाणं जो महंतं तु, सपाहेओ पवज्जइ ॥"
गच्छंतो सो 'सुही होइ', छुहातण्हाविवज्जिओ ॥२०॥

एवं धम्मं पि काऊणं, जो गच्छइ परं भवं ।
गच्छतो सो 'सुही होइ', अप्पकम्मे अवेयणे ॥२१॥

प्रदीप्त गृहोदाहरणम्—

'जहा गेहे पलित्तम्मि', तस्स गेहस्स जो पहू ।
सारभंडाणि नीणेइ, असारं अवउज्झइ ॥२२॥

एवं लोए पलित्तम्मि, जराए मरणेण य ।
अप्पाणं तारइस्सामि, तुब्भेहिं अणुमन्निओ ॥२३॥

पितरो—

तं बितम्मापियरो, सामण्णं पुत्त ! दुच्चरं ।
गुणाणं तु सहस्साइं, धारेयव्वाइं भिक्खुणा ॥२४॥

महाव्रत वर्णनम्—

(१) समया सव्वभूएसु, सत्तुमित्तेसु वा जगे ।
पाणाइवाय-विरई, जावज्जीवाए दुक्करं ॥२५॥

(२) निच्चकालऽप्पमत्तेणं, मुसावायविवज्जणं ।
भासियव्वं हियं सच्चं, निच्चाउत्तेण दुक्करं ॥२६॥

(३) दंतसोहणमाइस्स, अदत्तस्स विवज्जणं ।
अणवज्जेसणिज्जस्स, गेण्हणा अवि दुक्करं ॥२७॥

(४) विरई अबंभचेरस्स, कामभोगरसन्नुणा।
उग्गं महव्वयं बंभं, धारेयव्वं सुदुक्करं ॥२८॥

(५) धण-धन्न-पेसवग्गेसु, परिग्गह-विवज्जणं।
सव्वारंभ-परिच्चाओ, निम्ममत्तं सुदुक्करं ॥२९॥

(६) चउव्विहे वि आहारे, राईभोयणवज्जणा।
सन्निही-संचओ चेव, वज्जेयव्वो सुदुक्करं ॥३०॥

दुष्करं श्रामण्यम्—

छुहा तण्हा ए सीउण्हं, दंस-मसगवेयणा।
अक्कोसा दुक्खसेज्जा य, तणफासा जल्लमेव य ॥३१॥

तालणा तज्जणा चेव, वह-बंधपरीसहा।
दुक्खं भिक्खायरिया, जायणा य अलाभया ॥३२॥

'कावोया' जा इमा वित्ती, केसलोओ य दारुणो।
दुक्खं बंभव्वयं घोरं, धारेउं य महप्पणो ॥३३॥

'कावोया' जा इमा वित्ती, केसलोओ य दारुणो।
दुक्खं बंभव्वयं घोर, धारेउ य महप्पणो ॥३३॥

सुहोइओ तुमं पुत्ता, ! सुउमालो सुमज्जिओ।
न हुसि पभू तुमं पुत्ता, सामण्णमणुपालियं ॥३४॥

जावज्जीवमविस्सामो, गुणाणं तु महब्भरो।
'गुरुओ लोहभारुव्व', जो पुत्ता! होइ दुव्वहो ॥३५॥

'आगासे गंगसोउव्व', पडिसोउव्व दुत्तरो।
बाहाहिं सागरो चेव, तरियव्वो गुणोदही ॥३६॥

"वालुया कवले" चेव, निरस्साए उ संजमे।
'असिधारागमणं' चेव, दुक्करं चरिउं तवो ॥३७॥
'अहीवेगंतदिट्ठीए', चरित्ते पुत्त ! दुक्करे।
'जवा लोहमया चेव', चावेयव्वा सुदुक्करं ॥३८॥
'जहा अग्गिसिहा दित्ता', पाउं होइ सुदुक्करा।
तहा दुक्कर करेउं जे, तारुण्णे समणत्तणं ॥३९॥
'जहा दुक्खं भरेउं जे, होइ वायस्स कोत्थलो।'
तहा दुक्खं करेउं जे, कीवेणं समणत्तणं ॥४०॥
'जहा तुलाए तोलेउं, दुक्करो मंदरो गिरी।'
तहा निहुयनीसंकं, दुक्कर समणत्तणं ॥४१॥
'जहा भुयाहिं तरिउं, दुक्करं रयणायरो।
तहा अणुवसंतेणं, दुक्करं दमसागरो ॥४२॥
भुंज माणुस्सए भोए, पचलक्खणए तुमं।
भुत्तभोगी तओ जाया ! पच्छा धम्मं चरिस्ससि ॥४३॥

मृगापुत्रः—
सो बेइ अम्मापियरो, एवमेयं जहा फुडं।
इह लोए निप्पिवासस्स, नत्थि किंचिवि दुक्करं ॥४४॥
सारीर-माणसा चेव, वेयणाओ अणंतसो।
मए सोढाओ भीमाओ, असइ दुक्खभयाणि य ॥४५॥
जरामरणकंतारे, चाउरंते भयागरे।
मया सोढाणि भीमाणि, जम्माणि मरणाणि य ॥४६॥

नरक वर्णनम्–

जहा इहं अगणी उण्हो, एत्तोऽणंतगुणो तहिं।
नरएसु वेयणा उण्हा, असाया वेइया मए ॥४७॥
जहा इहं इमं सीयं, एत्तोऽणतगुणो तहिं।
नरएसु वेयणा सीया, असाया वेइया मए ॥४८॥
कंदंतो कंदुकुंभीसु, उड्ढपाओ अहोसिरो।
हुयासणे जलंतम्मि, पक्कपुव्वो अणंतसो ॥४९॥
महादवग्गिसंकासे, मरुंमि वइरवालुए।
कलंबवालुयाए य, दड्ढपुव्वो अणंतसो ॥५०॥
रसंतो कंदुकुंभीसु, उड्ढं बद्धो अबंधवो।
करवत्त–करकयाईहिं, छिन्नपुव्वो अणंतसो ॥५१॥
अइतिक्खकंटगाइण्णे, तुंगे सिंबलिपायवे।
खेवियं पासबद्धेण, कड्ढोकड्ढाहिं दुक्करं ॥५२॥
महाजंतेसु उच्छू वा, आरसंतो सुभेरवं।
पीलिओ मि सकम्मेहिं, पावकम्मो अणंतसो ॥५३॥
कूवंतो कोलसुणएहिं, सामेहिं सबलेहि य।
पाडिओ फालिओ छिन्नो, विप्फुरंतो अणेगसो ॥५४॥
असीहिं अयसिवण्णाहिं, भल्लेहिं पट्टिसेहि य।
छिन्नो भिन्नो विभिन्नोय, ओइण्णो पावकम्मुणा ॥५५॥
अवसो लोहरहे जुत्तो, जलंते समिलाजुए।
चोइओ तोत्तजुत्तेहिं, 'रोज्झो' वा जह पाडिओ ॥५६॥

हुयासणे जलंतम्मि, चियासु 'महिसो' विव।
दड्ढो पक्को य अवसो, पावकम्मेहि पाविओ ॥५७॥

बला संडासतुंडेहि, लोहतुंडेहि पक्खिहि।
विलुत्तो विलवंतोऽहं, ढंकगिद्धेहिऽणंतसो ॥५८॥

तण्हाकिलंतो धावंतो, पत्तो वेयरणिं नइं।
जलं पाहिं ति चिंततो, खुरधाराहि विवाइओ ॥५९॥

उण्हाभितत्तो संपत्तो, असिपत्तं महावणं।
असिपत्तेहि पडतेहिं, छिन्नपुव्वो अणेगसो ॥६०॥

मुग्गरेहि मुसंढीहि, सूलेहि मुसलेहि य।
गया-संभग्ग-गत्तेहिं, पत्तं दुक्खं अणंतसो ॥६१॥

खुरेहि तिक्खधाराहि, छुरियाहि कप्पणीहि य।
कप्पिओ फालिओ छिन्नो, उक्कित्तो य अणेगसो ॥६२॥

पासेहि कूडजालेहि, मिओ वा अवसो अहं।
वाहिओ बद्धरुद्धो य, बहुसो चेव विवाइओ ॥६३॥

गलेहि मगरजालेहि, मच्छो वा अवसो अहं।
उल्लिओ फालिओ गहिओ, मारिओ य अणंतसो ॥६४॥

विदंसएहि जालेहिं, लेप्पाहिं सउणो विव।
गहिओ लग्गो य बद्धो य, मारिओ य अणंतसो ॥६५॥

कुहाड-फरसु-माईहिं, वड्ढईहिं दुमो विव।
कुट्टिओ फालिओ छिन्नो, तच्छिओ य अणंतसो ॥६६॥

चवेड–मुट्ठिमाईहिं कुमारेहिं, अयं पिव।
ताडिओ कुट्टिओ भिन्नो, चुण्णिओ य अणंतसो ॥६७॥

तत्ताइं तंबलोहाइं, तउयाइं सीसयाणि य।
पाइओ कलकलंताइं, आरसंतो सुभेरवं ॥६८॥

तुहं पियाइं मंसाइं, खंडाइं सोल्लगाणि य।
खाविओ मि स-मंसाइं, अग्गिवण्णाइंऽणेगसो ॥६९॥

तुहं पिया सुरा सीहू, मेरओ य महूणि य।
पाइओ मि जलंतीओ, वसाओ रुहिराणि य ॥७०॥

निच्चं भीएण तत्थेण, दुहिएण वहिएण य।
परमा दुहसंबद्धा, वेयणा वेइया मए ॥७१॥

तिव्वचंडप्पगाढाओ, घोराओ अइदुस्सहा।
महब्भयाओ भीमाओ, नरएसु वेइया मए ॥७२॥

जारिसा माणुसे लोए, ताया! दीसंति वेयणा।
एत्तो अणंतगुणिया, नरएसु दुक्खवेयणा ॥७३॥

सव्वभवेसु असाया, वेयणा वेइया मए॥
निमेसंतरमित्तं पि, जं साता नत्थि वेयणा ॥७४॥

पितरौ –

तं बितऽम्मापियरो, छंदेणं पुत्त! पव्वया।
नवरं पुण सामण्णे, दुक्खं निप्पडिकम्मया ॥७५॥

मृगापुत्रः—

सो बितम्मापियरो ! एवमेयं जहा फुडं।
पडिकम्मं को कुणइ, अरण्णे मियपक्खिणं ? ॥७६॥

एगब्भूओ अरण्णे वा, जहा उ चरइ मिगो।
एवं धम्मं चरिस्सामि, संजमेण तवेण य ॥७७॥

जहा मिगस्स आयंको, महारण्णंमि जायई।
अच्छंतं रुक्खमूलंमि, को णं ताहे चिगिच्छई ॥७८॥

को वा से ओसहं देई, को वा से पुच्छइ सुहं ?
को से भत्त च पाणं च, आहरित्तु पणामए ? ॥७९॥

जया य से सुही होइ, तया गच्छइ गोयरं।
भत्तपाणस्स अट्ठाए, वल्लराणि सराणि य ॥८०॥

खाइत्ता पाणियं पाउं, वल्लरेहिं सरेहि य।
मिगचारियं चरित्ताण, गच्छइ मिगचारियं ॥८१॥

एवं समुट्ठिओ भिक्खू, एवमेव अणेगए।
मिगचारियं चरित्ताण, उड्ढं पक्कमई दिसं ॥८२॥

जहा मिए एग अणेगचारी,
अणेगवासे धुवगोयरे य।
एवं मुणी गोयरियं पविट्ठे,
नो हीलए नो वि य खिसएज्जा ॥८३॥

मृगापुत्रस्यदीक्षाग्रहणम्–

मिगचारियं चरिस्सामि, एवं पुत्ता ! जहासुहं ।
अम्मापिऊहिंऽणुन्नाओ, जहाइ उवहिं तओ ॥८४॥
मियचारियं चरिस्सामि, सव्वदुक्खविमोक्खणिं ।
तुब्भेहिं अंब ! ऽणुन्नाओ, गच्छ पुत्त ! जहासुहं ॥८५॥
एवं सो अम्मापियरो, अणुमाणित्ताण बहुविहं ।
ममत्तं छिंदइ ताहे, 'महानागो व्व कंचुयं' ॥८६॥
इड्ढी वित्तं च मित्ते य, पुत्तदारं च नायओ ।
'रेणुयं व पडे लग्गं', निद्धुणित्ताण निग्गओ ॥८७॥
पंचमहव्वयजुत्तो, पंचसमिओ तिगुत्तिगुत्तो य ।
सब्भिंतरबाहिरए, तवोकम्मंमि उज्जुओ ॥८८॥
निम्ममो निरहंकारो, निस्संगो चत्तगारवो ।
समो य सव्वभूएसु, तसेसु थावरेसु य ॥८९॥
लाभालाभे सुहे दुक्खे, जीविए मरणे तहा ।
समो निंदा-पसंसासु, तहा माणावमाणओ ॥९०॥
गारवेसु कसाएसु, दंड-सल्ल-भएसु य ।
नियत्तो हाससोगाओ, अनियाणो अबंधणो ॥९१॥
अणिस्सिओ इहं लोए, परलोए अणिस्सिओ ।
वासीचंदणकप्पो य, असणे अणसणे तहा ॥९२॥
अप्पसत्थेहिं दारेहिं, सव्वओ पिहियासवे ।
अज्झप्प-ज्झाणजोगेहिं, पसत्थ-दमसासणे ॥९३॥

एवं नाणेण चरणेण, दंसणेण तवेण य।
भावणाहि य सुद्धाहि, सम्मं भावित्तु अप्पयं ॥९४॥

बहुयाणि उ वासाणि, सामण्णमणुपालिया।
मासिएण उ भत्तेण, सिद्धि पत्तो अणुत्तरं ॥९५॥

एवं करंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा।
विणियट्टंति भोगेसु, मियापुत्ते जहारिसी ॥९६॥

महप्पभावस्स महाजसस्स,
मियाइपुत्तस्स निसम्म भासियं।
तवप्पहाणं चरियं च उत्तमं,
गइप्पहाणं च तिलोगविस्सुयं ॥९७॥

वियाणिया दुक्ख-विवड्ढणं धणं,
ममत्तबंधं च महाभयावहं।
सुहावहं धम्मधुरं अणुत्तरं,
धारेह निव्वाण-गुणावहं महं ॥९८॥ त्ति बेमि ॥

अह महानियंठिज्ज-नामं वीसइमं अज्झयणं

सिद्धाणं नमो किच्चा, संजयाणं च भावओ।
अत्थ-धम्म-गइं तच्चं अणुसिट्ठिं सुणेह मे ॥ १ ॥

पभूयरयणो राया, 'सेणिओ' मगहाहिवो।
विहारजत्तं निज्जाओ, 'मंडिकुच्छिंसि चेइए' ॥ २ ॥

नाणा-दुम-लयाइण्णं, नाणा-पक्खि-निसेवियं।
नाणाकुसुम-संछन्नं, उज्जाणं नंदणोवमं ॥ ३ ॥

तत्थ सो पासइ साहुं संजयं सुसमाहियं।
निसन्नं रुक्खमूलम्मि, सुकुमालं सुहोइयं ॥ ४ ॥

तस्स रूवं तु पासित्ता, राइणो तम्मि संजए।
अच्चंतपरमो आसी, अउलो रूवविम्हओ ॥ ५ ॥

अहो वण्णो अहो रूवं, अहो अज्जस्स सोमया।
अहो खंती अहो मुत्ती, अहो भोगे असंगया ॥ ६ ॥

तस्स पाए उ वंदित्ता, काऊण य पयाहिणं।
नाइदूरमणासन्ने, पंजली पडिपुच्छइ ॥ ७ ॥

श्रेणिकः—

तरुणो सि अज्जो! पव्वइओ, भोगकालम्मि संजया।
उवट्ठिओ सि सामण्णे, एयमट्ठं सुणेमि ता ॥ ८ ॥

अनाथी मुनिः--

अणाहोमि महाराय !, नाहो मज्झ न विज्जई ।
अणुकंपयं सुहिं वावि, कंचि नाभिसमेमहं ॥ ९ ॥

श्रेणिकः--

तओ सो पहसिओ राया, सेणिओ मगहाहिवो ।
एवं ते इड्ढिमंतस्स, कहं नाहो न विज्जई ? ॥१०॥
होमि नाहो भयंताणं ! भोगे भुंजाहि संजया !
मित्त--नाइ--परिवुडो, माणुस्सं खु सुदुल्लहं ॥११॥

अनाथी मुनिः--

अप्पणा वि अणाहो सि, सेणिया ! मगहाहिवा !
अप्पणा अणाहो संतो, कहं नाहो भविस्ससि ! ॥१२॥

श्रेणिकः--

एवं वुत्तो नरिंदो सो, सुसंभंतो सुविम्हिओ ।
वयणं अस्सुयपुव्वं, साहुणा विम्हयन्निओ ॥१३॥
अस्सा हत्थी मणुस्सा मे, पुरं अंतेउरं च मे ।
भुंजामि माणुसे भोए, आणा इस्सरियं च मे ॥१४॥
एरिसे संपयग्गम्मि, सव्वकामसमप्पिए ।
कहं अणाहो भवइ, ? मा हु भंते ! मुसं वए ॥१५॥

अनाथी मुनिः--

न तुमं जाणे अणाहस्स, अत्थं पोत्थं च पत्थिवा !
जहा अणाहो भवइ, सणाहो वा नराहिवा ! ॥१६॥

सुणेह मे महाराय ! अव्वक्खित्तेण चेयसा।
जहा अणाहो भवई, जहा मेयं पवत्तियं ॥१७॥

"कोसंबी" नाम नयरी, पुराणपुरभेयणी।
तत्थ आसी पिया मज्झ, पभूय-धण-संचओ ॥१८॥

पढमे वए महाराय !, अउला मे अच्छिवेयणा।
अहोत्था विउलो दाहो, सव्वगत्तेसु पत्थिवा ! ॥१९॥

सत्थं जहा परमतिक्खं, सरीर–विवरंतरे।
'पविसिज्ज अरी कुद्धो', एवं मे अच्छिवेयणा ॥२०॥

तियं मे अंतरिच्छं च, उत्तमंगं च पीडई।
'इंदासणिसमा' घोरा, वेयणा परमदारुणा ॥२१॥

उवट्ठिया मे आयरिया, विज्जा-मंत-तिगिच्छया।
अबीया सत्थकुसला, मंतमूलविसारया ॥२२॥

ते मे तिगिच्छं कुव्वंति, चाउप्पायं जहाहियं।
न य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्झ अणाहया ॥२३॥

पिया मे सव्वसारं पि, दिज्जाहि मम कारणा।
न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥२४॥

माया वि मे महाराय ! पुत्तसोगदुहट्टिया।
न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥२५॥

भायरा मे महाराय ! सगा जेट्ठ–कणिट्ठगा।
न य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्झ अणाहया ॥२६॥

भइणीओ मे महाराय ! सगा जेट्ठ—कणिट्ठगा।
न या दुक्खा विमोयंति, एसा मज्झ अणाहया ॥२७॥

भारिया मे महाराय ! अणुरत्ता अणुव्वया।
अंसुपुण्णेहिं नयणेहिं, उरं मे परिसिंचइ ॥२८॥

अन्नं पाणं च ण्हाणं च, गंध—मल्लविलेवणं।
मए नायमणायं वा, सा बाला नोवभुंजइ ॥२९॥

खणं पि मे महाराय ! पासाओ वि न फिट्टइ।
न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥३०॥

तओ हं एवमाहंसु, दुक्खमा हु पुणो पुणो।
वेयणा अणुभविउं जे, संसारम्मि अणंतए॥३१॥

सइं च जइ मुच्चिज्जा, वेयणा विउला इओ।
खंतो दंतो निरारंभो, पव्वइए अणगारियं॥३२॥

एवं च चिंतइत्ताणं, पसुत्तो मि नराहिवा।
परियत्तंतीए राईए, वेयणा मे खयं गया ॥३३॥

तओ कल्ले पभायंमि, आपुच्छित्ताण बंधवे।
खंतो दंतो निरारंभो, पव्वइओऽणगारियं ॥३४॥

तो हं नाहो जाओ, अप्पणो य परस्स य।
सव्वेसिं चेव भूयाणं, तसाण थावराण य ॥३५॥

अप्पा नई वेयरणी, अप्पा मे कूडसामली।
अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे नंदणं वणं ॥३६॥

अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य।
अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठिय सुपट्ठिओ ॥३७॥

इमा हु अन्ना वि अणाहया निवा !
तमेगचित्तो निहुओ सुणेहि ।
नियंठधम्मं लहियाण वि जहा,
सीयंति एगे बहुकायरा नरा ॥३८॥

जो पव्वइत्ताण महव्वयाइं,
सम्मं च नो फासयई पमाया ।
अनिग्गहप्पा य रसेसु गिद्धे,
न मूलओ छिन्नइ बंधणं से ॥३९॥

आउत्तया जस्स न अत्थि काइ,
इरियाए भासाए तहेसणाए ।
आयाण-निक्खेव-दु गं छ णा ए,
न वीरजायं अणुजाइ मग्गं ॥४०॥

चिरं पि से मुंडरुई भवित्ता,
अथिरव्वए तवनियमेहि भट्ठे ।
चिरं पि अप्पाण किलेसइत्ता,
न पारए होइ हु संपराए ॥४१॥

'पोल्ले व मुट्ठी जह से असारे,'
'अयंतिए कूड-कहावणे वा ।'

'राढामणी वेरुलियप्पगासे,'
अमहग्घए होइ हु जाणएसु ॥४२॥

कुसीललिंगं इह धारइत्ता,
इसिज्झयं जीविय वूहइत्ता।
असंजए संजयलप्पमाणो,
विणिघायमागच्छइ से चिरंपि ॥४३॥

'विसं तु पीयं जह कालकूडं,'
'हणाइ सत्थं जह कुग्गहीयं।'
एसो वि धम्मो विसओववन्नो,
हणाइ 'वेयाल इवाविवन्नो' ॥४४॥

जे लक्खणं सुविणं पउंजमाणे,
निमित्तकोऊहलसंपगाढे।
कुहेडविज्जासवदारजीवी,
न गच्छइ सरणं तम्मि काले ॥४५॥

तमंतमेणेव उ से असीले,
सया दुही विप्परियासुवेइ।
संधावई नरगतिरिक्खजोणिं,
मोणं विराहित्तु असाहुरूवे ॥४६॥

उद्देसियं कीयगडं नियागं,
न मुंचई किंचि अणेसणिज्जं।

'अग्गी विव सव्वभक्खी' भवित्ता,
इत्तो चुए गच्छइ कट्टु पावं ॥४७॥

न तं अरी कंठछेत्ता करेइ,
जं से करे अप्पणिया दुरप्पा।
से नाहिइ मच्चुमुहं तु पत्ते,
पच्छाणुतावेण दयाविहूणो ॥४८॥

निरट्ठिया नग्गरुई उ तस्स,
जे उत्तमट्ठं विवज्जासमेइ।
इमे वि से नत्थि परे वि लोए,
दुहिओ वि से झिज्जइ तत्थ लोए ॥४९॥

एमेवऽहाछंदकुसीलरूवे,
मग्गं विराहेत्तु जिणुत्तमाणं।
कूकरी विवा भोगरसाणुगिद्धा,
निरट्ठसोया परितावमेइ ॥५०॥

सोच्चाण मेहावी ! सुभासियं इमं,
अणुसासणं नाणगुणोववेयं।
मग्गं कुसीलाण जहाय सव्वं,
महानियंठाण वए पहेणं ॥५१॥

चरित्तमायारगुणन्निए तओ,
अणुत्तरं संजम पालियाणं।

निरासवे संखवियाण कम्मं,
उवेइ ठाणं विउलुत्तमं धुवं ॥५२॥

एवुग्गदन्ते वि महातवोधणे,
महामुणी महापइन्ने महायसे ।
महानियण्ठिज्जमिणं महासुयं,
से काहए महया वित्थरेणं ॥५३॥

श्रेणिक—तुट्ठो य सेणिओ राया, इणमुदाहु कयंजली ।
अणाहत्तं जहाभूयं, सुट्ठु मे उवदंसियं ॥५४॥

तुज्झं सुलद्धं खु मणुस्सजम्मं,
लाभा सुलद्धा य तुमे महेसी !
तुब्भे सणाहा य सबंधवा य,
जं भे ठिया मग्गे जिणुत्तमाणं ॥५५॥

तं सि नाहो अणाहाणं, सव्वभूयाण संजया ।
खामेमि ते महाभाग, इच्छामि अणुसासिउं ॥५६॥

पुच्छिऊण मए तुब्भं, झाणविग्घो उ जो कओ ।
निमंतिओ य भोगेहिं, तं सव्वं मरिसेहि मे ॥५७॥

एवं थुणित्ताण स रायसीहो,
अणगारसीहं परमाइ भत्तिए ।
सओरोहो सपरियणो सबंधवो,
धम्माणुरत्तो विमलेण चेयसा ॥५८॥

ऊससियरोमकूवो, काऊण य पयाहिणं ।
अभिवंदिऊण सिरसा, अइयाओ नराहिवो ॥५९॥

इयरो वि गुणसमिद्धो, तिगुत्तिगुत्तो तिदंडविरओ य ।
"विहग इव" विप्पमुक्को, विहरइ वसुहं विगयमोहो ॥६०॥
॥ त्ति बेमि ॥

अह समुद्दपालीय-नामं एगविंसइमं अज्झयणं

चंपाए 'पालिए' नाम, सावए आसि वाणिए ।
'महावीरस्स' भगवओ, सीसे सो उ महप्पणो ॥१॥

निग्गंथे पावयणे, सावए से वि कोविए ।
पोएण ववहरंते, "पिहुंडं" नगरमागए ॥२॥

पिहुंडे ववहरंतस्स, वाणिओ देइ धूयरं ।
तं ससत्तं पइगिज्झ, सदेसमह पत्थिओ ॥३॥

अह पालियस्स घरिणि, समुद्दम्मि पसवई ।
अह बालए तहिं जाए, 'समुद्दपालि त्ति नामए' ॥४॥

खेमेण आगए चंपं, सावए वाणिए घरं ।
संवड्ढई तस्स घरे, दारए से सुहोइए ॥५॥

बावत्तरी कलाओ य, सिक्खए नीइकोविए ।
जुव्वणेण य सपन्ने, सुरूवे पियदंसणे ॥६॥

तस्स रूववइं भज्ज, पिया आणेइ रूविणि ।
पासाए कीलए रम्मे, 'देवो दोगुंदओ जहा' ॥७॥

अह अन्नया कयाई, पासायालोयणे ठिओ ।
वज्झमंडणसोभागं, वज्झं पासइ वज्झग ॥८॥

त पासिऊण संविग्गो, समुद्दपालो इणमब्बवी ।
अहोऽसुहाण कम्माणं, निज्जाणं पावगं इमं ॥९॥

संबुद्धो सो तहिं भयवं, परमसंवेगमागओ ।
आपुच्छऽम्मापियरो, पव्वए अणगारियं ॥१०॥

जहित्तु सगं च महाकिलेसं,
महतमोहं कसिणं भयावहं ।
परियायधम्मं चऽभिरोयएज्जा,
वयाणि सीलाणि परीसहे य ॥११॥

अहिंस-सच्चं च अतेणगं च,
तत्तो य बंभं अपरिग्गहं च ।
पडिवज्जिया पंचमहव्वयाणि,
चरिज्ज धम्मं जिणदेसियं विऊ ॥१२॥

सव्वेहि भूएहि दयाणुकंपी,
खंतिक्खमे संजयबंभयारी।
सावज्जजोगं परिवज्जयंतो,
चरिज्ज भिक्खू सुसमाहिइंदिए ॥१३॥

कालेण कालं विहरेज्ज रट्ठे,
बलाबलं जाणिय अप्पणो य।
सीहो व सद्देण न संतसेज्जा,
वयजोग सुच्चा न असब्भमाहु ॥१४॥

उवेहमाणो उ परिव्वएज्जा,
पियमप्पियं सव्व तितिक्खएज्जा।
न सव्व सव्वत्थऽभिरोयएज्जा,
न यावि पूयं गरहं च संजए ॥१५॥

अणेगछंदा इह माणवेहिं,
जे भावओ से पगरेइ भिक्खू।
भयभेरवा तत्थ उइंति भीमा,
दिव्वा मणुस्सा अदुवा तिरिच्छा ॥१६॥

परीसहा दुव्विसहा अणेगे,
सीयंति जत्था बहुकायरा नरा।
से तत्थ पत्ते न वहिज्ज भिक्खू,
'संगामसीसे इव नागराया' ॥१७॥

सीओसिणा दंस-मसा य फासा,
आयका विविहा फुसंति देहं ।
अकुक्कुओ तत्थऽहियासएज्जा,
रयाइं खेवेज्ज पुराकयाइं ॥१८॥

पहाय रागं च तहेव दोसं,
मोहं च भिक्खू सययं वियक्खणो ।
'मेरुव्व' वाएण अकंपमाणो,
परीसहे आयगुत्ते सहेज्जा ॥१९॥

अणुन्नए नावणए महेसी,
न यावि पूयं गरहं च संजए ।
से उज्जुभावं पडिवज्ज संजए,
निव्वाणमग्गं विरए उवेइ ॥२०॥

अरइ-रइसहे पहीणसंथवे,
विरए आयहिए पहाणवं ।
परमट्ठपएहिं चिट्ठई,
छिन्नसोए अममे अकिंचणे ॥२१॥

विवित्तलयणाइ भएज्ज ताई,
निरोवलेवाइ असंथडाइं ।
इसीहिं चिण्णाइं महायसेहिं,
काएण फासेज्ज परीसहाइं ॥२२॥

स न्ना ण ना णो व ग ए महेसी,
अणुत्तरं चरिउं धम्मसंचय ।
अणुत्तरे नाणधरे जससी,
ओभासई सूरिए वंऽतलिक्खे ॥२३॥

दुविह खवेऊण य पुण्णपावं,
निरंगणे सव्वओ विप्पमुक्के ।
तरित्ता "समुद्दं व" महाभवोहं,
समुद्दपाले अपुणागमं गए ॥२४॥

॥ त्ति बेमि ॥

अह रहनेमिज्ज-नामं बाइसमं अज्झयणं

'सोरियपुरम्मि नयरे', आसि राया महिड्ढिए ।
'वसुदेव त्ति' नामेणं रायलक्खणसंजुए ॥१॥

तस्स भज्जा दुवे आसी, 'रोहिणी-देवई' तहा ।
तासिं दोण्हं दुवे पुत्ता, इट्ठा 'राम-केसवा ॥२॥

सोरियपुरम्मि नयरे, आसी राया महिड्ढिए ।
'समुद्दविजय नामं', रायलक्खणसंजुए ॥३॥

तस्स भज्जा 'सिवा' नाम, तीसे पुत्तो महायसो ।
भगवं 'अरिट्ठनेमि त्ति' लोगनाहे दमीसरे ॥४॥

सोऽरिट्ठनेमिनामो उ, लक्खण-स्सर-संजुओ ।
अट्ठसहस्स-लक्खणधरो, गोयमो कालगच्छवी ॥५॥

वज्जरिसह-संघयणो, समचउरंसो झसोदरो ।
तस्स 'रायमईकन्नं,' भज्जं जायइ केसवो ॥६॥

अह सा रायवरकन्ना,' सुसीला चारुपेहणी ।
सव्व-लक्खण-संपन्ना, विज्जुसोयामणिप्पभा ॥७॥

अहाह जणओ तीसे, वासुदेवं महिड्ढियं ।
इहागच्छउ कुमारो, जा से कन्नं ददामिऽहं ॥८॥

सव्वोसहीहिं ण्हविओ, कय-कोउय-मंगलो ।
दिव्वजुयल-परिहिओ, आभरणेहिं विभूसिओ ॥९॥

मत्तं च गंधहत्थिं च, वासुदेवस्स जेट्ठगं ।
आरूढो सोहए अहियं, सिरे चूडामणि जहा ॥१०॥

अह ऊसिएण छत्तेण, चामराहि य सोहिओ ।
दसारचक्केण य सो, सव्वओ परिवारिओ ॥११॥

चउरंगिणीए सेणाए, रइयाए जहक्कमं ।
तुरियाण सन्निनाएणं, दिव्वेणं गगणं फुसे ॥१२॥

एयारिसीए इड्ढीए, जुइए उत्तमाइ य ।
नियगाओ भवणाओ, निज्जाओ वण्हिपुंगवो ॥१३॥

अह सो तत्थ निज्जंतो, दिस्स पाणे भयद्दुए ।
वाडेहिं पंजरेहिं च, संनिरूद्धे सुदुक्खिए ॥१४॥

जीवियंतं तु संपत्ते, मंसट्ठा भक्खियव्वए ।
पासित्ता से महापन्ने, सारहिं इणमब्बवी ॥१५॥

भ० अरिट्ठनेमि –

कस्स अट्ठा इमे पाणा, एए सव्वे सुहेसिणो ।
वाडेहिं पंजरेहिं च, सन्निरुद्धा य अच्छहिं ? ॥१६॥

सारथिः–

अह सारही तओ भणइ, एए भद्दा उ पाणिणो ।
तुज्झं विवाहकज्जम्मि, भोयावेउं बहुं जणं ॥१७॥

भ० अरिट्ठनेमि –

सोऊण तस्स वयणं, बहुपाणि–विणासणं ।
चिंतेइ से महापन्नो, साणुक्कोसे जिए हिओ ॥१८॥

जइ मज्झ कारणा एए, हम्मंति सुबहू जिया ।
न मे एयं तु निस्सेसं, परलोगे भविस्सई ॥१९॥

सो कुंडलाण जुयलं, सुत्तगं च महायसो ।
आभरणाणि य सव्वाणि, सारहिस्स पणामए ॥२०॥

मणपरिणामो य कओ, देवा य जहोइयं समोइण्णा ।
सव्विड्ढीए सपरिसा, निक्खमणं तस्स काउं जे ॥२१॥

देव-मणुस्सपरिवुडो, सीविया-रयणं तओ समारूढो ।
निक्खमिय 'वारगाओ, रेवययम्मि' ठिओ भगवं ॥२२॥

उज्जाणं संपत्तो, ओइण्णो उत्तमाउ सीयाओ ।
साहस्सीए परिवुडो, अह निक्खमई उ चित्ताहिं ॥२३॥

अह से सुगंधगंधीए, तुरियं मउअकुचिए ।
सयमेव लुंचई केसे, पचमुट्ठीहिं समाहिओ ॥२४॥

वासुदेवो य ण भणइ, लुत्तकेसं जिइंदियं ।
इच्छियमणोरहं तुरियं, पावसु तं दमीसरा ! ॥२५॥

नाणेण दंसणेण च, चरित्तेण तहेव य ।
खतीए मुत्तीए, वड्ढमाणो भवाहि य ॥२६॥

एवं ते राम-केसवा, दसारा य बहू जणा ।
अरिट्ठणेमिं वंदित्ता, अइगया बारगापुरिं ॥२७॥

सोऊण रायकन्ना, पव्वज्जं सा जिणस्स उ ।
नीहासा य निराणंदा, सोगेण उ समुच्छिया ॥२८॥

राईमई विचिंतेइ, धिरत्थु मम जीवियं ।
जाऽहं तेण परिच्चत्ता, सेयं पव्वइउं मम ॥२९॥

अह सा भमरसन्निभे, कुच्च-फणग-साहिए ।
सयमेव लुंचई केसे, धिइमंता ववस्सिया ॥३०॥

वासुदेवो य णं भणइ, लुत्तकेसं जिइंदियं ।
संसारसागरं घोरं, तर कन्ने ! लहुं लहुं ॥३१॥

सा पव्वइया संती, पव्वावेसी तहिं बहुं ।
सयणं परियणं चेव, सीलवंता बहुस्सुया ॥३२॥

गिरिरेवययं जंती, वासेणुल्ला उ अंतरा ।
वासंते अंधयारंमि, अंतो लयणस्स सा ठिया ॥३३॥

चीवराइं विसारंती, जहा जायत्ति पासिया ।
रहनेमि भग्गचित्तो, पच्छा दिट्ठो य तीइ वि ॥३४॥

भीया य सा तहिं दट्ठुं, एगंते संजयं तयं ।
बाहाहिं काउं संगोप्फं, वेवमाणी निसीयई ॥३५॥

रथनेमि –

अह सो वि रायपुत्तो, समुद्दविजयंगओ
भीयं पवेवियं दट्ठुं, इमं वक्कमुदाहरे ॥३६॥

रहनेमी' अहं भद्दे !, सुरूवे ! चारुभासिणी ।
ममं भयाहि सुयणु, न ते पीला भविस्सइ ॥३७॥

एहि ता भुंजिमो भोए, माणुस्सं खु सुदुल्लहं' ।
भुत्तभोगा तओ पच्छा, जिणमग्गं चरिस्सिमो ॥३८॥

राजीमती:–

दट्ठूण रहनेमिं तं, भग्गुजोयं-पराजियं ।
राईमई असंभंता, अप्पाणं संवरे तहिं ॥३९॥

अह सा रायवरकन्ना, सुट्ठिया नियमव्वए ।
जाई कुलं च सीलं च ! रक्खमाणी तयं वए ॥४०॥

जइऽसि रुवेण वेसमणो, ललिएण नल-कूबरो ।
तहा वि ते न इच्छामि, जइऽसि सक्खं पुरंदरो ।।४१।।

पक्खंदे जलिअं जोइं, धूमकेउं दुरासयं ।
नेच्छंति वंतयं भोत्तुं, कुले जाया अगंधणे ।।

धिरत्थु तेऽजसोकामी ! जो तं जीवियकारणा ।
वंतं इच्छसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे ।।४२।।

अहं च भोगरायस्स, तं च सि अंधगवण्हिणो ।
मा कुले गंधणा होमो, संजमं निहुओ चर ।।४३।।

जइ तं काहिसि भावं, जा जा दिच्छसि नारिओ ।
वायाइद्धो व्व हडो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि ।।४४।।

गोवालो भंडवालो वा, जहा तद्दव्वऽणिस्सरो ।
एवं अणिस्सरो तं पि, सामण्णस्स भविस्ससि ।।४५।।

कोहं माणं निगिण्हित्ता, मायं लोभं च सव्वसो ।
इंदियाइं वसे काउं, अप्पाणं उवसंहरे ।।

रथनेमि –

तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाए सुभासियं ।
अंकुसेण जहा नागो, धम्मे संपडिवाइओ ।।४६।।

मणगुत्तो वयगुत्तो, कायगुत्तो जिइंदिए ।
सामण्णं निच्चलं फासे, जावज्जीवं दढव्वओ ।।४७।।

उग्गं तवं चरित्ताणं, जाया दुण्णि वि केवली ।
सव्वं कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥४८॥

एवं करेंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा ।
विणियट्टंति भोगेसु, जहा सो पुरिसोत्तमो ॥४९॥
॥ त्ति बेमि ॥

अह केसिगोयमिज्ज-नामं तेवीसइमं अज्झयणं

जिणे पासित्ति नामेण, अरहा लोगपूइओ ।
संबुद्धप्पा य सव्वन्नू, धम्मतित्थयरे जिणे ॥१॥

तस्स लोगपईवस्स, आसि सीसे महायसे ।
केसी कुमारसमणे, विज्जाचरणपारए ॥२॥

ओहिनाणसुए बुद्धे, सीससंघ-समाउले ।
गामाणुगामं रीयंते, सावत्थि पुरमागए ॥३॥

तिंदुयं नाम उज्जाणं, तंमि नगरमंडले ।
फासुए सिज्जसंथारे, तत्थ वासमुवागए ॥४॥

अह तेणेव कालेणं धम्मतित्थयरे जिणे ।
भगवं वद्धमाणि त्ति, सव्वलोगंमि विस्सुए ॥५॥

तस्स लोगपईवस्स, आसि सीसे महायसे ।
भगवं गोयमे नामं, विज्जाचरणपारए ॥६॥

बारसंगविऊ बुद्धे, सीससंघ-समाउले ।
गामाणुगामं रीयंते, सो वि सावत्थिमागए ॥७॥

"कोट्ठगं" नाम उज्जाणं, तम्मि नगरमंडले ।
फासुए सिज्जसंथारे, तत्थ वासमुवागए ॥८॥

केसी कुमारसमणे, गोयमे य महायसे ।
उभओ वि तत्थ विहरिंसु, अल्लीणा सुसमाहिया ॥९॥

उभओ सीससंघाणं, संजयाणं तवस्सिणं ।
तत्थ चिंता समुप्पन्ना, गुणवंताण ताइणं ॥१०॥

केरिसो वा इमो धम्मो ? इमो धम्मो व केरिसो?
आयारधम्मपणिही, इमा वा सा व केरिसी ? ॥११॥

चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिओ ।
देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महामुणी ॥१२॥

अचेलओ य जो धम्मो, जो इमो संतरुत्तरो ।
एग कज्ज-पवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं ? ॥१३॥

अह ते तत्थ सीसाणं, विन्नाय पवितक्कियं ।
समागमे कयमई, उभओ केसि-गोयमा ॥१४॥

गोयमे पडिरूवन्नू, सीससंघ-समाउले ।
जेट्ठं कुलमवेक्खंतो, "तिंदुयं" वणमागओ ॥१५॥

केसी कुमारसमणे, गोयमं दिस्समागयं ।
पडिरूवं पडिवत्तिं, सम्मं संपडिवज्जइ ॥१६॥

पलालं फासुयं तत्थ, पंचमं कुसतणाणि य ।
गोयमस्स निसेज्जाए, खिप्पं संपणामए ॥१७॥

केसी कुमारसमणे, गोयमे य महायसे ।
उभयो निसण्णा सोहंति, चंद-सूरसमप्पभा ॥१८॥

समागया बहु तत्थ, पासंडा कोउगा मिया ।
गिहत्थाणं अणेगाओ, साहस्सीओ समागया ॥१९॥

देव-दाणव-गंधव्वा, जक्ख-रक्खस-किन्नरा ।
अदिस्साणं च भूयाणं, आसी तत्थ समागमो ॥२०॥

पुच्छामि ते महाभाग ! केसी गोयममब्बवी ।
तओ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥२१॥

पुच्छ भंते ! जहिच्छं ते, केसिं गोयममब्बवी ।
तओ केसि अणुन्नाए, गोयमं इणमब्बवी ॥२२॥

(१) चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिओ ।
देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महामुणी ! ॥२३॥

एगकज्जपवन्नाणं विसेसे किं नु कारणं ?
धम्मे दुविहे मेहावी, कहं विप्पच्चओ न ते ? ॥२४॥

तओ केसिं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ।
पन्ना समिक्खए धम्मं, तत्तं तत्तविणिच्छियं ॥२५॥

पुरिमा उज्जुजडा उ, वंकजडा य पच्छिमा ।
मज्झिमा उज्जुपन्ना उ, तेण धम्मे दुहा कए ॥२६॥

पुरिमाणं दुव्विसुज्झो उ, चरिमाण दुरणुपालओ ।
कप्पो मज्झिमगाणं तु, सुविसुज्झो सुपालओ ॥२७॥

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं, त मे कहसु गोयमा ! ॥२८॥

(२) अचेलगो य जो धम्मो, जो इमो सतरुत्तरो ।
देसिओ वद्धमाणेण, पासेण य महामुणी ! ॥२९॥

एगकज्जपवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं ।
लिंगे दुविहे मेहावी, कहं विप्पच्चओ न ते ? ॥३०॥

केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ।
विन्नाणेण समागम्म, धम्मसाहणमिच्छियं ॥३१॥

पच्चयत्थं च लोगस्स, नाणाविहविगप्पणं ।
जत्तत्थं गहणत्थं च, लोगे लिंगपओयणं ॥३२॥

अह भवे पइन्ना उ, मोक्खसब्भूयसाहणा ।
नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं चेव निच्छए ॥३३॥

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥३४॥

(३) अणेगाण सहस्साणं, मज्झे चिट्ठसि गोयमा !
ते य ते अभिगच्छंति, कहं ते निज्जिया तुमे ? ॥३५॥

एगे जिए जिया पंच, पंच जिए जिया दस ।
दसहा उ जिणित्ताण, सव्वसत्तू जिणामहं ॥३६॥

सत्तू य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
तओ केसिं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥३७॥

एगप्पा अजिए सत्तू, कसाया इंदियाणि य ।
ते जिणित्तु जहानायं, विहरामि अहं मुणी ॥३८॥

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥३९॥

(४) दीसंति बहवे लोए, पासबद्धा सरीरिणो ।
मुक्कपासो लहुब्भूओ, कहं तं विहरसि ? मुणी ! ॥४०॥

ते पासे सव्वसो छित्ता, निहंतूण उवायओ ।
मुक्कपासो लहुब्भूओ, विहरामि अहं मुणी ! ॥४१॥

पासा य इइ के वुत्ता ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥४२॥

रागद्दोसादओ तिव्वा, नेहपासा भयंकरा ।
ते छिंदित्तु जहानायं, विहरामि जहक्कमं ॥४३॥

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥४४॥

(५) अंतोहियसंभूया, लया चिट्ठइ गोयमा ! ।
फलेइ विसभक्खीणी, सा उ उद्धरिया कहं ? ॥४५॥

तं लयं सव्वसो छित्ता, उद्धरित्ता समूलियं ।
विहरामि जहानायं, मुक्कोमि विसभक्खणं ॥४६॥
लया य इइ का वुत्ता ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं वुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥४७॥
भवतण्हा लया वुत्ता, भीमा भीमफलोदया ।
तमुच्छित्ता जहानायं, विहरामि जहासुहं ॥४८॥
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ॥४९॥
(६) संपज्जलिया घोरा, अग्गी चिट्ठइ गोयमा !
जे डहंति सरीरत्था, कहं विज्झाविया तुमे ? ॥५०॥
महामेहप्पसूयाओ, गिज्झ वारि जलुत्तमं ।
सिंचामि सययं तेऊं, सित्ता नो व डहंति मे ॥५१॥
अग्गी य इइ के वुत्ता ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं वुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥५२॥
कसाया अग्गिणो वुत्ता, सुय-सील-तवो-जलं ।
सुयधाराभिहया संता, भिन्ना हु न डहंति मे ॥५३॥
साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥५४॥
(७) अयं साहसिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावई ।
जंसि गोयम ! आरूढो, कहं तेण न हीरसि ? ॥५५॥

पधावंतं निगिण्हामि, सुयरस्सीसमाहियं ।
न मे गच्छइ उम्मग्गं, मग्गं च पडिवज्जइ ॥५६॥

आसे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥५७॥

मणो साहसिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावइ ।
तं सम्मं तु निगिण्हामि, धम्मसिक्खाइ कंथगं ॥५८॥

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥५९॥

(८) कुप्पहा बहवो लोए, जेहिं नासंति जंतुणो ।
अद्धाणे कह वट्टंतो, तं न नाससि ? गोयमा ! ॥६०॥

जे य मग्गेण गच्छंति, जे य उम्मग्गपट्ठिया ।
ते सव्वे वेइया मज्झं, तं न नस्सामहं मुणी ! ॥६१॥

मग्गे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ॥६२॥

कुप्पवयणपासंडी, सव्वे उम्मग्गपट्ठिया ।
सम्मग्गं तु जिणक्खायं, एस मग्गे हि उत्तमे ॥६३॥

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥६४॥

(९) महाउदगवेगेण, वुज्झमाणाण पाणिणं ।
सरणं गई पइट्ठा य, दीवं कं मन्नसि ? मुणी ! ॥६५॥

अत्थि एगो महादीवो, वारिमज्झे महालओ ।
महाउदवेगस्स, गई तत्थ न विज्जइ ॥६६॥

दीवे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयमब्ववी ।
केसिमेवं बुवतं तु, गोयमो इणमब्ववी ॥६७॥

जरा–मरणवेगेणं, वुज्झमाणाण पाणिणं ।
धम्मो दीवो पइट्ठा य, गई सरणमुत्तमं ॥६८॥

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥६९॥

(१०) अण्णवंसि महोहंसी, नावा विपरिधावइ ।
जंसि गोयम ! आरूढो, कहं पारं गमिस्ससि ? ॥७०॥

जा उ अस्साविणी नावा, न सा पारस्स गामिणी ।
जा निरस्साविणी नावा, सा उ पारस्स गामिणी ॥७१॥

नावा य इइ का वुत्ता ? केसी गोयममब्ववी ।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्ववी ॥७२॥

सरीरमाहु नाव त्ति, जीवो वुच्चइ नाविओ ।
संसारो अण्णवो वुत्तो, जं तरंति महेसिणो ॥७३॥

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥७४॥

(११) अंधयारे तमे घोरे, चिट्ठंति पाणिणो बहू ।
को करिस्सइ उज्जोयं ? सव्वलोयम्मि पाणिणं ॥७५॥

उग्गओ विमलो भाणू, सव्वलोयपभंकरो ।
सो करिस्सइ उज्जोयं, सव्वलोयमि पाणिण ।।७६।।

भाणू य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवि बुवंत तु, गोयमो इणमब्बवी ।।७७।।

उग्गओ खीणसंसारो, सव्वन्नू जिणभक्खरो ।
सो करिस्सइ उज्जोयं, सव्वलोयंमि पाणिणं ।।७८।।

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं, त मे कहसु गोयमा ! ।।७९।।

(१२) सारीरमाणसे दुक्खे, वज्झमाणाण पाणिणं ।
खेमं सिवमणावाहं, ठाणं किं मन्नसे मुणी ? ।।८०।।

अत्थि एगं धुवं ठाणं, लोगग्गंमि दुरारुहं ।
जत्थ नत्थि जरा मच्चू, वाहिणो वेयणा तहा ।।८१।।

ठाणे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी ।।८२।।

निव्वाणं ति अवाहं ति, सिद्धी लोगग्गमेव य ।
खेम सिवं अणाबाहं, जं चरंति महेसिणो ।।८३।।

तं ठाणं सासयं वासं, लोयग्गंमि दुरारुहं ।
जं संपत्ता न सोयंति, भवोहंतकरा मुणी ! ।।८४।।

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
न मो ते संसयातीत ! सव्वसुत्तमहोदही ।।८५।।

एव तु ससए छिन्ने ! केसी घोरपरक्कमे ।
अभिवदित्ता सिरसा, गोयम तु महायसं ॥८६॥

पंचमहव्वयधम्म, पडिवज्जइ भावओ ।
पुरिमस्स पच्छिममि, मग्गे तत्थ सुहावहे ॥८७॥

केसीगोयमओ निच्च, तमि आसि समागमे ।
सुयसीलसमुक्करिसो, महत्थत्थविणिच्छओ ॥८८॥

तोसिया परिसा सव्वा, समग्ग समुवट्ठिया ।
सथुया ते पसीयतु, भयव केसिगोयमे ॥८९॥

॥ त्ति बेमि ॥

अह पवयणमाया नामं चउविसइमं अज्झयणं

अट्ठ पवयणमायाओ, समिई गुत्ती तहेव य ।
पंचेव य समिईओ, तओ गुत्ती उ आहिया ॥१॥

इरिया[1] भासे[2] सणा[3] दाणे[4], उच्चारे[5] समिई इय ।
मणगुत्ती[6] वयगुत्ती[7], कायगुत्तो[8] य अट्ठमा ॥२॥

एयाओ अट्ठ समिईओ, समासेण वियाहिया ।
दुवालसगं जिणक्खायं, माय जत्थ उ पवयण ॥३॥

(१) आलंबणेण[1] कालेण[2], मग्गेण[3] जयणाइ[4] य ।
चउकारणपरिसुद्धं, संजए इरियं रिए ॥४॥
तत्थ आलंबणं नाणं[1], दंसणं[2] चरणं[3] तहा ।
काले य दिवसे वुत्ते, मग्गे उप्पहवज्जिए ॥५॥
दव्वओ[1] खेत्तओ[2] चेव, कालओ[3] भावओ[4] तहा ।
जयणा चउव्विहा वुत्ता, तं मे कित्तयओ सुण ॥६॥
दव्वओ चक्खुसा पेहे, जुगमित्तं च खित्तओ ।
कालओ जाव रीइज्जा, उवउत्ते य भावओ ॥७॥
इंदियत्थे विवज्जित्ता, सज्झायं चेव पंचहा ।
तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे, उवउत्ते रियं रिए ॥८॥
(२) कोहे[1] माणे[2] य मायाए[3], लोभे[4] य उवउत्तया ।
हासे[5] भए[6] मोहरिए[7], विकहासु[8] तहेव य ॥९॥
एयाइं अट्ठठाणाइं, परिवज्जित्तु संजए ।
असावज्जं मियं काले, भासं भासिज्ज पन्नवं ॥१०॥
(३) गवेसणाए[1] गहणे[2] य, परिभोगेसणा[3] य जा ।
आहारो[1] वहि[2] सेज्जाए[3], एए तिन्नि विसोहए ॥११॥
उग्गमुप्पायणं पढमे, बीए सोहेज्ज एसणं ।
परिभोयम्मि चउक्कं, विसोहेज्ज जयं जई ॥१२॥
(४) ओहोवहो[1] वग्गहियं[2], भंडगं दुविहं मुणी ।
गिण्हंतो निक्खिवंतो य, पउंजेज्ज इमं विहिं ॥१३॥

चक्खुसा पडिलेहित्ता, पमज्जेज्ज जय जई ।
आइए निक्खिवेज्जा वा, दुहओऽवि समिए सया ॥१४॥
(५) उच्चार पासवणं, खेलं सिंघाण–जल्लियं ।
आहारं उवहिं देहं, अन्नं वा वि तहाविहं ॥१५॥
अणावायमसंलोए[1], अणावाए चेव होइ संलोए[2] ।
आवायमसंलोए[3], आवाए चेव संलोए[4] ॥१६॥
अणावायमसंलोए, परस्सऽणुवघाइए ।
समे अज्झुसिरे यावि, अचिरकालकयम्मि य ॥१७॥

वित्थिण्णे दूरमोगाढे, नासन्ने बिलवज्जिए ।
तसपाणबीयरहिए, उच्चाराईणि वोसिरे ॥१८॥

एयाओ पंच समिईओ, समासेण वियाहिया ।
इत्तो य तओ गुत्तीओ, वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥१९॥
(६) सच्चा[1] तहेव मोसा[2] य, सच्चामोसा[3] तहेव य ।
चउत्थी असच्चमोसा[4] य, मणगुत्ती चउव्विहा ॥२०॥

संरंभ–समारंभे, आरंभे य तहेव य ।
मणं पवत्तमाणं तु नियत्तिज्ज जयं जई ॥२१॥

(७) सच्चा[1] तहेव मोसा[2] य, सच्चामोसा[3] तहेव य ।
चउत्थी असच्चमोसा[4] य, वइगुत्ती चउव्विहा ॥२२॥

संरंभ–समारंभे, आरंभे य तहेव य ।
वयं पवत्तमाणं तु, नियत्तिज्ज जयं [जई]॥२३॥

(८) ठाणे निसीयणे चेव, तहेव य तुयट्टणे।
उल्लंघण–पल्लंघणे, इंदियाण य जुंजणे ॥२४॥

संरंभ–समारंभे, आरंभे य तहेव य ।
कायं पवत्तमाणं तु, नियत्तिज्ज जयं जई ॥२५॥

एयाओ पंच समिईओ, चरणस्स य पवत्तणे ।
गुत्ती नियत्तणे वुत्ता, असुभत्थेसु सव्वसो ॥२६॥

एसा पवयणमाया, जे सम्मं आयरे मुणी ।
सो खिप्पं सव्वसंसारा, विप्पमुच्चइ पंडिए ॥२७॥

॥ त्ति बेमि ॥

अह जन्नइज्ज-नामं पंचविंसइमं अज्झयणं

माहणकुलसंभूओ, आसि विप्पो महायसो ।
जायाई जमजन्नंमि, "जयघोसि त्ति" नामओ ॥१॥

इंदियग्गामनिग्गाही, मग्गगामी महामुणी ।
गामाणुगामं रीयंते, पत्तो वाणारसिं पुरिं ॥२॥

'वाणारसीए' बहिया, उज्जाणंमि मणोरमे ।
फासुए सेज्जसंथारे, तत्थ वासमुवागए ॥३॥

अह तेणेव कालेणं, पुरीए तत्थ माहणे ।
"विजयघोसि त्ति" नामेण, जन्न जयइ वेयवी ॥४॥
अह से तत्थ अणगारे, मासक्खमणपारणे ।
विजयघोसस्स जन्नमि, भिक्खमट्ठा उवट्ठिए ॥५॥

यष्टा विजयघोषः—

समुवट्ठियं तहिं सतं, जायगो पडिसेहए ।
न हु दाहामि ते भिक्खं, भिक्खू ! जायाहि अन्नओ ॥६॥
जे य वेयविऊ विप्पा, जन्नट्ठा य जे दिया ।
जोइसंगविऊ जे य, जे य धम्माण पारगा ॥७॥
जे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य ।
तेसिं अन्नमिणं देय, भो भिक्खू ! सव्वकामियं ॥८॥
सो तत्थ एव पडिसिद्धो, जायगेण महामुणी ।
न वि रुट्ठो न वि तुट्ठो, उत्तमट्ठगवेसओ ॥९॥
नन्नट्ठं पाणहेउं वा, नवि निव्वाहणाय वा ।
तेसिं विमोक्खणट्ठाए, इमं वयणमब्बवी ॥१०॥

जयघोषमुनिः—

नवि जाणसि वेयमुहं[1], नवि जन्नाण जं मुहं[2] ।
नक्खत्ताण मुहं[3] जं च, जं च धम्माण वा मुहं[4] ॥११॥
जे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाणमेव[5] य ।
न ते तुमं वियाणासि, अह जाणासि तो भण ॥१२॥

यष्टा विजयघोषः—

तस्सक्खेवपमुक्खं तु, अचयंतो तहि दिओ ।
सपरिसो पंजली होउं, पुच्छई तं महामुणि ॥१३॥
वेयाणं च मुहं बूहि[1], बूहि जन्नाण जं मुहं[2] ।
नक्खत्ताण मुह बूहि[3], बूहि धम्माण वा मुहं[4] ॥१४॥
जे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाणमेव[5] य ।
एयं मे संसयं सव्वं, साहू ! कहय पुच्छिओ ॥१५॥

जयघोषमुनिः—

अग्गिहुत्तमुहा वेया[1], जन्नट्ठी वेयसा मुहं[2] ।
नक्खत्ताण मुहं चंदो,[3] धम्माणं कासवो मुहं[4] ॥१६॥
जहा चंदं गहाईया, चिट्ठंति पंजलीउडा ।
वंदमाणा नमंसंता, उत्तमं मणहारिणो ॥१७॥
अजाणगा जन्नवाई, विज्जामाहणसंपया ।
गूढा सज्झायतवसा, "भासच्छन्ना इवग्गिणो" ॥१८॥
जो लोए बंभणो वुत्तो, अग्गी वा महिओ जहा ।
सया कुसलसंदिट्ठं, तं वयं बूम माहणं ॥१९॥
जो न सज्जइ आगंतुं, पव्वयंतो न सोयइ ।
रमइ अज्जवयणंमि, तं वयं बूम माहणं ॥२०॥
जायरूवं जहामट्ठं, निद्धंतमलपावगं ।
राग-दोस-भयाईयं, तं वयं बूम माहणं ॥२१॥

तवस्सियं किसं दंत, अवचिय-मंससोणिय ।
सुव्वय पत्तनिव्वाणं, तं वयं बूम माहणं ॥२२॥
तसपाणे वियाणेत्ता, संगहेण यथावरे ।
जो न हिंसइ तिविहेण, तं वय बूम माहणं ॥२३॥
कोहा वा जइ वा हासा, लोहा वा जइ वा भया ।
मुसं न वयई जो उ, त वयं बूम माहणं ॥२४॥
चित्तमतमचित्त वा, अप्प वा जइ वा बहुं ।
न गिण्हइ अदत्त जो, तं वय बूम माहण ॥२५॥
दिव्व-माणुस्स-तेरिच्छ, जो न सेवइ मेहुण ।
मणसा कायवक्केण, त वय बूम माहण ॥२६॥
जहा पोम जले जाय, नोवलिप्पइ वारिणा ।
एव अलित्तो कामेहिं, त वयं बूम माहणं ॥२७॥
अलोलुय मुहाजीवि, अणगारं अकिंचणं ।
असंसत्तं गिहत्थेसु, तं वय बूम माहणं ॥२८॥
जहित्ता पुव्वसंजोगं, नाइसंगे य बंधवे ।
जो न सज्जइ भोगेसु, तं वयं बूम माहणं ॥२९॥
पसुबंधा सव्ववेया, जट्ठं च पावकम्मुणा ।
न तं तायंति दुस्सील, कम्माणि बलवंति ह ॥३०॥
न वि मुडिएण समणो, न ओंकारेण बंभणो ।
न मुणी रण्णवासेण, कुसचीरेण न तावसो ॥३१॥

समयाए समणो होइ, बंभचेरेण बंभणो ।
नाणेण उ मुणी होइ, तवेण होइ तावसो ॥३२॥

कम्मुणा बमणो होइ, कम्मुणा होइ खत्तिओ ।
वइस्सो कम्मुणा होइ, सुद्दो हवइ कम्मुणा ॥३३॥

एए पाउकरे बुद्धे, जेहिं होइ सिणायओ ।
सव्वकम्मविणिम्मुक्क, तं वयं बूम माहण ॥३४॥

एवं गुणसमाउत्ता, जे भवंति दिउत्तमा ।
ते समत्था उ उद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य ॥३५॥

यष्टा विजयघोषः–

एवं तु संसए छिन्ने, विजयघोसे य माहणे ।
समुदाय तओ तं तु, जयघोसं महामुणि ॥३६॥

तुट्ठे य विजयघोसे, इणमुदाहु कयंजली ।
माहणत्तं जहाभूयं, सुट्ठु मे उवदंसियं ॥३७॥

तुब्भे जइया जन्नाणं, तुब्भे वेयविऊ विऊ ।
जोइसंगविऊ तुब्भे, तुब्भे धम्माण पारगा ॥३८॥

तुब्भे समत्था उद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य ।
तमणुग्गह करेहऽम्ह, भिक्खेण भिक्खुउत्तमा ॥३९॥

जयघोषमुनि –

न कज्ज मज्झ भिक्खेणं, खिप्पं निक्खमसू दिया ।
मा भमिहिसि भयावट्टे, घोरे संसारसागरे ॥४०॥

उवलेवो होइ भोगेसु, अभोगी नोवलिप्पई ।
भोगी भमइ संसारे, अभोगी विप्पमुच्चई ॥४१॥

"उल्लो सुक्को य दो छूढा, गोलया मट्टियामया ।
दो वि आवडिया कुड्डे, जो उल्लो सोऽत्थ लग्गइ ॥४२॥

एव लग्गंति दुम्मेहा, जे नरा कामलालसा ।
विरत्ता उ न लग्गंति, जहा से सुक्कगोलए ॥४३॥

एव से विजयघोसे, जयघोसस्स अंतिए ।
अणगारस्स निक्खंतो, धम्मं सोच्चा अणुत्तरं ॥४४॥

खवित्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य ।
जयघोस-विजयघोसा, सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥४५॥

॥त्ति बेमि ॥

अह सामायारी नामं छव्वीसइमं अज्झयणं

सामायारिं पवक्खामि, सव्वदुक्खविमोक्खणिं ।
जं चरित्ताण निग्गंथा, तिण्णा संसारसागरं ॥१॥

पढमा आवस्सिया नाम, बिइया य निसीहिया ।
आपुच्छणा य तइया, चउत्थी पडिपुच्छणा ॥२॥

पंचमी छंदणा नामं, इच्छाकारो य छट्ठओ ।
सत्तमो मिच्छाकारो य, तहक्कारो य अट्ठमो ॥३॥

अब्भुट्ठाणं च नवमा, दसमा उवसंपया ।
एसा दसंगा साहूणं, सामायारी पवेइया ॥४॥

समाचारीस्वरूपम्:-

गमणे आवस्सियं[1] कुज्जा, ठाणे कुज्जा निसीहियं[2] ।
आपुच्छणं[3] सयंकरणे, परकरणे पडिपुच्छणं[4] ॥५॥
छंदणा[5] दव्वजाएणं, इच्छाकारो[6] य सारणे ।
मिच्छाकारो[7] य निंदाए, तहक्कारो[8] पडिस्सुए ॥६॥
अब्भुट्ठाणं[9] गुरूपूया, अच्छणे[10] उवसंपदा ।
एवं दुपंचसंजुत्ता, सामायारी पवेइया ॥७॥

श्रामण्ये स्थितानां संक्षिप्ता दिनचर्या –

पुव्विल्लंमि चउब्भाए, आइच्चंमि समुट्ठिए ।
भंडयं पडिलेहित्ता, वंदित्ता य तओ गुरुं ॥८॥
पुच्छिज्जा पजलीउडो, किं कायव्वं मए इह ।
इच्छं निओइउं भंते ! वेयावच्चे व सज्झाए ॥९॥
वेयावच्चे निउत्तेणं, कायव्वं अगिलायओ ।
सज्झाए वा निउत्तेण, सव्वदुक्खविमुक्खणे ॥१०॥
दिवसस्स चउरो भागे, कुज्जा भिक्खू वियक्खणो ।
तओ उत्तरगुणे कुज्जा, दिणभागेसु चउसु वि ॥११॥
पढमे पोरिसिं सज्झायं, वीये झाणं झियायई ।
तइयाए भिक्खायरियं, पुणो चउत्थीइ सज्झायं ॥१२॥

पौरुषी-प्रमाणम् –

आसाढे मासे दुपया, पोसे मासे चउप्पया ।
चित्तासोएसु मासेसु, तिप्पया हवइ पोरिसी ॥१३॥

अंगुलं सत्तरत्तेणं, पक्खेणं च दु अंगुलं ।
वड्ढए हायए वावी, मासेणं चउरंगुलं ॥१४॥

क्षयतिथीनां मासा –

आसाढ[1] बहुलपक्खे, भद्दवए[2] कत्तिय[3] य पोसे[4] य ।
फग्गुण[5] वइसाहेसु[6] य, बोद्धव्वा ओमरत्ताओ ॥१५॥

पादोनपौरुषी-प्रमाणम् –

जेट्ठामूले आसाढ-सावणे, छहिं अंगुलेहिं पडिलेहा ।
अट्ठहिं बिइय-तियंमि, तइए दस अट्ठहिं चउत्थे ॥१६॥

श्रामण्ये स्थितानां संक्षिप्ता रात्रिचर्या –

रत्तिं पि चउरो भागे, भिक्खू कुज्जा वियक्खणो ।
तओ उत्तरगुणे कुज्जा, राइभाएसु चउसु वि ॥१७॥

पढमे पोरिसिं सज्झायं, बीये झाणं झियायई ।
तइयाए निद्दामोक्खं तु, चउत्थी भुज्जो वि सज्झायं ॥१८॥

रात्रौ स्वाध्यायसमयनिरीक्षणम् –

जं नेई जया रत्तिं, नक्खत्तं तंमि नहचउब्भाए ।
संपत्ते विरमेज्जा, सज्झायं पओसकालंमि ॥१९॥

तम्मेव य नक्खत्ते, गयणचउब्भागसावसेसंमि ।
वेरत्तियंपि कालं, पडिलेहित्ता मुणी कुज्जा ॥२०॥

श्रामण्ये स्थितानां विशदा दिनचर्याः–

पुव्विल्लंमि चउब्भाए, पडिलेहित्ताण भंडयं ।
गुरु वंदित्तु सज्झायं, कुज्जा दुक्खविमोक्खणिं ॥२१॥

पोरिसीए चउब्भाए, वंदित्ताण तओ गुरु ।
अपडिक्कमित्ता कालस्स, भायणं पडिलेहए ॥२२॥

प्रतिलेखनाविधि –

मुहपोत्तिं पडिलेहित्ता, पडिलेहिज्ज गोच्छगं ।
गोच्छगलइयंगुलिओ, वत्थाइं पडिलेहए ॥२३॥

उड्ढं थिरं अतुरियं, पुव्वं ता वत्थमेव पडिलेहे[1] ।
तो बिइयं पप्फोडे[2], तइयं च पुणो पमज्जिज्जा[3] ॥२४॥

अणच्चावियं अवलियं, अणाणुबंधिममोसलिं चेव ।
छप्पुरिमा नव खोडा, पाणी-पाणिविसोहणं ॥२५॥

प्रतिलेखना-दूषणानि –

आरभडा[1] सम्मद्दा,[2] वज्जेयव्वा य मोसली[3] तइया ।
पप्फोडणा[4] चउत्थी, विक्खित्ता[5] वेइया छट्ठी[6] ॥२६॥

पसिढिल-पलंब-लोला, एगा मोसा अणेगरूवधुणा ।
कुणइ पमाणपमायं, संकिय गणणोवगं कुज्जा ॥२७॥

अणूणा[1] इरित्त[2] पडिलेहा, अविवच्चासा[3] तहेव य ।
पढमं पयं पसत्थं, सेसाणि य अप्पसत्थाइं ॥२८॥

प्रतिलेखना समये नैतत्करणीयम् —

पडिलेहणं कुणंतो, मिहो कहं कुणइ जणवयकहं वा ।
देइ व पच्चक्खाणं, वाएइ सयं पडिच्छइ वा ॥२९॥

पुढवी आउक्काए, तेउ-वाऊ-वणस्सइ-तसाणं ।
पडिलेहणापमत्तो, छण्हं पि विराहओ होइ ॥३०॥

पुढवी आउक्काए, तेऊ-वाऊ-वणस्सइ-तसाणं ।
पडिलेहणाआउत्तो, छण्हं संरक्खओ होइ ॥३१॥

तइयाए पोरिसीए, भत्तं पाणं गवेसए ।
छण्हं अन्नयरागंमि, कारणंमि समुट्ठिए ॥३२॥

वेयण[1] वेयावच्चे[2], इरियट्ठाए[3] य संजमट्ठाए[4] ।
तह पाणवत्तियाए[5], छट्ठं पुण धम्मचिंताए[6] ॥३३॥

निग्गंथो धिइमंतो,निग्गंथी वि न करेज्ज छहिं चेव ।
ठाणेहिं उ इमेहिं, अणइक्कमणाइ से होइ ॥३४॥

आयंके[1] उवसग्गे[2], तितिक्खया बंभचेरगुत्तीसु[3] ।
पाणिदया[4] तवहेउं[5], सरीरवुच्छेयणट्ठाए[6] ॥३५॥

अवसेसं भंडगं गिज्झा, चक्खुसा पडिलेहए ।
परमद्धजोयणाओ, विहारं विहरए मुणी ॥३६॥

चउत्थीए पोरिसीए, निक्खिवित्ताण भायणं ।
सज्झायं तओ कुज्जा, सव्वभावविभावणं ॥३७॥

पोरसीए चउब्भाए, वंदित्ताण तओ गुरुं ।
पडिक्कमित्ता कालस्स, सेज्जं तु पडिलेहए ॥३८॥

पासवणुच्चारभूमिं च, पडिलेहिज्ज जयं जई ।

श्रामण्ये स्थितानां विशदा रात्रिचर्या–

काउसग्गं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमुक्खणं ॥३९॥

देवसियं च अईयारं, चिंतिज्ज अणुपुव्वसो ।
नाणे य दंसणे चेव, चरित्तंमि तहेव य ॥४०॥

पारियकाउसग्गो, वंदित्ता ण तओ गुरुं ।
देवसियं तु अईयारं, आलोएज्ज जहक्कम्मं ॥४१॥

पडिक्कमित्तु निस्सल्लो, वंदित्ता ण तओ गुरुं ।
काउसग्गं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥४२॥

पारियकाउस्सग्गो, वंदित्ता ण तओ गुरुं ।
थुइमंगलं च काऊण, कालं संपडिलेहए ॥४३॥

पढमे पोरसिं सज्झायं, बिये झाणं झियायई ।
तइयाए निद्दमोक्खं तु, सज्झायं तु चउत्थिए ॥४४॥

पोरिसीए चउत्थीए, कालं तु पडिलेहिए ।
सज्झायं तु तओ कुज्जा, अबोहंतो असंजए ॥४५॥

पोरिसीए चउब्भाए, वंदिऊण तओ गुरु ।
पडिक्कमित्तु कालस्स, काल तु पडिलेहए ॥४६॥

आगए कायवोसग्गे, सव्वदुक्खविमुक्खणे ।
काउसग्गं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमुक्खण ॥४७॥

राइयं च अईयार, चिंतिज्ज अणुपुव्वसो ।
नाणमि दंसणमि य, चरित्तमि तवंमि य ॥४८॥

पारियकाउस्सग्गो, वंदित्ताण तओ गुरुं ।
राइय तु अईयारं, आ लोएज्ज जहक्कमं ॥४९॥

पडिक्कमित्तु निस्सल्लो, वंदित्ताण तओ गुरुं ।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमुक्खणं ॥५०॥

किं तव पडिवज्जामि, एव तत्थ विचितए ।
काउस्सग्ग तु पारित्ता, करिज्जा जिणसथव ॥५१॥

पारियकाउस्सग्गो, वंदित्ताण तओ गुरु ।
तवं संपडिवज्जित्ता, कुज्जा सिद्धाण-संथव ॥५२॥

एसा सामायारी, समासेण वियाहिया ।
जं चरित्ता बहू जीवा, तिण्णा ससारसागरं ॥५३॥

॥ त्ति बेमि ॥

अह खलुंकिज्ज-नामं सत्तावीसइमं अज्झयणं

थेरे गणहरे गग्गे, मुणी आसि विसारए ।
आइण्णे गणिभावंमि, समाहिं पडिसंधए ॥१॥

वहणे वहमाणस्स, कंतारं अइवत्तई ।
जोगे वहमाणस्स, संसारो अइवत्तई ॥२॥

खलुंके जो उ जोएइ, विहंमाणो किलिस्सई ।
असमाहिं च वेएइ, तोत्तई से य भज्जई ॥३॥

एगं डसइ पुच्छंमि, एगं विंधइऽभिक्खणं ।
एगो भंजइ समिलं, एगो उप्पह-पट्ठिओ ॥४॥

एगो पडइ पासेणं, निवेसइ निविज्जइ ।
उक्कुद्दइ उप्फिडई, सढे बालगवी वए ॥५॥

माई मुद्धेण पडई, कुद्धे गच्छइ पडिप्पहं ।
मयलक्खेण चिट्ठई, वेगेण य पहावई ॥६॥

छिन्नाले छिंदइ सेल्लिं, दुद्दंतो भंजए जुगं ।
से वि य सुस्सुयाइत्ता, उज्जहित्ता पलायइ ॥७॥

खलुंका जारिसा जोज्जा, दुस्सीसा वि हु तारिसा ।
जोइया धम्मजाणंमि, भज्जंति धिइदुब्बला ॥८॥

इड्ढीगारविए एगे, एगेऽत्थ रसगारवे ।
सायागारविए एगे, एगे सुचिरकोहणे ॥९॥

भिक्खालसिए एगे, एगे ओमाणभीरुए थद्धे ।
एगं च अणुसासम्मि, हेऊहिं कारणेहि य ॥१०॥

सो वि अंतरभासिल्लो दोसमेव पकुव्वई ।
आयरियाणं तु वयणं, पडिकूलेइऽभिक्खणं ॥११॥

न सा ममं वियाणाइ, न य सा मज्झ दाहिइ ।
निग्गया होहिई मन्ने, साहू अन्नोऽत्थ वच्चउ ॥१२॥

पेसिया पलिउंचंति, ते परियंति समंतओ ।
रायवेट्ठिं च मन्नंता, करेंति भिउडिं मुहे ॥१३॥

वाइया संगहिया चेव, भत्तपाणेहि पोसिया ।
'जायपक्खा जहा हंसा, पक्कमंति दिसो दिसिं' ॥१४॥

अह सारही विचिंतेइ, खलुंकेहिं समागओ ।
किं मज्झ दुट्ठसीसेहिं, अप्पा मे अवसीयइ ॥१५॥

जारिसा मम सीसाओ, तारिसा गलिगद्दहा ।
गलिगद्दहे जहित्ताणं, दढं पगिण्हइ तवं ॥१६॥

मिउमद्दवसंपन्ने, गंभीरे सुसमाहिए ।
विहरइ महिं महप्पा, सीलभूएण अप्पणा ॥१७॥

॥ त्ति बेमि ॥

अह मोक्खमग्गगई नामं अट्ठावीसइमं अज्झयणं

मोक्खमग्गगइं तच्चं, सुणेह जिणभासियं ।
चउकारणसंजुत्तं, नाणदंसणलक्खणं ॥१॥

नाणं[1] च दंसणं[2] चेव, चरित्तं[3] च तवो[4] तहा ।
एस मग्गुत्ति पन्नत्तो, जिणेहिं वरदंसिहिं ॥२॥

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा ।
एयं मग्गमणुप्पत्ता, जीवा गच्छंति सोग्गइं ॥३॥

ज्ञानस्वरूपम्–

तत्थ पंचविहं नाणं, सुयं[1] आभिनिबोहियं[2] ।
ओहिनाणं[3] तु तइयं, मणनाणं[4] च केवलं[5] ॥४॥

एयं पंचविहं नाणं, दव्वाण य गुणाण य ।
पज्जवाण य सव्वेसिं, नाणं नाणीहि देसियं ॥५॥

द्रव्य-गुण पर्याय लक्षणानि–

गुणाणमासओ दव्वं, एगदव्वस्सिया गुणा ।
लक्खणं पज्जवाणं तु, उभओ अस्सिया भवे ॥६॥

षड्द्रव्याणि–

धम्मो[1] अहम्मो[2] आगासं[3], कालो[4] पुग्गल[5] जंतवो[6] ।
एस लोगो त्ति पन्नत्तो, जिणेहिं वरदंसिहिं ॥७॥

धम्मो अहम्मो आगासं, दव्वं इक्किक्कमाहियं ।
अणंताणि य दव्वाणि, कालो पुग्गलजंतवो ॥८॥

षड्द्रव्यलक्षणानि–

गइलक्खणो उ धम्मो[1], अहम्मो ठाणलक्खणो[2] ।
भायणं सव्वदव्वाणं, नहं ओगाहलक्खणं[3] ॥९॥

वत्तणालक्खणो कालो[4], जीवो उवओगलक्खणो[5] ।
नाणेणं दंसणेणं चेव, सुहेण य दुहेण य ॥१०॥

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा ।
वीरियं उवओगो य, एयं जीवस्स लक्खणं ॥११॥

सद्दंधयार–उज्जोओ, पहा छायाऽऽतव त्ति वा ।
वण्ण-रस-गंध-फासा, पुग्गलाणं तु लक्खणं ॥१२॥

एगत्तं च पुहत्तं च, संखा संठाणमेव य ।
संजोगा य विभागा य, पज्जवाणं तु लक्खणं ॥१३॥

दर्शन-स्वरूपम्–

जीवा[1] जीवा[2] य बंधो[3] य, पुण्णं[4] पावा[5] सवो[6] तहा ।
संवरो[7] निज्जरा[8] मोक्खो[9], संतेए तहिया नव ॥१४॥

सम्यक्त्व-लक्षणम्–

तहियाणं तु भावाणं, सब्भावे उवएसणं ।
भावेण सद्दहंतस्स, सम्मत्तं तं वियाहियं ॥१५॥

दशविधा-रुचय–

निस्सग्ग[1] वएसरुई[2], आणारुई[3] सुत्त[4] बीयरुइमेव[5] ।
अभिगम[6] वित्थाररुई[7], किरिया[8] संखेव[9] धम्मरुई[10] ॥१६॥

(१) भूयत्थेणाहिगया, जीवाजीवा य पुण्णपावं च ।
सहसम्मुइयासव, संवरो य रोएइ उ निस्सग्गो ॥१७॥

जो जिणदिट्ठे भावे, चउव्विहे सद्दहाइ सयमेव ।
एमेव नन्नह त्ति य, स निसग्गरुइ त्ति नायव्वो ॥१८॥

(२) एए चेव उ भावे, उवइट्ठे जो परेण सद्दहई ।
छउमत्थेण जिणेण व, उवएसरुइ त्ति नायव्वो ॥१९॥

(३) रागो दोसो मोहो, अन्नाण जस्स अवगय होइ ।
आणाए रीयंतो, सो खलु आणारुई नामं ॥२०॥

(४) जो सुत्तमहिज्जंतो, सुएण ओगाहई उ सम्मत्तं ।
अंगेण बाहिरेण वा, सो सुत्तरुइ त्ति नायव्वो ॥२१॥

(५) एगेण अणेगाइ, पयाइ जो पसरइ उ सम्मत्तं ।
उदएव्व तेल्लबिंदू, सो बीयरुइ त्ति नायव्वो ॥२२॥

(६) सो होइ अभिगमरुई, सुयनाणं जेण अत्थओ दिट्ठं ।
एक्कारस अंगाइं, पइण्णग दिट्ठिवाओ य ॥२३॥

(७) दव्वाण सव्वभावा, सव्वपमाणेहि जस्स उवलद्धा ।
सव्वाहि नयविहीहि य, वित्थाररुइ त्ति नायव्वो ॥२४॥

(८)दसणनाणचरित्ते, तवविणए सच्चसमिइगुत्तीसु ।
जो किरियाभावरुई, सो खलु किरियारुई नाम ॥२५॥
(९) अणभिग्गहियकुदिट्ठी, सखेवरुइ त्ति होइ नायव्वो ।
अविसारओ पवयणे, अणभिग्गहिओ य सेसेसु ॥२६॥
(१०) जो अत्थिकायधम्म, सुयधम्म खलु चरित्तधम्मं च ।
सद्दहइ जिणाभिहियं, सो धम्मरुइ त्ति नायव्वो ॥२७॥
परमत्थ-सथवो[1] वा, सुदिट्ठ-परमत्थसेवणा[2] वा वि ।
वावन्न-कुदसणवज्जणा[3], य सम्मत्तसद्दहणा ॥२८॥
नत्थि चरित्त सम्मत्तविहूण, दसणे उ भइयव्व ।
सम्मत्तचरित्ताइ जुगवं,पुव्वं व सम्मत्तं ॥२९॥

नादसणिस्स नाण,
नाणेण विणा न हुंति चरणगुणा ।
अगुणिस्स नत्थि मोक्खो,
नत्थि अमोक्खस्स निव्वाणं ॥३०॥

अष्टप्रभावना–

निस्सकिय[1]-निक्कखिय[2], निव्वितिगिच्छ[3] अमूढदिट्ठी[4] य ।
उववूह[5]-थिरीकरणे[6], वच्छल्ल[7]-पभावणे[8] अट्ठ ॥३१॥

चारित्रस्वरूपम्–

समाइयत्थ[1] पढम, छेओवट्ठावणं[2] भवे विइय ।
परिहारविसुद्धीय[3] सुहुमं तह सपराय[4] च ॥३२॥

अकसायमहक्खायं[5], छउमत्थस्स जिणस्स वा ।
एयं चयरित्तकर, चारित्तं होइ आहियं ॥३३॥

तपःस्वरूपम्—तवो य दुविहो वुत्तो, बाहिरब्भंतरो तहा ।
बाहिरो छव्विहो वुत्तो, एवमब्भंतरो तवो ॥३४॥

नाणेण जाणइ भावे, दंसणेण य सद्दहे ।
चरित्तेण निगिण्हाइ, तवेण परिसुज्झइ ॥३५॥

खवित्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य ।
सव्वदुक्खपहीणट्ठा, पक्कमंति महेसिणो ॥३६॥
॥ त्ति बेमि ॥

अह सम्मत्तपरक्कम नामं एगूणतीसइमं अज्झयणं

सुयं मे आउसं !
तेणं भगवया एवमक्खायं—
इह खलु समत्त-परक्कमे नाम अज्झयणे—
समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइए—
जं सम्मं सद्दहित्ता पत्तइत्ता रोयइत्ता फासित्ता पालइत्ता—
तीरित्ता कित्तइत्ता सोहइत्ता आराहित्ता आणाए अणुपालइत्ता—

बहवे जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति-
परिनिव्वायंति सव्वदुक्खाणमंतं करेंति ।
तस्स णं अयमट्ठे एवमाहिज्जइ ।
तं जहा—
संवेगे १ निव्वेए २ धम्मसद्धा ३ गुरु-साहम्मियसुस्सूसणया ४
आलोयणया ५ निंदणया ६ गरिहणया ७
सामाइए ८ चउव्वीसत्थए ९ वंदणया १०
पडिक्कमणे ११ काउस्सग्गे १२ पच्चक्खाणे १३
थवथुईमंगले १४
कालपडिलेहणया १५ पायच्छित्तकरणे १६ खमावणया १७
सज्झाए १८ वायणया १९ पुच्छणया २० परियट्टणया २१
अणुप्पेहा २२ धम्मकहा २३ ।
सुयस्स आराहणया २४ एगग्ग-मणसंनिवेसणया २५
संजमे २६ तवे २७ वोदाणे २८ सुहसाए २९
अपडिबद्धया ३० विवित्त-सयणासणसेवणया ३१ विणियट्टणया ३२
संभोगपच्चक्खाणे ३३ उवहि-पच्चक्खाणे ३४
आहार-पच्चक्खाणे ३५
कसाय-पच्चक्खाणे ३६ जोग-पच्चक्खाणे ३७
सरीर-पच्चक्खाणे ३८
सहाय-पच्चक्खाणे ३९ भत्त-पच्चक्खाणे ४० सब्भाव
पच्चक्खाणे ४१

पडिरूवणया ४२ वेयावच्चे ४३ सव्वगुणसंपन्नया ४४
वीयरागया ४५
खंती ४६ मुत्ती ४७ मद्दवे ४८ अज्जवे ४९
भावसच्चे ५० करणसच्चे ५१ जोगसच्चे ५२
मणगुत्तया ५३ वयगुत्तया ५४ कायगुत्तया ५५
मन-समाधारणया ५६ वय-समाधारणया ५७
काय-समाधारणया ५८
नाणसपन्नया ५९ दंसणसपन्नया ६० चरित्तसंपन्नया ६१
सोइंदियनिग्गहे ६२ चक्खिंदियानिग्गहे ६३ घाणिंदियनिग्गहे ६४
जिब्भिंदियानिग्गहे ६५ फासिंदियनिग्गहे ६६
कोहविजए ६७ माणविजए ६८ मायाविजए ६९ लोभविजए ७०
पेज्ज-दोस-मिच्छादंसणविजए ७१ सेलेसि ७२ अकम्मया ७३॥

संवेगेणं भते ! जीवे किं जणयइ ?
संवेगेणं अणुत्तरं धम्मसद्धं जणयइ।
अणुत्तराए धम्मसद्धाए संवेगं हव्वमागच्छइ।
अणंताणुबंधि कोह-माण-माया-लोभे खवेइ।
नवं च कम्मं न बंधइ।
तप्पच्चइयं च णं मिच्छत्त विसोहिं काऊण दंसणाराहए भवइ।
दंसण-विसोहीए य णं विसुद्धाए अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झइ।
विसोहीए य णं विसुद्धाए तच्चं पुणो भवग्गहणं नाइक्कमइ ॥१॥

निव्वेएणं भते ! जीवे किं जणयइ ?
निव्वेएणं दिव्व-माणुस-तेरिच्छिएसु कामभोगेसु
निव्वेयं हव्व मागच्छइ ।
सव्व विसएसु विरज्जइ ।
सव्व विसएसु विरज्जमाणे आरंभ-परिच्चाय करेइ ।
आरभ-परिच्चाय करेमाणे संसारमग्ग वोच्छिंदइ ।
सिद्धिमग्ग पडिवन्ने य भवइ । ॥२॥

धम्मसद्धाए ण भते ! जीवे किं जणयइ ?
धम्मसद्धाए ण साया-सोक्खेसु रज्जमाणे विरज्जइ ।
आगार-धम्मं च ण चयइ ।
अणगारिए ण जीवे सारीर-माणसाण दुक्खाण–
छेयण–भेयण संजोगाइण वोच्छेदं करेइ ।
अव्वाबाह च णं सुहं निव्वत्तेइ । ॥३॥

गुरु-साहम्मिय-सुस्सूसणयाए णं भते ! जीवे किं जणयइ ?
गुरु-साहम्मिय-सुस्सूणयाए विणय-पडिवत्तिं जणयइ ।
विणय-पडिवन्ने य ण जीवे अणच्चासायणसीले–
नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवदुग्गइओ निरुभइ ।
वण्ण-संजलण-भत्ति-बहुमाणयाए मणुस्स-देवसुग्गइओ निबधइ ।
सिद्धिं सोग्गइं च विसोहेइ ।
पसत्थाइं च णं विणयमूलाइ सव्वकज्जाइं साहेइ ।
अन्ने य बहवे जीवा विणइत्ता भवइ ॥४॥

आलोयणाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

आलोयणाए णं माया-नियाण-मिच्छादंसणसल्लाणं मोक्खमग्ग-विग्घाण अणंत-संसारबंधणाणं उद्धरणं करेइ।

उज्जुभावं च जणयइ।

उज्जुभाव-पडिवन्ने य णं जीवे अमाई-

इत्थीवेय-नपुंसग वेयं च न बंधइ।

पुव्वबद्ध च णं निज्जरेइ ॥५॥

निंदणयाए णं भंते ! जीवे कि जणयइ।

निंदणयाए णं पच्छाणुतावं जणयइ।

पच्छाणुतावेणं विरज्जमाणे करण-गुणसेढी पडिवज्जइ।

करणगुणसेढी पडिवन्ने य ण अणगारे-

मोहणिज्जं कम्मं उग्घायइ ॥६॥

गरहणयाए णं भंते ! जीवे कि जणयइ ?

गरहणयाए ण अपुरक्कारं जणयइ।

अपुरक्कारगए णं जीवे अप्पसत्थेहिंतो नियत्तेइ-

पसत्थे य पडिवज्जइ।

पसत्थ-जोगपडिवन्ने य णं अणगारे अणत-घाइ-पज्जवे खवेइ ॥७॥

सामाइए णं भंते ! जीवे कि जणयइ ?

सामाइए णं सावज्ज-जोग-विरइं जणयइ ॥८॥

चउव्वीसत्थए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

चउव्वीसत्थए णं दंसण-विसोहिं जणयइ ॥९॥

वंदणएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
वंदणएणं नीयागोयं कम्मं खवेइ ।
उच्चागोयं कम्मं निबंधइ ।
सोहग्गं च णं अप्पडिहयं आणाफलं निव्वत्तेइ ।
दाहिणभावं च णं जणयइ ॥१०॥
पडिक्कमणेण भंते ? जीवे किं जणयइ ?
पडिक्कमणेणं वय-छिद्दाणि पिहेइ ।
पिहिय-वय-छिद्दे पुण जीवे निरुद्धासवे असवल-चरित्ते-
अट्ठसु पवयण-मायासु उवउत्ते अपुहत्ते सुप्पणिहिंदिए-
विहरइ ॥११॥

काउस्सग्गेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
काउस्सग्गेणं तीय-पडुप्पन्न पायच्छित्तं विसोहेइ ।
विसुद्ध-पायच्छित्ते य जीवे निव्वुय-हियए 'ओहरिय-भरुव्व
भारवहे' पसत्थ-झाणोवगए सुहं सुहेणं विहरइ ॥१२॥
पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
पच्चक्खाणेणं आसवदाराइं निरुंभइ ।
पच्चक्खाणेणं इच्छानिरोहं जणयइ ।
इच्छानिरोहं गए य णं जीवे सव्वदव्वेसु विणीय-तण्हे
सीइभूए विहरइ ॥१३॥

थव-थुइ मंगलेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
थव-थुइ मंगलेणं नाणं-दंसण-चरित्त-बोहिलाभं जणयइ ।

नाण-दंसण-चरित्त-बोहिलाभसंपन्ने य णं जीवे अंतकिरियं कप्पविमाणोववत्तियं आराहणं आराहेइ ॥१४॥

काल-पडिलेहणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
काल-पडिलेहणयाए णं नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ ॥१५॥

पायच्छित्त करणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
पायच्छित्तकरणेणं पावकम्मविसोहिं जणयइ,
निरइयारे यावि भवइ ।
सम्मं च णं पायच्छित्तं पडिवज्जमाणे मग्गं च मग्गफलं च विसोहेइ, आयारं च आयारफलं च आराहेइ ॥१६॥

खमावणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
खमावणयाए णं पल्हायणभावं जणयइ ।
पल्हायणभावमुवगए य सव्वपाण-भूय-जीव-सत्तेसु मेत्तिभावमुप्पाएइ ?
मेत्तीभावमुवगए यावि जीवे भावविसोहिं काऊण निब्भए भवइ ॥१७॥

सज्झाएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
सज्झाएणं णाणावरणीज्जं कम्मं खवेइ ॥१८॥

वायणाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
वायणाए णं निज्जरं जणयइ ।
सुयस्स य (अणुसज्जणाए) अणासायणाए वट्टए ।

सुयस्स(अणुसज्जणाए)अणासायणाए वट्टमाणे तित्थधम्मं अवलंबइ
तित्थधम्मं अवलंबमाणे महानिज्जरे
महापज्जवसाणे भवइ ॥१९॥

पडि-पुच्छणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
पडि-पुच्छणयाए णं सुत्त-त्थ-तदुभयाइं विसोहेइ ।
कखामोहणिज्जं कम्मं वोच्छिदइ ॥२०॥

परियट्टणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
परियट्टणयाए णं वंजणाइ जणयइ, वंजणलद्धिं च उप्पाएइ ॥२१॥

अणुप्पेहाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
अणुप्पेहाए णं आउय-वज्जाओ सत्त-कम्मपगडीओ—
धणिय-बंधणबद्धाओ सिढिल-बंधणबद्धाओ पकरेइ ।
दीहकालठिइयाओ हस्सकालठिइयाओ पकरेइ ।
तिव्वाणुभावाओ मंदाणुभावाओ पकरेइ ।
बहुप्पएसग्गाओ अप्प-पएसग्गाओ पकरेइ ।
आउयं च णं कम्मं सिय बंधइ, सिय नो बंधइ ।
असाया-वेयणिज्जं च णं कम्मं नो भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ ।
अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंत-संसारकंतारं—
खिप्पामेव वीइवयइ ॥२२॥

धम्मकहाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
धम्मकहाए णं कम्म-निज्जरं जणयइ ।

धम्मकहाए णं पवयणं पभावेइ ।
पवयण-पभावेणं जीवे आगमेसस्स भद्दत्ताए कम्मं निबंधइ ॥२३॥
सुयस्स आराहणयाए ण भंतु ! जीवे किं जणयइ ?
सुयस्स आराहणयाए णं अन्नाण खवेइ
न य संकिलिस्सइ ॥२४॥
एगग्ग-मण-सनिवेसणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
एगग्ग-मण-संनिवेसणयाए णं चित्तनिरोहं करेइ ॥२५॥
संजमए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
संजमए णं अणण्हयत्तं जणयइ ॥२६॥
तवेण भंते ! जीवे किं जणयइ ?
तवेणं वोदाणं जणयइ ॥२७॥
वोदाणेणं भते ! जीवे कि जणयइ ?
वोदाणेणं अकिरियं जणयइ ।
अकिरियाइ भवित्ता तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ—
परिनिव्वायइ सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ॥२८॥
सुह-साएणं भते ! जीवे कि जणयइ ?
सुह-साएणं अणुस्सुयत्तं जणयइ ।
अणुस्सुयाए णं जीवे अणुकंपए अणुब्भडे विगयसोगे—
चरित्त-मोहणिज्जं कम्मं खवेइ ॥२९॥
अप्पडिबद्धयाए णं भते ! जीवे किं जणयइ ?
अप्पडिबद्धयाए ण जीवे निस्संगत्तं जणयइ ।

निस्संगत्तेणं जीवे एगग्गचित्ते दिया य राओ य-
असज्जमाणे अप्पडिबद्धे यावि विहरइ ३०॥

विवित्त-सयणासणयाए भंते ! जीवे किं जणयइ ?
विवित्त-सयणासणयाए जीवे चरित्तगुत्तिं जणयइ।
चरित्तगुत्ते य ण जीवे विवित्ताहारे दढचरित्ते एगतरए
मोक्खभावपडिवन्ने अट्ठविह-कम्मगंठिं निज्जरेइ ॥३१॥

विनियट्टणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
विनियट्टणयाए णं जीवे पावकम्माणं अकरणयाए अब्भुट्ठेइ।
पुव्वबद्धाण य निज्जरणयाए पावं नियत्तेइ।
तओ पच्छा चाउरंत-संसारकंतारं वीइवयइ ॥३२॥

संभोग-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
संभोग-पच्चक्खाणेण जीवे आलंबणाइं खवेइ।
निरालंबणस्स य आययट्ठिया योगा भवंति।
सएण लाभेण संतुस्सइ,
परलाभं नो आसादेइ नो तक्केइ नो पीहेइ नो पत्थेइ
नो अभिलसइ।
परलाभ अणस्साएमाणे अतक्केमाणे अपीहेमाणे अपत्थेमाणे
अणभिलसमाणे दुच्चं सुहसेज्जं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥३३॥

उवहि-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
उवहि-पच्चक्खाणेण जीवे अपलिमंथं जणयइ।

निरुवहिए ण जीवे निक्कंखी उवहिमंतरेण य न संकिलिस्सइ ॥३४॥

आहार-पच्चक्खाणेण भंते ! जीवे किं जणयइ ?
आहार-पच्चक्खाणेणं जीवे जीवियासंसप्पओगं वोच्छिदइ ।
जीवियासंसप्पओगं वोच्छिदित्ता जीवे आहारमतरेण न संकलिस्सइ ॥३५॥

कसाए-पच्चक्खाणे णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
कसाए-पच्चक्खाणे ण जीवे वीयरागभावं जणयइ ।
वीयरागभावपडिवन्ने य ण जीवे तम सुह-दुक्खे भवइ ॥३६॥

जोग-पच्चक्खाणेणं भते ! जीवे किं जणयइ ?
जोग-पच्चक्खाणेण जीवे अजोगत्तं जणयइ ।
अजोगी णं जीवे नवं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं निज्जरेइ ॥३७॥

सरीर-पच्चक्खाणेणं भते ! जीवे किं जणयइ ?
सरीर-पच्चक्खाणेणं जीवे सिद्धाइसय-गुण-कित्तणं निव्वत्तेइ ।
सिद्धाइसय-गुण संपन्ने य णं जीवे लोगग्गमुवग्गए परमसुही भवइ ॥३८॥

सहाय-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे कि जणयइ ?
सहाय-पच्चक्खाणेणं जीवे एगीभावं जणयइ ।
एगीभावभूए य णं जीवे एगग्ग भावेमाणे–
अप्पसद्दे अप्पझंझे अप्प-कलहे अप्प-कसाए अप्प-तुमंतुमे–
संजम-बहुले-संवर-बहुले समाहिए यावि भवइ ॥३९॥

भत्त-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
भत्त-पच्चक्खाणेणं जीवे अणेगाइं भवसयाइं निरुंभइ ॥४०॥

सब्भाव-पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
सब्भाव-पच्चक्खाणेणं जीवे अनियट्टिं जणयइ ।
अनियट्टिंपडिवन्ने य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ ।
तंजहा—वेयणिज्जं आउयं नामं गोयं—
तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ
सव्व दुक्खाणमंतं करेइ ॥४१॥

पडिरूवयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
पडिरूवयाए णं जीवे लाघवं जणयइ ।
लघुभूए णं जीवे अप्पमत्ते पागडलिंगे पसत्थलिंगे—
विसुद्धसमत्ते सत्तसमिइसमत्ते सव्वपाण-भूय-जीव-सत्तेसु
विससणिज्जरूवे अप्पडिलेहे जिइंदिए
विउल-तव-समइ-समन्नागए यावि भवइ ॥४२॥

वेयावच्चेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
वेयावच्चेणं जीवे तित्थयरनामगोत्तं कम्मं निबंधइ ॥४३॥

सव्वगुणसंपन्नयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
सव्वगुणसंपन्नयाए णं जीवे अपुणरावत्तिं जणयइ ।
अपुणरावत्तिं पत्तए य णं जीवे
सारीर-माणसाणं दुक्खाणं नो भागी भवइ ॥४४॥

वीयरागयाए ण भंते ! जीवे किं जणयइ ?

वीयरागयाए ण जीवे नेहाणुबंधणाणि तण्हाणुबंधणाणि य वोच्छिंदइ,

मणुन्नामणुन्नेसु सद्द-फरिस-रूव-रस-गंधेसु चेव विरज्जइ ॥४५॥

खंतीए ण भंते ! जीवे किं जणयइ ?

खंतीए ण जीवे परीसहे जिणइ ॥४६॥

मुत्तीए ण भंते ! जीवे किं जणयइ ?

मुत्तीए णं जीवे अकिंचण जणयइ ।

अकिंचणे य जीवे अत्थलोलाण पुरिसाणं अपत्थणिज्जो-भवइ ॥४७॥

अज्जवयाए ण भंते ! जीवे किं जणयइ ?

अज्जवयाए ण जीवे काउज्जुययं भावुज्जुयय भासुज्जुयय-अविसंवायण जणयइ ।

अविसंवायणसंपन्नायाएण जीवे धम्मस्स आराहए भवइ ॥४८॥

मद्दवयाए ण भंते ! जीवे किं जणयइ ?

मद्दवयाए ण जीवे अणुस्सियत्तं जणयइ ।

अणुस्सियत्तेण जीवे मिउमद्दवसंपन्ने अट्ठ मयट्ठाणाइं निट्ठावेइ ॥४९॥

भावसच्चेण भंते ! जीवे किं जणयइ ?

भावसच्चेण जीवे भावे विसोहिं जणयइ ।

भावविसोहिए वट्टमाणे जीवे अरहंत-पन्नत्तस्स-धम्मस्स–

आराहणयाए अब्भुट्ठेइ ।
अरहंत-पन्नत्तस्स-धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठिता-
परलोग धम्मस्स आराहए भवइ ॥५०॥

करणसच्चे णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

करणसच्चे ण जीवे करणसत्ति जणयइ ।
करणसच्चे ण वट्टमाणे जीवे जहावाई तहाकारी यावि
भवइ ॥५१॥

जोगसच्चेण भंते ! जीवे किं जणयइ ?
जोगसच्चेण जीवे जोग विसोहेइ ॥५२॥

मणगुत्तयाए ण भंते ! जीवे किं जणयइ ?

मणगुत्तयाए ण जीवे एगग्ग जणयइ ।
एगग्गचित्ते ण जीवे मणगुत्ते संजमाराहए भवई ॥५३॥

वयगुत्तयाए ण भंते ! जीवे किं जणयइ ?

वयगुत्तयाए ण जीवे निव्वियारत्त जणयइ ।
निव्वियारेण जीवे वइगुत्ते अज्झप्पजोगसाहणजुत्ते यावि
भवई ॥५४॥

कायगुत्तयाए ण भंते ! जीवे किं जणयइ ?

कायगुत्तयाए ण जीवे संवर जणयइ ।
संवरेण कायगुत्ते पुणो पावासवनिरोह करेइ ॥५५॥

मण-समाहारणयाए ण भंते ! जीवे कि जणयइ ?

मण-समाहारणयाए ण जीवे एगग्ग जणयइ।

एगग्ग जणइत्ता नाणपज्जवे जणयइ ।

नाणपज्जवे जणइत्ता सम्मत्त विसोहेइ मिच्छत्त च

निज्जरेइ ॥५६॥

वय-समाहारणयाए ण भते ! जीवे कि जणयइ ?

वय-समाहारणयाए ण जीवे वय-साहारण-दसणपज्जवे विसोहेइ ।

वय-साहारण-दसणपज्जवे विसोहित्ता सुलहबोहियत्त निव्वत्तेइ

दुल्लहबोहियत्त निज्जरेइ ॥५७॥

काय-समाहारणयाए णं भते ! जीवे कि जणयइ ?

काय-समाहारणयाए ण जीवे चरित्तपज्जवे विसोहेइ।

चरित्तपज्जवे विसोहित्ता अहक्खायचरित्त विसोहेइ।

अहक्खायचरित्त विसोहित्ता चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ ।

तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ--

सव्वदुक्खाणमत करेइ ॥५८॥

नाण-संपन्नयाए ण भते ! जीवे कि जणयइ ?

नाण-सपन्नयाए ण जीवे सव्वभावाहिगम जणयइ ।

नाण-सपन्ने जीवे चाउरते ससारकतारे न विणस्सइ ।

गाहा--जहा सुई ससुत्ता, पडिया न विणस्सइ ।
तहा जीवे ससुत्ते, ससारे न विणस्सइ ॥१॥

नाण-विणय-तव-चरित्तजोगे संपाउणइ ।
ससमय-परसमयविसारए य असंघायणिज्जे भवइ ॥५९॥

दंसण-संपन्नयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
दंसण-संपन्नयाए णं जीवे भवमिच्छत्तछेयणं करेइ,
परं न विज्झायइ–
परं अविज्झाएमाणे अणुत्तरेणं नाण-दंसणेणं–
अप्पाणं संजोएमाणे सम्मं भावेमाणे विहरइ ॥६०॥

चरित्त-संपन्नयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
चरित्त-संपन्नयाए णं जीवे सेलेसिभावं जणयइ ।
सेलेसिंपडिवन्ने य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवइ ।
तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ–
सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ॥६१॥

सोइंदिय-निग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
सोइंदिय-निग्गहेणं जीवे मणुन्नामणुन्नेसु सद्देसु–
राग-दोसनिग्गहं जणयइ ।
तप्पच्चइयं च णं कम्मं न बंधइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥६२॥

चक्खिंदिय-निग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
चक्खिंदिय-निग्गहेणं जीवे मणुन्नामणुन्नेसु रूवेसु–
राग-दोसनिग्गहं जणयइ ।
तप्पच्चइयं च णं कम्मं न बंधइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥६३॥

घाणिंदिय-निग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
घाणिंदिय-निग्गहेणं जीवे मणुन्नामणुन्नेसु गंधेसु–
राग-दोस-निग्गहं जणयइ ।
तप्पच्चइयं च ण कम्म न बंधइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥६४॥

जिब्भिंदिय-निग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
जिब्भिंदिय-निग्गहेणं जीवे मणुन्नामणुन्नेसु रसेसु–
राग-दोसनिग्गहं जणयइ ।
तप्पच्चइयं च ण कम्मं न बंधइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥६५॥

फासिंदिय-निग्गहेण भंते ! जीवे किं जणयइ ?
फासिंदिय-निग्गहेण जीवे मणुन्नामणुन्नेसु फासेसु–
राग-दोसनिग्गहं जणयइ ।
तप्पच्चइयं च णं कम्मं न बंधइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥६६॥

कोह-विजएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
कोह-विजएण जीवे खंतिं जणयइ ।
कोह-वेयणिज्जं कम्म न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥६७॥

माण-विजएण भंते ! जीवे किं जणयइ ?
माण-विजएणं जीवे मद्दवं जणयइ ।
माण-वेयणिज्जं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥६८॥

माया-विजएणं भंते जीवे किं जणयइ ?
माया-विजएणं जीवे अज्जवं जणयइ ।
माया-वेयणिज्जं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥६९॥

लोभ-विजएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
लोभ-विजएणं जीवे संतोसं जणयइ ।
लोभ-वेयणिज्जं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥७०॥

पिज्ज-दोस-मिच्छादंसण-विजएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?
पिज्ज-दोस-मिच्छादंसण-विजएणं जीवे–
नाण-दंसण-चरित्ताराहणयाए अब्भुट्ठेइ ।
अट्ठविहस्स कम्मस्स कम्मगंठि-विमोयणयाए–
तप्पढमयाए जहाणुपुव्वीए–
अट्ठावीसइविहं मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ ।
पंचविहं णाणावरणिज्जं कम्मं उग्घाएइ ।
नवविहं दंसणावरणिज्जं कम्मं उग्घाएइ ।
पंचविहं अंतराइयं कम्मं उग्घाएइ ।

एए तिन्निवि कम्मंसे जुगवं खवेइ–
तओ पच्छा अणुत्तरं कसिणं पडिपुण्णं–
निरावरणं वितिमिरं विसुद्धं–
लोगालोगप्पभावगं केवलवरनाण-दंसणं समुप्पाडेइ–
जाव सजोगी भवइ, ताव इरियावहियं कम्मं निबंधइ–
सुहफरिसं दुसमयठिइयं–
तं पढम-समए बद्धं बिइय-समए वेइयं तइय-समए निज्जिण्णं–
तं बद्धं पुट्ठं उदीरियं वेइयं निज्जिण्णं–
सेयाले य अकम्मं यावि भवइ ॥७१॥

अहाउयं पालयित्ता–
अंतोमुहुत्तद्धावसेसाए जोग-निरोहं करेमाणे
सुहुमकिरियं अप्पडिवाइं सुक्कज्झाणं झायमाणे
तप्पढमयाए–
मणजोगं निरुंभइ, वयजोगं निरुंभइ, कायजोगं निरुंभइ,
आण-पाणनिरोहं करेइ–
इसि पंच-हस्सक्खरुच्चारणद्धाए य णं अणगारे–
समुच्छिन्न किरियं अनियट्टि सुक्कज्झाणं झायमाणे–
वेयणिज्जं आउयं नामं गोत्तं च
एए चत्तारि कम्मंसे जुगवं खवेइ ॥७२॥

तओ ओरालिय-तेयकम्माइं
सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहित्ता
उज्जुसेढिपत्ते अफुसमाणगई
उड्ढं एगसमएणं अविग्गहेणं तत्थ गंता ।
सागारोवउत्ते सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ
सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ॥७३॥

एस खलु सम्मत्तपरक्कमस्स अज्झयणस्स अट्ठे–
समणेणं भगवया महावीरेण–
आघविए परूविए दंसिए निदंसिए उवदंसिए ।

॥ त्ति बेमि ॥

अह तवमग्ग नाम तीसइमं अज्झयणं

जहा उ पावगं कम्मं, रागदोससमज्जियं।
खवेइ तवसा भिक्खू, तमेगग्गमणो सुण ॥ १ ॥

पाणिवह[1] मुसावाया,[2] अदत्त[3] मेहुण[4] परिग्गहा[5] विरओ।
राइभोयणविरओ,[6] जीवो भवइ अणासवो ॥ २ ॥

पंचसमिओ तिगुत्तो, अकसाओ जिइंदिओ।
अगारवो य निस्सल्लो, जीवो होइ अणासवो ॥ ३ ॥

एएसिं तु विवच्चासे, रागदोससमज्जियं।
खवेइ उ जहा भिक्खू, तमेगग्गमणे सुण ॥ ४ ॥

'जहा महातलायस्स, संनिरुद्धे जलागमे।
उस्सिचणाए तवणाए, कमेणं सोसणा भवे' ॥ ५ ॥

एवं तु संजयस्सावि, पावकम्मनिरासवे।
भव-कोडी-संचियं कम्मं, तवसा निज्जरिज्जइ ॥ ६ ॥

सो तवो दुविहो वुत्तो, बाहिरब्भंतरो तहा।
बाहिरो छव्विहो वुत्तो, एवमब्भंतरो तवो ॥ ७ ॥

अणसण[1] मूणोयरिया,[2] भिक्खायरिया[3] य रसपरिच्चाओ[4]।
कायकिलेसो[5] संलीणया,[6] य बज्झो तवो होइ ॥ ८ ॥

(१) इत्तरिय[1] मरणकाला[2] य, अणसणा दुविहा भवे।
इत्तरिया सावकंखा, निरवकंखा उ विइज्जिया ॥ ९ ॥

जो सो इत्तरियतवो, सो समासेण छव्विहो।
सेढितवो [1]पयरतवो,[2] घणो[3] य तह होइ वग्गो[4] य ॥१०॥

तत्तो य वग्गवग्गो,[5] पचमो छट्ठओ पइण्णतवो[6]।
मणइच्छियचित्तत्थो, नायव्वो होइ इत्तरिओ ॥११॥

जा सा अणसणा मरणे, दुविहा सा वियाहिया।
सवियार[1] मवियारा,[2] कायचिट्ठं पई भवे ॥१२॥

अहवा सपरिकम्मा,[1] अपरिकम्मा[2] य आहिया।
नीहारि[1] मनीहारी,[2] आहारच्छेओ दोसु वि ॥१३॥

(२) ओमोयरण पचहा, समासेण वियाहियं।
दव्वओ[1] खेत्त[2] कालेण,[3] भावेण[4] पज्जवेहि[5] य ॥१४॥

जो जस्स उ आहारो, तत्तो ओम तु करे।
जहन्नेणेगसित्थाई, एव दव्वेण ऊ भवे ॥१५॥

गामे नगरे तह, रायहाणि निगमे य आगरे पल्ली।
खेडे–कव्वड–दोणमुह, पट्टण-मडव-संबाहे ॥१६॥

आसमपए विहारे, सन्निवेसे समाय-घोसे य।
थलि-सेणा-खंधारे, सत्थे सवट्ट-कोट्टे य ॥१७॥

वाडेसु य रत्थासु य, घरेसु वा एवमित्तिय खेत्तं।
कप्पइ उ एवमाई, एव खेत्तेण ऊ भवे ॥१८॥

पेडा[1] य अद्धपेडा,[2] गोमुत्ति[3] पयंगवीहिया[4] चेव।
संबुक्कावट्टा[5] ययगतु, पच्चागया[6] छट्ठा ॥१९॥

दिवसस्स पोरुसीणं, चउण्हंपि उ जत्तिओ भवे कालो।
एव चरमाणो खलु, कालोमाण मुणेदव्व ॥२०॥

अहवा तइयाए पोरिसीए, ऊणाइ घासमेसंतो।
चउभागूणाए वा, एव कालेण ऊ भवे ॥२१॥

इत्थी वा पुरिसो वा, अलंकिओ वा नलंकिओ वावि।
अन्नयरवयत्थो वा, अन्नयरेण व वत्थेण ॥२२॥

अन्नेण विसेसेण, वण्णेण भावमणुमुयते उ।
एव चरमाणो खलु, भावोमोण मुणेयव्व ॥२३॥

दव्वे खेत्ते काले, भावम्मि य आहिया उ जे भावा।
एएहि ओमचरओ, पज्जवचरओ भवे भिक्खू ॥२४॥

(३) अट्ठविहगोयरग्ग तु, तहा सत्तेव एसणा।
अभिग्गहा य जे अन्ने, भिक्खायरियमाहिया ॥२५॥

(४) खीर-दहि-सप्पिमाई, पणीय पाणभोयण।
परिवज्जण रसाण तु, भणिय रसविवज्जणं ॥२६॥

(५) ठाणा वीरासणाईया, जीवस्स उ सुहावहा।
उग्गा जहा धरिज्जति, कायकिलेस तमाहिय ॥२७॥

(६) एगंतमणावाए, इत्थी-पसु-विवज्जिए।
सयणासणसेवणया, विवित्तसयणासण ॥२८॥

एसो बाहिरगतवो, समासेण वियाहिओ।
अब्भितरं तवं एत्तो, वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥२९॥

पायच्छित्तं[1] विणओ,[2] वेयावच्चं[3] तहेव सज्झाओ[4] ।
झाणं[5] च विउस्सग्गो,[6] एसो अब्भिंतरो तवो ॥३०॥

(१) आलोयणारिहाईयं, पायच्छित्तं तु दसविहं ।
जे भिक्खू वहई सम्मं, पायच्छित्तं तमाहियं ॥३१॥

(२) अब्भुट्ठाणं अंजलिकरणं, तहेवासणदायणं ।
गुरुभत्ति-भाव-सुस्सूसा, विणओ एस वियाहिओ ॥३२॥

(३) आयरियमाईए, वेयावच्चंमि दसविहे ।
आसेवणं जहाथाम, वेयावच्चं तमाहियं ॥३३॥

(४) वायणा[1] पुच्छणा[2] चेव, तहेव परियट्टणा[3] ।
अणुप्पेहा[4] धम्मकहा,[5] सज्झाओ पंचहा भवे ॥३४॥

(५) अट्ट[1] रुद्दाणि[2] वज्जित्ता, झाएज्जा सुसमाहिए ।
धम्म[3] सुक्काइं[4] झाणाइं, झाणं तं तु बुहा वए ॥३५॥

(६) सयणासणठाणे वा, जे उ भिक्खू न वावरे ।
कायस्स विउस्सग्गो, छट्ठो सो परिकित्तिओ ॥३६॥

एयं तवं तु दुविहं, जे सम्मं आयरे मुणी ।
सो खिप्पं सव्वसंसारा, विप्पमुच्चइ पंडिओ ॥३७॥

॥ त्ति बेमि ॥

अह चरणविहि-नामं एगतीसइमं अज्झयणं

चरणविहिं पवक्खामि, जीवस्स उ सुहावहं।
जं चरित्ता बहू जीवा, तिण्णा संसारसागरं॥ १ ॥

एगओ विरइं कुज्जा, एगओ य पवत्तणं।
असंजमे नियत्तिं च, संजमे य पवत्तणं॥ २ ॥

राग-दोसे य दो पावे, पावकम्मपवत्तणे।
जे भिक्खू रुंभई निच्चं, से न अच्छइ मंडले॥ ३ ॥

दंडाणं गारवाणं च, सल्लाणं च तियं तियं।
जे भिक्खू चयइ निच्चं, से न अच्छइ मंडले॥ ४ ॥

दिव्वे य जे उवसग्गे, तहा तेरिच्छ-माणुसे।
जे भिक्खू सहई निच्चं, से न अच्छइ मंडले॥ ५ ॥

विगहा-कसाय-सन्नाणं, झाणाणं च दुयं तहा।
जे भिक्खू वज्जई निच्चं, से न अच्छइ मंडले॥ ६ ॥

वएसु इंदियत्थेसु, समिईसु किरियासु य।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले॥ ७ ॥

लेसासु छसु काएसु, छक्के आहारकारणे।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले॥ ८ ॥

पिंडोग्गहपडिमासु, भयट्ठाणेसु सत्तसु।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले॥ ९॥

मदेसु बभगुत्तीसु, भिक्खुधम्मम्मि दसविहे।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥१०॥

उवासगाण पडिमासु, भिक्खूण पडिमासु य।
जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मडले ॥११॥

किरियासु भूयगामेसु, परमाहम्मिएसु य।
जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मडले ॥१२॥

गाहासोलसएहि, तहा असजमम्मि य।
जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मडले ॥१३॥

बभम्मि नायज्झयणेसु, ठाणेसु य ऽसमाहिए।
जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मंडले ॥१४॥

एगवीसाए सबले, बावीसाए परीसहे।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मडले ॥१५॥

तेवीसाइ सूयगडे, रूवाहिएसु सुरेसु अ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छई मंडले ॥१६॥

पणवीसभावणासु, उद्देसेसु दसाइणं।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥१७॥

अणगारगुर्णोहि च, पगप्पमि तहेव य।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥१८॥

पावसुयपसंगेसु, मोहठाणेसु चेव य।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥१९॥

सिद्धाइगुणजोगेसु, तेत्तीसासायणासु य।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥२०॥

इइ एएसु ठाणेसु, जे भिक्खू जयई सया।
खिप्पं सो सव्वसंसारा, विप्पमुच्चइ पंडिओ ॥२१॥

॥ त्ति बेमि ॥

अह पमायट्ठाण-नामं बत्तीसइमं अज्झयणं

अच्चंतकालस्स समूलगस्स,
सव्वस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो।
तं भासओ मे पडिपुण्णचित्ता,
सुणेह एगंतहियं हियत्थं ॥ १ ॥

नाणस्स सव्वस्स पगासणाए,
अन्नाणमोहस्स विवज्जणाए।
रागस्स दोसस्स य संखएणं,
एगंतसोक्खं समुवेइ मोक्खं ॥ २ ॥

तस्सेस मग्गो गुरुविद्धसेवा,
विवज्जणा बालजणस्स दूरा।
सज्झाय एगंतनिसेवणा य,
सुत्तत्थसंचिंतणया धिई य ॥ ३ ॥

आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं,
सहायमिच्छे निउणत्थबुद्धिं।
निकेयमिच्छेज्ज विवेगजोग्गं,
समाहिकामे समणे तवस्सी ॥ ४ ॥

न वा लभेज्जा निउणं सहायं,
गुणाहियं वा गुणओ समं वा।
एगो वि पावाइं विवज्जयंतो,
विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥ ५ ॥

जहा य अंडप्पभवा बलागा,
अंडं बलागप्पभवं जहा य।
एमेव मोहाययणं खु तण्हा,
मोहं च तण्हाययणं वयंति ॥ ६ ॥

रागो य दोसो वि य कम्मबीयं,
कम्मं च मोहप्पभवं वयंति।
कम्मं च जाईमरणस्स मूलं,
दुक्खं च जाईमरणं वयंति ॥ ७ ॥

दुक्खं हयं जस्स न होइ मोहो,
मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा।
तण्हा हया जस्स न होइ लोहो,
लोहो हओ जस्स न किंचणाइं ॥ ८ ॥

रागं च दोसं च तहेव मोहं,
उद्धत्तुकामेण समूलजालं।
जे जे उवाया पडिवज्जियव्वा,
ते कित्तइस्सामि अहाणुपुव्विं ॥ ९ ॥

रसा पगामं न निसेवियव्वा,
पायं रसा दित्तिकरा नराणं।
दित्तं च कामा समभिद्दवंति,
"दुमं जहा साउफलं व पक्खी" ॥१०॥

"जहा दवग्गी पउरिंधणे वणे,
समारुओ नोवसमं उवेइ।"
एविंदियग्गी वि पगामभोइणो,
न बंभयारिस्स हियाय कस्सई ॥११॥

विवित्तसेज्जासणजंतियाणं,
ओमासणाणं दमिइंदियाणं।
न रागसत्तू धरिसेइ चित्तं,
"पराइओ वाहिरिवोसहेहिं" ॥१२॥

"जहा बिरालावसहस्स मूले,
न मूसगाणं वसही पसत्था।"
एमेव इत्थीनिलयस्स मज्झे,
न बंभयारिस्स खमो निवासो ॥१३॥

न रूव-लावण्ण-विलास-हास,
न जंपियं इंगिय-पेहियं वा।
इत्थीण चित्तंसि निवेसइत्ता,
दट्ठुं ववस्से समणे तवस्सी ॥१४॥

अदंसणं चेव अपत्थणं च,
अचिंतणं चेव अकित्तणं च।
इत्थीजणस्सारियज्झाणजुग्गं,
हियं सया बंभवए रयाणं ॥१५॥

कामं तु देवीहि विभूसियाहिं,
न चाइया खोभइउं तिगुत्ता।
तहा वि एगंतहियं ति नच्चा,
विवित्तवासो मुणिणं पसत्थो ॥१६॥

मोक्खाभिकंखिस्स उ माणवस्स,
संसारभीरुस्स ठियस्स धम्मे।
नेयारिसं दुत्तरमत्थि लोए,
जहित्थिओ बालमणोहराओ ॥१७॥

एए य संगे समइक्कमित्ता,
सुदुत्तरा चेव भवंति सेसा।
जहा महासागरमुत्तरित्ता,
नई भवे अवि गंगासमाणा ॥१८॥

कामाणुगिद्धिप्पभवं खु दुक्खं,
सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स।
जं काइयं माणसियं च किंचि,
तस्संतगं गच्छइ वीयरागो ॥१९॥

'जहा य किंपागफला मणोरमा,
रसेण वण्णेण य भुज्जमाणा।
ते खुड्डए जीविए पच्चमाणा,
एओवमा कामगुणा विवागे ॥२०॥

जे इंदियाणं विसया मणुन्ना,
न तेसु भावं निसिरे कयाइ।
न यामणुन्नेसु मणं पि कुज्जा,
समाहिकामे समणे तवस्सी ॥२१॥

(१) चक्खुस्स रूवं गहणं वयंति,
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु,
समो य जो तेसु स वीयरागो ॥२२॥

रूवस्स चक्खुं गहणं वयंति,
चक्खुस्स रूवं गहणं वयंति।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु,
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥२३॥

रूवेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं,
अकालियं पावइ से विणासं।
रागाउरे से 'जह वा पयंगे',
आलोयलोले समुवेइ मच्चुं ॥२४॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं,
तंसि क्खणे से उवेइ दुक्खं।
दुद्दंतदोसेण सएण जंतू,
न किंचि रूवं अवरज्झई से ॥२५॥

एगंतरत्ते रुइरंसि रूवे,
अतालिसे से कुणई पओसं।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले,
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥२६॥

रूवाणुगासाणुगए य जीवे,
चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले,
पीलेइ अत्तट्ठगुरु किलिट्ठे ॥२७॥

रूवाणुवाएण परिग्गहेण,
उप्पायणे रक्खण-सन्निओगे।
वए विओगे य कहं सुहं से,
संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥२८॥

रूवे अतित्ते य परिग्गहम्मि,
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स,
लोभाविले आययई अदत्तं ॥२९॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
रूवे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा,
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥३०॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
पओगकाले य दुही दुरंते।
एवं अदत्ताणि समाययंतो,
रूवे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥३१॥

रूवाणुरत्तस्स नरस्स एवं,
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि?
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं,
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥३२॥

एमेव रूवम्मि गओ पओसं,
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं,
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥३३॥

रूवे विरत्तो मणुओ विसोगो,
एएण दुक्खोहपरंपरेण।
न लिप्पए भवमज्झे वि संतो,
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥३४॥

(२) सोयस्स सद्दं गहणं वयंति,
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु,
समो य जो तेसु स वीयरागो ॥३५॥

सद्दस्स सोयं गहणं वयंति,
सोयस्स सद्दं गहणं वयंति।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु,
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥३६॥

सद्देसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं,
अकालियं पावइ से विणासं।
"रागाउरे हरिणमिगे व मुद्धे,
सद्दे अतित्ते समुवेइ मच्चुं" ॥३७॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं,
तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं।
दुद्दंतदोसेण सएण जंतू,
न किंचि सद्दं अवरज्झई से ॥३८॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
पओगकाले य दुही दुरते।
एव अदत्ताणि समाययतो,
सद्दे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥४४॥

सद्दाणुरत्तस्स नरस्स एव,
कत्तो सुह होज्ज कयाइ किंचि ?
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्ख,
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥४५॥

एमेव सद्दमि गओ पओस,
उवेइ दुक्खोहपरपराओ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं,
ज से पुणो होइ दुह विवागे ॥४६॥

सद्दे विरत्तो मणुओ विसोगो,
एएण दुक्खोहपरपरेण।
न लिप्पए भवमज्झे वि सतो,
जलेण वा पोक्खरिणीपलास ॥४७॥

(३) घाणस्स गंध गहणं वयति,
त रागहेउ तु मणुन्नमाहु।
त दोसहेउ अमणुन्नमाहु,
समो य जो तेसु स वीयरागो ॥४८॥

गंधस्स घाणं गहणं वयंति,
घाणस्स गंधं गहणं वयंति।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु,
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥४९॥

गंधेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं,
अकालियं पावइ से विणासं।
"रागाउरे ओसहगंधगिद्धे,
सप्पे बिलाओ विव निक्खमंते" ॥५०॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं,
तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं।
दुद्दंतदोसेण सएण जंतू,
न किंचि गंधं अवरज्झई से ॥५१॥

एगंतरत्ते रुइरंसि गंधे,
अतालिसे से कुणई पओसं।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले,
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥५२॥

गंधाणुगासाणुगए य जीवे,
चराचरे हिंसइऽणेगरूवे।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले,
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥५३॥

गंधाणुवाएण परिग्गहेण,
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से ?
संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥५४॥

गंधे अतित्ते य परिग्गहम्मि,
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स,
लोभाविले आययई अदत्तं ॥५५॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
गंधे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा,
तत्था वि दुक्खा न विमुच्चई से ॥५६॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
पओगकाले य दुही दुरंते ।
एवं अदत्ताणि समाययंतो,
गंधे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥५७॥

गंधाणुरत्तस्स नरस्स एवं,
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ?
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं,
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥५८॥

एमेव गंधम्मि गओ पओसं,
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं,
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥५९॥

गंधे विरत्तो मणुओ विसोगो,
एएण दुक्खोहपरंपरेण।
न लिप्पई भवमज्झे वि संतो,
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥६०॥

(४) जिब्भाए रसं गहणं वयंति,
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु,
समो य जो तेसु स वीयरागो ॥६१॥

रसस्स जिब्भं गहणं वयंति,
जिब्भाए रसं गहणं वयंति।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु,
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥६२॥

रसेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं,
अकालियं पावइ से विणासं।
"रागाउरे वडिसविभिन्नकाए,
मच्छे जहा आमिसभोगगिद्धे" ॥६३॥

जे यावि दोस समुवेइ तिव्व,
तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्ख।
दुद्दन्तदोसेण सएण जंतू,
न किंचि रसं अवरज्झई से ॥६४॥

एगंतरत्ते रुइरंसि रसे,
अतालिसे से कुणई पओसं।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले,
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥६५॥

रसाणुगासाणुगए य जीवे,
चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले,
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥६६॥

रसाणुवाएण परिग्गहेण,
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे।
वए विओगे य कहं सुहं से?
संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥६७॥

रसे अतित्ते य परिग्गहम्मि,
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स,
लोभाविले आययई अदत्तं ॥६८॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
रसे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा,
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥६९॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
पओगकाले य दुही दुरन्ते।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो,
रसे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥७०॥

रसाणुरत्तस्स नरस्स एवं,
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि?
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं,
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥७१॥

एमेव रसम्मि गओ पओसं,
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं,
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥७२॥

रसे विरत्तो मणुओ विसोगो,
एएण दुक्खोहपरंपरेण।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो,
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥७३॥

(५) कायस्स फास गहण वयंति,
त रागहेउ तु मणुन्नमाहुं।
त दोसहेउ अमणुन्नमाहु,
समो य जो तेसु स वीयरागो ॥७४॥

फासस्स कायं गहण वयंति,
कायस्स फासं गहण वयंति।
रागस्स हेउ समणुन्नमाहु,
दोसस्स हेउ अमणुन्नमाहु ॥७५॥

फासेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं,
अकालियं पावइ से विणास।
'रा गा उ रे सी य ज ला व स न्ने,
गाहग्गहीए महीसे विवन्ने' ॥७६॥

जे यावि दोस समुवेइ तिव्व,
तसि क्खणे से उ उवेइ दुक्ख ।
दुद्दतदोसेण सएण जंतू,
न किंचि फास अवरज्झई से ॥७७॥

एगंतरत्ते रुइरसि फासे,
अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स सपीलमुवेइ बाले,
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥७८॥

फासाणुगासाणुगए य जीवे,
चराचरे हिंसइ ऽ णेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले,
पीलेइ अत्तट्ठगुरु किलिट्ठे ॥७९॥

फासाणुवाएण परिग्गहेण,
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कह सुह से ?
समोगकाले य अतित्तलाभे ॥८०॥

फासे अतित्ते य परिग्गहंमि,
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठि ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स,
लोभाविले आययई अदत्तं ॥८१॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
फासे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुस वड्ढइ लोभदोसा,
तत्था वि दुक्खा न विमुच्चई से ॥८२॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
पओगकाले य दुही दुरते ।
एव अदत्ताणि समाययतो,
फासे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥८३॥

फासाणुरत्तस्स नरस्स एवं,
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ?
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं,
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥८४॥

एमेव फासम्मि गओ पओसं,
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं,
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥८५॥

फासे विरत्तो मणुओ विसोगो,
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि संतो,
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥८६॥

(६) मणस्स भावं गहणं वयंति,
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु,
समो य जो तेसु स वीयरागो ॥८७॥

भावस्स मणं गहणं वयंति,
मणस्स भावं गहणं वयंति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु,
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥८८॥

भावेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं,
अकालियं पावइ से विणासं ।
"रागाउरे कामगुणेसु गिद्धे,
करेणुमग्गावहिए गजे वा" ॥८९॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं,
तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू,
न किंचि भावं अवरज्झई से ॥९०॥

एगन्तरत्ते रुइरंसि भावे,
अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले,
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥९१॥

भावाणुगासाणुगए य जीवे,
चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले,
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥९२॥

भावाणुवाएण परिग्गहेण,
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहं सुहं से ?
संभोगकाले य अतित्तलाभे ॥९३॥

भावे अतित्ते य परिग्गहम्मि,
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स,
लोभाविले आययई अदत्तं ॥९४॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो,
भावे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा,
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥९५॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य,
पओगकाले य दुही दुरंते ।
एवं अदत्ताणि समाययंतो,
भावे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥९६॥

भावाणुरत्तस्स नरस्स एवं,
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ?
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं,
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥९७॥

एमेव भावम्मि गओ पओसं,
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं,
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥९८॥

भावे विरत्तो मणुओ विसोगो,
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि संतो,
जलेण वा पोक्खरिणीपलास ॥९९॥

एविंदियत्था य मणस्स अत्था,
दुक्खस्स हेउं मणुयस्स रागिणो ।
ते चेव थोवं पि कयाइ दुक्खं,
न वीयरागस्स करेंति किंचि ॥१००॥

न कामभोगा समयं उवेंति,
न यावि भोगा विगइं उवेंति ।
जे तप्पओसी य परिग्गही य,
सो तेसु मोहा विगइं उवेइ ॥१०१॥

कोहं च माणं च तहेव मायं,
लोहं दुगुंछं अरइं रइं च ।
हासं भयं सोगपुमित्थिवेयं,
नपुंसवेयं विविहे य भावे ॥१०२॥

आवज्जई एवमणेगरूवे,
एवंविहे कामगुणेसु सत्तो ।
अन्ने य एयप्पभवे विसेसे,
कारुण्णदीणे हिरिमे वइस्से ॥१०३॥

कप्पं न इच्छिज्ज सहायलिच्छू,
पच्छाणुतावे न तवप्पभावं ।
एवं वियारे अमियप्पयारे,
आवज्जई इंदियचोरवस्से ॥१०४॥

तओ से जायंति पओयणाइं,
निमज्जिउं मोहमहण्णवंमि ।
सुहेसिणो दुक्खविणोयणट्ठा,
तप्पच्चयं उज्जमए य रागी ॥१०५॥

विरज्जमाणस्स य इंदियत्था,
सद्दाइया तावइयप्पगारा ।
न तस्स सव्वे वि मणुन्नयं वा,
निव्वत्तयंती अमणुन्नयं वा ॥१०६॥

एवं ससंकप्प-विकप्पणासु,
संजायई समयमुवट्ठियस्स ।
अत्थे य संकप्पयओ तओ से,
पहीयए कामगुणेसु तण्हा ॥१०७॥

स वीयरागो कयसव्वकिच्चो,
खवेइ नाणावरणं खणेणं ।
तहेव जं दंसणमावरेइ,
जं चऽन्तरायं पकरेइ कम्मं ॥१०८॥

सव्वं तओ जाणइ पासए य,
अमोहणे होइ निरंतराए ।
अणासवे झाण-समाहिजुत्ते,
आउक्खए मोक्खमुवेइ सुद्धे ॥१०९॥

सो तस्स सव्वस्स दुहस्स मुक्को,
जं बाहई सययं जंतुमेयं ।
दीहामयं विप्पमुक्को पसत्थो,
तो होइ अच्चंतसुही कयत्थो ॥११०॥

अणाइकालप्पभवस्स एसो,
सव्वस्स दुक्खस्स पमोक्खमग्गो ।
वियाहिए जो जं समुविच्चसत्ता,
कमेण अच्चतसुही भवति ॥१११॥
॥ त्ति बेमि ॥

अह कम्मपयडी-नामं तेत्तीसइमं अज्झयण

अट्ठ-कम्माइ वोच्छामि, आणुपुव्वि जहक्कम ।
जेहिं बद्धो अय जीवो, ससारे परियट्टई ॥१॥

मूलप्रकृतयः—

नाणस्सावरणिज्ज[1], दंसणावरण[2] तहा ।
वेयणिज्जं[3] तहा मोहं[4], आउकम्म[5] तहेव य ॥२॥

नामकम्मं[6] च गोय[7] च, अतरायं[8] तहेव य ।
एवमेयाइ कम्माइ अट्ठेव उ समासओ ॥३॥

उत्तरप्रकृतयः—

(१) नाणावरणं पंचविहं, सुयं[1] आभिणिबोहियं[2] ।
ओहिनाणं[3] च तइयं, मणनाण[4] च केवल[5] ॥४॥

(२) निद्दा[1] तहेव पयला[2] निद्दानिद्दा[3] पयलपयला[4] य ।
तत्तो य थीणगिद्धी[5] उ, पंचमा होइ नायव्वा ॥५॥

चक्खु[1] मचक्खू[2] ओहिस्स[3], दंसणे केवले[4] य आवरणे ।
एवं तु नवविगप्प, नायव्व दंसणावरणं ॥६॥

(३) वेयणीयंपि य दुविहं, साय[1]मसाय[2] च आहियं ।
सायस्स उ बहू भेया, एमेव असायस्स वि ॥७॥

(४) मोहणिज्जं पि दुविहं, दंसणे[1] चरणे[2] तहा ।
दंसणे तिविहं वुत्तं, चरणे दुविहं भवे ॥८॥

सम्मत्तं[1] चेव मिच्छत्तं[2], सम्मामिच्छत्तमेव[3] य ।
एयाओ तिन्नि पयडीओ, मोहणिज्जस्स दंसणे ॥९॥

चरित्तमोहणं कम्मं, दुविहं तु वियाहियं ।
कसायमोहणिज्जं[1] तु, नोकसायं[2] तहेव य ॥१०॥

सोलसविहभेएणं, कम्मं तु कसायजं ।
सत्तविहं नवविहं वा, कम्मं च नोकसायजं ॥११॥

(५) नेरइय[1]तिरिक्खाउ[2] मणुस्साउ[3] तहेव य ।
देवाउयं[4] चउत्थं तु, आउकम्मं चउव्विहं ॥१२॥

(६) नामकम्मं तु दुविहं, सुह[1]मसुहं[2] च आहियं ।
सुहस्स उ बहू भेया, एमेव असुहस्स वि ॥१३॥

(७) गोयं कम्मं दुविहं, उच्चं[1] नीयं[2] च आहियं ।
उच्चं अट्ठविहं होइ, एवं नीयं पि आहियं ॥१४॥

(८) दाणे[1] लाभे[2] य भोगे[3] य, उवभोगे[4] वीरिए[5] तहा ।
पंचविहमंतरायं, समासेण वियाहियं ॥१५॥

एयाओ मूलपयडीओ, उत्तराओ य आहिया ।
पएसग्गं खेत्तकाले य, भावं च उत्तरं सुण ॥१६॥

सव्वेसिं चेव कम्माणं, पएसग्गमणंतगं ।
गंठियसत्ताईयं, अंतो सिद्धाण आहियं ॥१७॥

सव्वजीवाण कम्म तु, संगहे छद्दिसागयं ।
सव्वेसु वि पएसेसु, सव्व सव्वेण बद्धगं ॥१८॥

कर्मणा जघन्योत्कृष्टा च स्थितिः—

उदहीसरिसनामाणं, तीसई कोडिकोडिओ ।
उक्कोसिया ठिई होइ, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१९॥
आवरणिज्जाण दुण्ह पि, वेयणिज्जे तहेव य ।
अंतराए य कंमंमि, ठिई एसा वियाहिया ॥२०॥
उदहीसरिसनामाण सत्तरिं कोडिकोडिओ ।
मोहणिज्जस्स उक्कोसा, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥२१॥
तेत्तीस सागरोवमा, उक्कोसेण वियाहिया ।
ठिई उ आउकम्मस्स, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥२२॥
उदहीसरिसनामाण, वीसई कोडिकोडिओ ।
नामगोत्ताणं उक्कोसा, अट्ठमुहुत्ता जहन्निया ॥२३॥

कर्मणामनुभागप्रदेशौः—

सिद्धाणऽणंतभागो य, अणुभागा हवंति उ ।
सव्वेसु वि पएसग्ग, सव्वजीवेसु इच्छियं ॥२४॥
तम्हा एएसि कम्माणं, अणुभागा वियाणिया ।
एएसि संवरे चेव, खवणे य जए बुहे ॥२५॥

॥ त्ति बेमि ॥

अह लेसज्झयण-नामं चोत्तीसइमं अज्झयणं

लेसज्झयणं पवक्खामि, आणुपुव्विं जहक्कमं ।
छण्हं पि कम्मलेसाणं, अणुभावे सुणेह मे ॥१॥

नामाइं वण्ण-रस-गंध, फासपरिणामलक्खणं ।
ठाणं ठिइं गइं चाउं, लेसाणं तु सुणेह मे ॥२॥

लेश्यानां नामानिः—

किण्हा[1] नीला[2] य काऊ[3] य, तेऊ[4] पम्हा[5] तहेव य ।
सुक्कलेसा[6] य छट्ठा य, नामाइं तु जहक्कमं ॥३॥

लेश्यानां वर्णाः—

(१) जीमूयनिद्धसंकासा, गवलरिट्ठगसन्निभा ।
खंजंजणनयणनिभा, किण्हलेसा उ वण्णओ ॥४॥

(२) नीलासोगसंकासा, चासपिच्छसमप्पभा ।
वेरुलियनिद्धसंकासा, नीललेसा उ वण्णओ ॥५॥

(३) अयसीपुप्फसंकासा, कोइलच्छदसन्निभा ।
पारेवयगीवनिभा, काऊलेसा उ वण्णओ ॥६॥

(४) हिंगुलुयधाउसंकासा, तरुणाइच्चसन्निभा ।
सुयतुंडपईवनिभा, तेउलेसा उ वण्णओ ॥७॥

(५) हरियालभेयसंकासा, हलिद्दाभेयसमप्पभा ।
सणासणकुसुमनिभा, पम्हलेसा उ वण्णओ ॥८॥
(६) संखंककुंदसंकासा, खीरपूरसमप्पभा ।
रयय-हारसंकासा सुक्कलेसा उ वण्णओ ॥९॥

लेश्यांना रसा.–

(१) जह कडुयतुंबगरसो,
निंबरसो कडुयरोहिणिरसो वा ।
एत्तो वि अणंतगुणो,
रसो य किण्हाए नायव्वो ॥१०॥
(२) जह तिकडुयस्स य रसो,
तिक्खो जह हत्थिपिप्पलीए वा ।
एत्तो वि अणंतगुणो,
रसो उ नीलाए नायव्वो ॥११॥
(३) जह तरुणअंबगरसो,
तुवरकविट्ठस्स वा वि जारिसओ ।
एत्तो वि अणंतगुणो,
रसो उ काऊण नायव्वो ॥१२॥
(४) जह परिणयंबगरसो,
पक्ककविट्ठस्स वावि जारिसओ ।
एत्तो वि अणंतगुणो,
रसो उ तेऊण नायव्वो ॥१३॥

(५) वरवारुणीए व रसो,
विविहाण व आसवाण जारिसओ ।
महुमेरयस्स व रसो,
एत्तो पम्हाए परएणं ॥१४॥

(६) खज्जूर-मुद्दियरसो,
खीररसो खंड-सक्कररसो वा ।
एत्तो वि अणतगुणो,
रसो उ सुक्काए नायव्वो ॥१५॥

लेश्याना गन्धाः—

जह गोमडस्स गंधो,
सुणगमडस्स व 'जहा अहिमडस्स' ।
एत्तो वि अणंतगुणो,
लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥१६॥

जह सुरहिकुसुमगंधो, गंधवासाण पिस्समाणाणं ।
एत्तो वि अणंतगुणो, पसत्थलेसाणं तिण्हं पि ॥१७॥

लेश्याना स्पर्शाः—

जह करगयस्स फासो, गोजिब्भाए य सागपत्ताणं ।
एत्तो वि अणंतगुणो, लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥१८॥

जह बूरस्स व फासो,
नवणीयस्स व सिरीसकुसुमाणं ।

एत्तो वि अणंतगुणो,
पसत्थलेसाण तिण्हं पि ॥१९॥

लेश्यानां परिणामा –

तिविहो व नवविहो वा, सत्तावीसइविहेक्कसीओ वा ।
दुसओ तेयालो वा, लेसाणं होइ परिणामो ॥२०॥

लेश्याना लक्षणानि–

(१) पंचासवप्पवत्तो, तीहिं अगुत्तो छसुं अविरओ य ।
तिव्वारंभपरिणओ, खुद्दो साहसिओ नरो ॥२१॥
निद्धंधसपरिणामो, निस्संसो अजिइंदिओ ।
एयजोगसमाउत्तो, किण्हलेसं तु परिणमे ॥२२॥

(२) इ स्सा अ म रि स अ त वो,
अविज्जमाया अहीरिया य ।
गिद्धी पओसे य सढे पमत्ते,
रसलोलुए साय गवेसए य ॥२३॥
आरंभाओ अविरओ, खुद्दो साहस्सिओ नरो ।
एयजोगसमाउत्तो, नीललेसं तु परिणमे ॥२४॥

(३) वंके वंकसमायरे, नियडिल्ले अणुज्जुए ।
पलिउंचगओवहिए, मिच्छदिट्ठी अणारिए ॥२५॥
उप्फालगदुट्ठवाई य, तेणे आवि य मच्छरी ।
एयजोगसमाउत्तो, काऊलेसं तु परिणमे ॥२६॥

नीयावित्ती अचवले, अमाई अकुऊहले ।
विणीयविणए दंते, जोगवं उवहाणवं ॥२७॥
पियधम्मे दढधम्मे ऽवज्जभीरू हिएसए ।
एयजोगसमाउत्तो, तेउलेसं तु परिणमे ॥२८॥
(५) पयणुकोहमाणे य, मायालोभे य पयणुए ।
पसंतचित्ते दंतप्पा, जोगवं उवहाणवं ॥२९॥
तहा पयणुवाई य, उवसंते जिइंदिए ।
एयजोगसमाउत्तो, पम्हलेसं तु परिणमे ॥३०॥
(६) अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता, धम्मसुक्काणि झायए ।
पसंतचित्ते दंतप्पा, समिए गुत्ते य गुत्तिहिं ॥३१॥
सरागे वीयरागे वा, उवसंते जिइंदिए ।
एयजोगसमाउत्तो, सुक्कलेसं तु परिणमे ॥३२॥

लेश्यानां स्थानानि.—

असंखिज्जाणोसप्पिणीण,उस्सप्पिणीण जे समया ।
संखाईया लोगा, लेसाण हवंति ठाणाइं ॥३३॥

लेश्यानां स्थिति.—

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तेत्तीसा सागरा मुहुत्तहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा किण्हलेसाए ॥३४॥
मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दस उदही पलियमसंखभागमब्भहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा नीललेसाए ॥३५॥

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तिण्णुदही पलियमसंखभागमब्भहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा काउलेसाए ॥३६॥

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दोण्णुदही पलियमसंखभागमब्भहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा तेउलेसाए ॥३७॥

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दस होंति य सागरा मुहुत्तहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा पम्हलेसाए ॥३८॥

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तेत्तीस सागरा मुहुत्तहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा सुक्कलेसाए ॥३९॥

एसा खलु लेसाणं, ओहेण ठिई उ वण्णिया होइ ।
चउसु वि गईसु एत्तो, लेसाण ठिइं उ वोच्छामि ॥४०॥

दस वाससहस्साइ, काउए ठिई जहन्निया होइ ।
तिण्णुदही पलिओवम, असंखभागं च उक्कोसा ॥४१॥

तिण्णुदही पलिओवम, मसंखभागो जहन्नेण नीलठिई ।
दस उदही पलिओवम, मसंखभागं च उक्कोसा ॥४२॥

दसउदही पलिओवम, मसंखभागं जहन्निया होइ ।
तेत्तीससागराइं उक्कोसा, होइ किण्हाए लेसाए ॥४३॥

एसा नेरइयाणं, लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ ।
तेण परं वोच्छामि, तिरियमणुस्साण देवाणं ॥४४॥

अंतोमुहुत्तमद्धं, लेसाण ठिई जहिं जहिं जाउ ।
तिरियाण नराण वा, वज्जिता केवलं लेसं ।।४५।।

मुहुत्तमद्धं तु जहन्ना, उक्कोसा होइ पुव्वकोडीओ ।
नवहि वरिसेहि ऊणा, नायव्वा सुक्कलेसाए ।।४६।।

एसा तिरियनराणं, लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ ।
तेण परं वोच्छामि, लेसाण ठिई उ देवाणं ।।४७।।

दस वाससहस्साइं, किण्हाए ठिई जहन्निया होइ ।
पलियमसंखिज्जइमो, उक्कोसा होइ किण्हाए ।।४८।।

जा किण्हाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेण नीलाए, पलियमसंखं च उक्कोसा ।।४९।।

जा नीलाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेण काउए, पलियमसंखं च उक्कोसा ।।५०।।

तेण परं वोच्छामि, तेऊलेसा जहा सुरगणाणं ।
भवणवइ-वाणमंतर-जोइस-वेमाणियाणं च ।।५१।।

पलिओवमं जहन्ना, उक्कोसा सागरा उ दुन्नऽहिया ।
पलियमसंखेज्जेणं, होइ भागेण तेऊए ।।५२।।

दसवाससहस्साइं, तेऊए ठिई जहन्निया होइ ।
दुन्नुदही पलिओवम, असंखभागं च उक्कोसा ।।५३।।

जा तेऊए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेण पम्हाए, दस उ मुहुत्ताऽहियाइ उक्कोसा ॥५४॥

जा पम्हाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेणं सुक्काए, तेत्तीसमुहुत्तमब्भहिया ॥५५॥

तिसृभिरधर्मलेश्याभिर्दुर्गति—

किण्हा नीला काऊ, तिन्नि वि एयाओ अहम्मलेसाओ ।
एयाहि तिहि वि जीवो, दुग्गइ उववज्जइ ॥५६॥

तिसृभिःधर्मलेश्याभिःसुगति—

तेऊ पम्हा सुक्का, तिन्नि वि एयाओ धम्मलेस्साओ ।
एयाहि तिहि वि जीवो, दुग्गइ उववज्जइ ॥५७॥
लेसाहि सव्वाहि, पढमे समयमि परिणयाहि तु ।
न हु कस्सइ उववाओ, परे भवे अत्थि जीवस्स ॥५८॥
लेसाहि सव्वाहि, चरिमे समयमि परिणयाहि तु ।
न हु कस्सइ उववाओ, परे भवे होइ जीवस्स ॥५९॥
अतमुहुत्तंमि गए, अंतमुहुत्तमि सेसए चेव ।
लेसाहि परिणयाहि, जीवा गच्छति परलोयं ॥६०॥
तम्हा एयासि लेसाण, अणुभावं वियाणिया ।
अप्पसत्थाओ वज्जित्ता, पसत्थाओऽहिट्ठिए मुणी ॥६१॥
॥ त्ति बेमि ॥

अह अणगारिज्ज-नामं पणतीसइमं अज्झयण

सुणेह मे एगग्गमणा, मग्ग वुद्धेहि देसियं ।
जमायरतो भिक्खू, दुक्खाणतकरे भवे ॥१॥

गिहवास परिच्चज्ज, पवज्जामस्सिए मुणी ।
इमे सगे वियाणिज्जा, जेहि सज्जति माणवा ॥२॥

तहेव हिस[1] अलिय[2], चोज्ज[3] अवभसेवण[4] ।
इच्छाकाम च लोभ[5] च, सजओ परिवज्जए ॥३॥

मणोहर चित्तघर, मल्लधूवेण वासिय ।
सकवाड पडुरुल्लोय मणसावि न पत्थए ॥४॥

इदियाणि उ भिक्खुस्स, तारिसमि उवस्सए ।
दुक्कराइ निवारेउ, कामरागविवड्ढणे ॥५॥

सुसाणे सुन्नगारे वा, रुक्खमूले व इक्कओ ।
पइरिक्के परकडे वा, वास तत्थाभिरोयए ॥६॥

फासुयमि अणाबाहे, इत्थीहिं अणभिद्दुए ।
तत्थ सकप्पए वास, भिक्खू परमसंजए ॥७॥

न सय गिहाइ कुज्जा, णेव अन्नेहिं कारए ।
गिहकम्मसमारम्भे, भूयाण दिस्सए वहो ॥८॥

तसाणं थावराण च, सुहुमाण बादराण य ।
तम्हा गिहसमारंभे, सजओ परिवज्जए ॥९॥

तहेव भत्तपाणेसु, पयणे पयावणेसु य ।
पाण-भूय-दयट्ठाए, न पए न पयावए ॥१०॥

जल-धन्न-निस्सिया जीवा, पुढवी-कट्ठ-निस्सिया ।
हम्मंति भत्तपाणेसु, तम्हा भिक्खू न पायए ॥११॥

विसप्पे सव्वओ धारे, बहुपाणि-विणासणे ।
नत्थि जोइसमे सत्थे तम्हा जोइं न दीवए ॥१२॥

हिरण्ण जायरूव च, मणसा वि न पत्थए ।
समलेट्ठुकंचणे भिक्खू, विरए कयविक्कए ॥१३॥

किणंतो कइओ होइ, विक्किणंतो य वाणिओ ।
कय-विक्कयंमि वट्टंतो, भिक्खू न भवइ तारिसो ॥१४॥

भिक्खियव्व न केयव्व, भिक्खुणा भिक्खवित्तिणा ।
कय-विक्कओ महादोसो, भिक्खावित्ती सुहावहा ॥१५॥

समुयाण उंछमेसिज्जा, जहासुत्तमणिंदियं ।
लाभालाभंमि संतुट्ठे, पिंडवाय चरे मुणी ॥१६॥

अलोले न रसे गिद्धे, जिब्भादंते अमुच्छिए ।
न रसट्ठाए भुंजिज्जा, जवणट्ठाए महामुणी ॥१७॥

अच्चणं रयणं चेव, वंदण पूयणं तहा ।
इड्ढी-सक्कार-सम्माणं, मणसा वि न पत्थए ॥१८॥

सुक्कज्झाणं, झियाएज्जा, अणियाणे अकिंचणे ।
वोसट्ठकाए विहरेज्जा, जाव कालस्स पज्जओ ॥१९॥

निज्जूहिऊण आहारं, कालधम्मे उवट्ठिए ।
जहिऊण माणुसं बोंदि, पहू दुक्खा विमुच्चई ॥२०॥

निम्ममो निरहंकारो, वीयरागो अणासवो ।
संपत्तो केवलं नाणं, सासयं परिणिव्वुए ॥२१॥

॥ त्ति बेमि ॥

अह जीवाजीवविभत्ति-नामं छत्तीसइमं अज्झयणं

जीवाजीवविभत्ति सुणेहेगमणा इओ ।
जं जाणिऊण भिक्खू, सम्मं जयइ संजमे ॥१॥

लोकालोक-स्वरूपम्—

जीवा चेव अजीवा य, एस लोए वियाहिए ।
अजीवदेसमागासे, अलोगे से वियाहिए ॥२॥

द्रव्यादिभिर्जीवाजीवयोः प्ररूपणम्—

दव्वओ[1] खेत्तओ[2] चेव कालओ[3] भावओ[4] तहा ।
परूवणा तेसिं भवे जीवाणमजीवाण य ॥३॥

अजीवभेदाः—

(१) रूविणो चेव रूवी य, अजीवा दुविहा भवे ।
अरूवी दसहा वुत्ता, रूविणो य चउव्विहा ॥४॥

धम्मत्थिकाए[1] तद्देसे[2], तप्पएसे[3] य आहिए ।
अहम्मे[4] तस्स देसे[5] य, तप्पएसे[6] य आहिए ॥५॥
आगासे[7] तस्स देसे[8] य, तप्पएसे[9] य आहिए ।
अद्धासमए[10] चेव, अरूवी दसहा भवे ॥६॥
(२) धम्माधम्मे य दो चेव, लोगमित्ता वियाहिया ।
लोगालोगे य आगासे, समए समयखेत्तिए ॥७॥
(३) धम्माधम्मागासा, तिन्निवि एए अणाइया ।
अपज्जवसिया चेव, सव्वद्धं तु वियाहिया ॥८॥
समएवि संतइं पप्प, एवमेव वियाहिया ।
आएसं पप्प साईए, सपज्जवसिएवि य ॥९॥
(१) खंधा[1] य खंधदेसा[2] य, तप्पएसा[3] तहेव य ।
परमाणुणो[4] य बोधव्वा, रूविणो य चउव्विहा ॥१०॥
(२) एगत्तेण पुहत्तेण, खंधा य परमाणुणो ।
लोएगदेसे लोए य, भइयव्वा ते उ खेत्तओ ॥११॥
सुहुमा सव्वलोगंमि लोगदेसे य बायरा ।
(३) इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥१२॥
संतइं पप्प तेऽणाई, अप्पज्जवसिया[1] वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सप्पज्जवसिया[2] वि य ॥१३॥
असंखकालमुक्कोसं[3], एक्को समओ जहन्नयं ।
अजीवाण य रूवीणं, ठिई एसा वियाहिया ॥१४॥

अणंतकालमुक्कोसं[4], एक्को समओ जहन्नय ।
अजीवाण य रूवीण, अंतरेयं वियाहियं ॥१५॥

(४) वण्णओ[1] गंधओ[2] चेव, रसओ[3] फासओ[4] तहा ।
संठाणओ[5] य विन्नेओ, परिणामो तेसिं पंचहा ॥१६॥

(१) वण्णओ परिणया जे उ, पंचहा ते पकित्तिया ।
किण्हा[1] नीला[2] य लोहिया[3], हलिद्दा[4] सुक्किला[5] तहा ॥१७॥

(२) गंधओ परिणया जे उ, दुविहा ते वियाहिया ।
सुब्भिगंधपरिणामा[1], दुब्भिगंधा[2] तहेव य ॥१८॥

(३) रसओ परिणया जे उ, पंचहा ते पकित्तिया ।
तित्त[1]-कडुय[2]-कसाया[3], अंबिला[4] महुरा[5] तहा ॥१९॥

(४) फासओ परिणया जे उ, अट्ठहा ते पकित्तिया ।
कक्खडा[1] मउआ[2] चेव, गरुया[3] लहुआ[4] तहा ॥२०॥

सीया[5] उण्हा[6] य निद्धा[7] य, तहा लुक्खा[8] य आहिया ।
इइ फासपरिणया एए, पुग्गला समुदाहिया ॥२१॥

(५) संठाण परिणया जे उ, पंचहा ते पकित्तिया ।
परिमंडला[1] य वट्टा[2] य, तंसा[3] चउरंस[4] मायया[5] ॥२२॥

वण्णओ जे भवे किण्हे, भइए से उ गंधओ ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओवि य ॥२३॥

वण्णओ जे भवे नीले, भइए से उ गंधओ ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥२४॥

वण्णओ लोहिए जे उ, भइए से उ गंधओ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥२५॥

वण्णओ पीयए जे उ, भइए से उ गंधओ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥२६॥

वण्णओ सुक्किले जे उ, भइए से उ गंधओ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥२७॥

गंधओ जे भवे सुब्भी, भइए से उ वण्णओ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥२८॥

गंधओ जे भवे दुब्भी, भइए से उ वण्णओ।
रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥२९॥

रसओ तित्तए जे उ, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥३०॥

रसओ कडुए जे उ, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥३१॥

रसओ कसाए जे उ, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥३२॥

रसओ अंबिले जे उ, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥३३॥

रसओ महुरए जे उ, भइए से उ वण्णओ।
गंधओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥३४॥

फासओ कक्खडे जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥३५॥

फासओ मउए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥३६॥

फासओ गुरुए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए सठाणओ वि य ॥३७॥

फासओ लहुए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥३८॥

फासए सीयए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि य ॥३९॥

फासओ उण्हए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए सठाणओ वि य ॥४०॥

फासओ निद्धए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गधओ रसओ चेव, भइए सठाणओ वि य ॥४१॥

फासओ लुक्खए जे उ, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए सठाणओ वि य ॥४२॥

परिमंडलसंठाणे, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ॥४३॥

संठाणओ भवे वट्टे, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ॥४४॥

संठाणओ भवे तंसे, भइए से, उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ।।४५।।

संठाणओ य चउरंसे, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ।।४६।।

जे आययसंठाणे, भइए से उ वण्णओ ।
गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि य ।।४७।।

एसा अजीवविभत्ती, समासेण वियाहिया ।

जीवभेदाः—

इत्तो जीवविभत्तिं, वुच्छामि अणुपुव्वसो ।।४८।।
संसारत्था य सिद्धा य, दुविहा जीवा वियाहिया ।

सिद्धानां वर्णनम्—

(१) सिद्धा णेगविहा वुत्ता, तं मे कित्तयओ सुण ।।४९।।
इत्थीपुरिससिद्धा य तहेव य नपुंसगा ।
सलिंगे अन्नलिंगे य, गिहिलिंगे तहेव य ।।५०।।

उक्कोसोगाहणाए य, जहन्नमज्झिमाइ य ।
उड्ढं अहे य तिरियं च, समुद्दंमि जलंमि य ।।५१।।

दस य नपुंसएसु, वीसं इत्थियासु य ।
पुरिसेसु य अट्ठसयं, समएणेगेण सिज्झइ ।।५२।।

चत्तारि य गिहलिंगे, अन्नलिंगे दसेव य ।
सलिंगेणं अट्ठसयं, समएणेगेण सिज्झइ ।।५३।।

उक्कोसोगाहणाए य, सिज्झंते जुगवं दुवे ।
चत्तारि जहन्नाए, मज्झे अट्ठुत्तरं सयं ॥५४॥

चउरुड्ढलोए य दुवे समुद्दे,
तओ जले वीसमहे तहेव य ।
सयं च अट्ठुत्तर तिरियलोए,
समएणेगेण सिज्झई धुवं ॥५५॥

कहिं पडिहया सिद्धा ? कहिं सिद्धा पइट्ठिया ?
कहिं बोंदि, चइत्ताणं ? कत्थ गंतूणं सिज्झई ? ॥५६॥

अलोए पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पइट्ठिया ।
इहं बोंदि चइत्ताणं, तत्थ गतूण सिज्झइ ॥५७॥

सिद्धशिलायावर्णनम्–

(२) बारसहिं जोयणेहिं, सव्वट्ठस्सुवरिं भवे ।
ईसिपब्भारनामा उ, पुढवी छत्तसंठिया ॥५८॥

पणयालसयसहस्सा, जोयणाणं तु आयया ।
तावइय चेव वित्थिण्णा, तिगुणो साहिय परिरओ ॥५९॥

अट्ठजोयणबाहल्ला, सा मज्झंमि वियाहिया ।
परिहायंती चरिमंते, मच्छिपत्ताउ तणुययरी ॥६०॥

अज्जुणसुवण्णगमई, सा पुढवी निम्मला सहावेण ।
उत्ताणगच्छत्तगसंठिया य, भणिया जिणवरेहिं ॥६१॥

संखंककुंदसंकासा, पंडुरा निम्मला सुहा ।
सीयाए जोयणे तत्तो, लोयंतो उ वियाहिओ ॥६२॥

सिद्धानामवस्थिति-क्षेत्रम्–

जोयणस्स उ जो तत्थ, कोसो उवरिमो भवे ।
तस्स कोसस्स छब्भाए, सिद्धाणोगाहणा भवे ॥६३॥

तत्थ सिद्धा महाभागा, लोयग्गंमि पइट्ठिया ।
भवप्पवंच उम्मुक्का, सिद्धिं वरगइं गया ॥६४॥

सिद्धानामवगाहना–

उस्सेहो जस्स जो होइ, भवंमि चरिमंमि उ ।
तिभागहीणा तत्तो य, सिद्धाणोगाहणा भवे ॥६५॥

(३) एगत्तेण साईया, अपज्जवसियावि य ।
पुहत्तेण अणाइया, अपज्जवसियावि य ॥६६॥

(४) अरूविणो जीवघणा, नाणदंसणसन्निया ।
अउलं सुहं संपत्ता, उवमा जस्स नत्थि उ ॥६७॥

लोगेगदेसे ते सव्वे, नाणदंसणसन्निया ।
संसारपारनित्थिण्णा, सिद्धिं वरगइं गया ॥६८॥

संसारिणां जीवानां वर्णनम्–

संसारत्था उ जे जीवा, दुविहा ते वियाहिया ।
तसा[1] य थावरा[2] चेव, थावरा तिविहा तहिं ॥६९॥

(१) पुढवी[1] आउजीवा[2] य, तहेव य वणस्सई[3] ।
इच्चेय थावरा तिविहा, तेसिं भेए सुणेह मे ॥७०॥

दुविहा पुढवीजीवाउ, सुहुमा[1] बायरा तहा[2] ।
पज्जत्ता[1]मपज्जत्ता[2], एवमेए दुहा पुणो ॥७१॥

बायरा जे उ पज्जत्ता, दुविहा ते वियाहिया ।
सण्हा[1] खरा[2] य बोधव्वा, सण्हा सत्तविहा तहिं ॥७२॥

किण्हा[1] नीला[2] य रुहिरा[3] य, हालिद्दा[4] सुक्किला[5] तहा ।
पंडु[6]-पणग[7] मट्टिया, खरा छत्तीसई विहा ॥७३॥

पुढवी[1] य सक्करा[2] वालुया[3] य,
उवले[4] सिला[5] य लोणू[6]से[7] ।
अय[8]-तंब[9] तउय[10]-सीसग[11],
रुप्प[12]-सुवण्णे[13] य वइरे[14] य ॥७४॥

हरियाले[15] हिंगुलुए[16],
मणोसिला[17] सास[18] गंजण[19]-पवाले[20] ।
अब्भपडल[21] ब्भवालुय[22],
बायरकाए मणिविहाणे ॥७५॥

गोमेज्जए[23] य रुयगे[24], अंके[25] फलिहे य लोहियक्खे य[26] ।
मरगय-मसारगल्ले[27], भुयमोयग-इंदनीले[29] य ॥७६॥

चंदण गेरुय हंसगब्भे[30], पुलए[31] सोगंधिए[32] य बोधव्वे ।
चंदप्पह[33]-वेरुलिए[34], जलकंते[35] सूरकंते[36] य ॥७७॥

एए खरपुढवीए, भेया छत्तीसमाहिया ।
एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ॥७८॥

सुहुमा य सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ।
इत्तो कालविभागं तु, वुच्छं तेसिं चउव्विहं ॥७९॥

संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया वि[1] य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि[2] य ॥८०॥

बावीससहस्साइं, वासाणुक्कोसिया भवे ।
आउठिई पुढवीणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥८१॥

असंखकालमुक्कोसं[3], अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
कायठिई पुढवीणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥८२॥

अणंतकालमुक्कोसं[4] अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए, पुढविजीवाण अंतरं ॥८३॥

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्सओ ॥८४॥

(२) दुविहा आउजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेव दुहा पुणो ॥८५॥

बायरा जे उ पज्जत्ता, पंचहा ते पकित्तिया ।
सुद्धोदए[1] य उस्से[2] य, हरतणू[3] महिया[4] हिमे ॥८६॥

एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ।
सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ॥८७॥

सतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसियावि य ।
ठिइ पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥८८॥

सत्तेव सहस्साइ, वासाणुक्कोसिया भवे ।
आउठिई आऊण, अंतोमुहुत्त जहन्निया ॥८९॥

असखकालमुक्कोसं, अतोमुहुत्त जहन्नयं ।
कायठिई आऊणं, तं काय तु अमुंचओ ॥९०॥

अणतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्त जहन्नय ।
विजढमि सए काए, आऊजीवाण अतरं ॥९१॥

एएसि वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥९२॥

(३) दुविहा वणस्सईजीवा, सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेव दुहा पुणो ॥९३॥

बायरा जे उ पज्जत्ता, दुविहा ते वियाहिया ।
साहारणसरीरा[1] य, पत्तेगा[2] य तहेव य ॥९४॥

पत्तेगसरीराओ, ऽणेगहा ते पकित्तिया ।
रुक्खा गुच्छा य गुम्मा य, लया वल्ली तणा तहा ॥९५॥

वलया पव्वगा कुहुणा, जलरुहा ओसही तिणा ।
हरियकाया उ बोधव्वा, पत्तेगा इह आहिया ॥९६॥

साहारणसरीराओ, ऽणेगहा ते पकित्तिया ।
आलुए मूलए चेव, सिगबेरे तहेव य ॥९७॥

हिरिली सिरिली सस्सिरिली, जावई केयकंदली ।
पलंडुलसणकंदे य कंदली य कुहुव्वए ॥९८॥

लोहिणी हूयथी हूय,, कुहगा य तहेव य ।
कण्हे य वज्जकंदे य, कंदे सूरणए तहा ॥९९॥

अस्सकण्णी य बोधव्वा, सीहकण्णी तहेव य ।
मुसुंढी य हलिद्दा य, ऽणेगहा एवमायओ ॥१००॥

एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ।
सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ॥१०१॥

संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसियावि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि य ॥१०२॥

दस चेव सहस्साइं, वासाणुक्कोसिया भवे ।
वणप्फईण आउं तु, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१०३॥

अणंतकालमुक्कोसा, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ।
कायठिई पणगाणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥१०४॥

असंखकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए, पणगजीवाण अंतरं ॥१०५॥

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१०६॥

इच्चेए थावरा तिविहा, समासेण वियाहिया ।
इत्तो उ तसे तिविहे, वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥१०७॥

तेऊ[1] वाऊ[2] य बोधव्वा, उराला य तसा[3] तहा ।
इच्चेए तसा तिविहा, तेसिं भेए सुणेह मे ॥१०८॥

(१) दुविहा तेउजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥१०९॥

बायरा जे उ पज्जत्ता, ऽणेगहा ते वियाहिया ।
इंगाले मुमुरे अगणी, अच्चि जाला तहेव य ॥११०॥

उक्का विज्जू य बोधव्वा, ऽणेगहा एवमायओ ।
एगविहमणाणत्ता, सुहुमा ते वियाहिया ॥१११॥

सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ।
इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥११२॥

संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसियावि[1] य ।
ठिइं पडुच्च साइया, सपज्जवसियावि[2] य ॥११३॥

तिण्णेव अहोरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया ।
आउठिई तेऊणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥११४॥

असंखकालमुक्कोसा[3], अंतोमुहुत्तं जहन्निया ।
कायठिई तेऊणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥११५॥

अणंतकालमुक्कोसं[4], अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढम्मि सए काए, तेऊजीवाण अंतरं ॥११६॥

एएसिं वण्णओ चेव[5] गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥११७॥

(२) दुविहा वाउजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥११८॥

बायरा जे उ पज्जत्ता, पंचहा ते पकित्तिया ।
उक्कलिया[1] मंडलिया[2], घणगुंजा[3] सुद्धवाया[4] य ॥११९॥

संवट्टगवाये[5] य, ऽणेगहा एवमायओ ।
एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ॥१२०॥

सुहुमा सव्वलोगंमि, लोगदेसे य बायरा ।
इत्तो कालविभाग तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥१२१॥

संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसियावि[1] य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसियावि[2] य ॥१२२॥

तिण्णेव सहस्साइं, वासाणुक्कोसिया भवे ।
आउठिई वाऊणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१२३॥

असंखकालमुक्कोसा[3], अंतोमुहुत्तं जहन्निया ।
कायठिई वाऊण, तं कायं तु अमुंचओ ॥१२४॥

अणंतकालमुक्कोसं[4], अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए, वाऊजीवाण अंतरं ॥१२५॥

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१२६॥

(३) उराला तसा जे उ, चउहा ते पकित्तिया ।
बेइंदिया[1] तेइंदिया[2], चउरो[3] पंचिंदिया[4] तहा ॥१२७॥

(१) बेइंदिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्त[1]मपज्जत्ता[2], तेसिं भेए सुणेह मे ॥१२८॥

किमिणो सोमंगला चेव, अलसा माइवाहया ।
वासीमुहा य सिप्पिया, संखा संखणगा तहा ॥१२९॥

पल्लोयाणुल्लया चेव, तहेव य वराडगा ।
जलूगा जालगा चेव, चंदणा य तहेव य ॥१३०॥

इइ बेइंदिया एए, ऽणेगहा एवमायओ ।
लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ॥१३१॥

संतइं पप्प ऽणाईया, अपज्जवसिया[1] वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया[2] वि य ॥१३२॥

वासाइं बारसा चेव, उक्कोसेण वियाहिया ।
बेइंदिय आउठिई अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१३३॥

संखिज्जकालमुक्कोसा[3], अंतोमुहुत्तं जहन्निया ।
बेइंदियकायठिई, तं कायं तु अमुंचओ ॥१३४॥

अणंतकालमुक्कोसं[1], अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
बेइंदियजीवाणं, अंतरं च वियाहियं ॥१३५॥

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१३६॥

(२) तेइंदिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेह मे ॥१३७॥

कुंथु-पिवीलि-उड्डसा, उक्कलुद्देहिया तहा ।
तणहार-कट्ठहारा य, मालुगा पत्तहारगा ॥१३८॥

कप्पासऽट्ठिमिंजा य, तिंदुगा तउसमिंजगा ।
सदावरी य गुम्मी य, बोधव्वा इंदगाइया ॥१३९॥

इंदगोवगमाईया, ऽणेगहा एवमायओ ।
लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ॥१४०॥

संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया[1] वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया[2] वि य ॥१४१॥

एगूणपण्णहोरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया ।
तेइंदियआउठिई, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१४२॥

संखिज्जकालमुक्कोसा[3], अंतोमुहुत्तं जहन्निया ।
तेइंदियकायठिई, तं कायं तु अमुंचओ ॥१४३॥

अणंतकालमुक्कोसं[4], अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
तेइंदियजीवाणं, अंतरं तु वियाहियं ॥१४४॥

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१४५॥

(३) चउरिंदिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्तमपज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेह मे ॥१४६॥

अंधिया पोत्तिया चेव, मच्छिया मसगा तहा ।
भमरे कीडपयंगे य, ढिंकुणे कुंकणे तहा ॥१४७॥

कुक्कुडे सिंगिरीडी य, नदावत्ते य विच्छुए ।
डोले भिंगीरीडी य, विरली अच्छिवेहए ॥१४८॥
अच्छिले माहए अच्छि, विचित्ते चित्तपत्तए ।
उहिंजलिया जलकारी य, नीया ततवयाइया ॥१४९॥
इइ चउरिंदिया एए, ऽणेगहा एवमायओ ।
लोगेगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ॥१५०॥
संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया वि य[1] ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य[2] ॥१५१॥
छच्चेव उ मासाऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
चउरिंदियआउठिई, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१५२॥
संखिज्जकालमुक्कोसा[3], अंतोमुहुत्तं जहन्निया ।
चउरिंदियकायठिई, तं कायं तु अमुंचओ ॥१५३॥
अणंतकालमुक्कोसं[1], अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
चउरिंदियजीवाणं, अंतरं च वियाहियं ॥१५४॥
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१५५॥
(४) पंचिंदिया उ जे जीवा, चउव्विहा ते वियाहिया ।
नेरइय[1]तिरिक्खा[2] य, मणुया[3] देवा[4] य आहिया ॥१५६॥

नरक वर्णनम् –

नेरइया सत्तविहा, पुढवीसु सत्तसु भवे ।
रयणाभ[1] सक्कराभा[2] वालुयाभा[3] य आहिया ॥१५७॥

पंकाभा[4] धूमाभा[5], तमा[6] तमतमा[7] तहा ।
इइ नेरइया एए, सत्तहा परिकित्तिया ॥१५८॥

लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वे उ वियाहिया ।
एत्तो कालविभागं तु, वुच्छं तेसिं चउव्विहं ॥१५९॥

संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया[1] वि य ।
ठिइं पडुच्च साइया, सपज्जवसिया[2] वि य ॥१६०॥

सागरोवममेगं तु, उक्कोसेण वियाहिया ।
पढमाए जहन्नेण, दसवाससहस्सिया ॥१६१॥

तिण्णेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
दोच्चाए जहन्नेण, एगं तु सागरोवमं ॥१६२॥

सत्तेव सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
तइयाए जहन्नेणं, तिण्णेव सागरोवमा ॥१६३॥

दस सागरोवमा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
चउत्थीए जहन्नेण, सत्तेव सागरोवमा ॥१६४॥

सत्तरस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
पंचमाए जहन्नेण, दस चेव सागरोवमा ॥१६५॥

बावीस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
छट्ठीए जहन्नेण, सत्तरस सागरोवमा ॥१६६॥

तेत्तीस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया ।
सत्तमाए जहन्नेण बावीसं सागरोवमा ॥१६७॥

जा चेव य आउठिई, नेरइयाणं वियाहिया ।
सा तेसिं कायठिई, जहन्नुक्कोसिया भवे ॥१६८॥
अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए, नेरइयाणं तु अंतरं ॥१६९॥
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१७०॥

पंचेन्द्रिय-तिरश्चां-वर्णनम् –

पंचिंदियतिरिक्खाओ, दुविहा ते वियाहिया ।
समुच्छिमतिरिक्खाओ[1], गब्भवक्कंतिया[2] तहा ॥१७१॥
दुविहा ते भवे तिविहा, जलयरा[1] थलयरा[2] तहा ।
नहयरा य[3] बोधव्वा, तेसिं भेए सुणेह मे ॥१७२॥
मच्छा[1] य कच्छभा[2] य, गाहा[3] य मगरा[4] तहा ।
सुसुमारा य बोधव्वा, पंचहा जलयराहिया ॥१७३॥
लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ।
इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥१७४॥
संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया वि य[1] ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य[2] ॥१७५॥

एगा य पुव्वकोडि, उक्कोसेण वियाहिया ।
आउठिई जलयराणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१७६॥
पुव्वकोडिपुहत्तं तु[3], उक्कोसेण वियाहिया ।
कायठिई जलयराण, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१७७॥

अणंतकालमुक्कोसं[4], अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए, जलयराणं तु अंतरं ॥१७८॥
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥१७९॥
चउप्पया[1] य परिसप्पा[2], दुविहा थलयरा भवे ।
चउप्पया चउविहा उ, ते मे कित्तयओ सुण ॥१८०॥

एगखुरा[1] दुखुरा[2] चेव, गंडीपय[3]-सणप्फया[4] ।
हयमाइ-गोणमाइ, - गयमाइ - सीहमाइणो ॥१८१॥

भुओरगपरिसप्पा य, परिसप्पा दुविहा भवे ।
गोहाई[1] अहिमाई[2] य, एक्केक्काणेगहा भवे ॥१८२॥
लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ।
एत्तो कालविभागं तु, वोच्छं तेसिं चउव्विहं ॥१८३॥

संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया[1] वि य ।
ठिइं पडुच्च साइया, सपज्जवसिया[2] वि य ॥१८४॥
पलिओवमाइं तिण्णि उ[3], उक्कोसेण वियाहिया ।
आउठिई थलयराणं, अंतोमुहुत्त जहन्निया ॥१८५॥

पुव्वकोडिपुहुत्तं, उक्कोसेण वियाहिया ।
कायठिई थलयराणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१८६॥
कालमणंतमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए, थलयराणं तु अंतरं ॥१८७॥

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१८८॥
चम्मे[1] उ लोमपक्खी[2] य, तइया समुग्गपक्खिया[3] ।
विययपक्खी[4] य बोधव्वा, पक्खिणो य चउव्विहा ॥१८९॥
लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ वियाहिया ।
इत्तो कालविभाग तु, वोच्छं तेसिं चउव्विहं ॥१९०॥
संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया वि य[1] ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया वि य[2] ॥१९१॥
पलिओवमस्स भागो, असखेज्ज इमो भवे ।
आउठिई खहयराण, अंतोमुहुत्त जहन्निया ॥१९२॥
पुव्वकोडीपुहुत्तेण, उक्कोसेण वियाहिया ।
कायठिई खहयराण, अंतोमुहुत्त जहन्निया ॥१९३॥
अणतकालमुक्कोस, अंतोमुहुत्त जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए, खहयराणं तु अंतरं ॥१९४॥
एएसिं वण्णओ चेव, गधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१९५॥

[म]नुजाना वर्णनम् –

मणुया दुविहभेया उ, ते मे कित्तयओ सुण ।
संमुच्छिमा[1] य मणुया, गब्भवक्कंतिया तहा ॥१९६॥
गब्भवक्कतिया जे उ, तिविहा ते वियाहिया ।
अकम्म[1] कम्मभूमा[2] य, अतरद्दीवया[3] तहा ॥१९७॥

पन्नरस तीसवी हा, भेया अट्ठवी सयं ।
संखा उ कमसो तेसिं, इइ एसा वियाहिया ॥१९८॥
संमुच्छिमाण एमेव, भेओ होई वियाहिओ ।
लोगस्स एगदेसंमि, ते सव्वे वि वियाहिया ॥१९९॥
संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसिया[1] वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया, सपज्जवसिया[2] वि य ॥२००॥
पलिओवमाइं तिण्णि वि[3], उक्कोसेण वियाहिया ।
आउठिई मणुयाणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥२०१॥
पुव्वकोडिपुहत्तेणं, उक्कोसेण वियाहिया ।
कायठिई मणुयाणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥२०२॥
अणंतकालमुक्कोसं[4], अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए, मणुयाणं तु अंतरं ॥२०३॥
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥२०४॥

देवानां वर्णनम्–

देवा चउव्विहा वुत्ता, ते मे कित्तयओ सुण ।
भोमिज्ज[1] वाणमंतर[2], जोइस[3] वेमाणिया[4] तहा ॥२०५॥
दसहा उ भवणवासी, अट्ठहा वणचारिणो ।
पंचविहा जोइसिया, दुविहा वेमाणिया तहा ॥२०६॥
(१) असुरा[1] नाग[2] सुवण्णा[3], विज्जू[4] अग्गी[5] वियाहिया ।
दीवो[6] वहि[7] दिसा[8] वाया[9], थणिया[10] भवणवासिणो ॥२०७॥

(२) पिसाय[1] भूय[2] जक्खा[3] य, रक्खसा[4] किन्नरा[5] किंपुरिसा[6]।
महोरगा[7] य गंधव्वा[8], अट्ठविहा वाणमंतरा ॥२०८॥

(३) चंदा[1] सूरा[2] य नक्खत्ता[3], गहा[4] तारागणा[5] तहा ।
दिसा विचारिणो चेव, पंचहा जोइसालया ॥२०९॥

(४) वेमाणिया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया ।
कप्पोवगा[1] य बोधव्वा, कप्पाईया[2] तहेव य ॥२१०॥

कप्पोवगा बारसहा, सोहम्मी[1] साणगा[2] तहा ।
सणंकुमार[3] माहिंदा[4] बंभलोगा[5] य लंतगा[6] ॥२११॥

महासुक्का[7] सहस्सारा[8], आणया[9] पाणया[10] तहा ।
आरणा[11] अच्चुया[12] चेव, इइ कप्पोवगा सुरा ॥२१२॥

कप्पाईया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया ।
गेविज्जगाणुत्तरा चेव, गेविज्जा नवविहा तहिं ॥२१३॥

हेट्ठिमाहेट्ठिमा[1] चेव हेट्ठिमामज्झिमा[2] तहा ।
हेट्ठिमाउवरिमा[3] चेव मज्झिमाहेट्ठिमा[4] तहा ॥२१४॥

मज्झिमामज्झिमा[5] चेव, मज्झिमाउवरिमा[6] तहा ।
उवरिमाहेट्ठिमा[7] चेव, उवरिमामज्झिमा[8] तहा ॥२१५॥

उवरिमाउवरिमा[9] चेव, इय गेविज्जगा सुरा ।
विजया वेजयंता य, जयंता अपराजिया ॥२१६॥

सव्वत्थसिद्धगा चेव, पंचहाणुत्तरा सुरा ।
इइ वेमाणिया एए, ऽणेगहा एवमायओ ॥२१७॥

लोगस्स एगदेसंमि, ते सव्वे वि वियाहिया ।
इत्तो कालविभागं तु, वुच्छं तेसिं चउव्विहं ॥२१८॥

संतइं पप्पऽणाईया, अपज्जवसियावि[1] य ।
ठिइं पडुच्च साइया, सपज्जवसियावि[2] य ॥२१९॥

साहियं सागरं एक्कं[3], उक्कोसेण ठिई भवे ।
भोमेज्जाणं जहन्नेणं, दसवाससहस्सिया ॥२२०॥
पलिओवम दो ऊणा, उक्कोसेण वियाहिया ।
असुरिंदवज्जेताण जहन्ना दससहस्सगा ॥२२१॥

पलिओवममेगं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
वंतराणं जहन्नेणं, दसवाससहस्सिया ॥२२२॥
पलिओवममेगं तु, वासलक्खेण साहियं ।
पलिओवमऽट्ठभागो, जोइसेसु जहन्निया ॥२२३॥
दो चेव सागराइं, उक्कोसेण वियाहिया ।
सोहंमंमि जहन्नेणं, एगं च पलिओवमं ॥२२४॥
सागरा साहिया दुन्नि, उक्कोसेण वियाहिया ।
ईसाणंमि जहन्नेणं, साहियं पलिओवमं ॥२२५॥

सागराणि य सत्तेव, उक्कोसेण ठिई भवे ।
सणंकुमारे जहन्नेणं, दुन्नि उ सागरोवमा ॥२२६॥
साहिया सागरा सत्त, उक्कोसेणं ठिई भवे ।
माहिंदंमि जहन्नेणं, साहिया दुन्नि सागरा ॥२२७॥

दस चेव सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
बंभलोए जहन्नेण, सत्त ऊ सागरोवमा ॥२२८॥

चउद्दससागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे ।
लंतगंमि जहन्नेणं, दस ऊ सागरोवमा ॥२२९॥

सत्तरससागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
महासुक्के जहन्नेण, चोद्दस सागरोवमा ॥२३०॥

अट्ठारस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
सहस्सारे जहन्नेण, सत्तरस सागरोवमा ॥२३१॥

सागरा अउणवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
आणयंमि जहन्नेणं, अट्ठारस सागरोवमा ॥२३२॥

वीस तु सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
पाणयमि जहन्नेण, सागरा अउणवीसई ॥२३३॥

सागरा इक्कवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
आरणमि जहन्नेणं, वीसई सागरोवमा ॥२३४॥

बावीसं सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
अच्चुयमि जहन्नेण, सागरा इक्कवीसई ॥२३५॥

तेवीससागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
पढमंमि जहन्नेण, बावीसं सागरोवमा ॥२३६॥

चउवीसं सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
बीइयमि जहन्नेणं, तेवीसं सागरोवमा ॥२३७॥

पणवीसं सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
तइयम्मि जहन्नेणं, चउवीसं सागरोवमा ॥२३८॥
छव्वीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
चउत्थम्मि जहन्नेणं, सागरा पणवीसई ॥२३९॥

सागरा सत्तवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
पंचमम्मि जहन्नेणं, सागरा उ छव्वीसई ॥२४०॥
सागरा अट्ठवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
छट्ठंमि जहन्नेणं, सागरा सत्तवीसई ॥२४१॥

सागरा अउणतीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
सत्तमम्मि जहन्नेणं सागरा अट्ठवीसई ॥२४२॥
तीसं तु सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
अट्ठमम्मि जहन्नेणं सागरा अउणतीसई ॥२४३॥

सागरा इक्कतीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे ।
नवमंमि जहन्नेणं, तीसई सागरोवमा ॥२४४॥
तेत्तीसा सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे ।
चउसुंपि विजयाईसुं, जहन्नेणेक्कतीसई ॥२४५॥

अजहन्नमणुक्कोसं, तेत्तीसं सागरोवमा ।
महाविमाणे सव्वट्ठे, ठिई एसा वियाहिया ॥२४६॥
जा चेव उ आउठिई, देवाणं तु वियाहिया ।
सा तेसिं कायठिई, जहन्नमुक्कोसिया भवे ॥२४७॥

अणतकालमुक्कोस, अंतोमुहुत्त जहन्नय ।
विजढमि सए काए, देवाण हुज्ज अंतरं ॥२४८॥

अणतकालमुक्कोस, वासपुहुत्त जहन्नगं ।
आणयाईण कप्पाण, गेविज्जाण तु अंतरं ॥२४९॥

सखिज्जसागरुक्कोस, वासपुहुत्त जहन्नगं ।
अणुत्तराण य देवाण, अतर तु वियाहियं ॥२५०॥

एएसि वण्णओ चेव, गधओ रसफासओ ।
सठाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥२५१॥

ससारत्था य सिद्धा य, इय जीवा वियाहिया ।
रूविणो चेवऽरूवी य, अजीवा दुविहा वि य ॥२५२॥

इय जीवमजीवे य, सोच्चा सद्दहिऊण य ।
सव्वनयाणमणुमए, रमेज्ज सजमे मुणी ॥२५३॥

सलेखना विधि.—

तओ बहूणी वासाणि, सामण्णमणुपालिया ।
इमेण कमजोगेण, अप्पाण सलिहे मुणी ॥२५४॥

बारसेव उ वासाइ संलेहुक्कोसिया भवे ।
संवच्छर मज्झिमिया, छम्मासा य जहन्निया ॥२५५॥

पढमे वासचउक्कंमि, विगई-निज्जूहण करे ।
बिइए वासचउक्कमि, विवित्त तु तव चरे ॥२५६॥

एगंतरमायामं, कट्टु संवच्छरे दुवे ।
तओ संवच्छरद्धं तु, नाइविगिट्ठं तवं चरे ॥२५७॥

तओ संवच्छरद्धं तु, विगिट्ठं तु तवं चरे ।
परिमियं चेव आयामं, तंमि संवच्छरे करे ॥२५८॥

कोडी सहियमायामं, कट्टु संवच्छरे मुणी ।
मासद्धमासिएण तु आहारेण तवं चरे ॥२५९॥

संयमस्य विराधनाया-आराधनायाश्चफलम्–

कंदप्पमाभिओगं च, किब्बिसियं मोहमासुरत्तं च ।
एयाउ दुग्गईओ, मरणंमि विराहिया होंति ॥२६०॥

मिच्छादंसणरत्ता, सनियाणा उ हिंसगा ।
इय जे मरंति जीवा, तेसिं पुण 'दुल्लहा बोही' ॥२६१॥

सम्मद्दंसणरत्ता, अनियाणा सुक्कलेसमोगाढा ।
इय जे मरंति जीवा, तेसिं 'सुलहा भवे बोही' ॥२६२॥

मिच्छादंसणरत्ता, सनियाणा कण्हलेसमोगाढा ।
इय जे मरंति जीवा, तेसिं पुण 'दुल्लहा बोही' ॥२६३॥

जिणवयणे अणुरत्ता, जिणवयणं जे करेंति भावेण ।
अमला असंकिलिट्ठा, ते होंति परित्तसंसारी ॥२६४॥

बालमरणाणि बहुसो, अकाममरणाणि चेव य बहूणि ।
मरिहंति ते वराया, जिणवयणं जे न जाणंति ॥२६५॥

वहुआगमविन्नाणा, समाहिउप्पायगा य गुणगाही ।
एएणं कारणेणं, अरिहा आलोयणं सोउं ॥२६६॥

कदप्पकुक्कुयाइं, तह सीलसहावहासविगहाइं ।
विम्हावेंतोय परं, कदप्प भावणं कुणइ ॥२६७॥

मंताजोग काउं, भूइकम्मं च जे पउंजंति ।
साय-रस-इड्ढिहेउं, अभिओगं भावण कुणइ ॥२६८॥

नाणस्स केवलीणं, धम्मायरियस्स संघसाहूणं ।
माई अवण्णवाई, किब्बिसियं भावणं कुणइ ॥२६९॥

अणुबद्धरोसपसरो, तह य निमित्तंमि होइ पडिसेवी ।
एएहि कारणेहिं, आसुरिय भावणं कुणइ ॥२७०॥

सत्थगहणं विसभक्खणं च, जलणं च जलप्पवेसो य ।
अणायारभंडसेवी, जम्मणमरणाणि बंधंति ॥२७१॥

इइ पाउकरे बुद्धे, नायए परिनिव्वुए ।
छत्तीस उत्तरज्झाए, भवसिद्धियसंवुडे ॥२७२॥

॥ त्ति बेमि ॥

॥ मूल सुत्ताणि ॥

(३)

नंदि-सुत्तं

(उक्कालियं)

॥ वियाले वि पढिज्जति ॥

नामकरण—

नदंति जेण तव-सजमेसु नेव य दरत्ति खिज्जति ।
जायति न वीणा व, नंदी अ तत्तो समयसन्ना ॥१॥

अ० रा० कोश—

उद्धरणं—

पचमनाण-पुव्वाओ, तह अंगा उवगाओ ।
आयरिय देवड्ढिणा, नंदी-सुत्तं सुयोजिय ॥२॥

विसयणिद्देसो

वीरत्थुई संघथुई य पुव्व,
पच्छा य तित्थंगर-नामयाणि ।
नामाणि तत्तो गणहराण,
तओ थवो णं जिणसासणस्स ॥१॥

थेरावली चउद्दस, विट्ठ ताणि य सोऊणं ।
तिण्णि परिसयाणं च, भेया पच्छा उ वण्णिया ॥२॥

पचण्हं खलु नाणाणं, णाम—निद्देसणं कयं ।
तओ पच्छा य पच्चक्खं, ओहिनाणं तु वण्णियं ॥३॥

तओ पच्चक्ख-नाणस्स, मणस्स केवलस्स य ।
संगोवग सुवण्णन्न, वित्थरेण पकित्तिय ॥४॥

परोक्ख-मइनाणस्स, दिट्ठिभेएण कित्तणं ।
पच्छा चउण्ह बुद्धीणं, सोदाहरण-वण्णनं ॥५॥

परोक्ख-सुयनाणस्स, भेया वुत्ता चउद्दसा ।
एक्कारसंगयस्सावि, तओ पच्छा उ वण्णना ॥६॥

तओ पच्छा उ संखित्त, अणुओगो य चूलिया ।
दिट्ठिवाओ य सपुव्वो, वण्णिया य जहक्कमं ॥७॥

दुवालस्स य अंगस्स, आराहणाअ ज फल ।
वण्णिऊण उ त सव्व, वुत्ता अंगाण निच्चया ॥८॥

णाण-महिमा :–

उक्कोसियं णं भंते ! णाणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं— सिज्झंति मुच्चंति परिनिव्वायंति सव्व-दुक्खाणमंतं करेंति ?

गोयमा !

अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेंति। अत्थेगइए दोच्चेण भवग्गहणेणं सिज्झति . जाव . सव्वदुक्खाणमत करेंति। अत्थेगइए कप्पोवएसु वा कप्पातीएसु वा उववज्जंति।

मज्झिमिय ण भते ! णाणाराहण आराहेत्ता कतिहिं भवग्गणेहिं—ज्झिति बुज्झंति मुच्चति परिनिव्वायति सव्वदुक्खाणमंतं करेति ?

गोयमा !

अत्थेगइए दोच्चेण भवग्गहणेण सिज्झति . जाव . . सव्वदुक्खाणमंतं करेंति। तच्चं पुण भवग्गहण नाइक्कमइ।

जहन्नियं णं भते ! णाणाराहण आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं—सिज्झति . . जाव . . सव्व-दुक्खाणमंत करेंति ?

गोयमा !

अत्थेगइए तच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झइ जाव . सव्वदुक्खाणमंतं करेइ—सत्तट्ठभवग्गहणाइं पुण नाइक्कमइ।

भग श ८ उ १० सू. ३५५–

* णमोऽत्थु ण तस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स *

नंदि-सुत्तं

वीरस्तुति –

जयइ जग-जीव-जोणी, वियाणओ जगगुरू जगाणंदो ।
ज ग णा हो जगबंधू, जयइ जगप्पियामहो भयवं ॥१॥

जयइ सुआणं पभवो, तित्थयराणं अपच्छिमो जयइ ।
जयइ गुरू लोगाणं, जयइ महप्पा महावीरो ॥२॥

भद्दं सव्वजगुज्जोयगस्स, भद्दं जिणस्स वीरस्स ।
भद्दं सुरासुरनमंसियस्स, भद्दं धु य र य स्स ॥३॥

संघस्तुति –

गुण-भवण-गहण, सुय-रयण-भरिय-दंसण-विसुद्ध-रत्थागा ।
संघ-नगर ! भद्दं ते, अखंड-चरित्त-पागारा ॥४॥

संजम-तव-तुंबारयस्स, नमो सम्मत्तपारियल्लस्स ।
अप्पडिचक्कस्स जओ, होउ सया संघ-चक्कस्स ॥५॥

भद्दं सीलपडागूसियस्स, तव-नियम-तुरय-जुत्तस्स ।
संघ-रहस्स भगवओ, सज्झायसुनंदिघोसस्स ॥६॥

कम्मरय-जलोहविणिग्गयस्स, सुयरयण-दीहनालस्स ।
पचमहव्वय-थिरकण्णियस्स, गुणकेसरालस्स ॥७॥
सावग-जण-महुअरिपरिवुडस्स, जिण-सूर-तेयबुद्धस्स ।
सघ-पउमस्स भद्दं, समण-गण-सहस्सपत्तस्स ॥८॥
तव-संजम मय-लछण ! अकिरिय राहुमुह-दुद्धरिस ! निच्चं ।
जय संघचद ! निम्मल,-सम्मत्तविसुद्ध जोण्हागा ! ॥९॥
परतित्थिय-गह-पह-नासगस्स, तवतेयदित्त लेसस्स ।
नाणुज्जोयस्स जए, भद्द दमसंघ-सूरस्स ॥१०॥
भद्दं धिइवेला परिगयस्स, सज्झाय जोग मगरस्स ।
अक्खोहस्स भगवओ, संघसमुदस्स रुंदस्स ॥११॥
सम्मदंसण-वर वइर,—दढरूढगाढावगाढ-पेढस्स ।
धम्मवर-रयण-मडिय-चामीयर-मेहला गस्स ॥१२॥
नियमूसिय कणय, सिलायलुज्जल जलंत-चित्त-कूडस्स ।
नंदणवण मणहर सुरभि, सीलगंधुद्धुमायस्स ॥१३॥
जीवदया-सुंदर-कंदरुद्दरिय-मुणिवर मइंदइन्नस्स ।
हेउ-सयधाउपगलत रयणदित्तोसहि गुहस्स ॥१४॥
संवरवर जल पगलिय, उज्झरपविरायमाणहारस्स ।
सावग-जण पउर-रवंत, मोर नच्चंत कुहरस्स ॥१५॥
विणय-नय-पवर मुणिवर, फुरत विज्जुज्जलंत सिहरस्स ।
विविहगुण कप्परुक्खग, फलभरकुसुमाउलवणस्स ॥१६॥

नाणवर-रयण-दिप्पंत, कंतवेरुलियविमलचूलस्स ।
वंदामि विणयपणओ, संघ-महामंदरगिरिस्स ॥१७॥

गुण-रयणुज्जलकडय सीलसुगंधि-तवमंडिउद्देसं ।
सुय-बारसंग-सिहरं, संघ-महामंदरं वंदे ॥१८॥

नगर[1]रह[2]चक्क[3]पउमे[4], चंदे[5]सूरे[6]समुद्द[7]मेरुंमि[8] ।
जो उवमिज्जइ सययं, तं संघ-गुणायरं वंदे ॥१९॥

तीर्थंकरनामानि :–

वंदे उसभं[1]मजियं[2] संभव[3], मभिनंदण[4]सुमइ[5]सुप्पभ[6]सुपासं[7] ।
ससि[8]पुप्फदंत[9]सीयल[10], सिज्जंसं[11]वासुपुज्जं[12]च ॥२०॥

विमल[13]मणंत[14] य धम्मं[15], संति[16]कुंथु[17]अरं[18]च मल्लिं[19] च ।
मुणिसुव्वय[20]-नमि[21]-नेमिं[22], पासं[23] तह वद्धमाणं[24] च ॥२१॥

गणधरनामानि :–

पढमित्थ इंदभूई[1], बीए पुण होइ अग्गिभूइ[2] त्ति ।
तइए य वाउभूई[3], तओ वियत्ते[4] सुहम्मे[5] य ॥२२॥

मंडिअ[6]-मोरियपुत्ते,[7] अकंपिए[8] चेव अयलभाया[9] य ।
मेयज्जे[10] य पहासे[11], गणहरा हुंति वीरस्स ॥२३॥

जिनशासनस्तुति :–

निव्वुइ-पह-सासणयं, जयइ सया सव्वभाव-देसणयं ।
कुसमय-मयनासणयं, जिणिंदवर वीरसासणयं ॥२४॥

स्थविरावली :—

सुहम्म[1] अग्गिवेसाणं, जंबूनाम[2] च कासवं ।
पभवं[3] कच्चायणं वंदे, वच्छं सिज्जंभवं[4] तहा ॥२५॥

जसभद्दं[5] तुंगियं वंदे, संभूयं[6] चेव माढरं ।
भद्दबाहुं[7] च पाइन्नं, थूलभद्दं[8] च गोयमं ॥२६॥

एलावच्चसगोत्तं, वंदामि महागिरिं[9] सुहत्थिं[10] च ।
तत्तो कोसियगोत्तं, बहुलस्स[11] सरिव्वयं वंदे ॥२७॥

हारियगुत्तं साइं[12] च, वंदिमो हारियं च सामज्जं[13] ।
वंदे कोसियगोत्तं, संडिल्लं[14] अज्जजीयधरं ॥२८॥

ति-समुद्द-खायकित्तिं, दीवसमुद्देसु गहिय-पेयालं ।
वंदे अज्जसमुद्दं[15], अक्खुभिय-समुद्द-गंभीरं ॥२९॥

भणगं करगं, झरगं, पभावगं णाण-दंसणगुणाणं ।
वंदामि अज्जमंगुं[16], सुयसागरपारगं धीरं ॥३०॥

* वंदामि अज्जधम्मं,[17] तत्तो वंदे य भद्दगुत्तं[18] च ।
तत्तो य अज्जवइरं[19], तव-नियम-गुणेहिं वइरसमं ॥३१॥

* वंदामि अज्जरक्खियं[20], खमणे रक्खिय-चारित्त सव्वस्से ।
रयणकरंडगभूओ अणुओगो रक्खिओ जेहिं ॥३२॥

नाणंमि दंसणंमि य, तव-विणए णिच्चकालमुज्जुत्तं ।
अज्जं नंदिल-खवणं[21], सिरसा वंदे पसन्नमणं ॥३३॥

---

* गाथाद्वयं वृत्तौ नोक्तम्

वड्ढउ वायगवंशो, जसवंशो अज्जनागहत्थीण[22] ।
वागरण-करण-भंगिय, कम्मपयडीपहाणाणं ॥३४॥

जच्चंजणधाउसमप्पहाणं, मुद्दिय-कुवलयनिहाणं ।
वड्ढउ वायगवंसो, रेवइ-नक्खत्तनामाणं[23] ॥३५॥

"अयलपुरा" निक्खंते, कालियसुअ-आणुओगिए धीरे ।
"बम्भद्दीवग"-सीहे,[24] वायगपयमुत्तम पत्ते ॥३६॥

जेसि इमो अणुओगो, पयरइ अज्जावि अड्ढभरहंमि ।
बहुनयरनिग्गयजसे, ते वंदे खंदिलायरिए[25] ॥३७॥

तत्तो हिमवंत-महंत-वक्कमे, धिइपरक्कममणंते ।
सज्झायमणंतधरे, हिमवंते[26] वंदिमो सिरसा ॥३८॥

कालिय-सुय-अणुओगस्स-धारए, धारए य पुव्वाणं ।
हिमवंतखमासमणे, वंदे णागज्जुणायरिए[27] ॥३९॥

मिउमद्दवसंपन्ने अणुपुव्विं वायगत्तणं पत्ते ।
ओहसुयसमायारे, नागज्जुणवायए वंदे ॥४०॥

गोविंदाण[28] पि नमो, अणुओगे विउलधारणिंदाणं ।
णिच्चं खंतिदयाणं, परूवणे दुल्लभिंदाणं ॥४१॥

तत्तो य भूयदिन्नं[29], निच्च तव-संजमे अनिव्विण्णं ।
पंडियजणसामन्नं, वंदामी संजमविहन्नू ॥४२॥

वर-कणग-तविय-चंपग,-विमउल-वर-कमलगब्भसरिवन्ने ।
भवियजणहिययदइए, दयागुणविसारए धीरे ॥४३॥

अड्ढभरहप्पहाणे, बहुविह-सज्झाय-सुमुणियपहाणे ।
अणुओगियवरवसभे नाइलकुलवंसनंदिकरे ॥४४॥

भूयहियप्पगब्भे, वंदे ऽहं भूयदिन्नमायरिए ।
भवभयवोच्छेयकरे, सीसे नागज्जुणरिसीणं ॥४५॥

सुमुणिय निच्चानिच्चं, सुमुणिय सुत्तत्थधारयं वंदे ।
सब्भावुब्भावणया, तत्थं लोहिच्च[30] णामाणं ॥४६॥

अत्थमहत्थखाणिं, सुसमणवक्खाणकहण निव्वाणिं ।
पयईए महुरवाणिं, पयओ पणमामि *दूसगणिं[31] ॥४७॥

तव-नियम-सच्च-संजम,-विणयज्जव-खंति-मद्दवरयाणं ।
सीलगुणगद्दियाणं, अणुओगजुगप्पहाणाणं ॥४८॥

सुकुमालकोमलतले, तेसिं पणमामि लक्खणपसत्थे ।
पाए पावयणीणं, पडिच्छयसएहिं पणिवइए ॥४९॥

जे अन्ने भगवंते, कालियसुय-आणुओगिए धीरे ।
ते पणमिऊण सिरसा, नाणस्स परूवणं वोच्छं ॥५०॥

मेरुतुंगस्थविरावली :-

* सूरि वलिस्सह साई, समज्जो संडिलो य जीयधरो ।
अज्जसमुद्दो मंगू, नंदिल्लो नागहत्थी य ॥
रेवई सिंहो खंदिल, हिमवं नागज्जुणा य गोविंदा ।
सिरिभूइदिन्न-लोहिच्च, दूसगणिणो य देवड्ढी ॥
*सुत्तत्थ-रयणभरिए, खम-दम-मद्दवगुणेहिं संपन्ने ।
देवड्ढिखमासमणे, कासवगुत्ते पणिवयामि ॥

श्रोतुश्चतुर्दशदृष्टान्तानि :–

सेल-घण[1] कुडग[2]-चालणि[3],
परिपुण्णग[4]-हंस-[5]-महिस[6]-मेसे[7] य ।
मसग[8]-जलूग[9] विराली[10],
जाहग[11]-गो[12]-भेरि[13] आभीरी[14] ॥१॥

त्रिविधा परिषदा :–

सा समासओ तिविहा पण्णत्ता,
तं जहा–
जाणिया, अजाणिया, दुव्वियड्ढा ।
जाणिया जहा–

खीरमिव जहा हसा, जे घुट्टंति इह गुरुगुणसमिद्धा ।
दोसे अ विवज्जंती, त जाणसु जाणिय परिस ॥२॥

अजाणिया जहा–

जा होइ पगइ-महुरा, मियछावय-सीह-कुक्कुडयभूआ ।
रयणमिव असंठविआ, अजाणिया सा भवे परिसा ॥३॥

दुव्वियड्ढा जहा–

न य कत्थइ निम्माओ, न य पुच्छइ परिभवस्सदोसेण ।
वत्थिव्व वायपुण्णो, फुट्टइ गामिल्लय विअड्ढो ॥४॥

पंचविधज्ञानम्–

सुत्त १ नाणं पंचविहं पण्णत्तं,

त जहा–

१ आभिणिबोहियनाण,

२ सुयनाणं,

३ ओहिनाणं,

४ मणपज्जवनाणं,

५ केवलनाणं ।

सुत्तं २ तं समासओ दुविहं पण्णत्तं,

त जहा–

१ पच्चक्ख च, २ परोक्ख च ।

सुत्त ३ से किं तं पच्चक्खं ?

पच्चक्ख दुविह पणत्त,

तं जहा–

१ इंदिय-पच्चक्खं, २ नोइंदिय-पच्चक्ख ।

सुत्तं ४ से किं त इंदिय-पच्चक्ख ?

इंदिय-पच्चक्खं पंचविहं पण्णत्तं,

त जहा–

१ सोइंदिय-पच्चक्खं,

२ चक्खिंदिय-पच्चक्खं,

३ घाणिंदिय-पच्चक्ख,

४ जिब्भिंदिय-पच्चक्ख,

५ फासिंदिय पच्चक्खं,

से त्त इंदिय-पच्चक्खं ।

सुत्तं ५ से किं तं नोइंदिय-पच्चक्ख ?

नो इंदिय-पच्चक्खं तिविह पण्णत्तं,

त जहा–

१ ओहिनाण-पच्चक्ख,

२ मणपज्जवनाण-पच्चक्ख,

३ केवलनाण-पच्चक्ख ।

अवधिज्ञानम्–

सुत्त ६ से कि त ओहिनाण-पच्चक्ख ?

ओहिनाण-पचणक्ख दुविह पण्णत्त

त जहा–

१ भव-पच्चइयं, २ खओवसमियं च ।

सुत्त ७ से कि त भव-पच्चइय ?

भव-पच्चइयं दुण्हं,

तं जहा–

१ देवाण य, २ नेरइयाण य ।

सुत्त ८ से किं तं खओवसमियं ?

खओवसमियं दुण्हं,

तं जहा–

१ मणुस्साणं य,

२ पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं य ।

को हेऊ खाओवसमियं ?

खाओवसमिय-तयावरणिज्जाणं कम्माण-

उदिण्णाणं खएणं, अणुदिण्णाणं उवसमेणं-

ओहिनाणं समुप्पज्जइ ।

सुत्त ९ अहवा गुणपडिवन्नस्स अणगारस्स–

ओहि-नाणं समुप्पज्जइ,

तं समासओ छव्विहं पण्णत्तं,

तं जहा–

१ आणुगामियं, २ अणाणुगामियं,

३ वड्ढमाणयं, ४ हीयमाणयं,

५ पडिवाइयं ६ अप्पडिवाइयं ।

सुत्त १० से किं तं आणुगामियं ओहिनाणं ?

आणुगामियं ओहिनाणं दुविहं पण्णत्तं,

तं जहा–

१ अंतगय च २ मज्झगयं च ।
से किं तं अंतगयं ?
अंतगयं तिविहं पण्णत्तं,
तं जहा–
१ पुरओ अंतगयं,
२ मग्गओ अंतगयं,
३ पासओ अंतगयं ।
(१) से किं तं पुरओ अंतगयं ?
पुरओ अंतगयं–
से जहानामए केइ पुरिसे,
उक्कं वा, चडुलियं वा, अलायं वा,
मणिं वा, जोइं वा, पईवं वा,
पुरओ काउं पणुल्लेमाणे पणुल्लेमाणे गच्छेज्जा ।
से त्तं पुरओ अंतगयं ।
(२) से किं तं मग्गओ अंतगयं ?
मग्गओ अंतगयं–
से जहानामए केइ पुरिसे,
उक्कं वा, चडुलियं वा, अलायं वा,
मणिं वा, जोइं वा, पईवं वा,
मग्गओ काउं अणुकड्ढेमाणे अणुकड्ढेमाणे गच्छेज्जा,
से त्तं मग्गओ अंतगयं ।

(३) से किं त पासओ अतगय ?

पासओ अंतगय—
से जहा नामए केइ पुरिसे,

उक्क वा, चडुलिय वा, अलाय वा,
मणि वा, जोइ वा, पईवं वा,

पुरओ काउं परिकड्ढेमाणे परिकड्ढेमाणे गच्छिज्जा।
से त्तं पासओ अतगय।
से त्त अंतगय।

से किं तं मज्झगय ?
मज्झगयं—
से जहा नामए केइ पुरिसे,

उक्क वा, चडुलिय वा, अलाय वा,
मणि वा, जोइ वा, पईवं वा,

मत्थए काउ समुव्वहमाणे समुव्वहमाणे गच्छिज्जा,
से त्तं मज्झगय।

अतगयस्स मज्झगयस्स य को पइविसेसो ?
पुरओ अंतगएण ओहिनाणेणं पुरओ चेव
सखिज्जाणि वा असखिज्जाणि वा जोयणाइ जाणइ, पासइ।
मग्गओ अतगएण ओहिनाणेण मग्गओ चेव

संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ, पासइ।
पासओ अंतगएण ओहिनाणेण पासओ चेव
संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ, पासइ।
मज्झगएण ओहिनाणेण सव्वओ समंता–
संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ, पासइ।
से त्तं आणुगामियं ओहिनाणं ॥१०॥

सुत्त ११ से किं तं अणाणुगामियं ओहिनाणं ?

अणाणुगामियं ओहिनाणं से जहा नामए केइ पुरिसे एगं महंतं जोइट्ठाणं काउं तस्सेव जोइट्ठाणस्स परिपेरंतेहिं, परिपेरंतेहिं परिघोलेमाणे परिघोलेमाणे तमेव जोइट्ठाणं पासइ।

अन्नत्थगए न जाणइ, न पासइ।

एवामेव अणाणुगामियं ओहिनाणं जत्थेव समुप्पज्जइ
तत्थेव संखेज्जाणि वा, असंखेज्जाणि वा,
संबद्धाणि वा, असंबद्धाणि वा,
जोयणाइं जाणइ पासइ।
अन्नत्थगए (न जाणइ) न पासइ।
से त्तं अणाणुगामियं ओहिनाणं।

सुत्त १२ से किं तं वड्ढमाणयं ओहिनाणं ?

वड्ढमाणयं ओहिनाणं–
पसत्थेसु अज्झवसायट्ठाणेसु वट्टमाणस्स वड्ढमाणचरित्तस्स

विसुज्झमाणस्स विसुज्झमाण-चरित्तस्स
सव्वओ समंता ओही वड्ढइ ।

गाहाओ—

जावइया तिसमया-हारगस्स, सुहुमस्स पणगजीवस्स ।
ओगाहणा जहन्ना, ओहिखित्त जहन्न तु ॥१॥
सव्व-बहु-अगणिजीवा, निरतरं जत्तियं भरिज्जसु ।
खित्तं सव्वदिसाग, परमोही खित्त निद्दिट्ठो ॥२॥
अंगुलमावलियाणं, भागमसखिज्ज दोसु सखिज्जा ।
अंगुलमावलिअंतो, आवलिया अंगुलपुहुत्तं ॥३॥
हत्थंमि मुहुत्ततो, दिवसतो गाउअमि बोद्धव्वो ।
जोयण दिवसपुहुत्त, पक्खंतो पन्नवीसाओ ॥४॥
भरहंमि अद्धमासो, जंबुद्दिवमि साहिओ मासो ।
वास च मणुयलोए, वासपुहुत्त च रुयगमि ॥५॥
सखिज्जमि उ काले, दीवसमुद्दा वि होंति संखिज्जा ।
कालंमि असखिज्जे, दीवसमुद्दा उ भइयव्वा ॥६॥
काले चउण्ह वुड्ढी, कालो भइअव्वु खित्तवुड्ढीए ।
वुड्ढीए दव्वपज्जव, भइयव्वा खित्तकाला उ ॥७॥
सुहुमो य होइ कालो, तत्तो सुहुमयर हवइ खित्तं ।
अगुलसेढीमित्ते, ओसप्पिणिओ असखिज्जा ॥८॥

से त्त वड्ढमाणय ओहिनाणं ।

सुत्तं १३ से किं तं हीयमाणय ओहिनाण ?

हीयमाणय ओहिनाण—अप्पसत्थेहिं अज्झवसायट्ठाणेहिं
वट्टमाणस्स वट्टमाण चरित्तस्स
संकिलिस्समाणस्स, संकिलिस्समाण—चरित्तस्स
सव्वओ समंता ओही परिहायइ,
से त्तं हीयमाणयं ओहिनाणं ।

सुत्तं १४ से किं तं पडिवाइ ओहिनाणं ?

पडिवाइ-ओहिनाणं जहन्नेणं अंगुलस्स—
असंखिज्जइ भागं वा, संखिज्जइ भागं वा,
वालग्गं वा, वालग्गपुहुत्तं वा,
लिक्खं वा, लिक्खपुहुत्तं वा,
जूयं वा, जूयपुहुत्त वा,
जव वा, जवपुहुत्तं वा,
अंगुलं वा, अंगुलपुहुत्तं वा,
पायं वा, पायपुहुत्तं वा,
विहत्थि वा, विहत्थिपुहुत्तं वा,
रयणि वा, रयणिपुहुत्तं वा,
कुच्छि वा, कुच्छिपुहुत्तं वा,
धणुं वा, धणुपुहुत्तं वा,
गाउयं वा, गाउयपुहुत्तं वा,

जोयण वा,　　जोयणपुहुत्तं वा,

जोयणसय वा,　　जोयणसयपुहुत्त वा,

जोयणसहस्स वा,　　जोयणसहस्सपुहुत्तं वा,

जोयणलक्ख वा,　　जोयणलक्खपुहुत्त वा,

जोयण-कोडिं वा, जोयण-कोडिपुहुत्तं वा,

जोयण-कोडाकोडिं वा, जोयण-कोडाकोडिपुहुत्त वा,

जोयण-सखेज्ज वा,　　जोयण-संखेज्जपुहुत्त वा,

जोयण-असखेज्जं वा,　　जोयण-असंखेज्जपुहुत्त वा,

उक्कोसेण लोगं वा पासित्ताण पडिवइज्जा ।

से त्त पडिवाइ ओहिनाण ।

सुत्त १५ से किं त अपडिवाइ-ओहिनाण ?

अपडिवाइ-ओहिनाण-

जेण अलोगस्स एगमवि आगास-पएस जाणइ, पासइ ।

तेण पर अपडिवाइओहिनाणं ।

से त्त अपडिवाइ-ओहिनाण ।

सुत्त १६ त समासओ चउव्विह पणत्त,

त जहा-

दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।

तत्थ दव्वओ णं ओहिनाणी–

जहन्नेणं अणंताइं रूविदव्वाइं जाणइ, पासइ।

उक्कोसेणं सव्वाइं रूविदव्वाइं जाणइ, पासइ।

खित्तओ णं ओहिनाणी–

जहन्नेणं अंगुलस्स असंखिज्जइभागं जाणइ, पासइ।

उक्कोसेणं असंखिज्जाइं-

अलोगे लोगप्पमाणमित्ताइं खंडाइं जाणइ, पासइ।

कालओ णं ओहिनाणी–

जहन्नेणं आवलियाए असंखिज्जइभागं जाणइ, पासइ।

उक्कोसेणं असंखिज्जाओ उस्सप्पिणीओ अवसप्पिणीओ-

अईयमणागयं च कालं जाणइ, पासइ।

भावओ णं ओहिनाणी–

जहन्नेणं अणंते भावे जाणइ, पासइ,

उक्कोसेण वि अणंते भावे जाणइ, पासइ।

सव्वभावाणमणंतभागं जाणइ, पासइ।

गाहाओ–

ओही भवपच्चइओ, गुणपच्चइओ य वण्णिओ दुविहो।
तस्स य बहू विगप्पा, दव्वे खित्ते अ काले य ॥९॥
नेरइय-देव-तित्थंकरा य, ओहिस्स ऽबाहिरा हुंति।
पासंति सव्वओ खलु, सेसा देसेण पासंति ॥१०॥
से त्तं ओहिनाण-पच्चक्खं।

मनः पर्यवज्ञानम्ः—

सु. १७ से किं तं मणपज्जवनाणं ?

मणपज्जवनाणे णं भंते ! किं मणुस्साणं उप्पज्जइ, अमणुस्साणं ?
गोयमा ! मणुस्साणं, नो अमणुस्साणं ।

जइ मणुस्साणं—
किं सम्मुच्छिम-मणुस्साणं, गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं ?
गोयमा ! णो सम्मुच्छिम-मणुस्साणं, गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं ।

जइ गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं—

किं कम्मभूमिअ-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं,
अकम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं,
अंतरदीवग-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं ?

गोयमा ! कम्मभूमिअ-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं,
णो अकम्मभूमिअ-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं,
णो अंतरदीवग-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं ।

जइ कम्मभूमिअ-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं—
किं संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं,
असंखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं ?

गोयमा ! संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं,
णो असंखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं ।

जइ संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गब्भवक्कंतिय मणुस्साण—
किं पज्जत्तग संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साण,
अपज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साण ?
गोयमा ! पज्जत्तग - संखेज्जवासाउय - कम्मभूमिअ - गब्भवक्कंतिय-
मणुस्साण,
णो अपज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साण।
जइ पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साण-
किं सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गब्भवक्कंतिय-
मणुस्साणं,
मिच्छदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय- कम्मभूमिअ - गब्भवक्कंतिय-
मणुस्साणं,
सम्मामिच्छदिट्ठि - पज्जत्तग - संखेज्जवासाउय - कम्मभूमिअ -
गब्भवक्कंतिय-मणुस्साण ?
गोयमा ! सम्मदिट्ठि - पज्जत्तग - संखेज्जवासाउय - कम्मभूमिअ-
गब्भवक्कंतिय-मणुस्साण,
णो मिच्छदिट्ठि पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गब्भवक्कंतिय-
मणुस्साण,
णो सम्मामिच्छदिट्ठि - पज्जत्तग - संखेज्जवासाउय - कम्मभूमिअ -
गब्भवक्कंतिय-मणुस्साण,
जइ सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गब्भवक्कंतिय-
मणुस्साणं—

कि संजय - सम्मदिट्ठि - पज्जत्तग - सखेज्जवासाउय - कम्मभूमिअ-गब्भवक्कतिय-मणुस्साण,

असंजय- समदिट्ठिपज्जत्तग-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ - गब्भवक्कंतिय-मणुस्साण,

संजयासंजय - सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग - सखेज्जवासाउय - कम्मभूमिअ-गब्भवक्कतिय मणुस्साण ?

गोयमा ! संजय-सम्मदिट्ठि - पज्जत्तग-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गब्भवक्कतिय-मणुस्साण,

णो असंजय - सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग - सखेज्जवासाउय - कम्मभूमिअ-गब्भवक्कतिय-मणुस्साणं,

णो संजयासंजय-सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गब्भवक्कतिय-मणुस्साण ।

जइ संजय-सम्मदिट्ठि - पज्जत्तग - सखेज्जवासाउय - कम्मभूमिअ-गब्भवक्कतिय-मणुस्साण—

कि पमत्त-संजय-सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग- सखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गब्भवक्कतिय-मणुस्साण,

अपमत्त-संजय-सम्मदिट्ठि- पज्जत्तग - सखेज्जवासाउय - कम्मभूमिअ-गब्भवक्कतिय-मणुस्साण ?

गोयमा ! अपमत्त-संजय-सम्मदिट्ठि - पज्जत्तग - सखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गब्भवक्कतिय-मणुस्साण,

णो पमत्त-संजय-सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं—

जइ अपमत्त-संजय-सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिअ-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं—

किं इड्ढिपत्त-अपमत्त-संजय-सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग- संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं,

अणिड्ढिपत्त-अपमत्त-संजय-सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग - संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं ?

गोयमा ! इड्ढिपत्त-अपमत्त-संजय-सम्मदिट्ठि- पज्जत्तग- संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं,

णो अणिड्ढिपत्त-अपमत्त-संजय-सम्मदिट्ठि-पज्जत्तग-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमिय-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साण मणपज्जवनाणं समुप्पज्जइ ।

सुत्तं १८ तं च दुविहं उप्पज्जइ,

तं जहा—

१ उज्जुमई य, २ विउलमई य ।

तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं,

तं जहा—दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ ।

तत्थ दव्वओ णं उज्जुमई अणंते अणंतपएसिए खंधे जाणइ, पासइ ।

तं चेव विउलमई अब्भहियतराए, विउलतराए—

विसुद्धतराए, वितिमिरतराए जाणइ, पासइ ।

खित्तओ ण उज्जुमई य जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं
उक्कोसेणं अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए–
उवरिमहेट्ठिल्ले खुड्डगपयरे,
उड्ढ-जाव-जोइसस्स उवरिमतले,
तिरियं-जाव-अंतोमणुस्सखित्ते
अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु
पन्नरससु कम्मभूमिसु, तिसाए अकम्मभूमिसु
छप्पन्नाए अंतरदीवगेसु
सन्निपंचिंदियाण पज्जत्तयाण मणोगए भावे जाणइ, पासइ,
तं चेव विउलमई अड्ढाइज्जेहिं अंगुलेहिं अब्भहियतरं विउलतरं,
विसुद्धतरं वितिमिरतरागं खेत्तं जाणइ, पासइ ।

कालओ णं उज्जुमई–
जहन्नेणं पलिओवमस्स असंखिज्जयभागं
उक्कोसेणं पि पलिओवमस्स असंखिज्जयभागं
अतीयमणागयं वा कालं जाणइ, पासइ,

तं चेव विउलमई अब्भहियतरागं, विउलतरागं
विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ, पासइ ।
भावओ णं उज्जुमई अणंते भावे जाणइ, पासइ,
सव्वभावाणं अणंतभागं जाणइ, पासइ ।

तं चेव विउलमई अब्भहियतरागं विउलतरागं
विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ, पासइ ।

गाहा—मणपज्जवनाण पुण, जणमणपरिचिंतिअत्थपागडण ।
माणुसखित्तनिबद्ध, गुणपच्चइअ चरित्तवओ ॥१॥
से त्त मणपज्जवणाण ।

केवलज्ञानम्—

सुत्त १९ से कि त केवलनाण ?
केवलनाण दुविह पण्णत्त,
त जहा—
(१) भवत्थकेवलनाण च ।
(२) सिद्धकेवलनाण च ।
से कि तं भवत्थकेवलनाण ?
भवत्थकेवलनाण दुविह पण्णत्त,
त जहा—
(१) सजोगिभवत्थकेवलनाणं च,
(२) अजोगिभवत्थकेवलनाण च ।
से कि तं सजोगिभवत्थकेवलनाणं ?
सजोगिभवत्थकेवलनाण दुविहं पण्णत्त,
तं जहा—
(१) पढमसमय—सजोगि—भवत्थकेवलनाण च
(२) अपढमसमय—सजोगि—भवत्थकेवलनाण च ।

अहवा–

(१) चरमसमय–सजोगी–भवत्थकेवलनाण च ।

(२) अचरमसमय–सजोगी–भवत्थकेवलनाण च ।

से त्तं सजोगिभवत्थकेवलनाण ।

से किं त अजोगिभवत्थकेवलनाण ?

अजोगिभवत्थकेवलनाण दुविहं पण्णत्त,

त जहा–

(१) पढमसमय–अजोगि–भवत्थकेवलनाण च

(२) अपढमसमय–अजोगि–भवत्थकेवलनाण च ।

अहवा–

(१) चरमसमय–अजोगि–भवत्थकेवलनाण च

(२) अचरमसमय–अजोगि–भवत्थकेवलनाण च ।

से त्त अजोगिभवत्थकेवलनाण ।

से त्त भवत्थकेवलनाण ।

त्त २० से किं तं सिद्धकेवलनाण ?

सिद्धकेवलनाण दुविहं पण्णत्त,

तं जहा–

(१) अणतरसिद्धकेवलनाणं च

(२) परपरसिद्धकेवलनाण च ।

सुत्तं २१ से किं तं अणंतरसिद्धकेवलनाणं ?

अणतरसिद्ध केवलनाणं पण्णरसविह पण्णत्त,

तं जहा–

१ तित्थसिद्धा २ अतित्थसिद्धा
३ तित्थयरसिद्धा ४ अतित्थयरसिद्धा
५ सयं बुद्धसिद्धा ६ पत्तेयबुद्धसिद्धा
७ बुद्धबोहियसिद्धा
८ इत्थिलिंगसिद्धा ९ पुरिसलिंगसिद्धा
१० नपुंसकलिंगसिद्धा
११ सलिंगसिद्धा १२ अन्नलिंगसिद्धा
१३ गिहिलिंगसिद्धा
१४ एगसिद्धा १५ अणेगसिद्धा

से त्त अणतरसिद्ध–केवलनाणं ।

सुत्तं २२ से किं तं परंपरसिद्ध केवलनाण ?

परंपरसिद्ध केवलनाणं अणेगविह पण्णत्तं,

तं जहा–

अपढमसमयसिद्धा, दुसमयसिद्धा,
तिसमयसिद्धा, चउसमयसिद्धा, जाव·· दससमयसिद्धा
संखिज्ज समयसिद्धा, असंखिज्ज समयसिद्धा,
अणंत समयसिद्धा,

से त्त परंपरसिद्ध-केवलनाण ।

से त्त सिद्धकेवलनाण ।

त समासओ चउव्विह पण्णत्त,

तं जहा–

दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ ।

तत्थ दव्वओ णं केवलनाणी सव्वदव्वाइ जाणइ पासइ ।

खित्तओ ण केवलनाणी सव्व खित्त जाणइ पासइ ।

कालओ ण केवलनाणी सव्व कालं जाणइ पासइ ।

भावओ ण केवलनाणी सव्वे भावे जाणइ पासइ ।

गाहा–अह सव्व दव्व परिणाम-भावविण्णत्ति कारणमणंतं ।
सा स य म प्प डि वा ई, ए ग वि हं केवलनाणं ॥१॥

सुत्त २३ गाहा–केवलनाणेणऽत्थे, नाउं जे तत्थ पण्णवणजोगे ।
ते भासइ तित्थयरो, वइजोगसुअ हवइ सेसं ॥२॥

से त्त केवलनाण ।

से त्त नोइंदियपच्चक्ख ।

से त्त पच्चक्खनाणं ।

परोक्षज्ञानम्

सुत्तं २४ से किं तं परुक्खनाण ?

परुक्खनाण दुविहं पण्णत्त,

त जहा–

(१) आभिणिबोहियनाणपरोक्ख च

(२) सुयनाणपरोक्ख च ।

जत्थ आभिणिबोहियनाण तत्थ सुयनाण,

जत्थ सुयनाणं तत्थ आभिनिबोहियनाणं ।

दो वि एयाइं अण्णमण्णमणुगयाइं,

तहवि पुण इत्थ आयरिआ नाणत्तं पण्णविति–

अभिणिबुज्झइ त्ति आभिणिबोहियनाण,

सुणेइ त्ति सुय,

मइपुव्वं जेण सुअ, न मई सुयपुव्विया ।

सुत्त २५ अविसेसिया मई–मइनाण च मइअण्णाण च ।

विसेसिया–

सम्मदिट्ठिस्स मई मइनाण,

मिच्छादिट्ठिस्स मई मइ-अन्नाण ।

अविसेसियं सुयं–सुयनाण च सुयअन्नाणं च

विसेसिअ सुअ–

सम्मदिट्ठिस्स सुअ सुयनाण,

मिच्छदिट्ठिस्स सुअ सुय-अन्नाण ।

मतिज्ञानम्–

सुत्तं २६ से किं तं आभिणिबोहियनाण ?

आभिणिबोहियनाण दुविहं पण्णत्तं,

त जहा–

१ सुयनिस्सिय च, २ असुयनिस्सियं च ।

से किं तं असुयनिस्सिय ?

असुयनिस्सिय चउव्विहं पण्णत्त,

तं जहा–

गाहाओ–

उप्पत्तिया[1] वेणइआ[2], कम्मया[3] परिणामिया[4] ।
वुद्धी चउव्विहा वुत्ता, पचमा नोवलब्भइ ॥१॥

पुव्वमदिट्ठमस्सुय, मवेइय तक्खणविसुद्धगहियत्था ।
अव्वाहयफलजोगा, वुद्धी उप्पत्तिया नाम ॥१॥

भरहसिल[1] मिढ[2] कुक्कुड[3] तिल[4] वालुय[5] हत्थि[6]अगड[7] वणसडे[8] ।
पायस[9] अइआ[10] पत्ते[11], खाडहिला[12] पंचपियरो[13] य ॥२॥

भरहसिल[1] पणिय[2] रुक्खे[3], खुड्डग[4] पड[5] सरड[6] काय[7] उच्चारे[8] ।
गय[9] घयण[10] गोल[11] खभे[12], खुड्डग[13] मग्गि[14]त्थि[15] पइ[16] पुत्ते[17] ॥३॥

महुसित्थ[18] मुद्दि[19] अंके[20], नाणए[21] भिक्खु[22] चेडगनिहाणे[23] ।
सिक्खा[24] य अत्थसत्थे[25], इच्छा य मह[26]सयसहस्से[27] ॥४॥

भरनित्थरणसमत्था, तिव्वग्ग–सुत्तत्थ–गहिय–पेयाला ।
उभओ लोग फलवई, विणयसमुत्था हवइ वुद्धी ॥१॥

निमित्तं[1] अत्थसत्थे[2] अ लेहे[3] गणिए[4] अ कूव[5] अस्से[6] य ।
गद्दभ[7] लक्खण[8] गंठी[9] अगए[10] रहिए[11] य गणिया[12] य ॥२॥

सीआ साडी दीहं च, तण अवसव्वय च कुचस्स[13] ।
निव्वोदए[14] य गोणे, घोडग-पडण च रुक्खाओ[15] ॥३॥

उवओग - दिट्ठसारा, कम्म – पसग–परिघोलण–विसाला ।
साहुक्कार फलवई, कम्मसमुत्था हवइ बुद्धी ॥१॥

हेरण्णिए[1] करिसए[2], कोलिअ[3] डोवे[4] य मुत्ति[5] घय[6] पवए[7] ।
तुन्नाए[8] वड्ढई[9], पूयइ[10] य वड[11] चित्तकारे[12] य ॥२।

अणुमाण हेउ दिट्ठंत साहिया, वय विवाग परिणामा ।
हिय निस्सेयस फलवई, बुद्धी परिणामिया नाम ॥१॥

अभए[1] सिट्ठि[2] कुमारे[3], देवी[4] उदिओदए हवइ राया[5] ।
साहू य नंदिसेणे[6], धणदत्ते[7] सावग[8] अमच्चे[9] ॥२॥

खमए[10] अमच्चपुत्ते[11], चाणक्के[12] चेव थूलभद्दे[13] य ।
नासिक्कसुंदरिनंदे[14], वइरे[15] परिणामिआ बुद्धी ॥३॥

चलणाहण[16] आमंडे[17], मणी[18] य सप्पे[19] य खग्गी[20] थूभिंदे[21] ।
पारिणामिय–बुद्धीए, एवमाई उदाहरणा ॥४॥

से त्त अस्सुयनिस्सियं ।

से किं तं सुयनिस्सियं ?
सुयनिस्सियं चउव्विहं पण्णत्तं,
तं जहा–
उग्गहे, ईहा, अवाओ, धारणा ।

सुत्तं २७ से किं तं उग्गहे ?

उग्गहे दुविहे पण्णत्ते,

तं जहा–

अत्थुग्गहे य वंजणुग्गहे य ।

सुत्तं २८ से किं तं वंजणुग्गहे ?

वंजणुग्गहे चउव्विहे पण्णत्ते

तं जहा–

(१) सोइंदिय वंजणुग्गहे, (२) घाणिंदिय वंजणुग्गहे,
(३) जिब्भिंदिय वंजणुग्गहे (४) फासिंदिय वंजणुग्गहे ।

से त्तं वंजणुग्गहे ।

सुत्त २९ से किं तं अत्थुग्गहे ?

अत्थुग्गहे छव्विहे पण्णत्ते,

तं जहा–

१ सोइंदिय–अत्थुग्गहे
२ चक्खिंदिय–अत्थुग्गहे
३ घाणिंदिय–अत्थुग्गहे
४ जिब्भिंदिय–अत्थुग्गहे
५ फासिंदिय–अत्थुग्गहे
६ नोइंदिय–अत्थुग्गहे ।

सुत्त ३० तस्स ण इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावंजणा

पंच नामधिज्जा भवंति,

तं जहा–

१ ओगेण्हया
२ अवधारणया
३ सवणया
४ अवलंबणया
५ मेहा ।
से त्तं उग्गहे ।

सुत्तं ३१ से किं तं ईहा ?

तं जहा–
(१) सोइंदिय–ईहा (२) चक्खिंदिय–ईहा
(३) घाणिंदिय–ईहा (४) जिब्भिंदिय–ईहा
(५) फासिंदिय–ईहा (६) नो इंदिय–ईहा ।

तीसे ण इमे एगट्ठिया, नाणाघोसा, नाणावंजणा पंच नामधिज्जा भवंति,

तं जहा–
१ आभोगणया २ मग्गणया
३ गवेसणया ४ चिंता ५ विमंसा ।
से त्तं ईहा ।

सुत्त ३२ से किं तं अवाए ?

अवाए छव्विहे पण्णत्ते,
तं जहा–

(१) सोइंदिय-अवाए (२) चक्खिंदिय-अवाए
(३) घाणिंदिय-अवाए (४) जिब्भिंदिय-अवाए
(५) फासिंदिय-अवाए (६) णो-इंदिय-अवाए,

तस्स ण इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावंजणा
पच नामधिज्जा भवंति,

१ आउट्टणया २ पच्चाउट्टणया
३ अवाए ४ वुद्धी ५ विण्णाणे ।

से त्त अवाए ।

सुत्त ३३ से किं त धारणा ?

धारणा छव्विहा पण्णत्ता,

तं जहा–

(१) सोइंदिय-धारणा (२) चक्खिंदिय-धारणा
(३) घाणिंदिय-धारणा (४) जिब्भिंदिय-धारणा
(५) फासिंदिय-धारणा (६) नो-इंदिय-धारणा ।

तीसे ण इमे एगट्ठिया, नाणाघोसा, नाणावंजणा
पच नामधिज्जा भवंति,

त जहा–

१ धरणा २ धारणा ३ ठवणा ४ पइट्ठा ५ कोट्ठे ।
से त्त धारणा ।

सुत्तं ३४ उग्गहे इक्कसमइए,

अंतोमुहुत्तिया ईहा,

अंतोमुहुत्तिए अवाए,

धारणा संखेज्जं वा कालं, असंखेज्जं वा कालं ।

सुत्तं ३५ एवं अट्ठावीसइविहस्स आभिणिबोहियनाणस्स

वंजणुग्गहस्स परूवणं करिस्सामि

पडिबोहगदिट्ठंतेणं मल्लगदिट्ठंतेणं य ।

से किं तं पडिबोहगदिट्ठंतेणं ?

पडिबोहगदिट्ठंतेणं–

से जहा नामए केइ पुरिसे

कंचि पुरिसं सुत्तं पडिबोहेज्जा "अमुगा अमुगत्ति" ?

तत्थ चोयगे पन्नवगं एवं वयासी–

कि एगसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति

दुसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति

ाव–दससमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति

संखिज्जसमय पविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति

असंखिज्जसमय पविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति ?

एवं वयंतं चोयगं पण्णवए एवं वयासी–

"नो एगसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति,

नो दुसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति,

जाव—नो दससमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति,

नो संखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति

असंखिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छंति ।

से त्त पडिबोहगदिट्ठंतेणं ।

से किं तं मल्लगदिट्ठंतेणं ?

मल्लगदिट्ठंतेणं—

से जहानामए केइ पुरिसे

आवागसीसाओ मल्लगं गहाय

तत्थेगं उदगबिंदू पक्खेविज्जा से नट्ठे,

अण्णेवि पक्खित्ते सेऽवि नट्ठे,

एवं पक्खिप्पमाणेसु पक्खिप्पमाणेसु—

होही से उदगबिंदू, जे णं तं मल्लगं रावेहिइ त्ति,

होही से उदगबिंदू, जे णं तंसि मल्लगंसि ठाहित्ति,

होही से उदगबिंदू, जे णं तं मल्लगं भरिहित्ति,

होही से उदगबिंदू, जे णं तं मल्लगं पवाहेहिति ।

एवामेव पक्खिप्पमाणेहिं पक्खिप्पमाणेहिं—

अणंतेहिं पुग्गलेहिं जाहे तं वंजणं पूरियं होइ—

ताहे 'हुं' ति करेइ, नो चेव णं जाणइ "के एस सद्दाइ" ?

तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ "अमुगे एस सद्दाइ" ।

तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ ।

तओ धारणं पविसइ,

तओ ण धारेइ सखिज्ज वा काल, असखिज्ज वा काल ।

से जहा नामए केइ पुरिसे

अव्वत्तं सद्द सुणिज्जा, तेण सद्दो त्ति उग्गहिए

नो चेव ण जाणइ, 'के वेस सद्दाइ ?'.

तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ 'अमुगे एस सद्दे ।'

तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगय हवइ ।

तओ धारणं पविसइ,

तओ णं धारेइ संखिज्जं वा काल, असखेज्ज वा काल।

से जहानामए केइ पुरिसे–

अव्वत्तं रूवं पासिज्जा, तेण रूवे त्ति उग्गहिए.

नो चेव ण जाणइ 'के वेस रूव त्ति' ?

तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ 'अमुगे एस रूवे' ।

तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगय हवइ ।

तओ धारण पविसइ,

तओ णं धारेइ सखेज्ज वा काल, असखेज्ज वा काल ।

से जहा नामए केइ पुरिसे–

अवत्त गधं अग्घाइज्जा, तेण गध त्ति उग्गहिए

नो चेव ण जाणइ 'के वेस गधे त्ति' ?

तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ 'अमुगे एस गधे ।"

तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ ।

तओ धारणं पविसइ,
तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं, असंखेज्जं वा कालं ।
से जहा नामए केइ पुरिसे—
अव्वत्तं रसं आसाइज्जा, तेणं रसो त्ति उग्गहिए,
नो चेव णं जाणइ "के वेस रसो त्ति" ?
तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ "अमुगे एस रसे" ।
तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ ।
तओ धारणं पविसइ,
तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं, असंखेज्जं वा कालं ।
से जहा नामए केइ पुरिसे—
अव्वत्तं फासं पडिसंवेइज्जा, तेणं फासेत्ति उग्गहिए
नो चेव णं जाणइ "के वेस फासो त्ति ?"
तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ "अमुगे एस फासे"।
तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगयं हवइ,
तओ धारणं पविसइ,
तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं, असंखेज्जं वा कालं ।
से जहा नामए केइ पुरिसे—
अव्वत्तं सुमिणं पासिज्जा, तेणं सुमिणो त्ति उग्गहिए,
नो चेव णं जाणइ 'के वेस सुमिणो त्ति ?'
तओ ईहं पविसइ, तओ जाणइ 'अमुगे एस सुमिणे ।'

तओ अवायं पविसइ, तओ से उवगय हवइ ।

तओ धारण पविसइ,

तओ णं धारेइ संखेज्जं वा काल, असंखेज्जं वा कालं ।

से त्तं मल्लगदिट्ठंते णं ।

सुत्तं ३६ त समासओ चउव्विह पण्णत्त,

तं जहा—

१ दव्वओ, २ खित्तओ, ३ कालओ, ४ भावओ ।

तत्थ दव्वओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं
सव्वाइं दव्वाइं जाणइ न पासइ ।

खेत्तओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं
सव्वं खेत्तं जाणइ, न पासइ ।

कालओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं
सव्व कालं जाणइ, न पासइ ।

भावओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं
सव्वे भावे जाणइ, न पासइ ।

गाहाओ—

उग्गह ईहाऽवाओ य, धारणा एव हुति चत्तारि ।
आभिणिबोहियनाणस्स, भेयवत्थू समासेणं ।।१।।

अत्थाणं उग्गहणम्मि, उग्गहो तह वियालणे ईहा ।
ववसायम्मि अवाओ, धरणं पुण धारण विंति ।।२।।
उग्गहं इक्कं समयं, ईहावाया मुहुत्तमद्ध तु ।
कालमसख सखं च, धारणा होइ नायव्वा ।।३।।
पुट्ठं सुणेइ सद्द, रूव पुण पासइ अपुट्ठ तु ।
गंधं रस च फासं च, बद्धपुट्ठ वियागरे ।।४।।
भासा समसेढीओ, सद्द जं सुणइ मीसिय सुणइ ।
वीसेढी पुण सद्दं, सुणेइ नियमा पराघाए ।।५।।
ईहा अपोह वीमसा, मग्गणा य गवसेणा ।
सन्ना सई मई पन्ना, सव्व आभिणिवोहिय ।।६।।
से त्तं आभिणिवोहियनाण—परोक्ख ।
से त्तं मइनाण ।

श्रुतज्ञानम्ः—

सुत्तं ३७ से किं तं सुयनाणपरोक्ख ?
सुयनाणपरोक्खं चोद्दसविहं पण्णत्त,
तं जहा—
१ अक्खरसुयं, २ अणक्खरसुय,
३ सण्णिसुय, ४ असण्णिसुयं,
५ सम्मसुयं, ६ मिच्छासुय,
७ साइयं, ८ अणाइय,

९ सपज्जवसिय १० अपज्जवसिय,

११ गमियं, १२ अगमिय,

१३ अगपविट्ठं, १४ अणगपविट्ठ ।

सुत्तं ३८ (१) से किं तं अक्खरसुयं ?

अक्खरसुयं तिविहं पण्णत्तं,

तं जहा—

१ सन्नक्खरं, २ वंजणक्खर, ३ लद्धिअक्खरं ।

(१) से किं तं सन्नक्खरं ?

सन्नक्खरं- अक्खरस्स संठाणागिई ।

से त्तं सन्नक्खर ?

(२) से किं तं वंजणक्खरं ?

वंजणक्खरं—अक्खरस्स वंजणाभिलावो ।

से त्तं वंजणक्खरं ।

(३) से किं तं लद्धि-अक्खर ?

लद्धिअक्खरं-अक्खर-लद्धियस्स लद्धि-अक्खर समुप्पज्जइ,

त जहा—

१ सोइंदिय-लद्धि-अक्खरं,

२ चक्खिदिय-लद्धि-अक्खर,

३ घाणिंदिय-लद्धि-अक्खरं,

४ रसणिंदिय-लद्धि-अक्खरं,

५ फासिंदिय-लद्धि-अक्खरं,

६ नोइंदिय-लद्धि-अक्खरं,

से त्तं लद्धि-अक्खरं ।

से त्तं अक्खरसुयं ।

(२) से किं तं अणक्खरसुयं ?

अणक्खरसुयं अणेगविहं पण्णत्तं,

तं जहा–

गाहा–ऊससियं नीससियं, निच्छूढं खासियं च छीयं च ।
निस्सिंघियमणुसारं, अणक्खरं छेलियाईयं ॥१॥

से त्तं अणक्खरसुयं ।

सुत्त ३९ (३) से किं तं सण्णिसुयं ?

सण्णिसुयं तिविहं पण्णत्तं,

तं जहा–

१ कालिओवएसेणं, २ हेऊवएसेणं, ३ दिट्ठिवाओवएसेणं ।

(१) से किं तं कालिओवएसेणं ?

कालिओवएसेणं—जस्स णं अत्थि-ईहा, अवोहो, मग्गणा,

गवेसणा, चिता, वीमंसा,

से णं सण्णी त्ति लब्भइ,

जस्स णं नत्थि ईहा, अवोहो, मग्गणा, गवेसणा,

चिता, वीमंसा, से ण असण्णी त्ति लब्भइ ।

से त्तं कालिओवएसेणं ।

(२) से किं तं हेऊवएसेण ?

हेउवएसेणं–जस्स णं अत्थि अभिसंधारणपुव्विया करणसत्ती

से णं सण्णी त्ति लब्भइ,

जस्स णं णत्थि अभिसंधारणपुव्विया करणसत्ती

से णं असण्णी त्ति लब्भइ,

से त्तं हेऊवएसेणं ।

(३-४) से किं त्तं दिट्ठिवाओवएसेणं ?

दिट्ठिवाओवएसेणं–सण्णिसुयस्स खओवसमेणं–

सण्णी लब्भइ,

असण्णिसुयस्स खओवसमेण–

असण्णी लब्भइ ।

से त्त दिट्ठिवाओवएसेणं ।

से त्तं सण्णिसुयं, से त्त असण्णिसुयं ।

सुत्तं ४० (५) से किं त सम्मसुय ?

सम्मसुयं–जं इम अरिहंतेहिं भगवंतेहिं

उप्पण्णनाणदंसणधरेहिं

तेलुक्कनिरिक्खमहियपूइएहिं

तीय-पडुप्पण्ण-मणागय जाणएहिं

सव्वण्णूहिं सव्वदरिसीहिं

पणीयं दुवालसंगं गणिपिडग.–

तं जहा–

१ आयारो २ सूयगडो ३ ठाण

४ समवाओ ५ विवाहपण्णत्ती ६ नायाधम्मकहाओ

७ उवासगदसाओ ८ अंतगडदसाओ ९ अणुत्तरोववाइयदसाओ

१० पण्हावागरणं ११ विवागसुयं १२ दिट्ठिवाओ ।

इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं–

चोद्दस पुव्विस्स सम्मसुय,

अभिण्णदसपुव्विस्स सम्मसुयं,

तेण परं भिण्णेसु भयणा ।

से त्तं सम्मसुयं ।

सुत्त ४१ (६) से किं तं मिच्छासुय ?

मिच्छासुयं–जं इम अण्णाणिएहिं मिच्छादिट्ठिएहिं–

सच्छंदबुद्धि–मइविगप्पियं.

तं जहा—

भारहं, रामायणं, भीमासुरुक्ख,

कोडिल्लयं, सगडभद्दियाओ, खोडमुहं

कप्पासियं, नागसुहुमं, कणगसत्तरी,

वइसेसियं, बुद्धवयणं, तेरासियं,

काविलियं, लोगाययं, सट्ठितंतं,

माढरं, पुराणं, वागरणं,

भागवयं, पायंजलि, पुस्सदेवयं,

लेहं, गणियं, सउणरुयं, नाडयाइं,

अहवा बावत्तरि कलाओ,

चत्तारि य वेया संगोवंगा,

एयाइं मिच्छादिट्ठिस्स मिच्छत्तपरिग्गहियाइं मिच्छासुय ।

एयाइं चेव सम्मदिट्ठिस्स सम्मत्तपरिग्गहियाइं सम्मसुय ।

अहवा मिच्छादिट्ठिस्स वि एयाइं चेव सम्मसुय ।

कम्हा ?

सम्मत्तहेउत्तणओ ।

जम्हा ते मिच्छदिट्ठिओ

तेहिं चेव समएहिं चोइया समाणा

केइ सपक्खदिट्ठीओ चयंति ।

से त्तं मिच्छासुयं ।

सुत्तं ४२ (७-८) से किं तं साइयं सपज्जवसियं
(९-१०) अणाइयं अपज्जवसियं च ?
इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं
वुच्छित्तिनयट्ठयाए साइयं सपज्जवसियं,
अव्वुच्छित्तिनयट्ठयाए अणाइयं अपज्जवसियं ।
तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं,

तं जहा–
दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ
तत्थ दव्वओ णं सम्मसुयं एगं पुरिसं पडुच्च–
साइयं सपज्जवसियं,
बहवे पुरिसे य पडुच्च अणाइयं अपज्जवसियं ।
खेत्तओ णं पंच भरहाइं, पंच एरवयाइं पडुच्च–
साइयं सपज्जवसियं,
पंच महाविदेहाइं पडुच्च–अणाइयं अपज्जवसियं ।
कालओ णं उस्सप्पिणिं ओसप्पिणिं च पडुच्च–
साइयं सपज्जवसियं,
नो उस्सप्पिणिं नो ओसप्पिणिं पडुच्च–
अणाइयं अपज्जवसियं ।
भावओ णं जे जया जिणपण्णत्ता भावा

आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति

तया ते भावे पडुच्च साइय सपज्जवसियं,
खाओवसमियं पुण भावं पडुच्च अणाइयं अपज्जवसियं ।

अहवा भवसिद्धिस्स सुयं साइयं सपज्जवसियं, च,
अभवसिद्धियस्स सुयं अणाइयं अपज्जवसियं च ।
सव्वागासपएसग्गं सव्वागासपएसेहिं
अणंतगुणियं पज्जवक्खरं निप्फज्जइ,
सव्वजीवाणं पि य णं–
अक्खरस्स अणंतभागो निच्चुग्घाडिओ चिट्ठइ ।
जइ पुण सो वि आवरिज्जा तेण जीवो अजीवत्तं पावेज्जा
'सुट्ठुवि मेहसमुदए, होइ पभा चंदसूराणं'–
से त्तं साइयं सपज्जवसियं ।
से त्तं अणाइयं अपज्जवसियं ।

सुत्तं ४३ (११) से किं तं गमियं ?
गमियं दिट्ठिवाओ ।

(१२) से किं तं अगमियं ?
अगमियं कालियं सुयं ।

से त्तं गमिय, से त्त अगमियं ।

अहवा तं समासओ दुविह पण्णत्त,

तं जहा–

(१३-१४) १ अगपविट्ठ २ अगबाहिर च।

से किं त अगबाहिरं ?

अगबाहिरं दुविहं पण्णत्त,

त जहा–

१ आवसय च २ आवस्सयवइरित्तं, च ।

(१) से किं त आवस्सय ?

आवस्सय छव्विह पण्णत्तं,

तं जहा–

१ सामाइय २ चउवीसत्थओ ३ वदणयं
४ पडिक्कमणं ५ काउस्सगो ६ पच्चक्खाणं ।

से त्तं आवस्सय ।

(२) से कि तं आवस्सयवइरित्त ?

आवस्सयवइरित्त दुविह पण्णत्त,

तं जहा–

१ कालिय च, २ उक्कालिय च।

से किं तं उक्कालियं ?

उक्कालियं अणेगविहं पण्णत्तं,

त जहा--

दसवेआलियं[1], कप्पियाकप्पियं[2],

चुल्लकप्पसुयं[3] महाकप्पसुयं[4]

उववाइयं[5] रायपसेणियं[6] जीवाभिगमो,[7]

पण्णवणा[8], महापण्णवणा[9], पमायप्पमायं[10],

नंदी[11], अणुओगदाराइं[12], देविंदत्थओ[13],

तंदुलवेयालियं[14], चंदाविज्जयं[15], सूरपण्णत्ती[16],

पोरिसिमंडलं[17], मंडलपवेसो[18], विज्जाचरणविणिच्छओ[19],

गणिविज्जा[20], झाणविभत्ती[21], मरणविभत्ती[22],

आयविसोही[23], वीयरागसुयं[24], संलेहणासुयं[25],

विहारकप्पो[26], चरणविही[27], आउरपच्चक्खाणं[28],

महापच्चक्खाणं[29] एवमाइ ।

से त्तं उक्कालियं ।

से किं तं कालियं ?

कालियं अणेगविहं पण्णत्तं,

तं जहा--

उत्तरज्झयणाइं,[1], दसाओ[2], कप्पो[3], ववहारो[4],

निसीह[5], महानिसीह[6], इसिभासियाइं[7],

जंबूदीवपण्णत्ती[8], दीवसागरपन्नत्ती,[9] चंदपन्नत्ती[10],

खुड्डियाविमाणविभत्ती[11], महल्लियाविमाणविभत्ती[12],

अंगचूलिया[13] वग्गचूलिया[14], विवाहचूलिया[15],

अरुणोववाए[16], वरुणोववाए[17], गरुलोववाए[18],

धरणोववाए[19], वेसमणोववाए[20],

वेलंधरोववाए[21], देविंदोववाए[22],

उट्ठाणसुयं[23] समुट्ठाणसुयं[24],

नागपरियावणियाओ[25], निरयावलियाओ[26],

कप्पियाओ[27], कप्पवडंसियाओ[28],

पुप्फियाओ[29], पुप्फचूलियाओ[30], वण्हीदसाओ[31],

आसीविस-भावणाणं[1], दिट्ठिविस-भाविणाणं[2],

सुमिण-भावणाणं[3], महासुमिण-भावणाणं[4]

तेयग्गी निसग्गाणं[5]

एवमाइयाइं चउरासीइं पइन्नगसहस्साइं—

भगवओ अरहओ उसहसामिस्स आइतित्थयरस्स ।

तहा संखिज्जाइं पइन्नगसहस्साइं—मज्झिमगाणं जिणवराणं ।

चोद्दसपइन्नगसहस्साइं भगवओ वद्धमाणसामिस्स,

अहवा जस्स जत्तिया सीसा

उप्पत्तिआए, वेणइयाइ, कम्मयाए, पारिणामियाए

चउव्विहाए बुद्धीए उववेया,

तस्स तत्तियाइं पइण्णगसहस्साइं ।

पत्तेअबुद्धा वि तत्तिया चेव ।

से त्तं कालिय । से त्तं आवस्सयवइरित्तं ।

से त्तं अणंगपविट्ठं ।

सुत्तं ४४ से किं तं अंगपविट्ठं ?

अंगपविट्ठं दुवालसविहं पण्णत्तं

तं जहा–

१ आयारो २ सूयगडो ३ ठाण

४ समवाओ ५ विवाहपन्नती ६ णायाधम्मकहाओ

७ उवासगदसाओ ८ अंतगडदसाओ ९ अणुत्तरोववाइयदसाओ

१० पण्हावागरणाइं ११ विवागसुयं १२ दिट्ठिवाओ ।

सुत्तं ४५ से कि तं आयारे ?

आयारे णं समणाणं निग्गंथाणं

आयार-गोयर-विणय-वेणइय-सिक्खा–

भासा-अभासा-चरण-करण-जाया-माया–

वित्तिओ आघविज्जंति ।

से समासओ पंचविहे पण्णत्ते,

तं जहा-

१ नाणायारे, २ दंसणायारे, ३ चरित्तायारे,

४ तवायारे, ५ वीरियायारे ।

आयारे णं परित्ता वायणा,

संखेज्जा सिलोगा, संखिज्जा वेढा,

संखेज्जा अणुओगदारा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ

संखिज्जाओ पडिवत्तीओ,

से णं अंगट्ठयाए पढमे अंगे,

दो सुयक्खंधा, पणवीसं अज्झयणा,

पंचासीई उद्देसणकाला, पचासीई समुद्देसणकाला,

अट्ठारसपयसहस्साइं पयग्गेण,

संखिज्जा अक्खरा, अणंतागमा, अणंता पज्जवा,

परित्ता तसा, अणंता थावरा,

सासय-कड-निबद्ध-निकाइया, जिणपण्णत्ता भावा

आघविज्जंति, पन्नविज्जंति, परूविज्जंति

दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।

से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया

एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।

से त्तं आयारे ।

सुत्तं ४६ से किं तं सूयगडे ?

सूयगडे ण लोए सूइज्जइ, अलोए सूइज्जइ,
लोयालोए सूइज्जइ,
जीवा सूइज्जंति, अजीवा सूइज्जंति, जीवाजीवा सूइज्जंति
ससमए सूइज्जइ, परसमइ सूइज्जइ, ससमय-परसमए सूइज्जइ
सूयगडे ण असीयस्स किरियावाइसयस्स,
चउरासीइए अकिरियावाईणं
सत्तट्ठीए अण्णाणिआवाईणं-
बत्तीसाए वेणइज्ज-वाइण-
तिण्हं तेसट्ठाण पासडियसयाण
वूहं किच्चा ससमए ठाविज्जइ ।
सूयगडेण परित्ता वायणा,
संखिज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा,
संखेज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ-निजुत्तीओ,
(संखिज्जाओ संगहणीओ) संखिज्जाओ पडिवत्तीओ ।
से णं अंगट्ठयाए बिइए अंगे,
दो सुयक्खंधा, तेवीसं अज्झयणा,
तेत्तीसं उद्देसणकाला, तेत्तीसं समुद्देसणकाला,
छत्तीसं पयसहस्साणि पयग्गेणं,

संखिज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ ।

से णं अंगट्ठयाए तईए अंगे,
एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा,
एगवीसं उद्देसणकाला, एगवीसं समुद्देसणकाला,
बावत्तरि पयसहस्साइं पयग्गेणं,
संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा,
सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।
से त्तं ठाणे ।

सुत्तं ४८ से किं तं समवाए ?

समवाए णं जीवा समासिज्जंति, अजीवा समासिज्जंति,
जीवाजीवा समासिज्जंति ।

ससमए समासिज्जइ, परसमए समासिज्जइ, ससमय-
परसमए समासिज्जइ ।

लोए समासिज्जइ, अलोए समासिज्जइ, लोयालोए समासिज्जइ ।

समवाए णं एगाइयाण एगुत्तरियाणं–
ठाणसय-विवड्ढयाण भावाण परूवणा आघविज्जइ ।
दुवालसविहस्स य गणिपिडगस्स पल्लवग्गे समासिज्जइ ।
समवायस्सणं परित्ता वायणा,
संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा
संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ ।

से णं अंगट्ठयाए चउत्थे अंगे–
एगे सुयक्खंधे, एगे अज्झयणे,
एगे उद्देसणकाले, एगे समुद्देसणकाले,
एगे चोयाले पय-सयसहस्से पयग्गेणं,
संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा
सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया,
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।
से त्तं समवाए ।

सुत्तं ४९ से किं तं विवाहे ?

विवाहे णं जीवा विआहिज्जंति, अजीवा विआहिज्जंति, जीवाजीवा विआहिज्जंति,

ससमए विआहिज्जइ, परसमए विआहिज्जइ, ससमय-परसमए विआहिज्जइ,

लोए विआहिज्जइ, अलोए विआहिज्जइ, लोयालोए विआहिज्जइ,

विवाहस्स णं परित्ता वायणा,
संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा।

संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखिज्जाओ संगहणीओ संखिज्जाओ पडिवत्तीओ ।

से णं अंगट्ठयाए पंचमे अंगे--

एगे सुयक्खंधे, एगे साइरेगे अज्झयणसए,
दस उद्देसगसहस्साइं, दससमुद्देसगसहस्साइं,
छत्तीसं वागरण-सहस्साइं,
दो लक्खा अट्ठासीइं पयसहस्साइं पयग्गेणं,
संखिज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा,
सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति,

दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया,
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।
से त्तं विवाहे ।

सुत्त ५० से किं तं नायाधम्मकहाओ ?

नायाधम्मकहासु णं–
नायाणं नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं,
रायाणो, अम्मापियरो,
धम्मायरिया, धम्मकहाओ इहलोइय-परलोइया इड्ढिविसेसा,
भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, परिआया,
सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं, संलेहणाओ,
भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं, देवलोगगमणाइं,
सुकुलपच्चायाईओ, पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ
य आघविज्जंति ।

दस धम्मकहाणं वग्गा,
तत्थ णं एगमेगाए धम्मकहाए पंच पंच अक्खाइयासयाइं,
एगमेगाए अक्खाइयाए पंच पंच उवक्खाइयासयाइं
एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइय-उवक्खाइयासयाइं,
एवामेव सपुव्वावरेणं अद्धुट्ठाओ कहाणगकोडीओ–
हवंति त्ति समक्खायं ।
नायाधम्मकहाणं परित्ता वायणा

संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा,
संखिज्जा सिलोगा संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ ।
से णं अंगट्ठयाए छट्ठे अंगे–

दो सुयक्खंधा
एगूणवीसं अज्झयणा,
एगूणवीसं उद्देसणकाला,
एगूणवीसं समुद्देसणकाला,
संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेण,
संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-निबद्ध-निकाइया
जिणपण्णत्ता भावा–

आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति,
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।

से एवं नाया, एवं नाया एवं विण्णाया,
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।
से तं णायाधम्मकहाओ ।

सुत्तं ५१ से किं तं उवासगदसाओ ?

उवासगदसासु णं समणोवासयाणं–
नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं,

आघविज्जंति, पन्नविज्जंति, परूविज्जंति
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।
से त्तं उवासगदसाओ ।

सुत्तं ५२ से किं तं अंतगडदसाओ ?
अंतगडदसासु णं अंतगडाणं–
नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं
रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ,
इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा,
भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, परिआया,
सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, संलेहणाओ,
भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं,
अंतकिरियाओ य आघविज्जंति ।
अंतगडदसासु णं परित्ता वायणा,
संखिज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा,
संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखिज्जाओ संगहणीओ संखिज्जाओ पडिवत्तीओ ।
से णं अंगट्ठयाए अट्ठमे अंगे–

एगे सुयक्खंधे, अट्ठ वग्गा,
अट्ठ उद्देसणकाला, अट्ठ समुद्देसणकाला,
संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेण,
संखिज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा,
सासय-कड-निवद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति,
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णया,
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।
से त्तं अंतगडदसाओ ।

सुत्तं ५३ से किं तं अणुत्तरोववाइगदसाओ ?

अणुत्तरोववाइयदसासु णं अणुत्तरोववाइयाणं–
नगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणसंडाइं, समोसरणाइं,
रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ,
इह लोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा,
भोगपरिच्चागा, पव्वज्जाओ, परिआया,
सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, पडिमाओ,
उवसग्गा, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं,
अणुत्तरोववाइयत्ते उववत्ती सुकुलपच्चायाइओ,

पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ य आघविज्जंति ।

अणुत्तरोववाइयदसासु णं परित्ता वायणा,
संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा,
संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ ।

से णं अंगट्ठयाए नवमे अंगे,
एगे सुयक्खंधे, तिन्नि वग्गा,
तिन्नि उद्देसणकाला, तिन्नि समुद्देसणकाला,
संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं,

संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा,
सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।

से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।
से त्तं अणुत्तरोववाइयदसाओ ।

सुत्तं ५४ से किं तं पण्हावागरणाइं ?

पण्हावागरणेसु णं अट्ठुत्तरं पसिणसयं,
अट्ठुत्तरं अपसिणसयं

अट्ठुत्तरं पसिणापसिणसयं,
तं जहा—
अंगुट्ठपसिणाइं, बाहुपसिणाइं, अद्दागपसिणाइं
अन्ने वि विचित्ता विज्जाइसया,
नागसुवण्णेहिं सद्धिं दिव्वा संवाया आघविज्जंति ।
पण्हावागरणाणं परित्ता वायणा,
संखिज्जा अणुओगदारा, संखिज्जा वेढा,
संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पडिवत्तीओ ।
से णं अंगट्ठयाए दसमे अंगे,
एगे सुयक्खंधे, पणयालीसं अज्झयणा,
पणयालीसं उद्देसणकाला, पणयालीसं समुद्देसणकाला,
संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं,
संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा
सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया,
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।
से त्तं पण्हावागरणाइं ।

सुत्तं ५५ से किं तं विवागसुयं ?

विवागसुए णं सुकडदुक्कडाण कम्माण–
फलविवागे आघविज्जइ ।
तत्थ णं दस दुह-विवागा, दस सुह-विवागा ।
से किं तं दुह-विवागा ?
दुह-विवागेसु णं दुहविवागाण–
नगराइं, उज्जाणाइं, वणसंडाइं, चेइयाइं, समोसरणाइं
रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ,
इहलोइय-परलोइया इड्ढिविसेसा,
निरयगमणाइं, संसारभव-पवचा, दुहपरंपराओ,
दुक्कुलपच्चायाइओ, दुल्लहबोहियत्तं आघविज्जइ ।
से त्तं दुहविवागा ।

से किं तं सुहविवागा ?
सुहविवागेसु णं सुह-विवागाण
नगराइं, उज्जाणाइं वणसंडाइं चेइयाइं, समोसरणाइं,
रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ,
इहलोइय-परलोइया इड्ढिविसेसा,
भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, परिआया, सुयपरिग्गहा,
तवोवहाणाइं, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं
देवलोगगमणाइं, सुहपरंपराओ, सुकुलपच्चायाईओ,
पुणबोहिलाभा, अंतकिरियाओ य आघविज्जंति ।
सेत्तं सुहविवागा ।

विवागसुयस्स णं परित्ता वायणा,
संखिज्जा अणुओगदारा, सखिज्जा वेढा,
संखिज्जा सिलोगा, सखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
सखिज्जाओ सगहणीओ, सखिज्जाओ पडिवत्तीओ ।
से ण अंगट्ठयाए इक्कारसमे अगे,
दो सुयक्खधा वीस अज्झयणा,
वीसं उद्देसणकाला, वीस समुद्देसणकाला,
सखेज्जाइ पयसहस्साइ पयग्गेण,
सखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
परित्ता तसा, अणता थावरा,
सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति,
दसिज्जति, निदंसिज्जति, उवदंसिज्जंति ।
से एव आया, एव नाया, एवं विण्णाया,
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।
से त्तं विवागसुयं ।

सुत्त ५६ से किं त दिट्ठिवाए ?
दिट्ठिवाए ण सव्वभावपरूवणा आघविज्जइ ।
से समासओ पचविहे पण्णत्ते,
तं जहा–
१ परिकम्मे २ सुत्ताइ ३ पुव्वगए ४ अणुओगे, ५-चूलिया ।

से किं तं परिकम्मे ?

परिकम्मे सत्तविहे पण्णत्ते,

तं जहा–

१ सिद्धसेणिया-परिकम्मे

२ मणुस्ससेणिया-परिकम्मे

३ पुट्ठसेणिया-परिकम्मे

४ ओगाढसेणिया-परिकम्मे

५ उवसंपज्जणसेणिया परिकम्मे

६ विप्पजहणसेणिया-परिकम्मे

७ चुयाचुयसेणिया-परिकम्मे ।

से किं तं सिद्धसेणिया परिकम्मे ?

सिद्धसेणियापरिकम्मे चउद्दसविहे पण्णत्ते,

तं जहा–

१ माउगापयाइं २ एगट्ठियपयाइं

३ अट्ठापयाइं ४ पाढो आगासपयाइं

५ केउभूयं ६ रासिबद्धं

७ एगगुणं ८ दुगुणं

९ तिगुणं १० केउभूयं

११ पडिग्गहो १२ संसार पडिग्गहो

१३ नंदावत्त १४ सिद्धावत्तं।

से त्तं सिद्ध-सेणिया-परिकम्मे । (१)

से किं तं मणुस्ससेणिया-परिकम्मे ?

मणुस्स-सेणिया-परिकम्मे चउद्दसविहे पण्णत्ते,

तं जहा–

१ माउगापयाइ २ एगट्ठियपयाइं

३ अट्ठापयाइं ४ पाढो आगासपयाइ

५ केउभूयं ६ रासिबद्धं

७ एगगुणं ८ दुगुणं

९ तिगुणं १० केउभूय

११ पडिग्गहो १२ संसार पडिग्गहो

१३ नंदावत्तं १४ मणुस्सावत्तं ।

से त्तं मणुस्ससेणिया-परिकम्मे । (२)

से किं तं पुट्ठसेणियापरिकम्मे ?

पुट्ठसेणिया-परिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते,

तं जहा–

१ पाढो आगासपयाइं २ केउभूयं

३ रासिबद्धं ४ एगगुणं

५ दुगुण ६ तिगुणं

७ केउभूयं ८ पडिग्गहो

९ संसारपडिग्गहो १० नदावत्तं

११ पुट्ठावत्तं ।

से त्तं पुट्ठसेणियापरिकम्मे । (३)

से किं तं ओगाढसेणिया परिकम्मे ?

ओगाढसेणिया परिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते ।

तं जहा–

१ पाढोआगासपयाइं २ केउभूय

३ रासिबद्ध ४ एगगुण

५ दुगुणं ६ तिगुणं

७ केउभूयं ८ पडिग्गहो

९ ससारपडिग्गहो १० नंदावत्त

११ ओगाढावत्त ।

से त्तं ओगाढसेणिया-परिकम्मे ? (४)

से किं त उवसपज्जणसेणिया-परिकम्मे ?

उवसपज्जणसेणिया-परिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते,

त जहा–

१ पाढोआगासपयाइं २ केउभूयं

३ रासिबद्धं ४ एगगुणं

५ दुगुणं ६ तिगुणं

७ केउभूयं ८ पडिग्गहो

९ ससारपडिग्गहो १० नंदावत्तं
११ उवसपज्जणावत्तं ।
से त्त उवसपज्जणसेणिया-परिकम्मे । (५)
से किं त विप्पजहणसेणिया-परिकम्मे ?
विप्पजहणसेणिया-परिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते,
तं जहा–
१ पाढोआगासपयाइ २ केउभूय
३ रासिबद्धं ४ एगगुण
५ दुगुणं ६ तिगुणं
७ केउभूय ८ पडिग्गहो
९ ससारपडिग्गहो १० नदावत्त .
११ विप्पजहणावत्त ।
से त्त विप्पजहणसेणिया परिकम्मे । (६)
से किं त चुयाचुयसेणिया परिकम्मे ?
चुयाचुयसेणिया-परिकम्मे इक्कारसविहे पण्णत्ते,
त जहा–
१ पाढोआगासपयाइ २ केउभूयं
३ रासिबद्धं ४ एगगुणं
५ दुगुण ६ तिगुण
७ केउभूयं ८ पडिग्गहो

९ संसारपडिग्गहो १० नंदावत्त
११ चुयाचुयवत्तं ।
से त्तं चुयाचुयसेणिया-परिकम्मे । (७)
छ-चउक्क नइयाइं, सत्त तेरासियाइं,
से त्तं परिकम्मे ।

से किं तं सुत्ताइं ?
सुत्ताइं बावीसं पण्णत्ताइ,
तं जहा—
१ उज्जुसुयं २ परिणयापरिणय ३ बहुभंगियं
४ विजयचरियं ५ अणंतरं ६ परंपरं
७ मासाणं ८ संजूहं ९ संभिण्णं
१० आहव्वायं ११ सोवत्थियावत्तं १२ नंदावत्तं
१३ बहुलं १४ पुट्ठापुट्ठं १५ वियावत्तं
१६ एवंभूय १७ दुयावत्तं १८ वत्तमाणपय
१९ समभिरूढं २० सव्वओभद्दं २१ पण्णासं
२२ दुप्पडिग्गहं ।
इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं छिन्न-छेयनइयाणि—
ससमयसुत्तपरिवाडीए ।
इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं अच्छिन्नच्छेयनइयाणि—

आजीवियसुत्तपरिवाडिए ।

इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं तिगणइयाणि–

तेरासियसुत्तपरिवाडीए ।

इच्चेइयाइ बावीसं सुत्ताइ चउक्कनइयाणि–

ससमयसुत्तपरिवाडीए ।

एवामेव सपुव्वावरेण अट्ठासीइ सुत्ताइ भवंति त्ति मक्खायं।

से त्तं सुत्ताइं ।

से किं तं पुव्वगए ?

पुव्वगए चउद्दसविहे पण्णत्ते,

तं जहा–

१ उप्पायपुव्वं २ अग्गाणीयं

३ वीरियं ४ अत्थिनत्थि-प्पवायं

५ नाण-प्पवायं ६ सच्चप्पवायं

७ आय-प्पवायं ८ कम्म-प्पवायं

९ पच्चक्खाण-प्पवाय १० विज्जाणु-प्पवायं

११ अवझं १२ पाणाऊ

१३ किरियाविसाल १४ लोकबिंदुसारं ।

१ उप्पायपुव्वस्स णं दसवत्थू, चत्तारि चूलियावत्थू पण्णत्ता,

२ अग्गाणीयपुव्वस्स णं चोद्दसवत्थू, दुवालसचूलियावत्थू पण्णत्ता,

३ वीरियपुव्वस्स णं अट्ठवत्थू, अट्ठ चूलियावत्थू पण्णत्ता,

४ अत्थि-नत्थिप्पवायपुव्वस्स णं अट्ठारस वत्थू, दसचूलियावत्थू पण्णत्ता,

५ नाणप्पवायपुव्वस्स णं बारस वत्थू पण्णत्ता,

६ सच्चप्पवायपुव्वस्स णं दोण्णि वत्थू पण्णत्ता,

७ आयप्पवायपुव्वस्स णं सोलस वत्थू पण्णत्ता,

८ कम्मप्पवायपुव्वस्स ण तीसं वत्थू पण्णत्ता,

९ पच्चक्खाणपुव्वस्स णं वीस वत्थू पण्णत्ता,

१० विज्जाणुप्पवायपुव्वस्स णं पन्नरस वत्थू पण्णत्ता,

११ अवंझपुव्वस्स ण बारस वत्थू पण्णत्ता,

१२ पाणाऊपुव्वस्स ण तेरस वत्थू पण्णत्ता,

१३ किरियाविसालपुव्वस्स ण तीसं वत्थू पण्णत्ता,

१४ लोकबिंदुसारपुव्वस्स णं पणवीसं वत्थू पण्णत्ता,

गाहाओ–

दस[1]-चोद्दस[2]-अट्ठ[3]-अट्ठारसेव[4]-बारस[5]-दुवे[6] य वत्थूणि ।
सोलस[7]-तीसा[8]-वीसा[9]-पन्नरस[10] अणुप्पवायंमि ॥१॥

बारस-इक्कारसमे,[11] बारसमे[12] तेरसेव वत्थूणि ।
तीसा पुण तेरसमे[13], चोद्दसमे[14] पणवीसाओ ॥२॥

चत्तारि-दुवालस-अट्ठ चेव, दस चेव चुल्लवत्थूणि ।
आइल्लाण-चउण्ह, सेसाणं चूलिया नत्थि ॥३॥

से त्तं पुव्वगए ।

से किं तं अणुओगे ?
अणुओगे दुविहे पण्णत्ते,
तं जहा–

१ मूलपढमाणुओगे, २ गंडियाणुओगे य ।
से किं तं मूलपढमाणुओगे ?
मूलपढमाणुओगे णं अरहंताणं भगवंताणं–
पुव्वभवा, देवलोगगमणाइं, आउं, चवणाइं,
जम्मणाणि, अभिसेया, रायवरसिरीओ,
पव्वज्जाओ, तवा य उग्गा,
केवलनाणुप्पयाओ, तित्थ पवत्तणाणि य,
सीसा, गणा, गणहरा, अज्जा, पवत्तिणीओ,
संघस्स चउव्विहस्स जं च परिमाणं,
जिण-मणपज्जव-ओहिनाणी,
सम्मत्तसुयनाणिणो य, वाई,
अणुत्तरगई य, उत्तरवेउव्विणो य मुणिणो,
जत्तिया सिद्धा, सिद्धिपहो जहा देसिओ,
जच्चिरं च कालं, पाओवगया–

जेहिं जत्तियाइं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता अंतगडे, मुणिवरूत्तमे तिमिरओघविप्पमुक्के, मुक्खसुहमणुत्तरं च पत्ते,

एवमन्ने य एवमाइभावा मूलपढमाणुओगे कहिया ।

से त्तं मूलपढमाणुओगे ।

से किं तं गंडियाणुओगे ?

गंडियाणुओगे-कुलगरगंडियाओ, तित्थयरगंडियाओ,
चक्कवट्टिगंडियाओ, वासुदेवगंडियाओ,
गणधरगंडियाओ, भद्दबाहुगंडियाओ,
तवोकम्मगंडियाओ, हरिवंसगंडियाओ,
उस्सप्पिणीगंडियाओ जित्तंतरगंडियाओ,
ओसप्पिणीगंडियाओ,

अमर-नर-तिरिय-निरय गइ-गमण-विविह-
परियट्टणाणुओगेसु एवमाइयाओ गंडियाओ
आघविज्जंति, ।

से त्तं गंडियाणुओगे ।

से त्तं अणुओगे ।

से किं तं चूलियाओ ?

चूलियाओ-आइल्लाणं चउण्हं पुव्वाणं चूलिआ,
सेसाइं पुव्वाइं अचूलियाइं ।
से त्तं चूलियाओ ।

दिट्ठिपवायस्स ण परित्ता वायणा,
संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा,
संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ,
संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ ।
से णं अंगट्ठयाए बारसमे अंगे,
एगे सुयक्खंधे चोद्दसपुव्वाइं,
संखेज्जा वत्थू, संखेज्जा चूलवत्थू,
संखेज्जा पाहुडा, संखेज्जा पाहुडपाहुडा,
संखेज्जाओ पाहुडियाओ, संखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ,
संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं,
संखिज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा,
सासय-कड-निबद्ध-निकाइया, जिणपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति,
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विण्णाया,
एवं चरण-करण-परूवणा आघविज्जइ ।
से त्तं दिट्ठिवाए ।

सुत्तं ५७ इच्चेइयम्मि दुवालसंगे गणिपिडगे
अणंता भावा, अणंता अभावा,

अणंता हेऊ, अणंता अहेऊ,
अणंता कारणा, अणंता अकारणा,
अणंता जीवा, अणंता अजीवा,
अणंता भवसिद्धिआ, अणंता अभवसिद्धिआ,
अणंता सिद्धा, अणंता असिद्धा पण्णत्ता ।

गाहा– भावमभावा हेऊमहेऊ, कारणमकारणे चेव ।
जीवाजीवाभविय-मभविया सिद्धा असिद्धा य ॥१॥

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं–
तीए काले अणंता जीवा अणाए विराहित्ता–
चाउरंतं संसार कंतारं अणुपरियट्टिंसु ।

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं–
पडुप्पण्णकाले परित्ता जीवा आणाए विराहित्ता–
चाउरंतं संसार कंतारं अणुपरियट्टंति ।

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं–
अणागए काले अणंता जीवा आणाए विराहित्ता–
चाउरंतं संसार-कंतारं अणुपरियट्टिस्संति ।

इच्चेइयं दुवालसगं गणिपिडगं–
तीए काले अणंता जीवा आणाए आराहित्ता
चाउरंतं संसार-कंतारं वीईवइंसु ।

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं–

पडुप्पण्णकाले परित्ता जीवा आणाए आराहित्ता–
चाउरंतं संसार-कंतारं वीईवयंति–

इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं–

अणागए काले अणंता जीवा आणाए आराहित्ता–
चाउरंतं संसार-कंतारं वीईवइस्संति ।
इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं–

न कयाइ नासी,
न कयाइ न भवइ,
न कयाइ न भविस्सइ,

भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य,
धुवे, नियए, सासए,
अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे ।
से जहा नामए पंच अत्थिकाया–

न कयाइ नासी,
न कयाइ नत्थि,
न कयाइ न भविस्सइ,

भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य,
धुवा, नियया, सासया,

अक्खया, अव्वया, अवट्ठिया, निच्चा,
एवामेव दुवालसंग गणिपिडगं–

न कयाइ नासी,

न कयाइ नत्थि,

न कयाइ न भविस्सइ,

भुविं च, भवइ य भविस्सइ य,
धुवे, नियए, सासए,
अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे।
से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते,
तं जहा–

दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ।
तत्थ दव्वओ णं सुयणाणी उवउत्ते–
सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ।

खित्तओ णं सुयणाणी उवउत्ते–
सव्व खेत्तं जाणइ पासई

कालओ णं सुयनाणी उवउत्ते–
सव्वं कालं जाणइ पासइ।

भावओ णं सुयनाणी उवउत्ते–
सव्वे भावे जाणइ पासइ।

गाहाओ— अक्खर सन्नी सम्मं, साइय खलु सपज्जवसियं च ।
गमियं अंगपविट्ठं, सत्त वि एए सपडिवक्खा ॥१॥

आगमसत्थग्गहणं, जं बुद्धिगुणेहिं अट्ठहिं दिट्ठं ।
बिंति सुयनाणलंभं, तं पुव्वविसारया धीरा ॥२॥

सुस्सुसइ पडिपुच्छइ, सुणेइ गिण्हइ य ईहए यावि ।
तत्तो अपोहए वा, धारेइ करेइ व सम्मं ॥३॥

मूअं हुंकारं वा, बाढक्कार पडिपुच्छ वीमंसा ।
तत्तो पसंगपारायणं, च परिणिट्ठ सत्तमए ॥४॥

सुत्तत्थो खलु पढमो, बीओ निज्जुत्तिमीसिओ भणिओ ।
तइओ य निरवसेसो, एस विही होइ अणुओगे ॥५॥

सेत्तं अंगपविट्ठं । सेत्तं सुयनाणं ।
सेत्तं परोक्खनाणं । सेत्तं नाणं ।

॥ सेत्तं नंदी ॥

तत्त्वार्थसूत्र

तथा

स्तोत्रादि

मंगलाचरण

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिता, सिद्धाश्च सिद्धिस्तथाः ।
आचार्याः जिनशासनोन्नतिकरा पूज्या उपाध्यायकाः ।।
श्री सिद्धान्त सुपाठका मुनिवराः, रत्नत्रयाराधकाः ।
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु नो मंगलम् ।।

वीरः सर्व सुरा सुरेन्द्र महिता, वीरं बुधाः संश्रिताः ।
वीरेणाभिहत स्वकर्मनिचयो, वीराय नित्यं नमः ।।
वीरात्तीर्थं मिदं प्रवृत्तमतुलं, वीरस्य घोरंतपोः ।
वीरे श्री धृति कीर्ति कान्तिनिचयो, हे वीर भद्रंदिशः ।।

नाभेयादि जिनेश्वरा स्त्रिभुवने, ख्याता चतुर्विंशतिः ।
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो, ये चक्रिणोद्वादशः ।।
ये विष्णु प्रतिविष्णु लांगलधरा सप्ताधिकाविंशति ।
त्रैलोक्या भयदा त्रिषष्ठिपुरुषा, कुर्वन्तु नो मंगलम् ।।

इन्द्राग्न्याशुगभूतयः समकुलाः व्यक्तः सुधर्मास्तथा ।
षष्ठोमंडितपुत्रको गणधरो, मौर्यात्मज सत्तम ।।
श्रेयो दृष्टिरकंपितो गुणमणिर्धीरोऽचलभ्रातृको ।
मैतार्यो दशम प्रभासगणभृत् कुर्वन्तु नो मंगलं ।।

ब्राह्मी चन्दन बालिका भगवती, राजीमतीद्रोपदी ।
कौशल्या च मृगावती च सुलसा, सीता सुभद्रा शिवाः
कुन्ती शीलवती नलस्य दयिता, चूला प्रभावत्यपि ।
पद्मावत्यपि सुन्दरी प्रतिदिनं, कुर्वंतु नो मंगलम् ।।

तत्त्वार्थसूत्र

प्रथमोऽध्यायः

१. सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः
२. तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।
३. तन्निसर्गादधिगमाद्वा ।
४. जीवाजीवाश्रवबन्धसवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ।
५. नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ।
६. प्रमाणनयैरधिगम ।
७. निर्देशस्वामित्वसाधनाऽधिकरणस्थितिविधानतः ।
८. सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालाऽन्तरभावाऽल्पबहुत्वैश्च ।
९. मतिश्रुताऽवधिमनःपर्यायकेवलानि ज्ञानम् ।
१०. तत् प्रमाणे ।
११. आद्ये परोक्षम् ।
१२. प्रत्यक्षमन्यत् ।
१३. मतिः स्मृतिः संज्ञा चिन्ताऽभिनिबोध इत्यनर्थान्तरम् ।
१४. तदिन्द्रियाऽनिन्द्रियनिमित्तम् ।
१५. अवग्रहेहावायधारणाः ।
१६. बहुबहुविधक्षिप्राऽनिश्रितासन्दिग्धध्रुवाणां सेतराणाम् ।
१७. अर्थस्य ।

१८. व्यञ्जनस्याऽवग्रहः।

१९. न चक्षुरनिन्द्रियाभ्याम्।

२०. श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम्।

२१. द्विविधोऽवधिः।

२२. तत्र भवप्रत्ययो नारकदेवानाम्।

२३. यथोक्तनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम्।

२४. ऋजुविपुलमती मनःपर्यायः।

२५. विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः।

२६. विशुद्धिक्षेत्रस्वामिविषयेभ्योऽवधिमनःपर्याययोः।

२७. मतिश्रुतयोर्निबन्धः सर्वद्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु।

२८. रूपिष्ववधेः।

२९. तदनन्तभागे मनःपर्यायस्य।

३०. सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य।

३१. एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः।

३२. मतिश्रुताऽवधयो विपर्ययश्च।

३३. सदसतोरविशेषाद् यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत्।

३४. नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दा नयाः।

३५. आद्यशब्दौ द्वित्रिभेदौ।

द्वितीयोऽध्यायः

१. औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्वमौदयिक-पारिणामिकौ च ।

२. द्विनवाष्टादशैकविंशतित्रिभेदा यथाक्रमम् ।

३. सम्यक्त्वचारित्रे ।

४. ज्ञानदर्शनदानलाभभोगोपभोगवीर्याणि च ।

५. ज्ञानाज्ञानदर्शनदानादिलब्धयश्चतुस्त्रित्रिपञ्चभेदाः यथाक्रमं सम्यक्त्वचारित्रसंयमासंयमाश्च ।

६. गतिकषायलिंगमिथ्यादर्शनाऽज्ञानाऽसंयताऽसिद्धत्वलेश्याश्च-तुश्चतुस्त्र्येकैकैकैकषड्भेदाः ।

७. जीवभव्याभव्यत्वादीनि च ।

८. उपयोगो लक्षणम् ।

९. स द्विविधोऽष्टचतुर्भेदः ।

१०. संसारिणो मुक्ताश्च ।

११. समनस्काऽमनस्काः ।

१२. संसारिणस्त्रसस्थावराः ।

१३. पृथिव्यम्बुवनस्पतयः स्थावराः ।

१४. तेजोवायू द्वीन्द्रियादयश्च त्रसाः ।

१५. पञ्चेन्द्रियाणि ।

१६. द्विविधानि ।

१७. निर्वृ त्त्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम् ।

१८. लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम् ।

१९. उपयोगः स्पर्शादिषु ।

२०. स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुःश्रोत्राणि ।

२१. स्पर्शरसगन्धवर्णशब्दास्तेषामर्थाः ।

२२. श्रुतमनिन्द्रियस्य ।

२३. वाय्वन्तानामेकम् ।

२४. कृमिपिपीलिकाभ्रमरमनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि ।

२५. संज्ञिनः समनस्काः ।

२६. विग्रहगतौ कर्मयोगः ।

२७. अनुश्रेणि गतिः ।

२८. अविग्रहा जीवस्य ।

२९. विग्रहवती च संसारिणः प्राक् चतुर्भ्यः ।

३०. एकसमयोऽविग्रहः ।

३१. एकं द्वौ वाऽनाहारकः ।

३२. सम्मूर्छनगर्भोपपाता जन्म ।

३३. सचित्तशीतसंवृताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः ।

३४. जराय्वण्डपोतजानां गर्भः।

३५. नारकदेवानामुपपातः।

३६. शेषाणां सम्मूर्छनम्।

३७. औदारिकवैक्रियाऽऽहारकतैजसकार्मणानि शरीराणि।

३८. परं परं सूक्ष्मम्।

३९. प्रदेशतोऽसंख्येयगुणं प्राक् तैजसात्।

४०. अनन्तगुणे परे।

४१. अप्रतिघाते।

४२. अनादिसम्बन्धे च।

४३. सर्वस्य।

४४. तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्याचतुर्भ्यः।

४५. निरुपभोगमन्त्यम्।

४६. गर्भसम्मूर्छनजमाद्यम्।

४७. वैक्रियमौपपातिकम्।

४८. लब्धिप्रत्ययं च।

४९. शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं चतुर्दशपूर्वधरस्यैव।

५०. नारकसम्मूर्छिनो नपुंसकानि।

५१. न देवाः।

५२. औपपातिकचरमदेहोत्तमपुरुषाऽसंख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः।

तृतीयोऽध्यायः

१. रत्नशर्करावालुकापङ्कधूमतमोमहातमःप्रभा भूमयो घनाम्बुवाताकाशप्रतिष्ठाः सप्ताधोऽधः पृथुतराः ।
२. तासु नरकाः ।
३. नित्याशुभतरलेश्यापरिणामदेहवेदनाविक्रियाः ।
४. परस्परोदीरितदुःखाः ।
५. संक्लिष्टासुरोदीरितदुःखाश्च प्राक् चतुर्थ्याः ।
६. तेष्वेकत्रिसप्तदशसप्तदशद्वाविंशतित्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाः सत्त्वानां परा स्थितिः ।
७. जम्बूद्वीपलवणादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः ।
८. द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्वपूर्वपरिक्षेपिणो वलयाकृतयः ।
९. तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजनशतसहस्रविष्कम्भो जम्बूद्वीपः ।
१०. तत्र भरतहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि ।
११. तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्महाहिमवन्निषधनीलरुक्मिशिखरिणो वर्षधरपर्वताः ।
१२. द्विर्धातकीखण्डे ।
१३. पुष्करार्धे च ।
१४. प्राङ्मानुषोत्तरान् मनुष्याः ।
१५. आर्या म्लेच्छाश्च ।
१६. भरतैरावतविदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तरकुरुभ्यः ।
१७. नृस्थिती परापरे त्रिपल्योपमान्तर्मुहूर्ते ।
१८. तिर्यग्योनीनां च ।

चतुर्थोऽध्यायः

१. देवाश्चतुर्निकायाः ।

२. तृतीयः पीतलेश्यः ।

३. दशाष्टपंचद्वादशविकल्पाः कल्पोपपन्नपर्यन्ताः ।

४. इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंशपारिषद्यात्मरक्षलोकपालानीकप्रकीर्ण-काभियोग्यकिल्विषिकाश्चैकशः ।

५. त्रायस्त्रिंशलोकपालवर्ज्या व्यन्तरज्योतिष्काः ।

६. पूर्वयोर्द्वीन्द्राः ।

७. पीतान्तलेश्याः ।

८. कायप्रवीचारा आ-ऐशानात् ।

९. शेषाः स्पर्शरूपशब्दमनःप्रवीचारा द्वयोर्द्वयोः ।

१०. परेऽप्रवीचाराः ।

११. भवनवासिनोऽसुरनागविद्युत्सुपर्णाग्निवातस्तनितोदधिद्वीप-दिक्कुमाराः ।

१२. व्यन्तराः किन्नरकिंपुरुषमहोरगगान्धर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचाः ।

१३. ज्योतिष्काः सूर्याचन्द्रमसौ ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णतारकाश्च ।

१४. मेरुप्रदक्षिणा नित्यगतयो नृलोके ।

१५. तत्कृतः कालविभागः ।

१६. बहिरवस्थिताः।

१७. वैमानिकाः।

१८. कल्पोपपन्नाः कल्पातीताश्च।

१९. उपर्युपरि।

२०. सौधर्मैशानसानत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मलोकलान्तकमहाशुक्रसहस्रारेष्वानतप्राणतयोरारणाच्युतयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजयवैजयन्तजयन्ताऽपराजितेषु सर्वार्थसिद्धे च।

२१. स्थितिप्रभावसुखद्युतिलेश्याविशुद्धीन्द्रियावधिविषयतोऽधिकाः।

२२. गतिशरीरपरिग्रहाभिमानतो हीनाः।

२३. पीतपद्मशुक्ललेश्या द्वित्रिशेषेषु।

२४. प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः।

२५. ब्रह्मलोकालया लोकान्तिकाः।

२६. सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधमरुतोऽरिष्टाश्च।

२७. विजयादिषु द्विचरमाः।

२८. औपपातिकमनुष्येभ्यः शेषास्तिर्यग्योनयः।

२९. स्थितिः।

३०. भवनेषु दक्षिणार्धाधिपतीनां पल्योपममध्यर्धम्।

३१. शेषाणां पादोने।

३२. असुरेन्द्रयोः सागरोपममधिकं च।

३३. सौधर्मादिषु यथाक्रमम्।

३४. सागरोपमे।

३५. अधिके च।

३६. सप्त सानत्कुमारे।

३७. विशेषत्रिसप्तदशैकादशत्रयोदशपञ्चदशभिरधिकानि च।

३८. आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धे च।

३९. अपरा पल्योपममधिकं च।

४०. सागरोपमे।

४१. अधिके च।

४२ परत: परतः पूर्वा पूर्वाऽनन्तरा।

४३. नारकाणां च द्वितीयादिषु।

४४. दशवर्षसहस्राणि प्रथमायाम्।

४५. भवनेषु च।

४६ व्यन्तराणां च।

४७. परा पल्योपमम्।

४८. ज्योतिष्काणामधिकम्।

४९. ग्रहाणामेकम्।

५०. नक्षत्राणामर्धम्।

५१. तारकाणां चतुर्भाग.।

५२. जघन्या त्वष्टभागः।

५३. चतुर्भागः शेषाणाम्।

पञ्चमोऽध्यायः

१. अजीवकाया धर्माधर्माकाशपुद्गलाः ।
२. द्रव्याणि जीवाश्च ।
३. नित्यावस्थितान्यरूपाणि ।
४. रूपिणः पुद्गलाः ।
५. आऽऽकाशादेकद्रव्याणि ।
६. निष्क्रियाणि च ।
७. असङ्ख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मयोः ।
८. जीवस्य ।
९. आकाशस्यानन्ताः ।
१०. सङ्ख्येयाऽसङ्ख्येयाश्च पुद्गलानाम् ।
११. नाणोः ।
१२. लोकाकाशेऽवगाहः ।
१३. धर्माधर्मयोः कृत्स्ने ।
१४. एकप्रदेशादिषु भाज्यः पुद्गलानाम् ।
१५. असङ्ख्येयभागादिषु जीवानाम् ।
१६. प्रदेशसंहारविसर्गाभ्यां प्रदीपवत् ।
१७. गतिस्थित्युपग्रहो धर्माधर्मयोरुपकारः ।
१८. आकाशस्यावगाहः ।
१९. शरीरवाङ्मनःप्राणापानाः पुद्गलानाम् ।
२०. सुखदुःखजीवितमरणोपग्रहाश्च ।
२१. परस्परोपग्रहो जीवानाम् ।
२२. वर्तना परिणामः क्रिया परत्वापरत्वे च क

२३. स्पर्शरसगन्धवर्णवन्तः पुद्गलाः।
२४. शब्दबन्धसौक्ष्म्यस्थौल्यसस्थानभेदतमश्छायाऽऽतपोद्द्योतवन्तश्च।
२५. अणवः स्कन्धाश्च।
२६. संघातभेदेभ्य उत्पद्यन्ते।
२७. भेदादणुः।
२८. भेदसघाताभ्या चाक्षुषाः।
२९. उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्त सत्।
३०. तद्भावाव्यय नित्यम्।
३१. अर्पितानर्पितसिद्धेः।
३२. स्निग्धरूक्षत्वाद्बन्ध.।
३३ न जघन्यगुणानाम्।
३४. गुणसाम्ये सदृशानाम्।
३५. द्व्यधिकादिगुणाना तु।
३६. बन्धे समाधिकौ पारिणामिकौ।
३७. गुणपर्यायवद् द्रव्यम्।
३८. कालश्चेत्येके।
३९. सोऽनन्तसमयः।
४०. द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणा.।
४१. तद्भावः परिणाम.।
४२. अनादिरादिमांश्च।
४३. रूपिष्वादिमान्।
४४. योगोपयोगौ जीवेषु।

षष्ठोऽध्यायः

१. कायवाङ्मनःकर्म योगः।

२. स आस्रवः।

३. शुभः पुण्यस्य।

४. अशुभः पापस्य।

५. सकषायाकषाययोः साम्परायिकेर्यापथयोः।

६. अव्रतकषायेन्द्रियक्रियाः पञ्चचतुःपञ्चपञ्चविंशतिसङ्ख्याः पूर्वस्य भेदाः।

७. तीव्रमन्दज्ञाताज्ञातभाववीर्याऽधिकरणविशेषेभ्यस्तद्विशेषः।

८. अधिकरणं जीवाजीवाः।

९. आद्यं संरम्भसमारम्भारम्भयोगकृतकारितानुमतकषायविशेषै-स्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः।

१०. निर्वर्तनानिक्षेपसंयोगनिसर्गा द्विचतुर्द्वित्रिभेदाः परम्।

११. तत्प्रदोषनिह्नवमात्सर्यान्तरायासादनोपघाता ज्ञानदर्शना-वरणयोः।

१२. दुःखशोकतापाक्रन्दनवधपरिदेवनान्यात्मपरोभयस्थान्यसद्वेद्यस्य।

१३. भूतव्रत्यनुकम्पादानं सरागसंयमादियोगः क्षान्तिः शौचमिति सद्वेद्यस्य।

१४. केवलिश्रुतसंघधर्मदेवावर्णवादो दर्शनमोहस्य।

१५. कषायोदयात्तीव्रात्मपरिणामश्चारित्रमोहस्य।

१६. बह्वारम्भपरिग्रहत्वं च नारकस्यायुषः।

१७. माया तैर्यग्योनस्य।

१८. अल्पारम्भपरिग्रहत्वं स्वभावमार्दवार्जवं च मानुषस्य।

१९. निःशीलव्रतत्वं च सर्वेषाम्।

२०. सरागसंयमसंयमासंयमाकामनिर्जराबालतपांसि दैवस्य।

२१. योगवक्रता विसंवादनं चाशुभस्य नाम्नः।

२२. विपरीतं शुभस्य।

२३. दर्शनविशुद्धिर्विनयसम्पन्नता शीलव्रतेष्वनतिचारोऽभीक्ष्णं ज्ञानोपयोगसंवेगौ शक्तितस्त्यागतपसी संघसाधुसमाधि-वैयावृत्त्यकरणमर्हदाचार्यबहुश्रुतप्रवचनभक्तिरावश्यकापरि-हाणिर्मार्गप्रभावना प्रवचनवत्सलत्वमिति तीर्थंकृत्त्वस्य।

२४. परात्मनिन्दाप्रशंसे सदसद्गुणाच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य।

२५. तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य।

२६. विघ्नकरणमन्तरायस्य।

सप्तमोऽध्यायः

१. हिंसाऽनृतस्तेयाऽब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम् ।

२. देशसर्वतोऽणुमहती ।

३. तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पञ्च पञ्च ।

४. हिंसादिष्विहामुत्र चापायावद्यदर्शनम् ।

५. दुःखमेव वा ।

६. मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्थ्यानि सत्त्वगुणाधिकक्लिश्यमानाऽविनेयेषु ।

७. जगत्कायस्वभावौ च संवेगवैराग्यार्थम् ।

८. प्रमत्तयोगात् प्राणव्यपरोपणं हिंसा ।

९. असदभिधानमनृतम् ।

१०. अदत्तादानं स्तेयम् ।

११. मैथुनमब्रह्म ।

१२. मूर्छा-परिग्रहः ।

१३. निःशल्यो व्रती ।

१४. अगार्य-नगारश्च ।

१५. अणुव्रतोऽगारी ।

१६. दिग्देशाऽनर्थदण्डविरतिसामायिकपौषधोपवासोपभोगपरिभोगपरिमाणाऽतिथिसंविभागव्रतसम्पन्नश्च ।

१७. मारणान्तिकीं संलेखनां जोषिता ।

१८. शंकाकांक्षाविचिकित्साऽन्यदृष्टिप्रशंसासंस्तवाः सम्यग्दृष्टे-रतिचाराः।

१९. व्रतशीलेषु पञ्च पञ्च यथाक्रमम्।

२०. बन्धवधच्छविच्छेदाऽतिभारारोपणाऽन्नपाननिरोधाः।

२१. मिथ्योपदेश-रहस्याभ्याख्यान-कूटलेखक्रियान्यासापहार-साकारमंत्रभेदा ।

२२. स्तेनप्रयोग-तदाहृतादान-विरुद्धराज्यातिक्रम-हीनाधिकमानो-न्मान-प्रतिरूपकव्यवहाराः।

२३. परविवाहकरणेत्वरपरिगृहीताऽपरिगृहीतागमनाऽनङ्गक्रीडा-तीव्रकामाभिनिवेशा.।

२४. क्षेत्रवास्तुहिरण्यसुवर्णधनधान्यदासीदासकुप्यप्रमाणातिक्रमा.।

२५. ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्यतिक्रम-क्षेत्रवृद्धिस्मृत्यन्तर्धानानि।

२६. आनयनप्रेष्यप्रयोगशब्दरूपानुपातपुद्गलप्रक्षेपा.।

२७. कन्दर्पकौत्कुच्यमौखर्याऽसमीक्ष्याधिकरणोपभोगाधिकत्वानि।

२८. योगदुष्प्रणिधानानादरस्मृत्यनुपस्थापनानि।

२९. अप्रत्यवेक्षिताप्रमार्जितोत्सर्गादाननिक्षेपसंस्तारोपक्रमणानादर-स्मृत्यनुपस्थापनानि।

३०. सचित्तसम्बद्धसम्मिश्राऽभिषवदुष्पक्वाहाराः।

३१. सचित्तनिक्षेपपिधानपरव्यपदेशमात्सर्यकालातिक्रमाः।

३२. जीवितमरणाशंसामित्रानुरागसुखानुबन्धनिदानकरणानि।

३३. अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम्।

३४. विधिद्रव्यदातृपात्रविशेषात्तद्विशेष.।

अष्टमोऽध्यायः

१. मिथ्यादर्शनाऽविरति-प्रमाद-कषाय-योगा बन्धहेतवः।

२. सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान्पुद्गलानादत्ते।

३. स बन्धः।

४. प्रकृति-स्थित्यनुभाव-प्रदेशास्तद्विधयः।

५. आद्यो ज्ञान-दर्शना-वरण-वेदनीय-मोहनीयाऽयुष्क-नाम-गोत्राऽन्तरायाः।

६. पञ्चनवद्व्यष्टाविंशति चतुर्द्विचत्वारिंशद्-द्वि-पञ्चभेदा यथाक्रमम्।

७. मत्यादीनां।

८. चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानां निद्रा निद्रा-निद्रा प्रचला प्रचलाप्रचला-स्त्यानगृद्धिवेदनीयानि च।

९. सदसद्वेद्ये।

१०. दर्शनचारित्रमोहनीयकषायनोकषायवेदनीयाख्यास्त्रिद्विषोडशनवभेदाः सम्यक्त्वमिथ्यात्वतदुभयानि कषायनोकषायावनन्तानुबंध्यप्रत्याख्यान - प्रत्याख्यानावरणसंज्वलनविकल्पाश्चैकशः क्रोधमानमायालोभाः हास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुंनपुंसकवेदाः।

११. नारकतैर्यग्योनमानुषदेवानि।

१२. गतिजातिशरीराङ्गोपाङ्गनिर्माणबन्धनसङ्घातसंस्थानसंहनन-स्पर्शरसगन्धवर्णानुपूर्व्यगुरुलघूपघातपराघातातपोद्योतोच्छ्वास-विहायोगतयः प्रत्येकशरीरत्रससुभगसुस्वरशुभसूक्ष्मपर्याप्त-स्थिरादेययशांसि सेतराणि तीर्थकृत्त्वं च।

१३. उच्चैर्नीचैश्च।

१४. दानादीनाम्।

१५. आदितस्तिसृणामंतरायस्य च त्रिंशत्सागरोपमकोटीकोट्यः परा स्थितिः।

१६. सप्ततिर्मोहनीयस्य।

१७. नामगोत्रयोर्विंशतिः।

१८. त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुष्कस्य

१९. अपराद्वादशमुहूर्त्ता वेदनीयस्य।

२०. नामगोत्रयोरष्टौ।

२१. शेषाणामन्तर्मुहूर्त्तम्।

२२. विपाकोऽनुभावः।

२३. स यथानाम।

२४. ततश्च निर्जरा।

२५. नामप्रत्ययाः सर्वतो योगविशेषात्सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाढस्थिताः सर्वात्मप्रदेशेष्वनन्तानन्तप्रदेशाः।

२६. सद्वेद्यसम्यक्त्वहास्यरतिपुरुषवेदशुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यम्।

नवमोऽध्यायः

१. आस्रवनिरोधः संवरः ।

२. स गुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षापरिषहजयचारित्रैः ।

३. तपसा निर्जरा च ।

४. सम्यग्योगनिग्रहो गुप्तिः ।

५. ईर्याभाषैषणादाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः ।

६. उत्तमः क्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाऽकिञ्चन्यब्रह्मचर्याणि धर्मः ।

७ अनित्याशरणसंसारैकत्वान्यत्वाशुचित्वास्रवसंवरनिर्जरालोक-बोधिदुर्लभधर्मस्वाख्याततत्त्वानुचिन्तनमनुप्रेक्षाः ।

८. मार्गाऽच्यवननिर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः ।

९. क्षुत्पिपासाशीतोष्णदंशमशकनाग्न्यारतिस्त्रीचर्यानिषद्याशय्याक्रोशवध-याचनाऽलाभरोगतृणस्पर्शमलसत्कारपुरस्कारप्रज्ञाऽज्ञानाऽदर्शनानि ।

१०. सूक्ष्मसम्परायच्छद्मस्थवीतरागयोश्चतुर्दश ।

११. एकादश जिने ।

१२. बादरसम्पराये सर्वे ।

१३. ज्ञानावरणे प्रज्ञाऽज्ञाने ।

१४ दर्शनमोहान्तराययोरदर्शनालाभौ।

१५. चारित्रमोहे नाग्न्यारतिस्त्रीनिषद्याक्रोशयाचनासत्कारपुरस्कारा

१६. वेदनीये शेषाः।

१७. एकादयो भाज्या युगपदेकोनविंशतिः।

१८. सामायिक-छेदोपस्थाप्य-परिहारविशुद्धि-सूक्ष्मसम्पराय-यथाख्यातानि चारित्रम्।

१९. अनशनावमौदर्यवृत्तिपरिसङ्ख्यान रसपरित्यागविविक्तशय्यासनकायक्लेशा बाह्यं तपः।

२०. प्रायश्चित्त-विनयवैयावृत्यस्वाध्यायव्युत्सर्गध्यानान्युत्तरम्।

२१. नव-चतुर्दशपञ्च द्विभेद यथाक्रम प्राग्ध्यानात्।

२२. आलोचनप्रतिक्रमणतदुभयविवेकव्युत्सर्गतपश्छेदपरिहारोपस्थापनानि।

२३. ज्ञानदर्शनचारित्रोपचाराः।

२४. आचार्योपाध्यायतपस्विशैक्षकग्लानगणकुलसङ्घसाधुसमनोज्ञानाम्।

२५. वाचनाप्रच्छनाऽनुप्रेक्षाऽऽम्नायधर्मोपदेशाः।

२६. बाह्याभ्यन्तरोपध्योः।

२७. उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिन्तानिरोधो ध्यानम्।

२८. आमुहूर्तात्।

२९. आर्त्तरौद्रधर्मशुक्लानि।

३०. परे मोक्षहेतू।

३१. आर्त्तममनोज्ञानां सम्प्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृतिसमन्वाहारः।

३२. वेदनायाश्च।

३३. विपरीतं मनोज्ञानाम्।

३४. निदानं च।

३५. तदविरतदेशविरतप्रमत्तसंयतानाम्।

३६. हिंसाऽनृतस्तेयविषयसंरक्षणेभ्यो रौद्रमविरतदेशविरतयोः।

३७. आज्ञाऽपायविपाकसंस्थानविचयाय धर्ममप्रमत्तसंयतस्य।

३८. उपशान्तक्षीणकषाययोश्च।

३९. शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः।

४०. परे केवलिनः।

४१. पृथक्त्वैकत्ववितर्कसूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिव्युपरतक्रियाऽनिवृत्तीनि

४२. तत् त्र्येककाययोगाऽयोगानाम्।

४३. एकाश्रये सवितर्के पूर्वे।

४४. अविचारं द्वितीयम्।

४५. वितर्कःश्रुतम्।

४६. विचारोऽर्थव्यञ्जनयोग संक्रांतिः।

४७. सम्यग्दृष्टिश्रावकविरतानन्तवियोजकदर्शनमोहक्षपकोपशमकोपशान्तमोहक्षपकक्षीण-मोहजिनाः क्रमशोऽसङ्ख्येयगुणनिर्जराः ।

४८. पुलाकवकुशकुशीलनिर्ग्रन्थस्नातका निर्ग्रन्थाः ।

४९. संयमश्रुतप्रतिसेवनातीर्थलिङ्गलेश्योपपातस्थानविकल्पतः साध्याः ।

दशमोऽध्यायः

१. मोहक्षयाज्ज्ञानदर्शनावरणान्तरायक्षयाच्च केवलम् ।

२. बन्धहेत्वभावनिर्जराभ्याम् ।

३. कृत्स्नकर्मक्षयो मोक्षः ।

४. औपशमिकादिभव्यत्वाभावाच्चान्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शन-सिद्धत्वेभ्यः ।

५. तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छत्यालोकान्तात् ।

६. पूर्वप्रयोगादसंगत्वाद्बन्धच्छेदात्तथागतिपरिणामाच्चतद्गतिः

७. क्षेत्रकालगतिलिङ्गतीर्थचारित्रप्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानावगाहनान्तरसंख्याल्पबहुत्वतः साध्याः ।

।। इति तत्वार्थ सूत्र सम्पूर्णम् ।।

भक्तामर-स्तोत्रम्

भक्तामर-प्रणत-मौलि-मणिप्रभाणा-
मुद्योतकं दलितपापतमोवितानम् ।
सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा-
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ॥ १ ॥

यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा-
दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ।
स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्त-हरैरुदारैः;
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥

बुद्ध्या विनाऽपि विबुधार्चितपादपीठ,
स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ।
बालं विहाय जलसंस्थितमिन्दुबिम्ब-
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥

वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र ! शशाङ्ककान्तान्,
कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ।
कल्पांतकाल-पवनोद्धत-नक्रचक्रं,
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश,
कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः।
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं,
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥ ५ ॥

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम्,
त्वद्भक्तिरेव मुखरी कुरुते बलान्माम्।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चारुचाम्रकलिका-निकरैकहेतुः ॥ ६ ॥

त्वत्संस्तवेन भवसन्ततिसन्निबद्धं,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम्।
आक्रान्तलोकमलिनीलमशेषमाशु,
सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥ ७ ॥

मत्वेति नाथ ! तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनुधियाऽपि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु,
मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिन्दुः ॥ ८ ॥

आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं,
त्वत्संकथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाञ्जि ॥ ९ ॥

नात्यद्भुतं भुवनभूषण ! भूतनाथ !
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः ।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥१०॥

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयं,
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ।
पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्धसिन्धोः,
क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ॥११॥

यैः शान्तरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं,
निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत !
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां,
यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥१२॥

वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि,
निःशेषनिर्जित-जगत्त्रितयोपमानम् ।
बिम्बं कलङ्कमलिनं क्व निशाकरस्य,
यद्वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम् ॥१३॥

सम्पूर्णमण्डलशशाङ्ककला-कलाप !
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयन्ति ।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर ! नाथमेकं,
कस्तान्निवारयति सञ्चरतो यथेष्टम् ॥१४॥

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि-
र्नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ।
कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन,
किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥१५॥

निर्धूमवर्तिरपवर्जित-तैलपूरः,
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटी-करोषि ।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ॥१६॥

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति ।
नाम्भोधरोदर-निरुद्ध-महाप्रभावः,
सूर्यातिशायिमहिमाऽसि मुनीन्द्र ! लोके ॥१७॥

नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं,
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति-
विद्योतयज्जगदपूर्व-शशाङ्कबिम्बम् ॥१८॥

किं शर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा,
युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमस्सु नाथ ! ।
निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके,
कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥१९॥

ज्ञानं तथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु।
तेजःस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं,
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥२०॥

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टाः
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ भवान्तरेऽपि ॥२१॥

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि-सहस्ररश्मिं,
प्राच्येव दिग् जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥२२॥

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्यवर्णममलं तमसःपुरस्तात्।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं,
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः ॥२३॥

त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसङ्ख्यमाद्यम्,
ब्रह्माण - मीश्वर - मनन्त - मनङ्गकेतुम्।
योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं,
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥२४॥

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्,
त्वं शङ्करोऽसि भुवनत्रयशङ्करत्वात्।
धाताऽसि धीर! शिवमार्गविधेर्विधानात्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन्! पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ!
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन! भवोदधिशोषणाय ॥२६॥

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै-
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश!।
दोषै-रुपात्त-विविधाश्रयजातगर्वैः,
स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥२७॥

उच्चैरशोक-तरुसंश्रित-मुन्मयूख-
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमो-वितानं,
बिम्बं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥२८॥

सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्।
बिम्बं वियद्विलसदंशुलतावितानं,
तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥२९॥

कुन्दावदातचल-चामर-चारुशोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम् ।
उद्यच्छशाङ्क-शुचिनिर्झर-वारि-धार-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ।।३०।।

छत्रत्रयं तव विभाति शशाङ्ककान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रतापम् ।
मुक्ताफल-प्रकरजाल-विवृद्धशोभ-
प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ।।३१।।

गम्भीरतार-रवपूरित-दिग्विभाग-
स्त्रैलोक्य-लोकशुभसङ्गम-भूतिदक्षः ।
सद्धर्मराजजयघोषणघोषकः सन्,
खे दुन्दुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी ।।३२।।

मन्दार-सुन्दर-नमेरु-सुपारिजात-
सन्तानकादि-कुसुमोत्कर-वृष्टिरुद्धा ।
गन्धोदबिन्दुशुभमन्दमरुत्प्रपाताः,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा ।।३३।।

शुम्भप्रभावलयभूरिविभा विभोस्ते,
लोकत्रयद्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती ।
प्रोद्यद्दिवाकरनिरन्तरभूरिसंख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोमसौम्याम् ।।३४।।

स्वर्गापवर्गगममार्गविमार्गणेष्टः—
सद्धर्मतत्त्वकथनैकपटुस्त्रिलोक्याः ।
दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थसर्व—
भाषास्वभावपरिणामगुणं प्रयोज्य. ।।३५।।

उन्निद्र - हेमनवपङ्कज - पुञ्जकांति-
पर्युल्लसन्नखमयूख - शिखाऽभिरामौ ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्त.,
पद्मानि तत्र विबुधा. परिकल्पयन्ति ।।३६।।

इत्थं यथा तव विभूति-रभूज्जिनेन्द्र !
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ।
यादृक् प्रभा दिनकृत प्रहतान्धकारा,
तादृक् कुतो ग्रहगणस्य विकासिनोऽपि ।।३७।।

श्च्योतन्मदाविल - विलोल - कपोल-मूल-
मत्तभ्रमद् - भ्रमरनाद - विवृद्धकोपम् ।
ऐरावताभमिभ-मुद्धतमापतन्तं,
दृष्ट्वा भय भवति नो भवदाश्रितानाम् ।।३८।।

भिन्नेभकुम्भ - गलदुज्ज्वल - शोणिताक्त-
मुक्ताफल - प्रकरभूषित - भूमिभाग ।
बद्धक्रमः क्रमगत हरिणाधिपोऽपि,
नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रित ते ।।३९।।

कल्पान्तकाल - पवनोद्धत - वन्हि कल्पं,
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम् ।
विश्व जिघत्सुमिव सन्मुखमापतन्तं,
त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥४०॥

रक्तेक्षणं समदकोकिलकण्ठनीलं,
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम् ।
आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशङ्क-
स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥४१॥

वल्गत्तुरङ्ग - गजगर्जित - भीमनाद-
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् ।
उद्यद्दिवाकर - मयूख - शिखापविद्धं,
त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥४२॥

कुन्ताग्रभिन्न - गजशोणित - वारिवाह-
वेगावतार - तरणातुर - योधभीमे ।
युद्धे जयं विजित - दुर्जय - जेयपक्षा-
स्त्वत्पाद-पङ्कजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥४३॥

अम्भोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र-
पाठीन-पीठ-भयदोल्वण-वाडवाग्नौ ।
रङ्गत्तरंग-शिखर-स्थितयान-पात्रा-
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजंति ॥४४॥

उद्भूत - भीषण - जलोदर - भार - भुग्नाः,
शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशा।
त्वत्पाद - पङ्कज - रजोऽमृत - दिग्ध-देहा,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः ।।४५।।

आपाद - कण्ठमुरुशृङ्खल - वेष्टिताङ्गा,
गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टःजंघा।
त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगतबंधभया भवन्ति ।।४६।।

मत्तद्विपेन्द्र - मृगराज - दवानलाहि-
सङ्ग्राम - वारिधिमहोदर - बन्धनोत्थम्।
तस्याशुनाशमुपयाति भय भियेव,
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ।।४७।।

स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र ! गुणैर्निबद्धा,
भक्त्या मया रुचिवर्णविचित्रपुष्पाम्।
धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं,
तं मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः ।।४८।।

।। इति श्री मानतुंगाचार्य विरचितं स्तोत्रम् ।

——

श्रीसिद्धसेनदिवाकरप्रणीतम्

श्री कल्याण-मन्दिर-स्तोत्रम्

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि,
भीता भयप्रदमनिन्दितमंघ्रिपद्मम् ।
संसार-सागर-निमज्जदशेषजंतु-
पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ।। १ ।।

यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः,
स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम् ।
तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो-
स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ।। २ ।।

सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप-
मस्मादृशाः कथमधीश ! भवंत्यधीशाः ।
धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो,
रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ।। ३ ।।

मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ ! मर्त्यो,
नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत ।
कल्पान्तवान्तपयसः प्रकटोऽपि यस्मान्-
मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ।। ४ ।।

अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ ! जडाशयोऽपि,
कर्तुं स्तवं लसदसङ्ख्यगुणाकरस्य।
बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य,
विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाऽम्बुराशेः ? ॥ ५ ॥

ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश !
वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः।
जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं,
जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥

आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन ! संस्तवस्ते,
नामाऽपि पाति भवतो भवतो जगन्ति।
तीव्रातपोपहत-पान्थजनान्निदाघे,
प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥

हृद्वर्तिनि त्वयि विभो ! शिथिलीभवन्ति,
जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्मबन्धाः।
सद्यो भुजङ्गममया इव मध्यभाग-
मभ्यागते वनशिखण्डिनि चन्दनस्य ॥ ८ ॥

मुच्यंत एव मनुजा सहसा जिनेन्द्र !
रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि।
गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे,
चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥ ९ ॥

त्वं तारको जिन ! कथं ? भविनां त एव,
त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः।
यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नून-
मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥१०॥

यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः,
सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन।
विध्यापिता हुतभुजः पयसाऽथ येन,
पीतं न किं तदपि दुर्धरवाडवेन ? ॥११॥

स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना-
स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः।
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन,
चिन्त्यो न हन्त ! महतां यदि वा प्रभावः ॥१२॥

क्रोधस्त्वया यदि विभो ! प्रथमं निरस्तो,
ध्वस्तास्तदा बत कथं किल कर्मचौराः ?
प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिराऽपि लोके,
नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥१३॥

त्वां योगिनो जिन ! सदा परमात्मरूप-
मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुजकोशदेशे।
पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा किमन्य-
दक्षस्य सम्भवि पदं ननु कर्णिकायाः ? ॥१४॥

ध्यानाज्जिनेश ! भवतो भविनः क्षणेन,
देहं विहाय परमात्मदशां व्रजन्ति।
तीव्रानलादुपलभावमपास्य लोके,
चामीकरत्वमचिरादिव धातुभेदाः ॥१५॥

अन्तः सदैव जिन ! यस्य विभाव्यसे त्वं,
भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम्।
एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्त्तिनो हि,
यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः ॥१६॥

आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेदबुद्ध्या,
ध्यातो जिनेन्द्र ! भवतीह भवत्प्रभावः।
पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं,
किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ॥१७॥

त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि,
नूनं विभो ! हरिहरादिधिया प्रपन्नाः।
किं काचकामलिभिरीश ! सितोऽपिशङ्खो,
नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥१८॥

धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा-
दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः।
अभ्युद्गते दिनपतौ स महीरुहोऽपि,
किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥१९॥

चित्रं विभो ! कथमवाङ्मुखवृन्तमेव,
विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः ?
त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश !,
गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि ॥२०॥

स्थाने गभीरहृदयोदधिसंभवायाः,
पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति ।
पीत्वा यतः परमसम्मदसङ्गभाजो,
भव्या व्रजन्ति तरसाऽप्यजरामरत्वम् ॥२१॥

स्वामिन् ! सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो,
मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः ।
येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुङ्गवाय,
ते नूनमूर्ध्वंगतयः खलु शुद्धभावाः ॥२२॥

श्यामं गभीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न-
सिंहासनस्थमिह भव्यशिखण्डिनस्त्वाम् ।
अलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चै-
श्चामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम् ॥२३॥

उद्गच्छता तव शितिद्युतिमंडलेन,
लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव ।
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग !
नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि ॥२४॥

भो भो ! प्रमादमवधूय भजध्वमेन
मागत्य निर्वृतिपुरीं प्रति सार्थवाहम् ।
एतन्निवेदयति देव ! जगत्त्रयाय,
मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते ॥२५॥

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ !
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः ।
मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितातपत्र-
व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥२६॥

स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिण्डितेन,
कान्तिप्रतापयशसामिव सञ्चयेन !
माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन,
सालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि ॥२७॥

दिव्यस्रजो जिन ! नमस्त्रिदशाधिपाना-
मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबन्धान् !
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र,
त्वत्सङ्गमे सुमनसो न रमन्त एव ॥२८॥

त्वं नाथ ! जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोऽपि,
यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ।
युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव,
चित्रं विभो ! यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥२९॥

विश्वेश्वरोऽपि जनपालक ! दुर्गतस्त्वं,
किं वाक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश !
अज्ञानवत्यपि सदैव कथञ्चिदेव,
ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकासहेतुः ॥३०॥

प्राग्भारसंभृतनभांसि रजांसि रोषा-
दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि।
छायापि तैस्तवन नाथ ! हता हताशो,
ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ॥३१॥

यद् गर्जदूर्जितघनौघमदभ्रभीमं-
भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारम् ।
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे,
तेनैव तस्य जिन ! दुस्तरवारिकृत्यम् ॥३२॥

ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुण्ड-
प्रालम्बभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः ।
प्रेतव्रजः प्रतिभवन्तमपीरितो यः,
सोऽस्याऽभवत्प्रतिभवं भवदु.खहेतुः ॥३३॥

धन्यास्त एव भुवनाधिप ! ये त्रिसन्ध्य-
माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः।
भक्त्योल्लसत्पुलक - पक्ष्मल - देहदेशाः,
पादद्वयं तव विभो ! भुवि जन्मभाजः ॥३४॥

अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश !,
मन्ये न मे श्रवणगोचरता गतोऽसि।
आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमन्त्रे,
किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति ? ॥३५॥

जन्मान्तरेऽपि तव पादयुगं न देव !,
मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम् ।
तेनेह जन्मनि मुनीश ! पराभवानां,
जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥३६॥

नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन-
पूर्वं विभो ! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि।
मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः,
प्रोद्यत्प्रबन्धगतयः कथमन्यथैते ? ॥३७॥

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि,
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या।
जातोऽस्मि तेन जनबान्धव ! दुःखपात्रं,
यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः ॥३८॥

त्वं नाथ ! दुःखिजनवत्सल ! हे शरण्य !,
कारुण्यपुण्यवसते ! वशिनां वरेण्य ! ।
भक्त्या न ते मयि महेश ! दयां विधाय,
दुःखाङ्कुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥३९॥

निःसंख्यसारशरण शरणं शरण्य-
मासाद्य सादितरिपु प्रथितावदातम् ।
त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधानवन्ध्यो,
वध्योऽस्मि चेद् भुवनपावन ! हा हतोऽस्मि ॥४०॥

देवेन्द्रवन्द्य ! विदिताखिलवस्तुसार !,
संसारतारक ! विभो ! भुवनाधिनाथ ! ।
त्रायस्व देव ! करुणाह्रद ! मां पुनीहि,
सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः ॥४१॥

यद्यस्ति नाथ ! भवदंघ्रिसरोरुहाणां,
भक्तेः फलं किमपि सन्ततिसञ्चितायाः ।
तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य ! भूयाः,
स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ॥४२॥

इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र !
सान्द्रोल्लसत्पुलककञ्चुकिताङ्गभागाः ।
त्वद्बिम्ब - निर्मल - मुखाम्बुज - बद्धलक्ष्या,
ये संस्तवं तव विभो ! रचयन्ति भव्याः ॥४३॥

जननयनकुमुदचंद्र ! प्रभास्वरा स्वर्गसंपदो भुक्त्वा ।
ते विगलितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥४४॥

महावीराष्टक स्तोत्रम्

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचित ,
सम भान्ति ध्रौव्य व्ययजनि-लसन्तोऽन्तरहिता. ।
जगत् साक्षी मार्ग-प्रकटन परो भानुरिवयो ,
महावीर-स्वामी नयन पथ-गामी भवतु मे ॥१॥

अताम्र यच्चक्षुः कमल-युगल स्पन्दरहित ,
जनान् कोपापाय प्रकटयति वा भ्यन्तर मपि ।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमित मयीवातिविमला ,
महावीर-स्वामी नयन पथ-गामी भवतु मे ॥२॥

नमन्नाकेन्द्राली - मुकुट - मणिभाजाल जटिल ,
लसत् पादा भोज द्वयमिह यदीय तनु-भृताम् ।
भवज्वाला शान्त्यं प्रभवति जल वा स्मृतमपि ,
महावीर-स्वामी नयन पथ-गामी भवतु मे ॥३॥

यदर्चा भावेन प्रमुदित मना दर्दुर इह,
क्षणादासीत् स्वर्गीगुण-गण समृद्ध. सुखनिधि· ।
लभन्ते सद्भक्ता· शिव-सुख समाजं किमु तदा,
महावीर-स्वामी नयन पथ-गामी भवतु मे ॥४॥

कनत्स्वर्णाभासो प्यपगततनुर्ज्ञान - निवहो,
विचित्रात्माऽप्येको नृपतिवर सिद्धार्थ-तनयः।
अजन्माऽपि श्रीमान् विगत भवरागोद् भूतगतिर,
महावीर-स्वामी नयन पथ-गामी भवतु मे ॥५॥

यदीया वाग्गंगा विविधनय कल्लोल विमला,
बृहज्ज्ञानाम्भोभिर्जगति जनता या स्नपयति।
इदानी मप्येषाबुधजनमरालै. परिचिता,
महावीर-स्वामी नयन पथ-गामी भवतु मे ॥६॥

अनिर्वारोद्रेक स्त्रिभुवनजयी काम-सुभटः,
कुमारावस्थायामपिनिजबलाद्येन विजित.।
स्फुरन्नित्यानंद-प्रशमपद राज्याय स जिनः,
महावीर-स्वामी नयन पथ-गामी भवतु मे ॥७॥

महामोहातंक प्रशमनपराऽऽकस्मिक भिषग्,
निरापेक्षो बन्धुर्विदित महिमा मंगलकरः।
शरण्यः साधूना भव-भय भृतामुत्तम-गुणो,
महावीर-स्वामी नयन पथ-गामी भवतु मे ॥८॥

महावीराष्टक स्तोत्र, भक्त्या भागेन्दुना कृतम्।
यः पठेच्छृणुयाच्चापि, स याति परमां गतिम् ॥९॥

श्री चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तोत्रम्

शार्दूलविक्रीडितवृत्तम्

किं कर्पूरमयं सुधारसमयं किं चन्द्ररोचिर्मयं ।
किं लावण्यमयं महामणिमयं कारुण्यकेलिमयम् ।।
विश्वानन्दमयं महोदयमयं शोभामयं चिन्मयं ।
शुक्लध्यानमयं वपुर्जिनपतेर्भूयाद् भवालम्बनम् ।। १ ।।

पातालं कलयन् धरां धवलयन्नाकाशमापूरयन् ।
दिक्चक्रं क्रमयन् सुरासुरनरश्रेणिं च विस्मापयन् ।।
ब्रह्माण्डं सुखयन् जलानि जलधेः फेनच्छलाल्लोलयन् ।
श्रीचिन्तामणिपार्श्वसम्भवयशो हंसश्चिरं राजते ।। २ ।।

पुण्यानां विपणिस्तमो दिनमणिः कामेभकुम्भे सृणि-
र्मोक्षे निस्सरणिः सुरेन्द्रकरिणी ज्योतिः प्रकाशारणिः ।।
दाने देवमणिर्नतोत्तमजनश्रेणिः कृपासारिणी ।
विश्वानन्दसुधाघृणिर्भवभिदे श्रीपार्श्वचिन्तामणिः ।। ३ ।।

श्रीचिन्तामणिपार्श्वविश्वजनतासञ्जीवनस्त्वं मया ।
दृष्टस्तात ! ततः श्रियः समभवन्नाशक्रमाचक्रिणम् ।।
मुक्तिः क्रीडति हस्तयोर्बहुविधं सिद्धं मनोवाञ्छितं ।
दुर्दैवं दुरितं च दुर्दिनभयं कष्टं प्रणष्टं मम ।। ४ ।।

यस्य प्रौढतमप्रतापतपनः प्रोद्दामधामा जग-
ज्जङ् घालः कलिकालकेलिदलनो मोहान्धविध्वंसकः
नित्योद्योतपद समस्तकमलाकेलिगृह् राजते।
स श्रीपार्श्वजिनो जने हितकरश्चिन्तामणिः पातु माम् ।। ५ ।।

विश्वव्यापितमो ह्निस्ति तरणिर्बालोपि कल्पांकुरो,
दारिद्राणि गजावलीं हरिशिशुः काष्ठानि वह्नेः कण.।
पीयूषस्य लवोऽपि रोगनिवहयद्वत्तथा ते विभो।
मूर्तिः स्फूर्तिमती सती त्रिजगतीकष्टानि हर्तुं क्षमा ।। ६ ।।

श्रीचिन्तामणिमंत्रमोङ्कृतियुतं ह्रींकारसाराश्रितं।
श्रीमर्हन्नमिऊणपाशकलितं त्रैलोक्यवश्यावहम् ।।
द्वेधाभूतविषापहं विषहरं श्रेयःप्रभावाश्रयं।
सोल्लासं वसहाङ्कितम् जिनफुल्लिंगानन्ददं देहिनाम् ।। ७ ।।

ह्रीं श्रीकारवरं नमोऽक्षरपरं ध्यायंति ये योगिनो।
हृत्पद्मे विनिवेश्य पार्श्वमधिप चितामणीसंज्ञकम् ।।
भाले वामभुजे च नाभिकरयोर्भूयो भुजे दक्षिणे।
पश्चादष्टदलेषु ते शिवपद द्वित्रैर्भवैर्यान्त्यहो ।। ८ ।।

नो रोगा नैव शोका न कलहकलना नारिमारिप्रचारा,
नैवाधिर्नासमाधिर्न च दरदुरिते दुष्टदारिद्रता नो।
नो शाकिन्यो ग्रहा नो न हरिकरिगणा व्यालवैतालजाला,
जायंते पार्श्वचिंतामणिनतिवशतः प्राणिनां भक्तिभाजाम ।।९।।

गीर्वाणद्रुमधेनुकुम्भमणयस्तस्याङ्गणे रंगिणो।
देवा दानवमानवा. सविलय तस्मै हितध्यायिनः ॥
लक्ष्मीस्तस्य वशाऽवशेव गुणिना ब्रह्माण्डसंस्थायिनी।
श्रीचिन्तामणिपार्श्वनाथमनिश संस्तौति यो ध्यायति ॥१०॥

इति जिनपतिपार्श्वः पार्श्वपार्श्वाख्ययक्ष.,
प्रदलित-दुरितौघः प्रीणित-प्राणीसार्थः।
त्रिभुवन-जनवाञ्छादान-चिन्तामणीकः,
शिवपदतरुबीज बोधिबीजं ददातु ॥११॥

श्री रत्नाकरपंचविंशतिः

श्रेयः श्रिया मगलकेलिसद्म !, नरेन्द्रदेवेन्द्रनतांघ्रिपद्म !।
सर्वज्ञ ! सर्वातिशयप्रधान !, चिरञ्जयज्ञानकलानिधान ! ॥१॥

जगत्त्रयाधार ! कृपावतार ! दुर्वारसंसारविकारवैद्य !।
श्रीवीतराग ! त्वयिमुग्धभावा-द्विज्ञप्रभो विज्ञपयामि किंचित् ॥२॥

किं बाललीलाकलितो न बालः, पित्रो. पुरो जल्पति निर्विकल्पः।
तथा यथार्थं कथयामि नाथ !, निजाशय सानुशयस्तवाग्रे ॥ ३ ॥

दत्तं न दान परिशीलित च, न शालि शीलं न तपोऽभितप्तम्।
शुभो न भावोऽप्यभवद् भवेऽस्मिन्,विभो ! मया भ्रान्तमहोमुधैव॥ ४ ॥

दग्धोऽग्निना क्रोधमयेन दष्टो, दुष्टेन लोभाख्यमहोरगेण।
ग्रस्तोऽभिमानाजगरेण माया-जालेन बद्धोऽस्मि कथं भजे त्वा ॥ ५ ॥

कृतं मयाऽमुत्र हितं न चेह, लोकेऽपि लोकेश ! सुखं न मेऽभूत् ।
अस्मादृशां केवलमेव जन्म, जिनेश ! जज्ञे भवपूरणाय ॥ ६ ॥

मन्ये मनो यन्नमनोज्ञवृत्त !, त्वदास्यपीयूषमयूखलाभात् ।
द्रुतं महानन्दरसं कठोरमस्मादृशां देव ! तदश्मतोऽपि ॥ ७ ॥

त्वत्तः सुदुःप्राप्यमिदं मयाऽऽप्तं, रत्नत्रयं भूरिभवभ्रमेण ।
प्रमादनिद्रावशतो गतं तत्, कस्याऽग्रतो नायक ! पूत्करोमि ॥ ८ ॥

वैराग्यरङ्गः परवञ्चनाय, धर्मोपदेशो जनरञ्जनाय ।
वादाय विद्याऽध्ययनं च मेऽभूत्,कियद् ब्रुवे हास्यकरं स्वमीश ॥ ९ ॥

परापवादेन मुखं सदोषं, नेत्रं परस्त्रीजनवीक्षणेन ।
चेतः परापायविचिन्तनेन, कृतं भविष्यामि कथं विभोऽहं ॥१०॥

विडम्बितं यत्स्मरघस्मरार्त्ति - दशावशात्स्वं विषयांधलेन ।
प्रकाशितं तद्भवतो ह्रियैव, सर्वज्ञ ! सर्वं स्वयमेव वेत्सि ॥११॥

ध्वस्तोऽन्यमन्त्रैः परमेष्ठिमन्त्रः कुशास्त्रवाक्यैर्निहतागमोक्तिः ।
कर्तुं वृथाकर्मकुदेवसङ्गादवाञ्छि हि नाथ ! मतिभ्रमो मे ॥१२॥

विमुच्य दृग्लक्ष्यगतं भवन्तं, ध्याता मया मूढधिया हृदन्तः ।
कटाक्षवक्षोजगभीरनाभी, कटीतटीयाः सुदृशां विलासाः ॥१३॥

लोलेक्षणावक्त्रनिरीक्षणेन यो मानसे रागलवो विलग्नः ।
न शुद्धसिद्धान्तपयोधिमध्ये, धौतोप्यगात्तारक ! कारणं किं ॥१४॥

अंगं न चंगं न गणो गुणानां, न निर्मलः कोऽपि कलाविलासः ।
स्फुरत्प्रभा न प्रभुता च काऽपि, तथाप्यहंकारकदर्थितोऽहं ॥१५॥

आयुर्गलत्याशु न पापबुद्धि-र्गतं वयो नो विषयाभिलाषः ।
यत्नश्च भैषज्यविधौ न धर्मे, स्वामिन्महामोहविडम्बना मे ॥१६॥

न्यात्मा न पुण्य न भवो न पाप, मया विटाना कटुगीरपीय ।
आधारि कर्णे त्वयि केवलार्के, परिस्फुटे सत्यपि देव ! धिग्माम् ।।१७।।

न देवपूजा न च पात्रपूजा, न श्राद्धधर्मश्च न साधुधर्म. ।
लब्ध्वापि मानुष्यमिद समस्त, कृत मयाऽरण्यविलापतुल्य ।।१८।।

चक्रे मयाऽसत्स्वपि कामधेनु - कल्पद्रुचिन्तामणिषु स्पृहार्त्ति. ।
न जैनधर्मे स्फुटशर्मदेऽपि, जिनेश ! मे पश्य विमूढभावं ।।१९।।

सद्भोगलीला न च रोगकीला, धनागमो नो निधनागमश्च ।
दारा न कारा नरकस्य चित्ते, व्यचिन्ति नित्य मयकाऽधमेन ।।२०।।

स्थितं न साधोर्हृदि साधुवृत्तात्, परोपकारान्न यशोऽर्जितं च ।
कृतं न तीर्थोद्धरणादिकृत्य, मया मुधा हारितमेव जन्म ।।२१।।

वैराग्यरगो न गुरूदितेषु, न दुर्जनाना वचनेषु शान्ति. ।
नाध्यात्मलेशो ममकोऽपि देव, तार्य कथकारमयम्भवाब्धि ? ।।२२।।

पूर्वे भवेऽकारि मया न पुण्य-मागामिजन्मन्यपि नो करिष्ये ।
यदीदृशोऽहं मम ते न नष्टा, भूतोद्भवद्भाविभवत्रयीश ! ।।२३।।
किंवा मुधाहं बहुधा सुधाभुक्, पूज्य ! त्वदग्रे चरित स्वकीय ? ।
जल्पामि यस्मात् त्रिजगत्स्वरूप ! निरूपकस्त्व कियदेतदत्र ? ।।२४।।
दीनोद्धारधुरन्धरस्त्वपदपरो नास्ते मदन्य. कृपा ।
पात्रं नात्र जने जिनेश्वर ! तथाप्येता न याचे श्रिय ।।
किं त्वर्हन्निदमेव केवलमहो सद्बोधिरत्नं शिव ।
श्रीरत्नाकरमंगलैकनिलय ! श्रेयस्करं प्रार्थये ।।२५।।

आचार्य अमितगति सूरि-कृत-द्वात्रिंशिका

सत्वेषु मैत्रीं गुणिषु प्रमोद,
क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम्।
माध्यस्थभावं विपरीत-वृत्तौ,
सदा ममात्मा विदधातु देव! ॥१॥

शरीरतः कर्त्तुमनन्तशक्ति,
विभिन्नमात्मानमपास्तदोषम्।
जिनेन्द्र! कोषादिव खड्गयष्टि,
तव प्रसादेन ममास्तु शक्तिः॥२॥

दुःखे सुखे वैरिणि बन्धु-वर्गे,
योगे वियोगे भवने वने वा।
निराकृताऽशेषममत्व बुद्धेः,
समं मनो मेऽस्तु सदापि नाथ!॥३॥

मुनीश! लीनाविव कीलिताविव,
स्थिरौ निषाताविव विम्बिताविव।
पादौ त्वदीयौ मम तिष्ठतां सदा,
तमोधुनानौ हृदि दीपकाविव॥४॥

एकेन्द्रियाद्या यदि देव! देहिनः,
प्रमादतः संचरता इतस्ततः।
क्षता विभिन्ना मिलिता निपीड़िता—
स्तदस्तु मिथ्या दुरनुष्ठितं तदा॥५॥

विमुक्तिमार्गप्रतिकूलवर्त्तिना,
मया कषायाक्षवशेन दुर्धिया।
चारित्रशुद्धेर्यदकारि लोपनं,
तदस्तु मिथ्या मम दुष्कृतं प्रभो ! ॥६॥

विनिन्दनालोचनगर्हणैरहं,
मनोवचः कायकषायनिर्मितम्।
निहन्मि पापं भवदुःखकारणं,
भिषग्विषं मंत्रगुणैरिवाखिलम् ॥७॥

अतिक्रमं यं विमतेर्व्यतिक्रमं,
जिनातिचारं सुचरित्रकर्मणः।
व्यधामनाचारमपि प्रमादतः,
प्रतिक्रमं तस्य करोमि शुद्धये ॥८॥

क्षतिं मनःशुद्धिविधेरतिक्रमं,
व्यतिक्रमं शीलवृत्तेर्विलंघनम्।
प्रभोऽतिचारं विषयेषु वर्त्तनं,
वदन्त्यनाचारमिहातिसक्ततताम् ॥९॥

यदर्थमात्रापदवाक्य - हीनं,
मया प्रमादाद्यदि किञ्चनोक्तम्।
तन्मे क्षमित्वा विदधातु देवी,
सरस्वती केवलबोधलब्धिम् ॥१०॥

बोधिः समाधिः परिणामशुद्धिः,
स्वात्मोपलब्धिः शिवसौख्यसिद्धिः।
चितामणिं चिन्तित वस्तुदाने,
त्वा वंद्यमानस्य ममास्तु देवि! ॥११॥

यः स्मर्यते सर्वमुनीन्द्रवृन्दै-
र्यः स्तूयते सर्वनरामरेन्द्रैः।
यो गीयते वेदपुराणशास्त्रैः
स वेवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१२॥

यो दर्शनज्ञान - सुखस्वभावः,
समस्तसंसार विकार बाह्यः।
समाधिगम्यः परमात्मसंज्ञः,
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१३॥

निषूदते यो भव दुःखजालम्,
निरीक्षते यो जगदन्तरालम्।
योऽन्तर्गतोयोगिनिरीक्षणीयः,
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१४॥

विमुक्तिमार्ग प्रतिपादको यो,
यो जन्ममृत्युर्व्यसनाद्व्यतीतः।
त्रिलोकलोकी सिकलोऽकलंकः,
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१५॥

क्रोडीकृताशेषशरीरिवर्गाः,
राागादयो यस्य न सन्ति दोषाः।
निरिन्द्रियो ज्ञानमयोऽनपायः,
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१६॥

यो व्यापको विश्वजनीनवृत्तेः,
सिद्धो विबुद्धो धुतकर्मबन्धः।
ध्यातो धुनीते सकलं विकारं,
स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१७॥

न स्पृश्यते कर्मकलंकदोषैः,
यो ध्वान्तसघैरिव तिग्मरश्मिः।
निरंजनं नित्यमनेकमेकं,
तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥१८॥

विभासते यत्र मरीचिमाली,
न विद्यमाने भुवनावभासी।
स्वात्मस्थितं बोधमय-प्रकाशं,
तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥१९॥

विलोक्यमाने सति यत्र विश्वं,
विलोक्यते स्पष्टमिदं विविक्तम्।
शुद्धं शिवं शान्तमनाद्यनन्तं,
तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥२०॥

येन क्षता मन्मथमानमूर्छा,
विषादनिद्राभयशोक चिन्ता।
क्षयोऽनलेनेव तरुप्रपंच –
तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥२१॥

न संस्तरोऽश्मा न तृणं न मेदिनी,
विधानतो नो फलको विनिर्मितः ।
यतो निरस्ताक्षकषायविद्विषः,
सुधीभिरात्मैव सुनिर्मलो मतः ॥२२॥

न संस्तरो भद्र! समाधिसाधनम्,
न लोकपूजा न च संघमेलनम्।
यतस्ततोऽध्यात्मरतो भवानिशं,
विमुच्य सर्वामपि बाह्यवासनाम् ॥२३॥

न सन्ति बाह्या मम केचनार्था,
भवामि तेषां न कदाचनाऽहम्।
इत्थं विनिश्चित्य विमुच्य बाह्यम्,
स्वस्थः सदा त्वं भव भद्र! मुक्त्यै ॥२४॥

आत्मानमात्मन्यवलोक्यमान–
स्त्वं दर्शनज्ञानमयो विशुद्धः।
एकाग्रचित्तः खलु यत्र तत्र–
स्थितोपि साधुर्लभते समाधिम् ॥२५॥

एकः सदा शाश्वतिको ममात्मा,
विनिर्मल साधिगमस्वभावः ।
बहिर्भवाः सन्त्यपरे समस्ता,
न शाश्वताः कर्मभवाः स्वकीयाः ।।२६।।

यस्यास्ति नैक्यं वपुषापि सार्द्धं,
तस्यास्ति किं पुत्रकलत्रमित्रैः ।
पृथक्कृते चर्मणि रोमकूपाः,
कुतो हि तिष्ठन्ति शरीरमध्ये ।।७२।।

संयोगतो दु.खमनेकभेदम्,
यतोऽश्नुते जन्मवने शरीरी ।
ततस्त्रिधाऽसौ परिवर्जनीयो,
यियासुना निर्वृ तिमात्मनोनाम् ।।२८।।

सर्वं निराकृत्य विकल्पजालं,
ससार - कान्तार - निपात - हेतुम् ।
विविक्तमात्मानमवेक्ष्यमाणो,
निलीयसे त्वं परमात्मतत्त्वे ।।२९।।

स्वयं कृतं कर्म यदात्मना पुरा,
फलं तदीय लभते शुभाशुभम् ।
परेण दत्तं यदि लभ्यते स्फुटं,
स्वयं कृतं कर्म निरर्थकं तदा ।।३०।।

निजार्जितं कर्म विहाय देहिनो,
न कोऽपि कस्यापि ददाति किंचन।
विचारयन्नेवमनन्यमानसः,
परो ददातीति विमुच्य शेमुषीम् ॥३१॥
यैः परमात्माऽमितगति वन्द्यः,
सर्वविविक्तो भृशमनवद्यः।
शश्वदधीते मनसि लभन्ते,
मुक्तिनिकेत विभववरं ते ॥३२॥

सुभाषित

पंच-महव्वय-सुव्वय-मूलं, समण-मणाइल साहु सुचिन्नं।
वेरविरमणपज्जवसाणं, सव्वसमुद्दमहोदही तित्थं ॥ १ ॥
तित्थंकरेहिं सुदेसियमग्गं, नरग-तिरिय-विवज्जिय मग्गं
सव्वं-पवित्तं सुनिम्मियसारं, सिद्धिविमाणं अवंगुय-दारं॥ २ ॥
देव - नरिंद - नमंसिय-पूइयं, सव्वजगुत्तम-मंगल-मग्गं।
दुद्धरिसं गुण-नायगमेगं, मोक्खपहस्स-वडिंसगभूयं॥ ३ ॥
धम्मारामे चरे भिक्खू, धीइमं धम्म-सारही।
धम्मारामे रया-दंते, बंभचेर-समाहए ॥ ४ ।
देव-दाणव - गधव्वा, जक्ख-रक्खस्स-किन्नरा।
बंभयारिं नमंसंति दुक्करं जे करन्ति ते॥ ५॥
एस धम्मे धुवे निचवे, सासए जिणदेसिए।
सिद्धा सिज्झंति चाणेगं, सिज्झिस्संति तहावरे॥ ६ ॥

अरिहंत सिद्ध पवयण गुरु थेर बहुस्सुए तवस्सीसु।
वच्छल्लया य तेसिं अभिक्खनाणोवओग य ॥ ७ ॥

दंसण-विणय-आवस्सए य, सीलव्वए निरइयारे।
खणलव-तव-च्चियाए, वेयावच्चे समाहीए ॥ ८ ॥

अपुव्वनाणग्गहणे सुयभत्ती पव्वयणे पभावणया।
एएहिं कारणेहिं तित्थयरत्त लहइ जीवो ॥ ९ ॥

जिणवयणे-अणुरत्ता जिणवयणं जे करंति भावेणं।
अमला असंकिलिट्ठा ते हुंति परित्तसंसारि ॥१०॥

एवं खु नाणीणो सारं, जं न हिंसई किंचण।
अहिंसा समयं चेव, एतावत्तं वियाणिया ॥११॥

जाइं च वुड्ढि च इहेज्ज-पासं, भूतेहिं जाणे पडिलेह सायं।
तम्हातिविज्जो परमति णच्चा, सम्मत्तदंसी न करेई पावं ॥१२॥

उम्मुच्चपासं इहमच्चिएहिं, आरंभजीवी ऊभयाणुपस्सी।
कामेसु गिद्धा णिचयं करंति, संसिचमाणा पुणरेंति गब्भं ॥१३॥

सवणे नाणे विन्नाणे, पच्चक्खाणे य संजमे।
अणण्हए तवे चेव, वोदाणे अकिरिया सिद्धि ॥१४॥

एगोऽहं नत्थि मे कोई, नाहमन्नस्स कस्सई।
एवं अदीणमणसा, अप्पाणमणुसासई ॥१५॥

एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसणसंजुओ।
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोग-लक्खणा ॥१६॥

जीवियं नाभिकंखेज्जा मरणं नावि पत्थए।
दुहओ वि न इच्छेज्जा, जीविअं मरणं तहा ॥१७॥

सारं दंसण नाणं, सारं तव-नियम-संजम-लंसी।
सारं जिणवर धम्मं, सार संलेहणा पडियमरणं ॥१८॥

कल्लाणकोडिकारिणी, दुग्गइदुहनिट्ठवणी।
संसारजलतारिणी, एगंत होइ जीवदया ॥१९॥

आरंभे नत्थि दया, महिला सगेण नासइ बंभं।
संकाए सम्मत्तं नासइ, पव्वज्जा अत्थ गहणेणं च ॥२०॥

मज्जं विसय कसाया, निद्दा विकहा य पंचमा भणिया।
एए पंचप्पमाया, जीवा पडंति संसारे ॥२१॥

लब्भंति विमला भोए, लब्भंति सुरसंपया।
लब्भंति पुत्तमित्तं च, एगो धम्मो न लब्भई ॥२२॥

नवि सुही देवता देवलोए, नवि सुही पुढवीपइराया।
नवि सुही सेट्ठिसेणावइ य, एगंतसुही मुणी वीयरागी ॥२३॥

अप्पा नई वेयरणी, अप्पा मे कूडसामली।
अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे नंदणं वणं ॥२४॥

अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य।
अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठिय सुपट्ठिओ ॥२५॥

जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे दुज्जए जिए।
एगं जिणेज्ज अप्पाण, एस से परमो जओ ॥२६॥

लाभालाभे सुहे दुक्खे, जीवीए मरणे तहा।
समो निंदापसंसासु, तहा माणावमाणओ ॥२७॥

तीर्थंकरस्तोत्रम्

आदौ नेमिजिनं नौमि, संभवं सुविधिं तथा
धर्मनाथ महादेवं, शान्ति शान्तिकरं सदा ॥१॥
अनंतं सुव्रतं भक्त्या, नमिनाथं जिनोत्तमं
अजित जितकदर्पं, चन्द्रं चन्द्रसमप्रभं ॥२॥
आदिनाथ तथा देवं, सुपार्श्वं विमल जिनं
मल्लीनाथ गुणोपेत, धनुषा पञ्चविंशति ॥३॥
अरनाथ महावीरं, सुमति च जगद्गुरुं
श्री पद्मप्रभनामान, वासुपूज्य सुरैर्नत ॥
शीतलं शीतल लोके श्रेयासं श्रेयसे सदा
कुंथुनाथ च वामेय, विश्वाभिनन्दनं विभुम् ॥५॥
जिनाना नामभिर्बद्ध., पञ्चषष्टिसमुद्भव
यंत्रोऽय राजते यत्र, तत्र सौख्यं निरन्तरं ॥६॥
यस्मिन् गृहे महाभक्त्या, यंत्रोऽयं पूज्यते बुधैः
भूतप्रेतपिशाचादेः, भय तत्र न विद्यते ॥७॥
सकलगुणनिधान, यन्त्रमेन विशुद्धं
हृदयकमलकोशे, धीमता ध्येयरूपं ॥८॥
जयतिलकगुरोः, श्रीसूरिराजस्य शिष्यो।
वदति सुखनिधान, मोक्षलक्ष्मीनिवासं ॥९॥

सतीस्तोत्रम्

आदौ सती सुभद्रा च, पातु पश्चात्तु सुन्दरी
ततश्चन्दनबाला च, सुलसा च मृगावती ॥१॥
राजीमती ततश्चूला, दमयन्ती तत.परम्
पद्मावती शिवा सीता, ब्राह्मी पुनश्च द्रौपदी ॥२॥

कौशल्या च ततः कुन्ती, प्रभावती सतीवरा
सतीनामेनयन्त्रोऽयम्, चतुस्त्रिशत् समुद्भवः ॥३॥
यस्य पार्श्वे सदा यन्त्रो, वर्तते तस्य सांप्रतं
भूरिनिद्रा न चायाति, न यान्ति भूतप्रेतकाः ॥४॥
ध्वजायां नृपतेर्यस्य, यंत्रोऽयं वर्तते सदा
तस्य शत्रुभयं नास्ति, संग्रामेऽस्य जयः सदा ॥५॥
गृहद्वारे सदा यस्य, यन्त्रोऽयं ध्रियते वरः
कार्मणाविकतंत्रस्य, न स्यात्तस्य पराभवः ॥६॥
स्तोत्रं सतीनां सुगुरुप्रसादात्, कृतं मयोद्योतमृगाधिपेन ।
यः स्तोत्रमेतत् पठति प्रभाते, स प्राप्नुते शं सततं मनुष्यः ॥७॥

उवसग्गहर स्तोत्र

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ।
विसहर विसनिन्नासं, मंगल-कल्लाण आवासं ॥१॥
विसहर फुलिंग मंते कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तस्सगह-रोग मारि दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥२॥
चिट्ठउ दूरेमंतो, तुज्झपणामोविबहुफलो होई ।
नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख दोहग्गं ॥३॥
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणी कप्पपायवब्भहियं ।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥
इइ संथुओ महायस, भत्तीभर निब्भरेण हियएण ।
तादेव दिज्ज बोहीं, भवे भवे पासजिणचंद ॥५॥